# संयुक्त प्रान्त अङ्क

'भूगोल'
वर्ष–२०

प्रथम खण्ड
मई-जुलाई
संख्या १-३
मूल्य १)

द्वितीय खण्ड
अगस्त
सितम्बर
संख्या ४-५
मूल्य १)

तृतीय खण्ड
अक्टूबर
नवम्बर
संख्या ६-७
मूल्य १)

वार्षिक मूल्य ३)
एक प्रति का ।=)

इस विशेषाङ्क का
मूल्य २॥)

सम्पादकः—रामनारायण मिश्र, बी० ए०

प्रकाशकः—
'भूगोल'-कार्यालय,
इलाहाबाद

# भूगोल के बीसवें वर्ष का विशेषांक

संक्षिप्त करने पर भी यह ( संयुक्तप्रान्तांक ) बहुत बड़ा होगया। अतः द्वितीय खंड भी ( जिसमें अगस्त और सितम्बर के अंक सम्मिलित हैं ) पाठकों की सेवा में फिर अपूर्ण रूप से जारहा है। प्रान्त के शेष जिलों का संक्षिप्त परिचय तृतीय खंड में रहेगा। इसमें अक्तूबर और नवम्बर के अंक सम्मिलित रहेंगे। यह तृतीय खंड दिसम्बर के प्रथम सप्ताह तक पाठकों की सेवा में पहुँचेगा। तीनों खंडों की एक साथ बंधी हुई जिल्द की कुछ प्रतियां तयार हो रही हैं। अधिक आकार बढ़ जाने के कारण तीनों खंडों का एक साथ मूल्य ३॥) रु० रहेगा।

हमें आशा है तीनों खंडों को पढ़कर पाठकों को इस प्रान्त का प्रथमबार प्रामाणिक परिचय मिलेगा और उन्हें पूरा सन्तोष होगा। विलम्ब से पाठकों को जो कष्ट हुआ है उसके लिये क्षमा करें। आगे भूगोल के साधारण अंक यथा समय महीने के अन्त तक प्रकाशित हुआ करेंगे।

भवदीय कृपाकांक्षी  
रामनारायण मिश्र  
"भूगोल"-सम्पादक

---

## विषय-सूची

# अलीगढ़

अलीगढ़ का जिला गंगा और यमुना के बीच में मेरठ कमिश्नरी का धुर दक्षिणी भाग घेरे हुये है। पूर्व में गंगा नदी कुछ दूर तक अलीगढ़ और बदायूं के बीच में सीमा बनाती है। पश्चिम में थोड़ी दूर तक यमुना नदी अलीगढ़ जिले को पंजाब के गुरगांव जिले से अलग करती है। इसके उत्तर में बुलन्दशहर की खुर्जा और अनूपशहर तहसीलें हैं। दक्षिण पश्चिम में मथुरा जिला है। दक्षिण पूर्व में एटा जिला है। इसकी अधिक से अधिक लम्बाई यमुना से गंगा तक ७० मील और चौड़ाई ४९ मील है। इसका क्षेत्रफल १९४७ वर्ग मील और जन संख्या ११,७२,०००है।

अलीगढ़ का जिला बड़ा उपजाऊ है। इसका क्रमशः ढाल उत्तर से दक्षिण-पूर्व की ओर है। सब कहीं प्रायः समतल मैदान हैं। यदि कहीं कुछ ऊंचे टीले हैं तो वे बालू या मटियार के हैं। जो आखात हैं वे नदियों की घाटियां हैं। बीच का कुछ ऊंचा मैदान एक ओर गंगा के खादर और दूसरी ओर नीम और चोइया नदियों की ओर क्रमशः ढालू हो गया है। इसके आगे काली नदी तक फिर कुछ ऊंची ज़मीन है। काली नदी के दाहिने किनारे पर बालू की पतली पेटी है। इस घाटी के आगे उपजाऊ मटियार और चिकनी मिट्टी का मध्यवर्ती आखात है। इसमें बहुत सी झीलें हैं। इनके पास रेह और ऊसर हो गया है। उत्तर पश्चिम की ओर यमुना के ऊंचे किनारे के आगे यमुना का खादर है। उत्तर पश्चिम में अधिक से अधिक ऊंचाई ६४० फुट और दक्षिण-पूर्व में ४९० फुट है। गंगा नदी अलीगढ़ ज़िले को केवल छूती है और जिले और बदायूं के बीच में सीमा बनाती है। इस जिले में गंगा का कुछ ऊंचा किनारा और खादर स्थित है। नारोरा ( बुलन्दशहर जिले ) में बांध बंध जाने से गंगा की धारा कुछ स्थिर होगई है।

गंगा की सहायक काली नदी ( कालिन्द्री ) मुजफ्फरपुर जिले से निकल कर मेरठ, बुलन्दशहर होती हुई इस जिले में आती है। गरमी की ऋतु में इसकी चौड़ाई १० गज़ और गहराई १ गज़ हो जाती है। वर्षा में फैल कर २५० फुट चौड़ी हो जाती है। कभी कभी गंगा नहर का पानी इसमें गिरा दिया जाता है। कहीं कहीं इसका पानी सिंचाई के काम आता है। अलीगढ़ी को पार करके काली नदी एटा जिले में पहुँचती है।

बरहरी के पास काली नदी में नीम नदी मिलती है। रामा मई के पास इसमें चोइया नाम की छोटी नदी मिलती है। चोइया गरमी में सूख जाती है। लेकिन नीम में सदा पानी रहता है और यहां सिंचाई के काम आती है। इसकी रेतीली देनीली और किनारे ढलवां हैं। काली नदी के संगम के पास इसके दोनों ओर तराई होगई है। यहां यह २०० फुट चौड़ी है।

ईसन नदी सिकन्दरा राव के पास उथले तालाबों से निकलती है।

रिन्द नदी गंगा-नहर की शाखाओं के बीच में सदौली के पास एक आखात से निकलती है। इसके पड़ोस के गांवों में लगातार इसकी मन्द धारा का भिगते रहने से रेह, हो गया है। हाल में इसकी तली गहरी कर दी गई है। अलीगढ़ ज़िले से यह एटा ज़िले में पहुँचती है और फतहपुर ज़िले में यमुना से मिल जाती है।

सेंगर नदी भी द्वाबा के मध्यवर्ती आखात से निकलती है। पहले यह अधवानझील से निकलती थी। नहर का जल न मिलने से गरमी की ऋतु में यह डूब जाती है।

कर्वन या कारो नदी बुलन्दशहर जिले के उत्तर में निकलती है और मथुरा और अलीगढ़ जिले में होकर शाहदरा के पास यमुना में मिल जाती है। गरमी की ऋतु में यह सूख जाती है। वर्षा ऋतु में इसकी गहराई ८ फुट और चौड़ाई १७० फुट हो जाती है।

करवन, और यमुना के बीच में पटवाहा नदी बहती है। यह मेरठ जिले से निकलती है और मथुरा जिले की नोहझील में गिर जाती है। यमुना नदी गंगा की तरह पुराने तट के नीचे एक छोटे खादर वाले भाग को छूती है।

गङ्गा नहर और इसकी शाखायें अलीगढ़ जिले में सिंचाई के प्रधान साधन हैं। भुमेरा और मचुआ के पास नहर में झाल और प्रपात हैं। नन्मू से कानपुर-शाखा दक्षिण-पूर्व की ओर बहकर अलीगढ़ से एटा जिले में प्रवेश करती है। इटावा शाखा पहले ठीक दक्षिण की ओर जाती है फिर कानपुर शाखा की समानान्तर बहती है। इनके अतिरिक्त कई उपशाखायें इस जिले को सींचती हैं।

लोअर ( निचली ) गंगा नहर अलीगढ़ में केवल १२ मील बहती है। इस ज़िले में इसका अधिकतर मार्ग गंगा खादर में है। इसलिये यह सिंचाई के बहुत कम काम आती है।

अलीगढ़ जिला बड़ा उपजाऊ है। केवल १६ फीसदी ज़मीन ऊसर और वीरान है। बागर के कुछ भाग में ढाक के जंगल हैं। खादर की नीची भूमि में अक्सर झाऊ मिलती है। गांवों और बड़े कस्बों के पास आम के बगीचे हैं। शेष भागों में खेती होती है।

ज्वार, बाजरा, अरहर, नील, गेहूँ, जौ, तम्बाकू और आलू यहां की प्रधान फसलें हैं।

## अलीगढ़ जिले का कारबार

लद्दा या नील—का काम यहां पहले बहुत होता था। अब बहुत घट गया है। केवल आठ दस हज़ार एकड़ में नील होता है। बड़ी लड़ाई में जब जर्मनी का नील आना बन्द हो गया था तब ३१ हज़ार एकड़ में नील उगता था और भाव भी चढ़ कर ४००) रु० मन हो गया था। तीस चालीस रुपये में डेढ़ सौ मन पौधे मिलते हैं। और १ हज़ार मन पौधों से ढाई या तीन मन नील निकलती है। सिकन्दरा राउ तहसील में सब से अधिक नील होता है और प्रायः सब का सब कलकत्ते को भेज दिया जाता है।

दाल—इस ज़िले में अरहर उर्द-मूँग बहुत उगते हैं। हाथरस में हरसाल लगभग ढाई लाख मन दाल दलकर साफ की जाती है और अधिकतर कलकत्ते और मद्रास को भेज दी जाती है। दाल दलने का काम अधिकतर औरतें करती हैं। एक मन अरहर में ३० सेर साफ दाल निकलती है। ५ सेर चूनी और ५ सेर चोकर होता है। एक औरत दिन भर में एक मन दाल दल लेती है जिसकी दलाई १४ आने होती है। लड़के दाल फटकने और साफ करने का काम करते हैं। आदमी ढोने का काम करते हैं। औरत ५ आने, लड़के को ४ आने और आदमी को ८ आने मज़दूरी मिलती है। एक कारख़ाने में फौज के लिये दाल तयार होती है।

शीशा—सिकन्दरा राव का शीशे का कारखाना तो टूट गया। पर पुरदिल नगर, अकाबाद और हसायन में चूड़ी, माला के दाने, मूंगा, बटन आदि बनाने का काम पुराने ढंग से अब भी होता है। कच्चा शीशा फीरोज़ाबाद और जलेसर से आता है। रेह आस पास की ऊसर ज़मीन से बहुत मिल जाता है। एक बीघा ऊसर ज़मीन से रेह लेने के लिये ज़मींदार १) रु० लेता है। एक मनिहार एक दिन में अपनी मामूली भट्टी से ३ हज़ार चूड़ियां या १ हज़ार दाने ( गुरिया) बना लेता है। ये रंग बिरंगे दानों की मालायें हुक्का के घोड़े या बैल को सजाने के काम आती हैं। सिकन्दरा राव में अचारी ( खटाई रखने का बरतन ) बनती हैं।

फेल्ट टोपी—अलीगढ़ शहर में फेल्ट टोपी बनाने का कारखाना है। इसमें हर महीने १० मन ऊन की खपत है और उससे तीन चार हज़ार टोपियां तयार होती हैं। पड़ोस में अच्छी ऊन नहीं मिलती है। इसलिये सात आठ रुपये सेर वाली बढ़िया ऊन बम्बई या कानपुर से मंगाई जाती है। पहले रुई धुनी जाती है फिर उससे फेल्ट बनाई जाती है। फिर फेल्ट को दबा दबा कर सिकोड़ लेते हैं। फिर उसे रंग कर दो तीन दिन सुखाते हैं। इसके बाद उसे खींचते हैं और ढांचों पर उसकी शकल को ठीक कर लेते हैं। अन्त में टोपी की किनारी बनाई जाती है और उस पर पालिश की जाती है। बिक्री की सब से बड़ी दुकान दिल्ली में है।
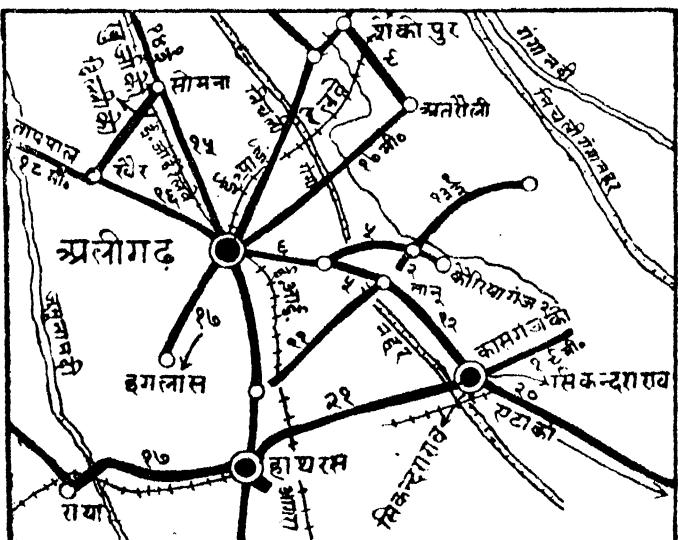
हाथरस और अलीगढ़ में कपास ओटने और रुई के

गद्दे बनाने के कई कारखाने हैं। सिकन्द्राराव में कपड़ा बुनने और कपड़ा छापने का काम होता है। यहां दरी कालीन और नमाज़ पढ़ने की आसमान की भी बनाई जाती हैं।

पर अलीगढ़ धातु के काम के लिये बहुत प्रसिद्ध है। डाकघर के लिये लेटर बक्स बनाने का काम यहां १८४२ में आरम्भ किया गया। इस समय यहां ताले, मुहर, कैंची, तमगे, पेटी, चाकू, साइन बोर्ड, थैले आदि बहुत सी चीज़ें बनाई जाती हैं। मज़बूत और बढ़िया ताले बनाने के लिये यहां कई दुकानें हैं। कुछ इग्लास हाथरस और दूसरे स्थानों में हैं।

यहां दूध और मक्खन का भी बहुत काम होता है।

अलीगढ़ नाम पहले यहां के प्रसिद्ध (दामील) गढ़ या किले का था। यह कुछ दूर उत्तर की ओर था। शहर कोयल कहलाता था। किले का नाम कई बार बदला। यह किला लोदी बादशाहों के समय में १५२४ ई० में बनाया गया। १७१७ में साबित खां ने इसे फिर से बनवाया और इसका नाम साबित गढ़ रक्खा। १७५७ में जाटों ने इस पर अधिकार कर लिया और इसका नाम रामगढ़ रक्खा। अफ्रासियाब ने इसमें कुछ वृद्धि की तब से इसका नाम अलीगढ़ हो गया। १७८४ में मरहठों ने इसे जीत लिया। मरहठों के समय में उनके फ्रांसीसी इंजीनियरों ने इसे जीता गदर में कुछ समय तक विद्रोहियों का इस पर अधिकार हो गया। समतल मैदान के बीच में ऊँचा भूमि पर बना होने के कारण यह किला पहले बड़े काम का था। ब्रिटिश शासन में यह उजड़ गया।

अलीगढ़ शहर ग्रांडट्रंक सड़क पर इलाहाबाद से ३०८ मील और आगरे से ४५ मील और दिल्ली से ८० मील दूर है। यहां कई पक्की सड़कें मिलती हैं। यहीं ईस्ट इंडियन रेलवे की प्रधान लाइन में बरेली से आने वाली शाखा मिलती है। शहर का कारबारी भाग पूर्व की ओर है। यहां अचलताल के पास होकर स्टेशन से सड़क आती है। स्टेशन से दूसरी ओर सिविललाइन, जेल, कचहरी और मुस्लिम यूनिवर्सिटी है।

अतरौली क़स्बा अलीगढ़ से रामघाट को जानेवाली सड़क पर अलीगढ़ शहर से १६ मील उत्तर-पूर्व की ओर स्थित है। रेलवे स्टेशन ५ मील दूर है। इसके पास ही पुराना किला है। अपने शासनकाल में कुछ समय तक यहां मरहठों का एक अफसर रहता था। अतरौली में कपास, लोहे, पीतल के बर्तनों का अच्छा व्यापार होता है। यहां तहसील और मिडिल स्कूल है। बरवानी हाथरस से १३ मील की दूरी पर एक बड़ा गांव है। यहीं एक किले के खंडहर हैं इसके पास ही नहर की हरदुआ गंज शाखा बहती है। इसके पड़ोस में गुलाब की खेती बहुत होती है। इतर और गुलाब जल बनाने के लिये यहां हरसाल ७००० मन से अधिक फूल पैदा किये जाते हैं। कलकत्ता, कन्नौज और जौनपुर के गन्धी इन्हें मोल लेने आते हैं। बेसवान कस्बा अलीगढ़ से मथुरा जाने वाली सड़क के पास अलीगढ़ से २२ मील दक्षिण-पश्चिम की ओर बसा है। इसके पश्चिम में जाट तालुकेदारों का किला है। विजैगढ़ कस्बा गंगा नहर की इटावा शाखा के पश्चिमी या दाहिने किनारे पर बसा है। इसके पास ही एक बड़े किले के खण्डहर हैं १८०३ में यह किला मुसौन के राजा भगवन्त सिंह के अधिकार में था। उसके अनुयाइयों ने अंग्रेज़ों का घोर विरोध किया। पड़ोस की नीची ज़मीन में अंग्रेज़ी सेनापति और दूसरे अंग्रेज़ों की कब्रें हैं जो इस लड़ाई में मारे गये थे।

छर्रा रफतपुर अतरौली ११ मील दक्षिण-पूर्व की ओर पक्की सड़क पर स्थित है। यहां अनाज और शक्कर का अधिक व्यापार होता है। पास ही एक किला था जहां इस समय एक अलग मुहल्ला बस गया है। हरदुआ गंज अलीगढ़ से उत्तर-पूर्व की ओर ७ मील की दूरी पर स्थित है। हरदुआ पुराना गांव है। गंज आध मील पूर्व की ओर नया मुहल्ला बस गया है। यहां कपास ओटने की मिलें हैं। गदर में यहां बड़ी हानि हुई।

हाथरस अलीगढ़ से २२ मील दक्षिण की ओर अलीगढ़ से आगरे को जाने वाली पक्की सड़क पर स्थित है। यहीं होकर मथुरा से कासगंज को पक्की सड़क जाती है। हाथरस जंकशन पर ईस्टइण्डियन रेलवे और कासगंज से मथुरा को जानेवाले बाम्बे बड़ौदा सेण्ट्रल इण्डिया रेलवे का मेल होता है। इसके पुराने किले के लिये यहां कई बार लड़ाइयां हुईं। इस समय इसके खंडहर विद्यमान हैं। हाथरस में कपास ओटने, तेल पेरने, पीतल के बर्तन चाकू, कैंची, सरौता बनाने और दाल दलने का काम बहुत होता है। व्यापार की दृष्टि से प्रान्त में कानपुर के बाद दूसरा स्थान हाथरस का ही है।

इंग्लास कस्बा अलीगढ़ से १६ मील दक्षिण पश्चिम की ओर स्थित है। यहां जाटों की पुरानी बस्ती है। मरहठों

ने यह ताल्लुका धार्मिक कामों के लिये गंगाधार पंडित को सौंप दिया था। १८१६ उसकी मृत्यु के बाद इसका एक चौथाई भाग उसके उत्तराधिकारियों को मिला। शेष छिन गया। इसका कुछ भाग आगरा कालेज के लिये खर्च किया गया। गदर के समय यहां भारी लड़ाई हुई। यहां तहसील और मिडिल स्कूल है।

जलाली एक पुराना नगर है। कहते हैं इसे जलालुद्दीन खिलजी ने बसाया था। इससे पहले का हिन्दू नगर खेड़े के रूप में दिखाई देता है। विद्रोही हिन्दुओं को दबाने के लिये उसने मुसलमानों की एक बस्ती यहां बसायी थी। जलाली अलीगढ़ से १२ मील की दूरी पर एक पक्की सड़क पर स्थित है। यहां कई मस्जिदें और इमामबाड़े हैं।

कचौरा सिकन्दराराव से ६ मील पश्चिम की ओर है। लार्ड लेक के समय में यहां के राजा ने अपने किले से घोर युद्ध किया था। इसमें एक अंग्रेज़ मेजर और कुछ सिपाही मारे गये। कौरिया गंज कालीन नदी के दाहिने किनारे पर अलीगढ से १७ मील पूर्व की ओर स्थित है। यह एक व्यापारी नगर है इसके पास ही एक पुराना खेड़ा है।

खैर कस्बा कर्वन के दाहिने किनारे पर स्थित है। यह अलीगढ़ से १५ मील दूर है। यहां चौहानों का राज्य था। अंग्रेज़ी राज्य होने पर यह उनसे छिन गया। गदर के समय में यहां के चौहानों ने सरकारी इमारतों को नष्ट किया और ३ लाख का माल लूटा। यहां तहसील और मिडिल स्कूल है। मेंडू का छोटा कस्बा हाथरस शहर से ४ मील और जंकशन से २ मील दूर है। पहले यहां जाटों की जागीर थी।

मुर्सान कस्बा हाथरस से ७ मील की दूरी पर स्थित है। पास ही कानपुर अचनेरा लाइन का स्टेशन है। बाज़ार कस्बे के बीच में है।

पिलखना एक पुराना कस्बा है। इसके पास होकर नमाऊ से दादों को सड़क जाती है।

सास्नी कस्बा अलीगढ़ से १४ मील दक्षिण की ओर स्थित है। इसके पास कई सड़कें मिलती हैं। पूर्व की ओर यहां के प्रसिद्ध किले के खंडहर हैं। यहां के राजा और अंग्रेज़ों से १८०२ ईस्वी में भारी लड़ाई हुई। किला तोड़ दिया गया। इसके ईंट-पत्थरों से सास्नी में नील का कारखाना बनाया गया।

सिकन्दरा राव का बड़ा कस्बा अलीगढ़ से २३ मील दक्षिण-पूर्व की ओर ग्रांडट्रंक रोड पर स्थित है। यहां कास गंज से मथुरा जाने वाली सड़क पार करती है। पास ही कानपुर-अचौरा रेलवे लाइन का स्टेशन है। कहते हैं इसे सुल्तान सिकन्दर लोदी ने बसाया था। राव खां नामी एक अफगान को यह जागीर में मिला इसलिये इसका नाम सिकन्दराराव पड़ गया। सिकन्दरा-राव नीची ज़मीन पर बसा है और देखने में मैला और भद्दा मालूम पड़ता है। यहीं से ईसन नदी निकलती है। यहां तहसील और मिडिल स्कूल है। यहां शीशा, शीशा और इत्र बनाने का काम होता है।

टप्पल का पुराना कस्बा यमुना के ऊंचे किनारे पर धारा से ५ मील की दूरी पर स्थित है। यहां से पक्की सड़कें खैर और अलीगढ़ को जाती हैं। अलीगढ़ यहां से ३३ मील दूर है। पास में पुराने किले के खंडहर हैं।

★ ★ ★

# फर्रुखाबाद

फर्रुखाबाद जिले के पश्चिम में एटा और मैनपुरी के जिले हैं। इसके उत्तर में बदायूं, शाहजहांपुर और दक्षिण में इटावा और कानपुर के जिले हैं। पूर्व की ओर गंगा नदी प्राकृतिक सीमा बनाती है। फर्रुखाबाद जिले की अधिक से अधिक लम्बाई ७६ मील और चौड़ाई ४० मील है। इसका क्षेत्रफल १७१८ वर्ग मील और जनसंख्या ८,७८,००० है। लेकिन गंगा के इधर उधर काली नदी की भयानक बाढ़ से बड़ी हानि हुई। आगे हट जाने से इसका क्षेत्रफल कुछ घटता बढ़ता रहता है। जहां गंगा की गहरी धारा रहती है वही इस जिले और बदायूं शाहजहांपुर हरदोई के बीच की सीमा मानी जाती है। सबसे अधिक परिवर्तन कनौज और कायमगंज तहसीलों में होता है।

फर्रुखाबाद जिला एक समतल लहरदार मैदान है। इसमें पहाड़ी का नाम नहीं है। केवल नदियों का कछार नीचा है और उसके ऊपर ऊंचा बांगर की भूमि है।

जिले की ८० फीसदी भूमि बांगर है। शेष नीचा है इसकी अधिक से अधिक उंचाई ( मुहम्मदाबाद में ) समुद्रतल से ५४८ फुट और कम से कम उंचाई मऊ रसूलपुर के पास ४७८ फुट है। बांगर भूमि को बागर काली नदी और ईसन नदियों ने चार भागों में बांट दिया है। नदी के पड़ोस में नीची भूमि है जो वर्षा की बाढ़ में डूब जाती है। नदी के ऊपर ऊंचे ढालू किनारे हैं। इनको नालों ने काट दिया है। इन्हीं नालों से नदी में पानी आता है। अधिक भाग उपजाऊ दुमट ज़मीन है। बांगर और गंगा के बीच वाले द्वाबा में ऊसर भूमि नहीं है। मिट्टी कुछ पीली है। बागर के दोनों किनारों के पास बालू है। कुछ भागों में भूड़ है। गंगा के कछार में तराई की नीची भूमि है। इसी तरह की नीची भूमि दूसरी नदियों के पड़ोस में मिलती है।

काली नदी मुजफ्फरनगर के जिले से निकलकर मेरठ, बुलन्दशहर आदि कई जिलों में बहती हुई प्राचीन संकिसा ( शमशाबाद के पास ) के पास फर्रुखाबाद जिले में प्रवेश करती है। १० मील शमशाबाद परगने में बहने के बाद काली नदी फर्रुखाबाद और मैनपुरी के बीच में सीमा बनाती है। इसके आगे फिर यह फर्रुखाबाद जिले के भीतर आती है। सिंगीरामपुर के पास काली नदी गंगा से केवल १ मील दूर रह जाती है। १८८८ में बाढ़ का ज़ोर घटाने के लिये काली नदी से एक नाला काटकर गंगा में मिला दिया। पहले काली नदी कनौज से ४ मील आगे गंगा में मिलती थी। आजकल यह फीरोज़पुर कटरी के पास गंगा में मिलती है। फर्रुखाबाद जिले में काली नदी के ऊपर उन दो स्थानों पर पुल बना हुआ है जहां ग्रांडट्रंक से एक सड़क बेवर से फतेहगढ़ को और दूसरी गुरुसहायगंज से फतेहगढ़ को आती है। जहां गुरुसहायगंज से आने वाली सड़क नदी को पार करती है वहीं पर रेल का भी पुल है। पहले काली-नदी सिंचाई के भी काम आती थी। काली नदी को कालिन्दी या कालिनी भी कहते हैं। रामायण में इसे इक्षुमती कहा गया है।

ईसन नदी तिरवा और छिबरामऊ तहसीलों के बीच में सीमा बनाती हुई कानपुर जिले में पहुँचती है। बूढ़ी गंगा कम्पिल के पास दो धाराओं में बट जाती है। एक धारा उत्तर की ओर मुड़कर गंगा में मिल जाती है। दूसरी अधिक पुरानी धारा प्रधान ऊंचे तट से दो डेढ़ मील दूर बहती हुई शमसाबाद से ६ मील पूर्व अज़ीज़ाबाद के पास गंगा में मिल जाती है। बागर नदी एटा जिले से आकर पश्चिमी शमसाबाद होती हुई दक्षिण-पूर्व की ओर मुड़ती है और भोजपुर के पुराने गांव के पास गंगा में मिल जाती है। वर्षा ऋतु में इसमें अधिक जल रहता है। गरमी में यह सूख जाती है। पहले इसकी तली में सूखी खेती होती थी। आजकल इसमें नहर का फालतू पानी छोड़ दिया जाता है।

फर्रुखाबाद ज़िले में १४ फीसदी ज़मीन ऐसी है जिसमें खेती नहीं हो सकती है। इसमें कुछ ऊसर और रेह है। कुछ ज़मीन में चरागाह और बाग हैं अधिकतर ज़मीन खेती के काम आती है। ज्वार, बाजरा, मकई, आलू, तम्बाकू, कपास, गेहूँ और चना यहां की प्रधान फसलें हैं। गंगा के खादर में यहां के प्रसिद्ध तरबूज़ उगाये जाते हैं। सिंचाई का काम कुवां, तालाबों और निचली गंगा नहर की शाखाओं से होता है। फर्रुखाबाद शोरा बनाने का काम पहले बहुत होता है। परदा और रजाई छापने का काम इस समय भी प्रसिद्ध है। कन्नौज में इत्र तयार किया जाता है। १ तोला अच्छा इत्र
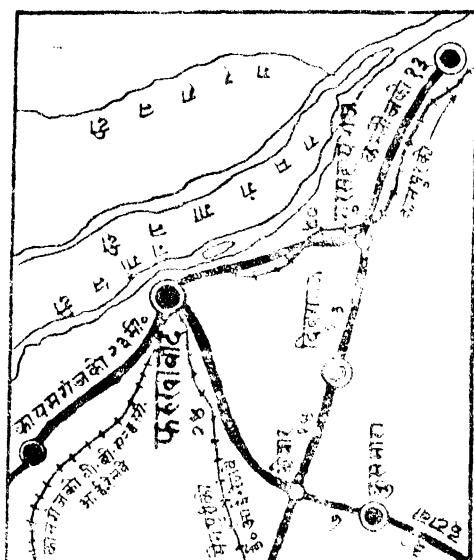
तयार करने में १ मन गुलाब के फूल खर्च होते हैं। पीतल और लोहे के बर्तन और सोने चांदी के ज़ेवर भी फर्रुखाबाद में अच्छे बनते हैं। शोरा लोना ( नमकीन ) मिट्टी से बनाया जाता है। ऊसर भूमि का रेह भी इस

काम आता है। खारी मिट्टी कम्पिल परगना और ज़िले के दक्षिणी-पूर्वी कोने में अधिक मिलती है। शोरा बनाने के लिये पहले खारी मिट्टी आयताकार कुंडियों में भरी जाती है। इसके बाद इसे धोकर धुले हुये खारे पानी को औटते हैं। इसमें एक डेढ़ दिन लग जाता है। इससे कलमी शोरा बनता है। कलमी शोरा बनाने में ६ या सात दिन लगते हैं। शोरा बनाने का काम नवम्बर से तक होता है।

अलीगढ़ गांव बरेली से फतेहगढ़ जानेवाली पक्की सड़क से केवल एक मील दूर है। यह फतेहगढ़ से ८ मील उत्तर-पूर्व की ओर है। पूर्व की ओर कुछ दूर पर रामगंगा बहती है। जब गदर में अमृतपुर की तहसील नष्ट कर दी गई तब नई तहसील का केन्द्र स्थान अलीगढ़ बना। यहां का पानी अच्छा नहीं है। बाज़ार हर शनिवार और मंगलवार को लगता है।

अमेठी गांव गंगा के एक ऊंचे टीले पर फर्रुखाबाद से १ मील पूर्व की ओर है। फर्रुखाबाद के अमेठी दरवाज़े से यहां को एक सड़क आती है। एक पक्की सड़क कादरी दरवाज़े से घाटिया घाट को जाती है। अमृतपुर गांव में कई कच्ची सड़कें मिलती हैं। यह फतेहगढ़ से १४ मील उत्तर की ओर है। इसके पड़ोस की भूमि बड़ी उपजाऊ है गांव बागों से घिरा है। वर्षा ऋतु में मीलों तक पानी भर जाता है। कहते हैं मानसिंह नामी एक गहरवार सरदार ने इसे बसाया था। यहां का पानी अमृत के समान था इसलिये इसका यह नाम पड़ा। गदर के पहले यह तहसील का केन्द्र था और यहां एक पुराना किला था। विद्रोहियों ने किला और तहसील को तोड़ डाला। गदर के बाद यहां से तहसील हटा ली गई। इस समय यहां एक मिडिल स्कूल है। बाज़ार सोमवार और बृहस्पतिवार को लगता है।

भोजपुर का प्राचीन गांव फतेहगढ़ से ६ मील दक्षिण की ओर गंगा के ऊँचे किनारे पर बसा है। इसके पड़ोस में जंगल है। भूमि नालों ने काट दी है। भोजपुर के दक्षिण की ओर बागर नाला गंगा में गिरता है। कुछ घर पुरानी ईंटों के बने हैं जिन्हें यहां के लोगों ने एक पुराने उजड़े हुये किले से निकाल लिया था।

भोलेपुर फतेहगढ़ से मिला हुआ बड़ा गांव है। प्रधान भाग फर्रुखाबाद को आने वाली पक्की सीमेंट की सड़क के दक्षिण-पश्चिम की ओर है। कानपुर से अछनेरा को जानेवाली रेलवे लाइन का फतेहगढ़ स्टेशन वास्तव में भोलेपुर गांव में स्थित है। यहां आलू का बड़ा व्यापार होता है।

छिबरामऊ कस्बा तहसील का केन्द्र स्थान है। यह ग्रांडट्रंक रोड पर फतेहगढ़ से १७ मील दक्षिण-पश्चिम की ओर स्थित है। यहां एक पुरानी सराय और बाज़ार है। जहां पुराना किला था उस स्थान पर अस्पताल है। इसका एक भाग महमूद गंज है छिबरामऊ में दो मिडिल स्कूल हैं।

फर्रुखाबाद शहर गंगा किनारे से लगभग दो मील दूर है। शहर तीन ओर से ( दक्षिण-पश्चिम और पूर्व ) २० फुट ऊंची दीवार से घिरा है। कहीं कहीं यह पुरानी दीवार १२ फुट मोटी है। कई जगह यह टूट गई है। पहले स्थान स्थान पर इसके ऊपर बुर्ज बने थे। शहर से उत्तर की ओर गंगा का ऊंचा पुराना किनारा है। दक्षिण की दीवार २६४७ गज़ दक्षिण-पूर्व की दीवार १८७५ गज़ और दक्षिण-पश्चिम की दीवार १२७५ गज़ लम्बी है। दीवारों में दस दरवाज़े हैं गंगा, पाई, कुतुब या उत्तरी, मऊ, जसमई, खंडिया, मदार, लाल, कादरी और अमेठी दरवाज़े हैं। पर आजकल दीवार के टूट जाने से और भी कई रास्ते बन गये हैं। १ फतेहगढ़ से आनेवाली सड़क कादरी दरवाज़े में होकर जाती है। लाल दरवाज़े से घाटिया घाट को पक्की सड़क जाती है। मदार दरवाज़े से कानपुर को जसमई दरवाज़े से मैनपुरी को मऊ दरवाजे से कायम गंज को पक्की सड़कें जाती हैं। उत्तरी-पूर्वी भाग में सुन्दर घर और दुकानें हैं। यहां का पानी बहुत अच्छा है। गंगा-तट की विश्रान्तें ( विसरातें ) बड़ी सुन्दर हैं। उत्तरी-पश्चिमी ऊंचे भाग में जहां पहले किला था वहां इस समय तहसील और टाउन हाल है। टाउन हाल में एक अच्छा पुस्तकालय है। लिंजे गंज में अनाज का व्यापार होता है। कोतवाली के सामने सब्ज़ी मंडी और कपड़े की दुकानें हैं। तम्बाकू, अफीम, आलू, फल, भांग शोरा, कपास, रज़ाई परदे, इत्र और बर्तन बाहर भेजे जाते हैं। फर्रुखाबाद शहर सम्राट फर्रुखसियर की स्मृति में नवाब मुहम्मद खां ने बसाया था। मुहम्मद खां मऊ रशीदाबाद में ( १६६५ ई० में ) पैदा हुआ था। उसने १७७२ में सम्राट फर्रुखसियर की सैनिक सहायता की। पुरस्कार में उसे नवाब की

पदवी और बड़ी जागीर मिली। इसी ने इस नगर को बसाया। १७४६ में यहां अवध के नवाब का अधिकार हो गया। १७५१ में यहां मरहठे आगये। १७७१ में सम्राट शाह आलम ने शहर के बाहर डेरा डाला था। १७७७ में अंग्रेज़ी फौज अवध के नवाब की ओर से फतेहगढ़ में आगई। १८०४ में यहां मरहठों का हमला हुआ। १८५७ में भीषण विद्रोह हुआ। फर्रुखाबाद में दो हाई स्कूल और दो मिडिल स्कूल हैं।

फतेहगढ़ कस्बा गंगा के दाहिने किनारे पर फर्रुखाबाद से ३ मील की दूरी पर स्थित है। इसके उत्तर में गंगा के ठीक ऊपर पुराना किला है। इसके पड़ोस में फौजी बारकें कवायद करने का मैदान और अफसरों के बंगले हैं। पड़ोस में एक बड़ा गिरजाघर है। यह गिरजा उस रुपये से बना जो गदर के बाद फर्रुखाबाद के निवासियों से वसूल किया गया था। पुराना गिरजा विद्रोहियों ने नष्ट कर डाला था। जहां इस समय अस्पताल है वहां पहले अवध के एक मन्त्री (वज़ीर) का निवासस्थान था। बाज़ार काफी लम्बा है। पूर्व की ओर कचहरी और हाई स्कूल है।

गुरसहाय गंज ग्रांडट्रंक रोड पर एक बड़ा गांव और कानपुर से अचनेरा जाने वाली लाइन का एक स्टेशन है।

जलालाबाद गांव फतेहगढ़ से २३ मील की दूरी पर ग्रांडट्रंक रोड पर बसा है। यहां एक वर्नाक्यूलर मिडिल स्कूल है।

कायमगंज इसी नाम की तहसील का केन्द्र स्थान है। यह गंगा के ऊंचे किनारे पर फर्रुखाबाद से २२ मील उत्तर-पश्चिम की ओर स्थित है। बूढ़ी गंगा यहां से १ मील दूर है। गंगा की धारा लगभग ६ मील दूर है। नगर लम्बा बसा है। यहां १ सराय १ अंग्रेज़ी स्कूल है। शनिवार और बृहस्पतिवार को बाजार लगता है। यहां के चाकू सरौता और ताले अच्छे बनते हैं। पहले यहां तलवारें और बन्दूकें बनती थीं। यहां कई तरह के कपड़े बुने जाते हैं।

कमालगंज एक व्यापारी कस्बा और रेलवे स्टेशन है। गंगा यहां से २ मील दूर है। यहां एक मिडिल स्कूल है। इसे कमाल खां नामी एक नवाब के एक चेला ने बसाया था।

कम्पिल इसी नाम के परगने का प्रधान गांव है। यह गंगा के ऊंचे टीले पर फतेहगढ़ से २८ मील उत्तर-पश्चिम की ओर है। गंगा के ऊंचे टीले की तली में बूढ़ी गंगा बहती है। यहां थाना, डाकखाना और स्कूल है। यहां से तम्बाकू और आलू बहुत बाहर भेजे जाते हैं। कायमगंज से एक सड़क कम्पिल होकर पटियाली (एटा) को गई है। एक सड़क रुदाइन रेलवे स्टेशन को गई है। उत्तर पूर्व में गंगा को (सूरजपुर घाट पर) पार करके बदायूं को गई है। एक सड़क जलोघाट के पास गंगा को पार करती है। गांव के उत्तर में जहां पहले गंगा बहती थी वहां मन्दिरों की पंक्तियां और विश्रान्तें खड़ी हैं। बाद में जब गंगा पानी यहां छोड़ देती हैं तो इस समय भी लोग इस बंधे हुये जल में स्नान करते हैं। रामेश्वर नाथ महादेव का मन्दिर अत्यन्त प्राचीन और कुछ जीर्ण है। इसमें बारी बारी से एक पंक्ति ईंट और दूसरी पंक्ति पत्थर की है। सराउगी लोगों ने यहां नेमीनाथ का मन्दिर बनवाया है। यहीं मकान का मकबरा है। महाभारत के समय में यह दक्षिण-पांचाल की राजधानी था यहीं अर्जुन ने मत्स्य भेदन करके द्रौपदी को स्वयम्बर में जीता था। एक स्थान पर द्रौपदी कुण्ड है। यहीं पुराने किले के भग्नावशेष थी। तेरहवीं सदी में गयासुद्दीन बलबन ने दूसरा किला बनवाया। इसके बाद राठौर राजपूतों ने इस पर अपना अधिकार कर लिया। कन्नौज किसी समय में उत्तरी भारतवर्ष की राजधानी था। यह गंगा के ऊँचे किनारे पर फतेहगढ़ से ३३ मील दक्षिण-पूर्व की ओर है। पहले गंगा कन्नौज के एकदम पास ऊँचे किनारे को छूती हुई बहती थी। इस समय यह कन्नौज से ४ मील पूर्व की ओर है। ग्रांडट्रंक रोड तक यहां से एक छोटी पक्की सड़क जाती है। यह कानपुर से अचनेरा को जाने वाली लाइन का एक स्टेशन है। पुराना कान्य कुब्ज वर्तमान कन्नौज से कहीं अधिक बड़ा था। इसके भग्नावशेष सरांय मीरा तक मिलते हैं। काफी दूर हल जोतने वाले किसानों को कभी कभी पुराने सिक्के, ईंटें और दूसरी चीज़ें मिल जाती हैं। पुराने कन्नौजी खंडहर वर्तमान लन्दन से कहीं अधिक क्षेत्रफल घेरे हुये हैं। कर्नल टाड के अनुसार इसका घेरा ३० मील से अधिक था। कुछ नये घर पुराने घरों के स्थान पर बने हैं। पुराने मन्दिर महमूद गज़नवी के समय में तोड़ डाले गये। उत्तर-पूर्व की ओर गंगा का ऊंचा किनारा साठ सत्तर फुट ऊँचा है। दक्षिण की ओर बड़ा बाज़ार है। अजैपाल का मन्दिर पुराने किले का बचा हुआ चिन्ह है। जहां इस

समय जामा मस्जिद है वहां सीता की रसोई थी। यह किले के बीच में है। इसमें बहुत कुछ सामान भी हिन्दू मन्दिरों का लगा हुआ है। इसमें बहुत कुछ पुराने चिन्ह बिगाड़ दिये गये हैं। पड़ोस में कई मुसलमानी मकबरे हैं। सिंह भवानी में कई पुरानी मूर्तियां मिलीं। इनमें यज्ञ बाराई, शिव पार्वती, विष्णु और नन्दी की मूर्ति विशेष उल्लेखनीय है। कन्नौज नगर इतना पुराना है कि इसके स्थापना काल का ठीक ठीक पता नहीं चलता है। लेकिन कान्य कुब्ज का उल्लेख रामायण और महाभारत में आया है। हर्षवर्द्धन के समय में कन्नौज में आये हुये चीनी यात्री ह्वान्सांग ने इसकी बड़ी प्रशंसा की है। कन्नौज नगर को नष्ट करने वाले महमूद ने भी एक पत्र में लिखा था। यहां हज़ारों भवन मुसलमानों के दीन की तरह मज़बूत हैं। इनमें अधिकतर संगमरमर के बने हैं। मन्दिरों की गणना नहीं की जा सकती। यह सम्भव नहीं कि करोड़ों के खर्च से इस प्रकार का नगर बनाया जा सके। इस प्रकार के नगर के बनाने मे २०० वर्ष से कम न लगेंगे। लेकिन इसी महमूद की लूट से कन्नौज पनप न सका। मीलों तक खेतों में ईंट और चूना के टुकड़े मिलते हैं।

खैर नगर—गंगा नहर के किनारे फतेहगढ़ से ४० मील दक्षिण पूर्व की ओर है। इसके सामने नहर पर पुल बना है। पास ही रोटन सिंह नामी एक राजपूत का बनवाया हुआ किला है। १७६६ से १७७५ तक यहाँ मरहठों का राज्य था। रविवार और बुधवार को बाजार लगता है। खुदागंज काली नदी के बायें किनारे पर फतेहगढ़ से १४ मील दक्षिण-पूर्व की ओर है। यहां से फतेहगढ़ और फरुखाबाद को पक्की सड़क जाती है। खुदागंज कानपुर अचनेरा लाइन का एक स्टेशन है। रेलवेलाइन लोहे के एक पुल के ऊपर से काली नदी को पार करती है। पुराने पुल के इस समय केवल कुछ खम्भे शेष बचे हैं। १८५७ में विद्रोहियों ने इसे तोड़ डाला था। यहां पर विद्रोहियों और अंग्रेज़ी सेना में भीषण लड़ाई हुई थी प्रायः सौ वर्ष पहले भी इस जगह काली नदी को पार करते समय नवाब अहमद खां और राजा नवलराय की सेना में लड़ाई हुई थी।

मऊ रशीदाबाद कायम गंज से दो मील पूर्व की ओर इसी का एक भाग है। यहाँ रशीद खां के महल और मकबरा के खंडहर है। महल के आंगन में तम्बाकू की खेती होती है। पुरानी मस्जिद हैदराबाद के निज़ाम की सहायता से सुधरवा दी गई। मियांगंज गंगा और ग्रांडट्रंक रोड के बीच में फतेहगढ़ से ३५ मील दूर स्थित है यह अपने बाज़ार के लिये प्रसिद्ध है। अधिक पूर्व की ओर गंगा के किनारे पुरानी छावनी के चिन्ह हैं। इसकी इमारतें अवध के नवाबी राज्य के समय ( १७७५-१८०१ ) में बनवाई गई थीं।

मीरन की सराय गांव ग्रांडट्रंक रोड पर फतेहगढ़ से ३२ मील दूर है। १६८३ में इस कन्नौज के सय्यदमुहम्मद ने बनवाया था। सराय के पास ही उसके बेटे का मकबरा है।

मुहम्मदाबाद फर्रुखाबाद से मैनपुरी को जाने वाली सड़क पर स्थित है। इसे फर्रुखाबाद के प्रथम नवाब ने बसाया था। १७१२ में इसने यहां एक किला बनवाया और बाजार लगवाया। जब मुहम्मद एक मामूली सिपाही था उस समय उसने यहां के कानूनगो हरप्रसाद से एक मौजा अनुचित ढंग से माफी में लिखवाना चाहा। हर प्रसाद ने इनकार कर दिया। जब वह नवाब हुआ तब उसने कायस्थों की ज़मीन छीन ली उस पर अपना किला बनवाया और कानूनगो हर प्रसाद को किले में ज़िन्दा चुनवा दिया। उसी से किले का एक बुर्ज रायसाहब का बुर्ज कहलाता है।

नीम करोड़ी गांव फतेहगढ़ से १६ मील दक्षिण पश्चिम की ओर है। यहां दो सड़कें मिलती हैं। कहा जाता है कि यहां पहले नीम के वृक्षों की अधिकता से इसका नाम नीम करोड़ी या करोड़ नीम वाला गांव रक्खा गया।

रूदायन एक छोटा गांव और रेलवे स्टेशन है। यह एटा की सीमा के पास है और फतेहगढ़ से ३० मील उत्तर-पश्चिम की ओर है।

संकिसा ( संकास्य ) एक पुराना गाँव है। पांचवीं शताब्दी में प्रसिद्ध चीनी यात्री फाहियान और ६३ में ह्वान सांग यहां आया था। बौद्धों का यह एक बड़ा तीर्थ है। बुद्ध भगवान स्वर्ग में ३ महीना समय बिताने के बाद यहीं पर दूसरी बार उतरे थे। यह काली नदी के पूर्व में है और पहले कन्नौज का द्वार कहलाता था।

सौरिख गाँव फतेहगढ़ से २५ मील दक्षिण-पश्चिम की ओर है। फतेहगढ़ से इटावा को जाने वाली सड़क छिबरामऊ और सौरिख होकर जाती है। यहाँ से एक

सड़क तिरवा को गई है। पूर्व की ओर ईसन नदी है। यहाँ थाना, स्कूल और डाकखाना है। मंगलवार और शनिवार को बाज़ार लगता है।

शम्साबाद का कस्बा बूढ़ी गंगा के एक ऊंचे टीले पर फतेहगढ़ से १८ मील उत्तर पश्चिम की ओर है। वर्षा ऋतु में इस पुरानी धारा में पानी बहता है। गर्मी में वर्षा के बाद कहीं पानी पड़ जाता है। वहीं खेती होती है। विलायती कपड़े के आने के पहले यहाँ बहुत बढ़िया कपड़ा बुना जाता था। पुराने समय के नवाबों के घर अधिक अच्छे हैं। यहाँ थाना, डाकखाना और मिडिल स्कूल है। नीम और इमली के पेड़ों की छाया में बाज़ार लगता है। साढ़े तीन मील की दूरी पर खोर (गाँव) अधिक पुराना है। १२८८ में शम्शुद्दीन ने नावों पर सेना भेज कर राठौरों को हराकर शम्साबाद बसाया। एक टीले पर पुराने कोट (किले) के चिन्ह हैं। खोर के पौंड प्रसिद्ध हैं।

सिंघीराम पुर फतेहगढ़ से ११ मील की दूरी पर गंगा के ऊंचे किनारे पर बसा है। यहां जेष्ठ और कार्तिक महीने में गंगा स्नान का बड़ा मेला तीन दिन तक रहता है। वर्षा ऋतु में यहां का दृश्य बड़ा सुन्दर रहता है। उस समय गंगा घाट के पास बहती है। वैसे यह दो मील दूर हो जाती है। यहां कई पुरानी धर्मशालायें और एक प्राचीन मन्दिर है। यह गांव दौलतराव सिन्धिया (१७९४—१८२७) ने अपने गुरु रामकृष्ण दास को दान दिया था। गुरू के मरने पर इसका प्रबन्ध चेले के हाथ में रहता चला आया है।

तालग्राम फतेहगढ़ से २४ मील दक्षिण की ओर ईसन नदी और ग्रांडट्रंक रोड के मध्य में स्थित है। पहले कुछ समय तक तालग्राम एक तहसील का केन्द्र स्थान रहा। यहां से एक सड़क इटावा को, एक तिर्वा को और एक फर्रुखाबाद को जाती है। पश्चिम की ओर एक सड़क छिबरामऊ को और एक बिशनगढ़ होती हुई मैनपुरी को जाती है। पुराना किला नष्ट होकर एक खेड़ा बन गया है। यहां एक ताल, सराय और मिडिल स्कूल है।

थाटिया कस्बा तिर्वा से ७ मील कन्नौज से १० मील और फतेहगढ़ से ३६ मील दक्षिण पूर्व की ओर है। यहां से कन्नौज और तिर्वा को अच्छी कच्ची सड़कें गई हैं। वर्षा ऋतु में जब ईसन नदी गहरी हो जाती है तब यहां पहुँचना कठिन हो जाता है। पहले यह सूती कपड़ा बनाने और छापने के लिये प्रसिद्ध था। फिर कारीगर दूसरे स्थानों को चले गये। नया भाग गंज थाटिया कहलाता है, यहां शुक्रवार और मंगलवार को बाज़ार लगता है।

तिर्वा कस्बा फतेहगढ़ से २५ मील दक्षिण-पूर्व की ओर है। यह इसी नाम की तहसील का केन्द्र-स्थान है। पुराना तिर्वा एक छोटा गांव है। नया तिर्वा गंज कहलाता है। दोनों में आध मील का अन्तर है। तिर्वा के राजा की गढ़ी में अधिकतर कच्चे घर हैं। कच्ची चारदीवारी के पास खाई है। यहां का पक्का तालाब और देवी का मन्दिर बड़ा सुन्दर है। गंज तिर्वा में कई छोटे छोटे मन्दिर हैं। यहीं तहसील और हाई स्कूल है। मंगलवार और बृहस्पतिवार को बाज़ार लगता है।

याकूत गंज फतेहगढ़ से साढ़े तीन मील दक्षिण पश्चिम की दूरी पर एक पक्की सड़क पर स्थित है। यहां एक पुरानी सराय और मस्जिद, स्कूल और डाकखाना है।

★ ★ ★

## हरदोई

हरदोई अवध का सबसे अधिक पश्चिमी जिला है। गोमती नदी इसकी पूर्वी सीमा बनाती है और इसे खीरी और सीतापुर ज़िलों से अलग करती है। इसके दक्षिण में लखनऊ और उन्नाव के जिले हैं। उत्तर में खीरी और शाहजहां पुर के ज़िले हैं। पश्चिम में फर्रुखाबाद का जिला है। गंगा और कुछ दूर तक रामगंगा की सहायक सेंथा नदी हरदोई की पश्चिमी सीमा बनाती है। इस जिले का क्षेत्रफल २३३० वर्ग मील है। हरदोई ज़िला दो प्राकृतिक भागों में बंटा हुआ है। बांगर की भूमि ऊंची है। कछार या खादर कुछ नीचा है। कुछ दूर तक गंगा का ऊंचा किनारा इन दोनों भागों को पृथक करता है। पश्चिमी भाग के मध्य में यदि एक रेखा उत्तर से दक्षिण को खींची जावे तो इस रेखा के पूर्व में प्रायः ऊंची बांगर की समतल भूमि मिलेगी। बीच में सई नदी का उथला जल विभाजक है। गोमती की ओर ज़मीन धीरे धीरे नीची होती जाती है। बांगर की

भूमि उत्तर में सबसे अधिक ऊंची है। गोमती के समीप पिल्हानी के पास की भूमि समुद्र-तल से ४६० फुट ऊंची है। इस जिले में गोमती नदी का किनारा प्रायः सब कहीं ऊंचा है। इसके पास की ऊंची भूमि की चौड़ाई ३ मील से ८ मील तक है। मिट्टी कुछ बलुई और कम उपजाऊ है। पानी का तल २५ फुट से ४० फुट तक गहरा है। इसमें कहीं खड्ड और दलदल हैं। कहीं लहरदार रेतीले टीले हैं। खेती ऊंची भूमि में होती है। खेत प्रायः ऊसर भूमि से घिरे हैं।

गोमती नदी की भूड़ की जमीन के पश्चिम में उपजाऊ मटियार का मैदान है। कहीं कहीं चिकनी मिट्टी के खेत और बड़ी बड़ी झीलें हैं। धुर दक्षिण में खेतों के पड़ोस में ऊसर भूमि और ढाक का जंगल भी मिलता है। सई नदी के ऊंचे रेतीले किनारे और नदी की धारा के बीच में तराई की तंग पेटी है। यह ज़मीन उपजाऊ है। लेकिन बाढ़ के दिनों में यह पानी में डूब जाती है। सई के पश्चिम में सुखटा नदी तक उपजाऊ भूमि है। यह नदी शाहाबाद तहसील के बीच में होकर बहती है। सुखटा के आगे उत्तर में हलके मटियार और बलुई भूमि की तंग पेटी है। अधिक दक्षिण में गर्रा नदी का बेसिन है। ऊंचे किनारे के नीचे पश्चिम में फर्रुखाबाद की सीमा तक गर्रा, सेंधा, रामगंगा और गंगा की घाटियां हैं। शाहाबाद तहसील में गर्रा का प्रवाह प्रदेश नीचा और उपजाऊ है। इसके कछार में चिकनी मिट्टी है। गर्रा के पश्चिम में बलुई भूड़ है। इसका पश्चिमी सिरा अक्सर सेन्धा की बाढ़ में डूब जाता है। गर्रा और रामगंगा के बीच में कुछ दूर तक बलुई भूमि है। गर्रा के आगे सांडी और कटियारी परगनों में छोटी छोटी नदियों की जाल सा बिछा हुआ है। यह भाग अक्सर बाढ़ से डूब जाता है। गंगा के कछार में बालू है और भागों में मटियार या चिकनी मिट्टी है। पानी बहुत पास निकल आता है। इस ओर खरीफ की फसल का कोई ठिकाना नहीं रहता है। रबी की फसल अच्छी होती है।

हरदोई जिले में गंगा की प्रधान सहायक नदी रामगंगा है। यह फर्रुखाबाद जिले से आकर कटियारी और सांडी परगनों में बड़ी टेढ़ी चाल से बहती है। खैरुद्दीनपुर के पास यह दक्षिण-पूर्व की ओर मुड़ती है। सेंधा और गर्रा का पानी लेकर राम गंगा सांडी के दक्षिण में गंगा से मिल जाती है। सेंधा एक छोटी नदी है और शाहजहांपुर जिले से निकलती है। सांडी और कटियारी में इसका मार्ग बड़ा टेढ़ा है। गर्रा अधिक बड़ी नदी है। यह कमायूं में हिमालय की निचली श्रेणी से निकलती है। पहले इसे देउहा कहते हैं। गंगा-रामगंगा के संगम के पास यह रामगंगा में मिल जाती है। इसके पड़ोस की उपजाऊ ज़मीन को सींचने के लिये इसमें अक्सर ढेंकली चलती रहती हैं। गर्रा की प्रधान सहायक सुखटा है। यह शाहजहांपुर जिले से निकलती है। आंझी के पास इस पर पुल बना है। इसके किनारे अक्सर जंगल से ढके हैं। सई नदी खीरी के दक्षिण-पश्चिम में निकलती है। संडीला की सीमा के पास हरदोई जिले को छोड़कर यह उन्नाव में प्रवेश करती है। गोमती खीरी से हरदोई में प्रवेश करती है और पूर्वी सीमा पर बहती है। देउकली के आगे यह लखनऊ ज़िले में पहुंचती है। गोमती की कई छोटी छोटी सहायक नदियां हैं। इनमें बेहटा नदी संडीला की झीलों से निकलती है।

हरदोई जिले में लगभग १६ फीसदी ज़मीन ऊसर है। कुछ खेती के योग्य भूमि बेकार पड़ी रहती है। फिर भी इस ज़िले के बहुत बड़े भाग में खेती होती है। ज्वार, बाजरा, उर्द, मूंग, गेहूं, चना, जौ, ईख यहां की प्रधान फसलें हैं। कपास कुछ कम हो गई है। अफीम एक दम बन्द होगई है।

संडीला बिलग्राम और शाहाबाद में सूती कपड़ा हाथ से बुना जाता है। सांडी, आदमपुर और मल्लावां में देशी ऊन के कम्बल भी बुने जाते हैं। हरदोई में शोरा बनाने, कपास ओटने और चीनी बनाने का काम होता है।

आलम नगर सुखटा के बायें किनारे पर शाहाबाद से मुहम्मदी को जाने वाली सड़क पर स्थित है। पहले इसका नाम बहलोलपुर था। जहांगीर के समय में यहां के एक पहलवान गोपाल शाह और तेज खां नामी पठान से झगड़ा हुआ। उस समय यह गांव निकम्मे लोगों से छिन गया और जहांगीर के सम्मानार्थ इसका नाम बहाल-पुर से बदल कर आलमनगर रख दिया गया।

आंझी गांव शाहाबाद से पिल्हानी को जाने वाली सड़क पर शाहाबाद से छः मील दूर स्थित है। गांव से लगभग ३ मील की दूरी पर अवध रूहेलखंड लाइन का रेलवे स्टेशन है। यहां एक छोटा बाज़ार लगता है। बाला-मऊ इसी नाम के परगने का सब से बड़ा गांव सई नदी

के बांये किनारे से लगभग १ मील दूर है। यह ईस्ट इंडियन ( भूतपूर्व अवध रूहेल खंड ) रेलवे लाइन पर जंकशन स्टेशन है। शाखा लाइन सीतापुर को गई है। यहां से बेनीगंज और बिलग्राम को सड़क गई है। पड़ोस में गेहूँ और गन्ना बहुत होता है। बाज़ार रोज़ लगता है।

बावन गांव गर्रा के दाहिने किनारे पर हरदोई से १२ मील पश्चिम की ओर स्थित है। यहां के राजा के लड़कों ने दक्षिण की लड़ाइयों में वीरता दिखलाई इससे यह मौज़ा माफी में दे दिया गया। यहां एक छोटा किला था। गदर में यह वीरान कर दिया गया। बावन गांव हरदोई से ७ मील की दूरी पर पश्चिम की ओर हरदोई से सई घाट को जाने वाली सड़क पर बसा है। सप्ताह में दो बार मेला लगता है। भादों महीने के पहले रविवार को सूर्य कुण्ड का मेला होता है। कहते हैं इस गांव को पुराने समय में एक राजपूत ने बसाया था। कन्नौज के सैयद सालार ने यहां एक फौज भेजा उसके जो सिपाही मारे गये वे सूरजकुंड में गाड़ दिये गये।

बेहटा गोकुल गांव हरदोई से ६ मील उत्तर-पश्चिम में एक रेलवे स्टेशन है। बाज़ार सप्ताह में दो बार लगता है।

बेनी गंज हरदोई से २१ मील दक्षिण-पूर्व की ओर है। कानपुर से सीतापुर को जानेवाली सड़क के मार्ग में पड़ता है। यहां थाना, डाकखाना और स्कूल है। मंगलवार और शुक्रवार को बाज़ार लगता है। अब से प्रायः १७५ वर्ष पहले शुजाउद्दौला के एक दीवान बेनी-बहादुर ने सुन्दर दुकानों की एक पंक्ति बनवाई तभी से इसका नाम बेनी गंज पड़ गया। इससे पहले इसे अहमदाबाद सरसंद कहते थे। सवा सौ वर्ष पहले यहां अहीरों का अधिकार हो गया था।

बिलग्राम कस्बा गंगा के ऊंचे पुराने किनारे पर हरदोई से १६ मील दक्षिण की ओर है। यह सांडी से आठ मील और फतेहगढ़ से ३३ मील दूर है। शाहाबाद और सांडी से उन्नाव को सड़क यहीं होकर जाती है। बिलग्राम से गंगा पार कन्नौज को कच्ची सड़क गई है। यहां तहसील, थाना, डाकखाना, शफाखाना और स्कूल है। स्कूल उस स्थान पर है जहां पहले पुराना किला था। बिलग्राम, हरदोई और माधोगंज के बीच में कुछ व्यापार होता है। यहां मिट्टी के बर्तन ( अमृतदान, घड़ा आदि ) बहुत अच्छे बनते हैं। नक्काशीदार दरवाज़े और चौखट भी प्रसिद्ध है। लकड़ी की और भी कई चीज़ें अच्छी बनती हैं।

बिलग्राम एक ऊंचे टीले पर बना है। यह कई बार बना और उजड़ा पहले इसका नाम श्रीनगर था। महमूद गज़नवी के समय में यहां मुसलमानों का अधिकार हुआ तभी इसका नाम श्रीनगर से बदल कर बिलग्राम रख दिया गया। बिलग्राम में उर्दू के कई प्रसिद्ध कवि हुये हैं।

धर्मपुर रामगंगा के दाहिने किनारे पर फतेहगढ़ से ११ मील पूर्व और हरदोई से २० मील पश्चिम में है। गदर के अवसर पर कटियारी के राजा ने यहां कई अंग्रेज़ों को छिपाकर उनकी जान बचाई थी। यहीं उसकी राजधानी और गढ़ी थी। जब रामगंगा ने धर्मपुर का बहुत सा भाग कटा दिया तब राजधानी खैरीपुर ( खैरुद्दीनपुर ) में बनी।

गोपामऊ का प्राचीन नगर गोमती नदी से २ मील पश्चिम में हरदोई से १४ मील उत्तर-पूर्व की ओर है। यहां आरसी अच्छी बनती हैं। रविवार और गुरुवार को बाज़ार लगता है। यहां एक मिडिल स्कूल और डाकखाना है। कहते हैं पहले यहां ठठेरे रहते थे। यहां के राज दरबार में मक्का का अज़मतशाह नामी फकीर आया था। उसी समय सैयद सालार मसूद ने आक्रमण किया। फकीर ने राजा को भाग जाने की सम्मति दी इससे मुसलमानों का यहां अधिकार हो गया। लेकिन मसूद के चले जाने पर लाल पीर नामी सेनापति मार डाला गया। यहीं उसकी दरगाह है।

गुंडवा गाँव संडीला से १० मील उत्तर पूर्व की ओर है। यहाँ एक पुराने किले के खंडहर हैं।

हरदोई शहर इस जिले के मध्य में लखनऊ से ६३ मील और शाहजहाँपुर से ३६ मील दूर है। उत्तर की ओर एक सड़क पिहानी को और पूर्व को ओर सीतापुर को जाती है। दक्षिण की ओर बिलग्राम को और दक्षिण-पश्चिम की ओर सांडी को पक्की सड़कें गई हैं। कच्ची सड़क ठीक पश्चिम में फतेहगढ़ को गई है जो यहां से ३६ मील दूर है। सिविल लाइन रेलवे स्टेशन से एक मील पश्चिम की ओर है। यहां शीशम, पाकर, इमली और जामुन के पेड़ हैं। पुरानी हरदोई सांडी सड़क के पास है इसके पास ही एक पुराना खेड़ा है नई हरदोई गदर के बाद बिलग्राम को जानेवाली सड़क के दोनों ओर बस गई है। यहां सरकारी कर्मचारियों और वकीलों के

घर हैं। यहीं बड़ी बड़ी दुकानें हैं। घर खुले हवादार और दूर दूर बने हैं। यहां गन्ने से शक्कर बनाने की बड़ी मिल है। फसल के दिनों में डेढ़ दो हज़ार बोरे शक्कर प्रतिदिन बनती है। गन्ना न मिलने पर मिल का काम बन्द हो जाता है। कपास की कमी से कपास ओटने की मिल बन्द होगई है। लेकिन तेल पेरने की मिल से तेल बराबर पेरा जाता है।

माधोगंज बड़ा बाज़ार है। यह हरदोई से २३ मील दक्षिण-पश्चिम में है। यहां होकर सीतापुर से मेहदी घाट और कानपुर को सड़क गई है। एक शाखा रेलवे बालामऊ से यहां को आती है। अनाज और कपास का व्यापार होता है। पास ही गदर में मरे हुये अंग्रेज़ों की कब्रें हैं। रुइया के राजा नरपतिसिंह की गढ़ी के खंडहर हैं। विद्रोही राजा से गांव छीन लिया गया और एक ईसाई को दे दिया गया।

मल्लावा कस्बा हरदोई से २७ मील दक्षिण में बिलग्राम से उन्नाव को जानेवाली सड़क पर पड़ता है। यह दूर दूर बिखरा हुआ है। इसकी लम्बाई २ मील है। यहां थाना, डाकखाना, मिडिल स्कूल और संस्कृत पाठशाला है। गुरदासगंज मुहल्ले में सोमवार शुक्रवार को और भगवन्तनगर में रविवार और बुधवार को बाज़ार लगता है। भगवन्तनगर में ठठेरों की कई दुकानें हैं। यहां की थाली चम्मच और फूल के बर्तन प्रसिद्ध हैं। क्वार और चैत में मानदेवी का मेला लगता है। एक मन्दिर में आशादेवी की मूर्ति है। सिकन्दर लोदी ने यहां मुसलमानों को बसाया था। १६७४ में यहां एक किला था। अब वहां खेत है। १७७३ में ईस्ट इण्डिया कम्पिनी की एक छोटी फौज अवध के नवाब की सहायता के लिये आई थी। १७७७ में यह सेना कानपुर को चली गई। गदर में यहां की सेना में विद्रोह फैल गया था।

मंसूरी नगर पिहानी से बेहटागोकुल स्टेशन को जानेवाली सड़क पर पड़ता है। पहले यह नगर कहलाता था और यहां एक किला था। १७०२ ईस्वी में एक सोमवंशी राजा मुसलमान हो गया। उसने पिहानी के सैयदों की पूरी जागीर छीन ली और किले को फिर से बनवाया। उसी ने इस स्थान का नाम मंसूर नगर रक्खा। चैत के महीने में यहां भगत बाबा का मेला लगता है।

मसीत गांव सई के बायें किनारे पर एक रेलवे स्टेशन है। यह हरदोई से २ मील पूर्व की ओर है। पाली कस्बा गर्रा के दाहिने किनारे पर फतेहगढ़ से सीतापुर को जानेवाली सड़क पर बसा है। यहां हरदोई से २० मील उत्तर-पश्चिम की ओर है। राजघाट पर गर्रा को पार करने के लिये वर्षा में नाव और शेष महीनों में पांज रहती है। कन्नौज के पाल राजाओं के सम्मानार्थ इसका नाम पाली रक्खा गया। यहां थाना, डाकखाना और स्कूल है। रविवार और गुरुवार को बाज़ार लगता है। पिहानी कस्बा सीतापुर से शाहाबाद को जानेवाली कच्ची सड़क पर पड़ता है। यह हरदोई से १६ मील दूर है। यहां से एक सड़क बेहटा गोकुल रेलवे स्टेशन को जाती है। एक सड़क सीतापुर शाहजहांपुर सड़क से मिलाती है। यहां थाना डाकखाना और मिडिल स्कूल है। बड़ी पिहानी पुरानी है और खेड़े के पास है। यहीं कन्नौज के दुबे ब्राह्मण रहते थे। इस समय केवल एक पुराना कुआं शेष है। छोटी पिहानी को निज़ाम मुरतज़ा ने बसाया था। इसे नाज़िमपुर भी कहते हैं। नवाबी समय में पिहानी तलवारों की पक्की धार रखने और सरफा बनाने के लिये प्रसिद्ध था। यहां अकबर के मन्त्री सद्रा-जहां और उसके बेटे के मकबरे हैं। यहीं मुर्तज़ाखां के किले के कुछ भाग शेष हैं। पिहानी का अर्थ है छिपने की जगह। कहते हैं जब १५४० ईस्वी में शेरशाह ने हुमायूं को हराया तब कन्नौज के काज़ी सैयद अब्दुलगफूर ने कन्नौज को छोड़कर गंगा के इस किनारे शरण ली और शेरशाह को बादशाह स्वीकार न किया। जब हुमायूं फिर राजा हुआ तो उसे पांच गाँव और ५००० बीघा जंगल माफी में मिला। अकबर के समय में उसकी बड़ी उन्नति हुई। जहांगीर को पढ़ाने का काम सौंपा गया। वह नवाब सद्र जहाँ कहलाने लगा। अकबर के नये धर्म का सन्देश लेकर वह तूरान भेजा गया। जहाँगीर के समय में वह ४००० सिपाहियों का सेनापति बनाया गया। कन्नौज में उसे एक जागीर मिली। १२० वर्ष की उम्र में उसका देहान्त हो गया।

सांडी कस्बा गर्रा के बायें किनारे पर हरदोई से फतेहगढ़ को जानेवाली सड़क पर स्थित है। यह हरदोई से १३ मील और फतेहगढ़ से २५ मील दूर है। हरदोई से सांडी तक सड़क पक्की है। सांडी से एक सड़क उत्तर की ओर शाहाबाद होकर शाहजहाँपुर को जाती है। एक सड़क पूर्व की ओर बघौली रेलवे स्टेशन को जाती है।

सांडी के आस पास पुराने आम के बगीचे हैं। उत्तर-पूर्व की ओर दो ढाई मील लम्बी और पौन मील चौड़ी डहर झील है। पड़ोस में ही पुराने क़िले के खंडहर हैं। इसे ऊंचा टीला कहते हैं। यहां से दूर दूर का दृश्य दिखाई देता है। सांडी सोमवंशी राजा सनातन सिंह की राजधानी थी। सोमवंशी झूसी (इलाहाबाद) से आये थे। सांडी का पुराना नाम सनातन डीह था। इसी से बिगड़ कर सांडी नाम पड़ा। १३९८ में राजपूत सरदार सनातन डीह या सनातन खेड़ा छोड़कर कमायूं पर्वत की ओर चले गये। यहां मुसलमानों का अधिकार हो गया। कहते हैं सनातन डीह के चारों ओर गहरी खाई थी। मुसलमानों ने इसका पानी गर्रा में काट दिया। तभी उन्होंने किले पर अधिकार कर पाया। जहां इस समय ऊंचे टीले पर वर्नाक्यूलर मिडिल स्कूल है वहां पहले किला था। कुछ पहले यहां अफीम की गोदाम थी। पूर्व की ओर ज़िन्दा पीर का मकबरा है। यह एक प्राचीन मन्दिर के खम्भों के कुछ टुकड़े मंडल देवी के स्थान पर रक्खे हैं। यहां आषाढ़ बदी अष्टिमी और रविवार को मेला लगता है। पास ही फूलमती का स्थान है जहां बौद्ध कारीगरी है। मीठा कुआं भी बहुत पुराना है। नवाबगंज मुहल्ले में सप्ताह में दो बार बाज़ार लगता है। इसे अवध के नवाब के एक अफसर ने बनवाया था। यहां अवध की कुछ फौज रहती थी। यहां दरी और गाढ़ा अच्छा बुना जाता है। डहर झील के सिरे पर ब्रह्मावर्त है। संडीला कस्बा लखनऊ से ३२ मील दक्षिण की ओर है। यहां से बेनी गंज, सीतापुर, फतेहपुर और कनौज को कच्ची सड़कें गई हैं। ईस्ट इण्डियन (अवध रुहेल खंड) रेलवे स्टेशन कस्बे से दक्षिण की ओर है। यहां तहसील, थाना और मिडिल स्कूल है। मंगलवार और शनिवार को बाज़ार लगता है। यहां का पान, घी, लड्डू और परदा प्रसिद्ध है। कुछ पुराने मक़बरे हैं। शिरोमन नगर सुकेता नाले) के बायें किनारे पर बिलग्राम से शाहाबाद और शाहजहांपुर को जाने वाली सड़क पर स्थित है। इसे शाह-राह कहते हैं। यह हरदोई से १३ मील उत्तर-पश्चिम की ओर है। फर्रुखसियर के वज़ीर (अब्दुल्ला) के एक कायस्थ अफसर (शिरोमन दास) ने १७०८ ई० में उसे बसाया था। यहाँ उसने एक गढ़ी और (सुकेता के ऊपर) पुल भी बनवाया था। पुल बह गया। किले के खंडहर दिखाई देते हैं।

शाहाबाद इसी नाम की तहसील का केन्द्र स्थान है। यह हरदोई से २२ मील और शाहजहाँपुर से १५ मील दूर है। यहाँ से थोड़ी दूर पर आंझी रेलवे स्टेशन है। यहाँ से सांडी, पाली और जलालाबाद को सड़कें गई हैं। पहले यह अधिक प्रसिद्ध था। १७७० में यहाँ किलेनुमा महल था। इसे अङ्गदपुर कहते थे। कहते हैं इसे अंगद ने बसाया था। नया कस्बा के एक अफगान अफसर ने १६७१ में बसाया था यहाँ कई बाज़ार लगते हैं। यहाँ के आम अनार और आलू प्रसिद्ध हैं और हरदोई को भेजे जाते हैं।

उधरनपुर गर्रा से एक मील पूर्व की ओर हरदोई से शाहजहांपुर को जाने वाली सड़क पर स्थित है। यहाँ डाकखाना और स्कूल है। बाज़ार सप्ताह में दो बार लगता है।

★ ★ ★

# "हरदोई प्रान्त के उद्योगिक धन्धे"

हरदोई प्रान्त अवध में बिलकुल पश्चिम की ओर है। यह एक छोटा सा प्रान्त है। इसमें चार तहसीलें हैं--हरदोई, बिलग्राम, शाहाबाद और सन्डीला, प्रान्त का प्रान्त बहुत उपजाऊ है इसलिये अधिकतर प्रान्त खेतिहर है। कहीं कहीं घरेलू धन्धे भी नज़र आते हैं।

रुई--कपास की खेती इस प्रान्त में बहुत होती है। यहां तक कि लखनऊ कमिश्नरी भर में कपास की खेती सब से अधिक यहीं होती है। कपास पुराने ढंग की रहटियों से ओटी जाती है। हरदोई और माधोगंज में कपास ओटी जाती है।

यहां कुछ कपास की तो खपत होती है, और बाकी कपास कानपुर वगैरह के मिलों में भेज दी जाती है।

गांवों में औरतें चर्खे से सूत कातती हैं। यहां को कुरमी औरतों में इसका जोरों से प्रचार है। मल्लावें में सूत का मुख्य बाज़ार है।

जुलाहे पुराने ढंग के करघों से इस सूत का

कपड़ा बुनते हैं। पहले यहां का बुना कपड़ा बहुत नफ़ीस होता था। आजकल जुलाहे मिल का सूत अधिक काम में लाते हैं। गाढ़ा और डोरिया बुनने का काम बिलग्राम और सण्डोला तहसील में बहुत होता है।

जुलाहे कपड़े को घर घर जाकर, बाजार में, गांव गांव घूम कर बेचते हैं। बजाज लोग भी इनसे कपड़े ख़रीद कर दुकान पर रखते हैं।

मल्लावें और सण्डीला में पुराने ढङ्ग के करघों से बुनने के कुछ लोगों के निजी कारखाने भी हैं।

अखिल भारतवर्षीय चर्खा संघ की एक शाखा मलावें में है जहाँ कपड़ा बुना और रंगा जाता है, एक शाखा बिलग्राम में भी थी जो कुछ दिन हुये टूट गई है, चर्खा संघ के लोग गाँव गाँव घूमकर सूत कातने के फ़ायदा लोगों को बताते हैं और रुई ख़रीदने के लिये रुपया भी उधार देते हैं, उनका सूत ख़रीद कर यहीं के जुलाहों से कपड़ा बुनवाते हैं। जगह जगह उनके खादी भन्डार तथा सूत इकट्ठा करने के केन्द्र हैं, ज्यों ज्यों खादी की माँग प्रान्त में बढ़ती जावेगी त्यों त्यों यहाँ का यह धन्धा भी बढ़ेगा।

**ऊन**—यहाँ के गड़रिये भेड़ के ऊन से भद्दे ढंग के कम्बल भी बनाते हैं जिन्हें गाँव के किसान इस्तेमाल करते हैं। मामूली चर्खे से ऊन कातकर करघां से कम्बल बुना जाता है। इस जिले में करीब ५,००० कम्बल सालाना बुने जाते हैं।

**सनई**—की खेती भी काफी होती है। छुट्टी के समय गाँव के आदमी, औरतें और लड़के सनई को तकली से कातकर सुतली बनाते हैं, इस सुतली को बुनकर शाहाबाद और हरदोई के कहार वगैरह टाट-पट्टी बनाते हैं। यह टाट-पट्टी चौड़ी पट्टियों की शक्ल में होती हैं। इन्हें जोड़ कर परदे बनाये जाते हैं। बिछाने के काम में भी यह आती हैं। गाड़ी की पाखरी भी गल्ला वगैरह ले जाने के लिये इन्हीं पट्टियों से बनती हैं।

**मूंज**—नदियों के किनारों पर बिना बोये उगतो है। इस मूंज की रस्सियाँ यहाँ के किसान और मजदूर बनाते हैं। औरतें इससे डलियाँ भी बुनती हैं।

**५ गन्ना**—यहां गन्ने की खेती प्रायः ३००० एकड़ भूमि में होती है। गांव में गन्ने को बैलों के कोल्हू से पेर कर रस निकालते हैं। इस रस को बड़े बड़े कढ़ाओं में पका कर उसका गुड़ और राब बनाते हैं, यह राब और गुड़ गांव में खूब इस्तेमाल होता है।

अब गन्ना मशीन से भी पेरा जाता है। राब से देशी शक्कर भी बनाई जाती है। शाबाद में देशी शक्कर का एक छोटा सा कारख़ाना है।

**६ तेल**—तेली बैलों से खींचे जाने वाले कोल्हू से सरसों और तिल्लों का तेल पेरते हैं। नीम और मूंगफली का भी तेल पेरा जाता है लेकिन बहुत कम। कपास के बीज (बिनौले) से भी वे तेल निकालते हैं।

**७ पोस्ता**—पोस्ता की खेती यहां क़रीब ६४०० एकड़ में होती है। यह खेती सरकार की देख रेख में होती है क्योंकि पोस्ता से अफ़ीम निकलती है। पोस्ता खाने के काम आता है। कुछ तेल भी निकाला जाता है। अफ़ीम इकट्ठा कर गाज़ीपुर के कारख़ाने में भेज दी जाती है।

**८ फल**—शहाबाद के आम मलिहाबाद के आमों की तरह मशहूर हैं। आमों के मौसम में बहुत सा आम बाहर भेजा जाता है।

ख़ासुलख़ास, सफेदा, लंगड़ा, दशेहरी, और मोहनभोग आम यहां के मशहूर हैं।

बिलग्राम में अमरूद बहुत होता है। बाग़ बढ़ते ही जाते हैं। यहां का अमरूद बहुत अच्छा होता है। इलाहाबाद के अमरूदों की तरह यह भी मशहूर है। यहां से बहुत अमरूद बाहर जाता है।

**९ लकड़ी**—बिलग्राम और सन्डीला की लकड़ी की नक्काशी मशहूर है। बिलग्राम के खड़ाऊं प्रसिद्ध हैं। सन्डीले में अलमारी वगैरह अच्छी बनती हैं। प्रान्त के भिन्न भिन्न भागों में बढ़ई स्थानीय खपत के लिये गाड़ी, गाड़ी के पहिये वग़ैरह बनाते हैं।

**१० चमड़ा**—मरे और क़साई घर में मारे हुये जानवरों का चमड़ा यहां से कानपुर चला जाता है। बकरी का चमड़ा कानपुर में जूतों में अस्तर लगाने के काम आता है। चमार किसानों के लिये चमरौधा जूता बनाते हैं, खेत सींचने के लिये चमड़े की मोट भी बनाते हैं।

कुछ मोची चमड़े का बूट जूता भी बनाते हैं खास तौर पर आर्डर देने पर बढ़िया मजबूत जूता बना देते हैं।

**शोरा**—कच्ची जमीन और पुरानी कच्ची दीवालों पर लोनी लग जाया करती है। कुछ गांवों के लुनिया इस लोनी को इकट्ठा कर इससे जरिया बनाते हैं। जरिया खरीदने के लिये हरदोई में दो कोठियां हैं। ये कोठियां जरिया खरीद कर कलकत्ता भेजती हैं। जरिया को साफ़ कर ये कोठियां शोरा भी बनाती हैं और शोरे से नमक भी। यह नमक आदमी के इस्तेमाल करने के क़ाबिल नहीं होता है। यह जानवरों को खिलाया जाता है।

लड़ाई के समय शोरा की मांग बहुत थी। अब शोरा की पूंछ कहीं नहीं है। जब से चिलियन नाइट्रेट चला तब से शोरा की पूंछ और भी नहीं रही। यहां की दोनों कोठियां बंद सी हैं। भारत से यह रोजगार उठा जा रहा है। लुनिया भी अपना पेशा छोड़ कर दूसरे पेशे कर रहे हैं।

**डलिया बुनना**—गांवों में डलियां अरहर, झाऊ की डलियां नदी के किनारे के गांवों में बनती हैं, और अरहर की दूसरे दूर के गांवों में झाऊ नदी के किनारे बहुत होती है।

**मिट्टी के बरतन**—बिलग्राम और सन्डीला में मिट्टी के बरतन अच्छे बनते हैं। बिलग्राम के कुम्हार अचार रखने के लिये रंगीन लुकदार मिट्टी के बरतन बनाने में मशहूर हैं।

**रेह**—बिलग्राम तहसील में रेह सबसे अधिक मिलता है। रेह से सज्जी बनाई जाती है। इसे धोबी कपड़ा धोने में इस्तेमाल करते हैं।

**धातु का सामान**—मल्लावां, शाहाबाद, और हैयत गंज में कसकुट और गिलट के बरतन ठठेरे बनाते हैं। यह पेशा यहां से उठा जा रहा है।

लोहे की तलवारें वगैरह हथियार मिहानो में बनाये जाते थे जिसके कारण इस प्रान्त की दूर दूर पर ख्याति थी। 'आर्मस ऐक्ट' ने इस व्यवसाय का नाश कर दिया है। अब भी वहां चाकू वगैरह बनते हैं लेकिन इस्पात की जगह सादे लोहे के।

बिलग्राम के ताले मशहूर हैं। यहां के तीन लुहार प्रयाग, ईश्वरी, और बलदेव ताले बनाने में बहुत अच्छे कारीगर हैं।

**कंकड़**—कंकड़ यहां बहुत सी जगहों पर खास कर ऊसर जमीन पर बहुत पाया जाता है। यह पक्की सड़कें बनाने के काम आता है।

★ ★ ★

# सीतापुर

सीतापुर अवध का एक जिला है। इसके पश्चिम और दक्षिण-पश्चिम में गोमती नदी इसे हरदोई जिले से अलग करती है। इसके पूर्व में बहरायच का जिला और घाघरा नदी है। उत्तर में खीरी जिला है। दक्षिण में लखनऊ और बाराबंकी के जिले हैं जो गोमती और घाघरा के बीच में स्थित हैं। सीतापुर जिला कुछ कुछ आयताकार है। इसकी अधिक से अधिक लम्बाई ७० मील और चौड़ाई ५५ मील है। इसका क्षेत्रफल २२५३ वर्ग मील है और जनसंख्या ११,३८,-००० है। सीतापुर जिले के दो प्रधान प्राकृतिक विभाग हैं। (१) ऊंचा मैदान जो अधिक बड़ा है और जिससे नदियों के बीचवाली द्वाबा की जमीन शामिल है। (२) गांजर या निचला प्रदेश। ऊंचा मैदान प्रायः समतल लहर दार प्रदेश है। इसको नदियों ने कुछ काट दिया है। नदियों के पास कुछ नीची जमीन है। बीच वाले द्वाबा के मध्यवर्ती भाग की जमीन कुछ ऊंची है। फिर भी यहां पहाड़ी का नाम नहीं है भूमि का ढाल उत्तर-पश्चिम से दक्षिण-पूर्व की ओर भूमि की उंचाई केवल ४०० फुट है।

गांजर ऊंचे किनारों के बीच में निचली भूमि है इसके पश्चिम में पानी का ऊंचा किनारा है।

दक्षिण की ओर चौका नदी है। इसके दक्षिण में चौका की पुरानी धारा है। यह निचला मैदान कड़ा चिकनी मिट्टी का बना है। इसे उन असंख्य-धाराओं ने काट दिया है जो घाघरा के ऊंचे रेतीले किनारे के पास समाप्त हो जाती हैं। हर साल बाढ़ के दिनों में पानी डूब जाता है। कहीं पानी कुछ ही इंच गहरा होता है। कहीं इसकी गहराई आठ फुट हो

जाती है। इस ओर गांव ऊंचे स्थानों पर बसे हैं। भयानक बाढ़ में कभी कभी गांव छोड़ना पड़ता है। आना जाना केवल नाव द्वारा हो सकता है। पश्चिम की ओर धारा मन्द रहती है और खेतों को कम हानि होती है। पूर्व की ओर धारा प्रबल होती है। इधर खरीफ की फसल एकदम नष्ट हो जाती है। प्रबल-धार में हलके बारीक कण आगे बह जाते हैं। बालू के बड़े और मोटे कण नीचे बैठ जाते हैं। अधिक नमी रहने के कारण रेह ऊपर प्रगट हो जाता है।

सीतापुर का समस्त जिला उपजाऊ कांप (कछारी मिट्टी) का बना है। ऊंचे भाग की मटियार मिट्टी अधिक ऊपजाऊ है। कहीं कड़ी चिकनी मिट्टी है। कहीं भूड़ है। गोमती और सयाना नदी के पड़ोस में बलुई मिट्टी का अभाव है। नदियों के ऊंचे किनारों और पानी की धारा के बीच में तराई है। तराई की चौड़ाई सब जगह समान नहीं है।

गोमती नदी सीतापुर जिले की सबसे अधिक पश्चिमी नदी है। यह पीलीभीत की तराई से निकलती है। और खीरी जिले को पार करके पकरिया गांव के पास उत्तरी पश्चिमी सिरे पर सीतापुर जिले में प्रवेश करती है। चन्दा, मिसिटेव और औरंगाबाद की पश्चिमी सीमा पर गोमती बड़ी टेढ़ी चाल से बहती है। खानपुर गांव के पास सीतापुर जिले को छोड़कर यह लखनऊ जिले में प्रवेश करती है। गोमती की तली रेतीली है। इस जिले में प्राय: सब कहीं इसमें नाव चल सकती हैं। शाहजहांपुर जिले की मोती झील से निकलने वाली कैटनी और खीरी जिले से निकलने वाली सवासर्यान नदियां गोमती में मिलती है।

निचले प्रदेश की प्रधान नदी चौका है। तम्बौर के पास यह खीरी जिले से सीतापुर में प्रवेश करती हैं। सीतापुर को पार करने के बाद यह बाराबंकी जिले में पहुँचती है और घाघरा में मिल जाती है। वर्षा ऋतु में इसमें भयानक बाढ़ आती हैं। केवानी नदी एक झील से निकल कर बिस्वा परगने के धर्मपुर गांव के पास चौका में मिल जाती है।

घाघरा धुर उत्तरी सिरे पर अवध की सबसे बड़ी नदी है इसकी तली बड़ी चौड़ी और किनारे ऊंचे हैं। इसमें से सब कहीं नावें चल सकती हैं। इसमें कहीं पांज नहीं है ऊपरी भाग में इसे कौरियाला कहते हैं। इसमें खीरी और बहरायच के बन की लकड़ी के बेड़े आते हैं और वह बहरामघाट के पास उतारे जाते हैं।

सीतापुर जिले के कुछ भागों (जैसे गांजर तराई) में अच्छी खेती नहीं होती है। लेकिन एक दम ऊसर भाग बहुत कम है। दाल, धान, कादों, ज्वार बाजरा, अफीम, चना, गेहूँ, जौ, मक्का, गन्ना और तिलहन यहीं की प्रधान फसलें हैं। बिसवां तहसील में तम्बाकू अधिक होती है। अनाज, चना, तिलहन, गुड़ और अफीम बाहर भेजी जाती है। कपड़ा, धान और नमक बाहर से आती है।

अटरिया गांव रुहेलखंड कमायूं रेलवे का एक स्टेशन है और सिधौली से आठ मील दक्षिण की ओर है। लाइन के पश्चिम में सीतापुर से लखनऊ को पक्की सड़क जाती है। गांव के बसाने वाले एक पंवार राजपूत सरदार ने अपने घरके ऊपर एक अटारी बनवाई थी। इसी लिये इसका यह नाम पड़ा।

औरंगाबाद का छोटा कस्बा गोमती से ३ मील पूर्व की ओर नीमखार से ४ मील दूर है। यहां के जागीरदार के पूर्वजों को औरंगजेब से जागीर मिली थी। इस लिये औरंगजेब के सम्मानार्थ इसका नाम औरंगाबाद रक्खा गया। इसके पड़ोस में एक प्रसिद्ध ताल है। बाजार सप्ताह में २ बार लगता है।

बड़ा गांव सीतापुर से १९ मील की दूरी पर एक पुराना गांव है। यहां शक्कर बनाई जाती है और गुड़ शक्कर कपास, नमक और लोहे का व्यापार होता है।

बाड़ी कस्बा पश्चिमी सीमा से मिला हुआ सर्यान नदी के पास स्थित है। मिस्रिख से सिधौली को जाने वाली सड़क यहां होकर जाती है। यह सिधौली से ३ मील दूर है। पहले बाड़ी अधिक प्रसिद्ध था। कहते हैं हुमायूं बादशाह का एक लड़का इधर सैर करने आया था उसने यहां एक बाड़ी बनवाई आगे चल कर यहां गांव बस गया।

बिस्वां इसी नाम की तहसील का केन्द्र स्थान है। यह सीतापुर से २१ मील पूर्व की ओर है। यहां तक पक्की सड़क आती है। एक पक्की सड़क

दक्षिण-पश्चिम की ओर सिधौली को जाती है और रेलवे से मिलाती है। महमूदाबाद, बहराम घाट, लखीमपुर और (रसूलपुर में चौका और कचहरी में घाघरा को पार करके) बहरायच को गई हैं। तहसील और थाने के अतिरिक्त यहां हाई स्कूल, थाना, डाकखाना और बाजार है। रायगंज और किला दरवाज़ा में सप्ताह में दो बार बाजार लगता है। बिस्वां की तम्बाकू बहुत प्रसिद्ध है। यहां ताज़िया और ताबूत भी अच्छे बनते हैं। यहां का गाढ़ा, छपा हुआ कपड़ा, मिट्टी के बर्तन बहुत बढ़िया बनते हैं। बिस्वां में २१ मुसलमानों के और ७० हिन्दुओं के धार्मिक स्थान हैं। कस्बे के बाहर हर सप्ताह मन्माराम का मेला लगता है। प्रायः ६०० वर्ष पहले विश्वेसर नाथ नामी एक हिन्दू साधू ने इसे बसाया था इसी से इसका यह नाम पड़ा। इस साधू के रहने के स्थान पर एक मन्दिर बना है।

चन्द्रा गांव कठना नदी के पश्चिमी किनारे पर सीतापुर से १६ मील दूर एक पक्की सड़क पर स्थित है जो सीतापुर से शाहजहांपुर को जाती है। यहां से पिलानी हरदोई और औरंगाबाद (खीरी) को सड़कें गई हैं। हरगांव पहले एक बड़ा शहर था। कहते हैं इसे हरिश्चन्द्र ने बसाया था। इसे फिर राजा बैराट और विक्रमादित्य ने सुधरवाया था। लेकिन प्राचीन नगर का अब केवल विशाल और ऊंचा खेड़ा शेष बचा है। सूरज कुंड भी पुराना है। यहां और जेठ और कार्तिक में मेला लगता है। एक टीले पर मुसलमानों की दरगाह है जो हिन्दू मन्दिर के स्थान पर मन्दिर के ही मसाले से बनी हुई मालूम होती है। सीतापुर से बरेली को जाने वाली रेलवे लाइन का स्टेशन पश्चिम की ओर है। यह सीतापुर और खीरी के बीच में है। यहां से महोली और लहरपुर को सड़कें गई हैं। यहां थाना, डाकखाना और स्कूल है।

जहांगीराबाद गांव केवानी नदी के दाहिने किनारे पर सीतापुर से २९ मील और बिस्वां से आठ मील दूर है। यहां होकर सीतापुर से बहरायच को पक्की सड़क जाती है। यहां के जुलाहे गाढ़ा और दूसरा कपड़ा बनाते हैं। बाजार सप्ताह में दो बार लगता है। यहाँ महमूदाबाद के ताल्लुकेदार की जमींदारी है।

कमालपुर सीतापुर से बरेली को जाने वाली रेलवे लाइन का स्टेशन हो जाने से बहुत बढ़ गया है। यहाँ होकर स्कूल, थाना और डाकखाना है।

खैराबाद जिले भर में दूसरे नम्बर का क़स्बा है। यह सीतापुर से ५ मील दूर है। यहाँ होकर सीतापुर से लखनऊ को पक्की सड़क गई है। एक दूसरी सड़क खैराबाद के दक्षिणी भाग से रेलवे स्टेशन को गई है खैराबाद से नीम खार मछरे है। और लहर पुर को सड़कें गई हैं। बहुत पहले खैराबाद में मुसलमान, सूबेदार का निवास स्थान था। अंग्रेजी कमिश्नर आरम्भ से ही सीतापुर में रहने लगा। खैराबाद को खैरा नाम के एक पासी ने ११वीं शताब्दी में बसाया था। सम्भव है यह नाम प्राचीन मनसचत्र तीर्थ को बदल कर रख दिया गया हो। यह तीर्थ विक्रमादित्य के समय से प्रसिद्ध था। यहां के तीर्थ में स्नान करने से कई रोग दूर हो जाते हैं। यहां ३० हिन्दू मन्दिर, ४० मस्जिदें और कई अकबर के समय की पुरानी इमारतें हैं। यहां थाना, डाकखाना और हाई स्कूल है। यहां चार बाजार रोज़ लगता है। यहां रामलीला के अवसर पर और जनवरी महीने में मेला लगता है।

लहरपुर सीतापुर से उत्तर-पूर्व की ओर १७ मील दूर है। यहां से एक सड़क सीतापुर की ओर दूसरा घाघरा के किनारे मल्लनपुर को गई है। यहां से बिस्वां और लखीमपुर को भी सड़क गई है। लहरपुर से डेढ़ मील की दूरी पर केवानी नदी बहती है। यह गरमी में पांज हो जाती है और दिनों में इसमें नावें चलती हैं। यहां थाना, डाकखाना और मिडिल स्कूल है। यहां कई मन्दिर और मस्जिदें हैं। कहा जाता है कि फीरोज़शाह सैयद सालार के मकबरे को ज़ियारत करने बहरायच को जा रहा था तब १३७४ ईस्वी में आपने इसे बसाया था।

कहा जाता है अकबर के प्रसिद्ध मन्त्री राजा टोडरमल का जन्म यहीं लहरपुर में हुआ था। मछरेटा सीतापुर से १६ मील की दूरी पर खैराबाद से नीमखार (नैमिषारण्य) को जाने वाली सड़क पर स्थित है। प्रान्तीय सड़क यहां होकर लहरपुर से मिश्रिख को जाती है। कहा जाता है मछरेटा अकबर के समय में बसाया गया था। पहले यह सब प्रदेश तपभूमि थी। एक तपस्वी का नाम मछेन्दरनाथ था।

इसी से इस गांव का यह नाम पड़ा। यहां एक सराय, ९ मस्जिद ४ हिन्दू मन्दिर और एक ताल हैं। एक पुराने किले के भग्नावशेष हैं। यहां एक डाकखाना, एक मिडिल स्कूल है।

महाराज नगर सीतापुर से १६ मील और बिस्वां से ५ मील दूर है। यहां के बाजार में सूत के रस्से और शक्कर की बिक्री बहुत होती है। यहां एक पक्का ताल और दो मन्दिर हैं।

महमूदाबाद बिस्वां से बहरामघाट जानेवाली सड़क पर सीतापुर से २७ मील दूर है। यहां से एक पक्की सड़क सिधौली को और दूसरी पक्की सड़क चौकापार बाराबंकी जिले के कुर्सी नगर को जाती है। महमूदाबाद को वर्तमान राजा के पूर्वज नवाब महमूद ने बसाया था। यहां थाना डाकखाना और कालिवन स्कूल है। जेठ महीने के पहले इतवार को यहां नथुआ पीर का मुसलमानी मेला होता है।

महोली गांव कथना नदी के बायें किनारे के पास सीतापुर से शाहजहांपुर जाने वाली सड़क पर स्थित है। यह सीतापुर से १५ मील और शाहजहांपुर से ३८ मील दूर है। यहां थाना, डाकखाना और स्कूल है। बाजार सप्ताह में दो बार लगता है। अब से लगभग ४०० वर्ष पहले महिपाल नामी एक कुरमा ने एक पुराने गांव के स्थान पर एक गांव बसाया। इसी से उसका नाम महलो पड़ गया। नवाब शुजाउद्दौला के समय में यहां एक किला और कठना नदी का पुल बनवाया गया।

मनवन का पुराना गांव सरयान के बांये किनारे पर सीतापुर से लखनऊ को जाने वाली पक्की सड़क के पास सिधौली से ६ मील दूर है। यहां पर एक किले के भग्नावशेष और एक विशाल खेड़ा है। कहते हैं अयोध्या के राजा मानधाता ने इसे बसाया था। यह नदी के ऊंचे किनारे के ऊपर ५० एकड़ भूमि घेरे हुये है। इसमें बड़ी बड़ी ईंटें लगी थीं, यहां के कुछ भग्नावशेष लखनऊ के अजायबघर में पहुँचा दिये गये। डेढ़ मील की दूरी पर दूसरे भग्नावशेष हैं।

मिस्रिख का प्राचीन नगर इसी नाम की तहसील का केन्द्र स्थान है। यह सीतापुर से १३ मील की दूरी पर हरदोई को जाने वाली सड़क पर स्थित है। यहां से बाड़ी सिधौली, मछरहरा और बड़ा गांव को सड़क जाती है। यहां तहसील, थाना, मिडिल स्कूल है। बाजार सप्ताह में दो बार लगता है। कहा जाता है यहां के पवित्र कुंड में सब तीर्थों का जल मिश्रित है। यह पक्का कुंड बहुत पुराना है। इसी से इसका नाम मिश्रित या मिस्रिख पड़ा। यात्री लोग इसकी परिक्रमाकर के अपनी तीर्थ यात्रा समाप्त करते हैं। यह तीर्थ यात्रा नीमखार (नेमिषारण्य) से आरम्भ होती है। हरैया, साकिन, पाही कुतुब नगर, मण्डरावा, कोरौना, जरगवां, नीमखार (दुबारा) बरहटी स्थान पड़ते हैं। कहते हैं राजादधीचि ने स्थान की स्थापना की थी। राजा विक्रमादित्य ने इस सरोवर (कुंड) को बनवाया था। महारानी अहिल्याबाई ने इसकी मरम्मत करवाई। इसके चारों ओर मन्दिर हैं। दधीचि मन्दिर पुराना है। परिक्रमा का मेला फागुन में लगता है। दूसरा मेला कार्तिक पूर्णिमा को लगता है।

नीमखार (नैमिषारण्य) गोमती के बायें किनारे पर अत्यन्त पुराना और पवित्र तीर्थ स्थान है। यह सीतापुर से २० मील दूर है। यहां खैराबाद और सीतापुर से आने वाली सड़कें मिलती हैं। नीमखार पवित्र सरोवरों और मन्दिरों के लिये प्रसिद्ध है। कहते हैं नैमिषारण्य के पड़ोस में दस मील के घेरे में ८८,००० ऋषि तपस्या करते थे। अकबर के समय में यहां एक किला था। तीर्थ का व्यास ४० गज है। यह सर्व प्रसिद्ध है। पंच प्रयाग, गोदावरी, काशी, गंगोत्री और गोमती दूसरे तीर्थ हैं। यहीं ललता देवी का मन्दिर है। चक्रतीर्थ के दक्षिण-पश्चिम में एक ऊंचे टीले पर किला है। इस समय किले का केवल द्वार शेष है। कहते हैं कि पांडवों ने इस किले को बनवाया था। १३०५ में अलाउद्दीन खिलजी के मन्त्री हाहाजान ने इसे फिर से बनवाया। नीमखार में स्कूल और डाकघर है। सप्ताह में दो बार बाजार लगता है। फागुन मास और प्रति अमावस्या को चक्रतीर्थ का मेला लगता है।

पैंतेपुर बिस्वां से बहराम घाट को जाने वाली सड़क पर सीतापुर से ४२ मील दूर है। यहां अगहन में धनुषयज्ञ, कार्तिक में नानकसाह और शबान मुसलमानी महीने में मंसब अली का मेला होता

है। अब से लगभग ४०० वर्ष पहले पैंतेपाल ने इसे बसाया था। इसीसे इसका यह नाम पड़ा।

कुतुब नगर सीतापुर से १८ मील पश्चिम की ओर है। यहां से ३ मील पश्चिम में गोमती नदी बहती है। दधना मऊ के पास घाट है। घाट कठना और गोमती के संगम के नीचे है। ताल्लुकेदार का घर एक ऊँचे डीह पर बना है। अहाते के भीतर विश्वामित्र नाम का प्राचीन हिन्दू कूप और जम्बूद्वीप नाम का सरोवर है। कुतुब नगर के पास वाले कच्चे तालाब तक परिक्रमा करने वाले यात्री आया करते हैं। रामकोट गांव सीतापुर से मिश्रिख को जाने वाली सड़क पर है। इसके पास एक पुराना डीह है। कहा जाता है श्री रामचन्द्र जी ने इसे बसाया था। इसके पास एक सुन्दर ताल और शिवाला है। यहां दिवाली को मेला लगता है।

रामपुर मथुरा गांव चौका की एक सहायक नदी के बायें किनारे से पांच मील दूर है। अगहन में यहां धनुष यज्ञ का मेला लगता है।

स्यूटा का बड़ा गांव सीतापुर से ३२ मील पूर्व की ओर है। गांव में बाजार दो बार लगता है। कहते हैं कि कन्नौज के आल्हा ने यहां किला बनवाया था यहां एक बड़ा खेड़ा और पुराने भग्नावशेष हैं। आल्हा की स्मृति में हर पूर्णमासी को एक मेला लगता है। बसन्त पञ्चिमी को भी एक छोटा मेला लगता है।

सिधौली इसी नाम की तहसील का केन्द्र स्थान है। यह सीतापुर से लखनऊ को जाने वाली प्रधान सड़क पर स्थित है। एक सड़क बिस्वां को जाती है। यहां एक रेलवे स्टेशन भी है। आने जाने की सुविधा के कारण हो बारी से हटाकर सिधौली में तहसील का केन्द्र स्थान बनाया गया। यहां से अनाज बाहर बहुत जाता है। मंगलवार और शनिवार को बाजार लगता है।

## सीतापुर

सीतापुर सरयान नदी के दाहिने किनारे पर स्थित है। जब अवध अंग्रेजी राज्य में नहीं मिलाया गया था उस समय यह एक छोटा गांव था। १८५६ में नदी के बायें किनारे पर छावनी और सिविल स्टेशन बनी। यहीं हाई स्कूल और बाजार (टामसन गंज प्रथम डिप्टी कलेक्टर के सम्मानार्थ) बना। गदर के बाद अंग्रेजी फौज को रखने के लिये यहां की छावनी और अधिक बढ़ गई। जिले का केन्द्र स्थान बन जाने से सीतापुर तेजी से बढ़ा। यहां होकर शाहजहांपुर से लखनऊ को पक्की सड़क जाती है। नदी के ऊपर पक्का पुल बना है। पूर्व की ओर रेलवे स्टेशन है। यहां से अनाज, गुड़, तिलहन और दाल बाहर को भेजी जाती है। कहते हैं कि तीर्थयात्रा के अवसर पर सीता जी यहां ठहरी थीं इसीलिये इसका यह नाम पड़ा। यहां हाथ से कपड़ा बुनने और गुड़ बनाने का काम बहुत होता है।

तम्बौर कस्बा सीतापुर से ३५ मील उत्तर-पूर्व की ओर है। यहां होकर सीतापुर से मल्लनपुर और बहरायच को सड़क जाती है। मल्लनपुर यहां से केवल ६ मील दूर है। तम्बौर कस्बा चौका और डहवर नदियों के बीच में स्थित है। चौकानदी ४ मील पश्चिम को ओर है। डहवर नदी २ मील पूर्व की ओर है। दूबा की भूमि में कई पुरानी धारायें हैं जो वर्षाऋतु में इस भाग को दुर्गम बना देती हैं। यहां थाना, डाकघर और स्कूल है। डहवर नदी के किनारे आल्हा का एक किला था। मुहम्मदगोरी ने इसी स्थान पर दूसरा किला बनवाया। ९११ हिजरी में नदी ने नगर और किले को काटकर बहा दिया।

## सीतापुर जिले का कारबार

सीतापुर जिले की जमीन दो भागों में बटी हुई है। ऊँची जमीन को उपरहार और नीची जमीन को गांजर कहते हैं। गांजर में दलदल और छोटे छोटे नाले बहुत हैं। वर्षाऋतु में यह सब प्रदेश पानी में डूब जाता है। चौका की बाढ़ में फसल को बड़ा नुकसान होता है। बाढ़ में कभी अच्छी मिट्टी और कभी बालू पड़ जाती है। यहां ईख बहुत होती है। चावल भी उगाया जाता है। झपटा, गोंदी और कांस और झाऊ ऐसे भागों में है जहां की मिट्टी अच्छी नहीं है। कुछ भागों में झाऊ और बबूल के जंगल हैं। गांजर में भांग भी बहुत होती है। झीलों और तालाबों में मछली बहुत मारी जाती हैं। उपरहार में गेहूँ ज्वार बाजरा आदि की फसलें अच्छी होती हैं। यहां तन्दुरुस्ती भी ठीक रहती है। आने जाने में सुविधा है। सड़कों पर सवारी चल सकती है। पर

गांजर में पैदल और नाव पर ही आना जाना हो सकता है।

सीतापुर में मकानों के लिये कंकड़ से चूना तयार किया जाता है। जनवरी से जून तक बहुत से भागों में लूनी मिट्टी से शोरा तयार किया जाता है।

टामसन गंज (सीतापुर), सलेमपुर, तरोमपुर, जहांगीराबाद, बिसवा मिसरिख और मिधौली में दाल दलने का काम बहुत होता है। लोहे का काम बहुत से गांवों में होता है। पर तांबा, जस्ता और सीसा को मिलाकर बटुआ, बटलोई आदि बरतन बनाने का काम महाराज नगर, कुतुब नगर में ही होता है। बड़े बड़े बरतनों के सांचे खैराबाद में बनते हैं। कुतब नगर में हुक्का, कटोरा, गिलास कांस, फूल और गिलट के बनते हैं। कसकुट में जस्ते के ज़ेवर मिलाने से गिलट तयार होता है। गिलट के बरतन जर्मन सिल्वर की तरह चमकते हैं।

मनिहार लोग लाख की चूड़ियां बनाते हैं। सूती कपड़ा बनाने और फर्द आदि रँगने का काम साधारण है। गड़रिये लोग मोटे और मज़बूत ऊनी कम्बल बुनते हैं। जेल में बेंत की चटाई, सन की टाट पट्टी, दुसूती, दरी और कालीन बुनने का काम होता है।

★ ★ ★

# खीरी (लखीमपुर)

खीरी अवध का सबसे बड़ा जिला है और धुर उत्तरी-पूर्वी सिरे पर स्थित है पूर्व में कौरियाला नदी इसे बहराइच से अलग करती है। इसके दक्षिण में हरदोई और सीतापुर के जिले हैं। पश्चिम में शाहजहांपुर और पीलीभीत के जिले हैं इसके उत्तर में नैपाल राज्य है। इसका आकार एक विषम त्रिभुज के समान है। इसकी दक्षिणी भुजा ८२ मील उत्तरी-पूर्वी ६१ मील और उत्तरी-पश्चिमी भुजा ७१ मील है। इसका क्षेत्रफल २९७६ वर्गमील है। पहले नैपाल और खीरी के बीच में मोहन नदी सीमा मान ली गई थी। पर इस नदी का मार्ग बदलता रहता था। अतः १९०० ईस्वी में नई सीमा निर्धारित की गई। नदी के किनारे किनारे थोड़ी थोड़ी दूर पर पत्थर के खम्भे गाड़ दिये गये। खम्भों के बीच में ५० फुट चौड़ी पेटी साफ कर ली गई है। इसके बीच में गहरी खाई है।

यह जिला एक विशाल कछारी मैदान है। उत्तरी आधा भाग वन से ढका है। पानी की असंख्य धाराओं ने इसे स्थान स्थान पर काट दिया है। केवल नदियों के ऊंचे नीचे किनारों से कहीं कहीं विषम भूमि मालूम होती है। नदियों के बीच में द्वाबा कुछ ऊंचा है। नदियां उत्तर-पश्चिम से दक्षिण-पूर्व की ओर बहती हैं। इनके पड़ोस में कछार है। धुर उत्तर में भूमि की ऊंचाई ६०० फुट है। दक्षिणी सिरे पर मोहन नदी के पास भूमि केवल ३७५ फुट ऊंची है। मैलानी की ऊंचाई ५८५ फुट है लखीमपुर ४८३ फुट ऊंचा है।

खीरी जिला चार प्राकृतिक भागों में बटा हुआ है। दक्षिण-पश्चिम में गोमती पार वाले प्रदेश में पसगावां और मुहम्मदी परगने हैं जो शाहजहांपुर जिले के पास हैं। पश्चिमी भाग नीचा है। यह घास और ढाक के जङ्गल से ढका है। इसके कुछ भाग में खेती होती है।

मध्यवर्ती भाग में उपजाऊ मटियार है। इसके पूर्व में गोमती के पास बलुई भूमि है।

गोमती और कठना नदियों का द्वाबा उपरहार कहलाता है। यह ऊंचा और रेतीला है।' केवल औरंगाबाद के दक्षिण में कुछ नीची जमीन है। इसमें सिंचाई की कमी है। कठना के पूर्व में अत्यन्त उपजाऊ भाग है। केवल नदियों के पास बलुई भूमि है। खैरा और हैदराबाद परगनों में नीची भूमि है। यहां चिकनी मिट्टी है। कुक्का मैलानी में आधे से अधिक प्रदेश बन से ढका है। यहां जङ्गली जानवर बड़ी हानि पहुँचाते हैं।

उलपर एक जङ्गली भाग है। इसे असख्य धाराओं ने काट दिया है। वर्षा ऋतु में यह बाढ़ के पानी से ढक जाता है। चौका नदी बाढ़ के बाद उपजाऊ मिट्टी छोड़ देती है। इसमें धान बहुत होता है। छोड़ी हुई कौरियाला की मिट्टी अच्छी नहीं होती है।

सुकेता एक छोटी नदी है। (नाला) यह शाहजहांपुर जिले से निकलती है और कुछ दूर तक खीरी जिले की दक्षिणी-पश्चिमी सीमा बनाती है। आगे बह कर यह हरदोई जिले में पहुँचती है। गोमती नदी पीलीभीत और शाहजहांपुर जिलों में ४२ मील बहने के बाद रामपुर

गांव के पास खीरी जिले में प्रवेश करती है। औरंगाबाद के खीरी जिले को छोड़ कर यह सीतापुर और हरदोई जिलों के बीच में सीमा बनाती है। शाहजहांपुर से लखीमपुर और सीतापुर को जाने वाली सड़कों पर पुल बना है। और भागों में इसे नाव द्वारा पार किया जाता है। कठना नदी मोती झील के पास शाहजहांपुर जिले से निकलती है। १०० मील बहने के बाद यह गोमती में मिल जाती है।

उल नदी ज़िले के मध्य भाग में बहती है। यह पीली-भीत ज़िले में पूरनपुर के दलदलों से निकलती है। खीरी जिले में टेढ़े मार्ग से बह कर चौका में मिल जाती है।

उल के आगे चौका या सारदा की घाटी है। इसमें काली और सरजू नदियों का जल मिला रहता है। काली नदी तिब्बत और अल्मोड़ा को पृथक करने वाले हिमागारों से निकलती है। जब यह पीलीभीत की तराई और नैपाल के बीच में सीमा बनाती है तब इसे सारदा कहते हैं। पीलीभीत ज़िले में मोतीघाट के पास इसमें चौका मिलती है। बहराम घाट के पास यह घाघरा में मिल जाती है। खीरी जिले में यह बहुधा अपना मार्ग बदलती रहती है।

सरजू या सहेली नदी नैपाल से आती है। शिताबाघाट के पास यह कौरियाला में मिल जाती है।

मोहन नदी भी नैपाल से आती है। चन्दन चौकी के पास यह एक बड़ी नदी हो जाती है। रामनगर के पास यह कौरियाला में मिलती है।

खीरी जिले का वन अवध के दूसरे जिलों से कहीं अधिक बड़ा है। इसकी लकड़ी भी बहुत अच्छी है। चौका कठना और गोमती नदियों के किनारे बन है।

बन प्रदेश हरदोई और सीतापुर जिलों की सीमा तक चला गया है। लगभग ५६३ वर्ग मील में बन है। बन में साल के लट्ठे और स्लीपर बड़े मूल्यवान होते हैं। यह सारदा पार वाले प्रदेश से आते हैं। हल्दू, जामुन, शीशम, असैना और दूसरे पेड़ भी काम के होते हैं। बन से बैब कांस, मूंज, कत्था और शहद भी मिलती है। यह सामान रेल द्वारा बाहर भेजा जाता है।

खीरी जिला खेती में पिछड़ा हुआ है। जिले में ३९ फीसदी भूमि खेती के योग्य है। कुछ भागों में बलुई भूड़ है। ऊँचे भागों में दुमट और नीचे भागों में मटियार या चिकनी मिट्टी है। चौका पार टपार मिट्टी मिलती है।

इस जिले की प्रधान उपज धान है। धान कई प्रकार का होता है। गन्ना भी बहुत होता है। गन्ने से गुड़ और शक्कर बनाई जाती है। रबी की फसलों में गेहूं, जौ, चना उगाया जाता है। खरीफ में ज्वार बाजरा बहुत होता है।

औरङ्गाबाद एक बड़ा गांव है। यह लखीमपुर से चपरतला को जाने वाली सड़क पर पड़ता है। यहां से पांच मील की दूरी पर सीतापुर से शाहजहांपुर को सड़क जाती है। इसे नवाब सैय्यद खुर्रम ने बसाया था। औरंगज़ेब के सम्मानार्थ इसका नाम औरंगाबाद पड़ा। यहां उन भागे हुये अंग्रेज़ों के मकबरे हैं जो गदर में यहां मार डाले गये थे।

बरवार यह बड़ा गांव गोमती से २ मील दूर है। यह औरंगाबाद से मुहम्मदी को जाने वाली सड़क पर पड़ता है। पहले यह एक बड़े परगने का केन्द्र स्थान था। यहां एक किले के खंडहर हैं जिसे नवाब मुक्तादी खां ने औरंगजेब के समय में बनवाया था। यहां एक मिडिल स्कूल है। बाज़ार सप्ताह में दो बार लगता है।

धौरहरा कस्बा सुखनी नदी के दक्षिणी किनारे पर स्थित है। यह लखीमपुर से २० मील दूर है। यहां थाना और डाकखाना है। माता स्थान के पास एक जीर्ण मन्दिर है। पहले यह एक छोटे राज्य की राजधानी था। गदर में यहां शाहजहांपुर से भागकर आये हुये अंग्रेज़ों ने शरण ली थी। लेकिन राजा पर अवध के नवाब का ज़ोर पड़ा। उसने इन्हें विद्रोहियों को सौंप दिया। अन्त में राजा को फांसी दी गई और उसकी जायदाद ज़ब्त कर ली गई।

फीरोजाबाद एक छोटा गांव है। यह धौरहरा से १८ मील दूर है। कहते हैं बहरायच को जाते समय फीरोज़-शाह ने इसे बसाया था। यहां एक कच्ची गढ़ी के खंडहर हैं।

गोला का प्रसिद्ध गाँव लखीमपुर से २२ मील की दूरी पर मुहम्मदी को जाने वाली सड़क पर स्थित है। जिस नदी पर गोला स्थित था वह लुप्त हो गई। नगर कुछ ऊंचे टीले पर बसा है। बाज़ार पश्चिम की ओर है। यहां गुड़ और अनाज का व्यापार होता है। पूर्व की ओर गोकरन-नाथ का मन्दिर और सरोवर है जिसके चारो ओर दूसरे छोटे छोटे मन्दिर हैं। यहां फागुन और चैत के महीने में मेला लगता है। शिवाला पड़ोस की भूमि से कुछ नीचा

बना है। लिंग एक प्रकार के कूप में स्थित है। कहते हैं लिंग पर जो चिन्ह है वह रावण के अंगूठे का है जब वह इसे लङ्का ले जा रहा था। सम्भव है किसी मुसलमान ने इस पर आघात किया हो। यहां बौद्धों का भी केन्द्र था।

हैदराबाद गांव गोला से ५ मील दक्षिण-पूर्व की ओर स्थित है। गोला से शाहजहांपुर को जाने वाली सड़क यहां से कुछ ही दूर है। कहते हैं पिहानी के सैयदों के एक सैय्यद हैदरनामी नौकर ने इसे बसाया था। यहां एक स्कूल है। बाज़ार सप्ताह में दो बार लगता है।

इसा नगर ढौरहरा से १२ मील की दूरी पर मल्लनपुर को जाने वाली सडक पर कौरियाला के ऊंचे किनारे पर स्थित है। गाँव चोहानों के पुराने किले के चारों ओर बसा है। कौरियाला नदी ४ मील पूर्व की ओर है। यहां थाना डाकखाना और स्कूल है। सप्ताह में दो बार बाज़ार लगता है। कफारा गांव ढौरहरा से निघासन तहसील को जाने वाली सड़क पर स्थित है। यह सुखनी नदी के ऊंचे किनारे पर स्थित है। बाजार सप्ताह में दो बार विक्रमगंज में लगता है। पश्चिम की ओर एक झील के किनारे लीलानाथ महादेव का मन्दिर है।

कैमहरा गाँव लखीमपुर से मुहम्मदी और शाहजहांपुर को जाने वाली सड़क पर स्थित है। पास ही फरदहन रेलवे स्टेशन है। गांव के पश्चिम में जमवारी नदी है।

खैरीगढ़ गांव सरयू के बांये किनारे पर निघासन से ११ मील दूर है। गांव के उत्तर पश्चिम में संरक्षित वन है। तीन मील पश्चिम की ओर किला गौरी शाह के खंडहर हैं। कहते हैं कि इसे शहाबुद्दीन गोरी ने बनवाया था। किले के बाहर किसी हिन्दू भवन के नक्काशीदार भग्नावशेष हैं। यहीं एक जीवित घोड़े के बराबर पत्थर का घोड़ा था। यह लखनऊ भेज दिया गया। इसकी गर्दन पर समुद्र गुप्त का नाम खुदा था।

खीरी कस्बा लखीमपुर से तीन मील दूर है। पास ही पश्चिम की ओर सीतापुर से बरेली को जाने वाली रेलवे का स्टेशन है। यहाँ मिडिल स्कूल और अफीम की गोदाम है। यहां कई छोटे मन्दिर, इमाम बाड़े और मस्जिदें हैं।

कक्रा गांव में गोला से भीरा और लखीमपुर से पीलीभीत को जाने वाली सड़कें मिलती हैं। यह गोला से १० मील दूर है। रेलवे स्टेशन ३ मील दक्षिण-पश्चिम की ओर जङ्गल में है। यहां बहुत समय तक मुसलमानों का अधिकार रहा। उन्नीसवीं सदी में यहां एक गढ़ी बनाई गई। इसके दरवाजे पर एक चपटा मकबरा अपने भाई को मारने वाले का है।

लखीमपुर जिले का केन्द्र-स्थान है। यह उल नदी के दक्षिणी ऊंचे किनारे पर बसा है। दक्षिण-पश्चिम की ओर रेलवे स्टेशन है। रेल द्वारा यह सीतापुर से २८ मील और पीलीभीत से ६० मील दूर है। पूर्व और दक्षिण पूव की ओर सिविल लाइन है जहां अधिकतर योरुपीय लोगों के बंगले हैं। यहां चार बाज़ार लगते हैं। इनमें से दो यहां के कलक्टरों के नाम से प्रसिद्ध हैं। यहां गुड़ और अन्न की बिक्री होती है। यहां तहसील, थाना, कचहरी और हाई स्कूल है। यहीं संकटा देवी का प्रसिद्ध मेला लगता है लखीमपुर से बहरामघाट, बहरायच और दूसरे स्थानों को सड़कें गई हैं। मैलानी गांव बन के किनारे पर शाहजहांपुर जिले की सीमा के पास स्थित है। यहां होकर लखीमपुर से पीलीभीत को सडक जाती है। लकड़ी और लट्ठों का व्यापार का यह एक बड़ा केन्द्र है। यहां डाकखाना और स्कूल है। बाज़ार सप्ताह में दो बार लगता है।

मटेरागांग कौरियाला के किनारे पर लखीमपुर से २० मील दक्षिण-पश्चिम की ओर बसा है। उस पार बहरायच जिले में पहुँचने के लिये यहां नावें रहती हैं। इसके उत्तर में बन है। उत्तर-पश्चिम की ओर झील है। यह धौरहरा के राजा से जब्त करके कपूर्थला के राजा को दे दिया गया। मितौली गांव कठना नदी से २ मील की दूरी पर लखीमपुर से २० मील दक्षिण-पश्चिम की ओर है। यहां थाना, डाकखाना और स्कूल है। बाज़ार सप्ताह में दो बार लगता है। यहां गदर के समय के प्रसिद्ध राजा-लोने सिंह की राजधानी थी। जहां इस समय थाना है वहीं किला था। गदर के बाद यह गांव ज़ब्त कर लिया गया और कप्तान ओर को सौंप दिया गया। कप्तान ओर ने इसे महमूदाबाद के राजा के हाथ बेंच दिया।

मुहम्मदी इसी नाम की तहसील का केन्द्र है और लखीमपुर से शाहजहांपुर को जाने वाली सड़क पर स्थित है। यह लखीमपुर से ३६ मील और शाहजहांपुर से २० मील दूर है। गोमती नदी यहां से ३ मील पूर्व की ओर बहती है। यहां से उत्तर-पश्चिम की ओर पुवायें और दक्षिण-पूर्व की ओर औरंगाबाद को सडक गई है। अवध को अंग्रेज़ी राज्य में मिलाने के समय मुहम्मदी ज़िले का केन्द्र स्थान था। १८५६ ई० में लखीमपुर जिले का केन्द्र-

स्थान बना। इस समय मुहम्मदी में तहसील, थाना, डाकखाना और मिडिल स्कूल है। औरंगजेब के समय में यहां एक किला बनाया गया जो इस समय खंडहर है। यहाँ एक इमामबाड़ा और सुन्दर बग़ीचे हैं। सप्ताह में दो बार बाजार लगता है।

निघासन इसी नाम की तहसील का केन्द्र स्थान है। यह छोटा गांव लखीमपुर से २३ मील उत्तर की ओर स्थित है। यहां तहसील, थाना, डाकखाना और स्कूल है।

ओयल एक बड़ा गांव और रुहेलखंड कमायूं रेलवे का स्टेशन है। यहां एक सुन्दर मन्दिर है जिसे यहां के एक चौहान ताल्लुकेदार ने बनवाया था। राजा का महल गांव से दक्षिण-पूर्व की ओर स्थित है। ओयल में डाकखाना और स्कूल है। बाजार सप्ताह में दो बार लगता है। पैला गांव लखीमपुर से १२ मील दूर है। बाज़ार सप्ताह में दो बार लगता है। यहाँ पांचो पीर का मेला लगता है।

पलिया गांव निघासन तहसील में एक छोटा रेलवे स्टेशन है। यहां से अनाज और लकड़ी बाहर भेजी जाती है।

पसगवां मुहम्मदी से ६ मील दूर है। यहां थाना और स्कूल है। बाज़ार सप्ताह में दो बार लगता है। सिकन्दराबाद गांव सर्यान नदी से एक मील दूर है। यहां डाकखाना और स्कूल है। बाजार सप्ताह में दो बार लगता है।

फुलबिहार गांव लखीमपुर से ८ मील उत्तर की ओर है। यहां थाना और स्कूल है। बाज़ार सप्ताह में दो बार लगता है।

## खीरी ज़िले का कारबार

अवध भर में खीरी ज़िला सब से अधिक बड़ा है और उत्तरी-पश्चिमी कोने पर बसा है। यह ज़िला एक कछारी मैदान है पर इसका उत्तरी भाग बन से ढका है। शेष भाग नदी नालों से कटा फटा है। चौका और दूसरी नदियों के पास वाले भागों में अक्सर बाढ़ आती है।

इस ज़िले में लगभग २० लाख मन गेहूं पैदा होता है और १० लाख मन गेहूं कराची बन्दरगाह से इंगलैंड, बेल्जियम, जर्मनी आदि देशों को भेजा जाता है। ८ लाख मन चना भी बाहर भेजा जाता है। १० लाख मन ज्वार भी बाहर जाती है।

इस ज़िले में सालका बन बहुत है। शीशम, आसना और हल्दू भी बहुत है। ठेकेदार पेड़ काटते हैं। रेल बन के बीच में होकर गई है। इस लिये लकड़ी ढोने में कोई कठिनाई नहीं पड़ती है। लकड़ी के अतिरिक्त यहाँ के बन से रंग, दियासलाई आदि बहुत सी चीजें तयार हो सकती हैं। शहद, मोम और लाख कई भागों से निकाली जाती है। सिंगई राज्य और कुछ दूसरे भागों में खैर के पेड़ों से कत्था निकाला जाता है। गोला गोरखनाथ के पास सिलिया कंकड़ बहुत मिलता है और चूना तयार करने के काम आता है। लोनिया मिट्टी से शोरा बनाया जाता है और फर्रुखाबाद के कोठी वालों के हाथ बेच दिया जाता है।

ओयल और केमहरा में फूल और कसकुट के बरतन बनाये जाते हैं। ओयल में १०० मन बरतन प्रति दिन बनते हैं।

कई गांवों में सनई की टाट पट्टी बनाई जाती हैं। लखीमपुर और गोकरननाथ व्यापार के केन्द्र हैं। गोला गुड़ और अनाज के व्यापार के लिये प्रसिद्ध है। लखीमपुर कपड़ा और तेलहन के लिये मशहूर है। लखीमपुर में चुंगी न लगने के कारण कपड़ा कानपुर के भाव से बिकता है। सीतापुर, शाहजहांपुर, पीलीभीत और बहरायच के छोटे छोटे व्यापारी यहीं से कपड़ा मोल ले जाते हैं।

पलिया, रामनगर और चन्दन चौकी में बहुत सा सामान नैपाल से आता है और कुछ वहां भेजा जाता है। नैपाल से अधिकतर घी, खैर, तिलहन और मसाला आता है।
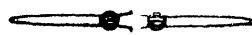
# देहरादून

देहरादून मेरठ कमिश्नरी का सब से उत्तरी जिला है। इसका क्षेत्रफल ११९८ वर्ग मील है। इस जिले में दो प्राकृतिक विभाग हैं। दूनघाटी अधिक खुला हुआ मैदान है।

जौंसरा बावर का पहाड़ी भाग है। दून एक विषम आयताकार है। उत्तर से दक्षिण की ओर इसकी लम्बाई अधिक है। दक्षिण की ओर सिवालिक पर्वत है। सिवालिक का दक्षिणी ढाल अधिक सपाट है। उत्तर की ओर इनका ढाल क्रमशः है। उत्तर के पहाड़ों से बहकर आये हुये कंकड़ पत्थर और कांप को सिवालिक पर्वत अधिक दक्षिण की ओर बहने से रोक देते हैं। इस से दून की घाटी का धरातल दक्षिण की घाटियों से कहीं अधिक ऊंचा है। इसीलिये उत्तर की ओर से देखने पर सिवालिक बहुत ही छोटे और साधारण मालूम होते हैं। दून की घाटी दक्षिण के मैदान से अधिक ऊंची होने पर भी ऊपर से प्रायः समतल मालूम पड़ती है। इधर बहने वाली नदियों ने इसे गहरा काट दिया है। दून की घाटी उत्तर में हिमालय, दक्षिण में सिवालिक, पश्चिम में यमुना और पूर्व में गंगा से घिरी हुई है।

दून की घाटी वास्तव में दो घाटियों में बँटी हुई है। पश्चिम की ओर का पानी यमुना की ओर बह आता है। पूर्वी भाग का पानी गङ्गा में मिलता है। देहरादून छावनी से राजापुर होकर जाने वाली रेखा जल विभाजक बनाती है। इस घाटी का दृश्य बड़ा सुहावना है। काश्मीर के बाद प्राकृतिक सुन्दरता की दृष्टि से दूसरा स्थान इसी घाटी का है। नदियों के किनारे और पहाड़ी वन से ढका है। कुछ भाग में खेती होती है। हिमालय और सिवालिक सदा दिखाई देते रहते हैं। बीच बीच में छोटी छोटी पहाड़ियां हैं। एक पहाड़ी देहरादून शहर के पास से आरम्भ होती है।

पूर्व की अपेक्षा पश्चिम की ओर दून घाटी अधिक खुली हुई है। अधिकतर मिट्टी चिकनी है और कंकड़-पत्थर के टुकड़ों से भरी पड़ी है। केवल कहीं कहीं चिकनी मिट्टी और बालू का मिश्रण है।

जौंसरा बावर देहरादून का पहाड़ी प्रदेश है। इसका आकार एक अंडे के समान उत्तर से दक्षिण की लम्बाई अधिक है। टौंस नदी इसके उत्तरी भाग का चक्कर काटकर कलसी के पास यमुना में मिल जाती है। जौंसर एक त्रिभुजाकार प्रदेश है। इसके उत्तर में लोखांडी पश्चिम में टौंस, पूर्व में यमुना नदी है। उत्तर से दक्षिण तक इसका लम्बाई १८ मील है। बावर की लम्बाई १० मील है। यह उत्तरी भाग को घेरे हुये है। जौंसर भाग पहाड़ों और नद कन्दराओं से भरा पड़ा है। एक पहाड़ी कलसी के पास आरम्भ होती है और टौंस की ओर बहने वाले पानी को यमुना में मिलने वाले पानी से अलग करती है। इस प्रदेश में मैदान बहुत ही कम है और केवल कहीं कहीं छोटे छोटे टुकड़ों में मिलता है।

उत्तर की ओर हिमालय पर्वत की श्रेणियां हैं। शिवालिक दक्षिण की ओर है। कहते हैं कि प्रायः सवालाख चोटियां होने के कारण इसका नाम सिवालिक पड़ा। कुछ लोगों का अनुमान है कि यह नाम शिव जी से सम्बन्ध रखता है। हिम शिवालिक या सिवालिक पर्वत हिमालय से २० मील की दूरी पर हिमालय के ही समानान्तर है। सिवालिक यमुना के किनारे से गंगा के किनारे तक चला गया है। इनकी उंचाई ३००० फुट से कम है। शायद ही कोई चोटी ३००० फुट से अधिक ऊँची हो। इनके बीच बीच में छोटी छोटी घाटियों की भूल भुलैया सी है। इनकी कोई लगातार श्रेणी नहीं है। थोड़ी दूर पर छोटे छोटे टीले उठे हुये हैं। सिवालिक पर्वत हिमालय से अधिक पुराने हैं। इनका बलुआ पत्थर बहुत मुलायम है और पानी बरसने या बहने पर भी अक्सर कट जाता है। देहरा शहर से उत्तर की ओर मसूरी श्रेणी बाहरी हिमालय का अंग है। यह दून घाटी के कुछ भाग को घेरे हुये है।

लन्धार चोटी की ऊंचाई ७४५९ फुट है। लाल टिब्बा ८५६५ फुट ऊंचा है। दक्षिण की ओर कई पहाड़ियां निकली हुई हैं। पहले यह पहाड़ियां घने बन से ढकी थीं। इस समय कुछ नंगी रह गई हैं। गांवों के पड़ोस की लकड़ी से कोयला बना लिया

गया है। मंसूरी पहाड़ी के अधिकतर भाग में घर बन गये हैं जहाँ गरमी की ऋतु में सैर करने वाले लोग रहते हैं।

गंगा नदी तपोवन के पास दून घाटी में प्रवेश करती है। दक्षिण-पश्चिम को ओर बड़े वेग से बहती हुई ऋषिकेश के पास जिले के बाहर हो जाती है। यहां गंगा में चन्दनावा राय का नाला मिलता है जो वर्षा ऋतु को छोड़ कर प्रायः सूखा पड़ा रहता है। १० मील और नीचे की ओर पूर्वी दून की सोंग और सुस्वा नदियां गंगा में मिलती हैं। इसके आगे गंगा कई धाराओं में बँट जाती है। इनके बीच में बनाच्छादित द्वीप हैं। गंगा नदी बीस मील तक देहरादून और गढ़वाल जिले के बीच में सीमा बनाती है। हरद्वार के पास गंगा नदी देहरादून को छोड़ कर सहारनपुर जिले में प्रवेश करती है।

यमुना नदी टेहरी गढ़वाल में बन्दर पूंच या यमुनोत्री हिमागार से निकलती है। एक पर्वत श्रेणी यमुना और गंगा के बीच में जल विभाजक बनाती है। मसूरी के पास इस श्रेणी का अन्त हो जाता है। देवबन से साढ़े बारह मील पूर्व को ओर यमुना नदी देहरादून जिले में प्रवेश करती है। यहीं इसमें रिकनागढ़ नाम की छोटी नदी मिलती है। आठ मील और नीचे खुटुनगढ़ नाम की और दूसरी छोटी नदी यमुना में मिलती है। यहां यमुना ३० गज चौड़ी और ५ फट गहरी है। २० मील तक यमुना दक्षिण की ओर बहती है। इसके बाद यह दक्षिण-पश्चिम को ओर मुड़ती है। यहीं अमलावा नदी इसमें मिलती है। यह छोटी नदी देवबन पर्वत से निकलती है और एक त्रिभुजाकार घाटी को इसके आगे यमुना के ऊपर झूलने वाला लोहे का पुल बना है। इसके ऊपर से चकराता को सड़क जाती है। पुल से दो मील नीचे की ओर पश्चिमी टॉंस यमुना में मिलती है। इसके आगे यमुना नदी दून घाटी में प्रवेश करती है। दून घाटी से यमुना का स्रोत ११० मील है। दून घाटी में भी यमुना बड़े वेग से बहती है। रामपुर मंडी के पास आसन नदी यमुना में मिलती है। इस ओर यमुना इतने वेग से बहती है कि इसमें नावें नहीं चल सकतीं।

पश्चिमी टोंस दून में यमुना की प्रधान सहायक नदी है। यह नदी यमुनोत्री के उत्तर में हर की दून से निकलती है। पहले इसे सुविन नाम से पुकारते हैं। ३० मील पश्चिम की ओर बहने के बाद रूपिन नदी इसमें मिलती है। संगम के आगे संयुक्त धारा को टोंस कहते हैं। १९ मील और आगे पहाड़ नदी मिलती है। कलसी के पास यह यमुना में मिल जाती है।
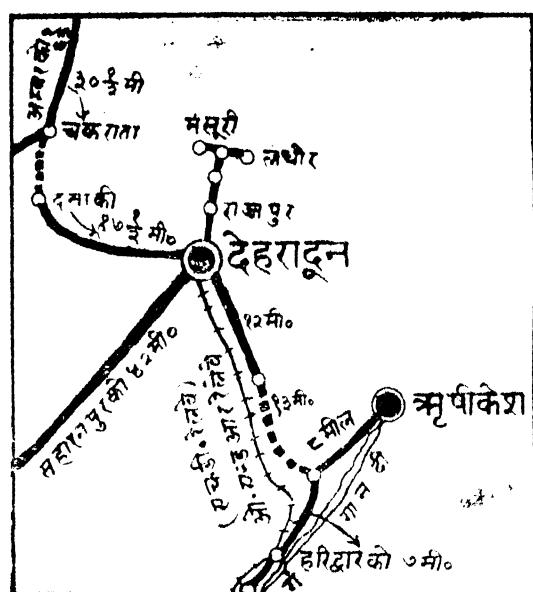
देहरादून की भूगर्भ रचना बड़ी विचित्र है। इसके दक्षिणी भाग में शिवालिक पर्वत है। इसमें मुलायम बलुआ पत्थर की चट्टानें हैं। कुछ भागों की मिश्रित मिट्टी में पशुओं के ऐसे पुराने ढांचे पाये जाते हैं जो पत्थर बन गये हैं। ढांचे उन जानवरों के हैं जो मीठे पानी में रहते थे।

बाहरी हिमालय की चट्टानें अधिक पुरानी हैं। इनमें स्लेट ज्वाला मुखी की बारीक राख, विशाल चूने के पत्थर और दूसरे कड़े पत्थर पाये जाते हैं। यहां सफेद, भूरे, पीले और सर्पाकार पत्थर मिलते हैं। जौंसर बावर में सीसा, सुरमा, लोहा और तांबा पाया जाता है।

देहरादून जिले का जलवायु शीतोष्ण है। मसूरी जैसे अधिक ऊंचे स्थानों का तापक्रम ठंडा है।

निचले भागों का तापक्रम अधिक गरम है। अधिक ऊंचाई के कारण देहरादून जिला मैदान के जिलों की अपेक्षा शीतल रहता है। वनाच्छादित शिवालिक पहाड़ियां मैदान की लू रोक लेती हैं।

वर्षा ऋतु के बाद अक्तूबर-नवम्बर में आकाश बड़ा निर्मल रहता है। दिन में गरमी पड़ती है। रात को ठंड पड़ती है और ओस भी बहुत गिरती है। दिसम्बर और जनवरी में जोर का जाड़ा पड़ता है। कभी कभी तापक्रम जमने के बिन्दु से भी नीचे गिर जाता है।

फरवरी मास में बादल फिर आने लगते हैं। जब देहरादून शहर में पानी बरसता है तब पहाड़ के ऊपर मसूरी में बरफ गिरती है। बरफ गिरने के बाद देहरादून से मसूरी का दृश्य बड़ा सुहावना लगता है। मार्च अप्रैल में तापक्रम तेजी से बढ़ने लगता है। मई से आधे जून तक तापक्रम और भी अधिक बढ़ जाता है। इसके बाद बादल आने लगते हैं और वर्षा ऋतु आरम्भ हो जाती है। कुछ भागों में वर्षा के कारण मच्छड़ बढ़ जाते हैं और मलेरिया ज्वर फैलता है। इस जिले की औसत वर्षा लगभग ९४ इंच है। देहरादून शहर में ७० इंच, चकराता में ७३ राजपुर में १०८ इंच वर्षा होती है। यमुना के किनारे कल्सी में केवल ६२ इंच वर्षा होती है। फिर भी पड़ोस के मैदानी भागों से सब कहीं अधिक वर्षा नहीं है। और भावर में सिंचाई की जरूरत पड़ती है। सिचाई की कई छोटी छोटी नहरें हैं। राजपुर नहर सिपना राव से निकलता है और देहरा शहर तक आती है। कलंगा नहर कलंगा पहाड़ो के पास से निकलती है। यह सोंग नदी और नागसिद्ध बन के बीच में स्थित प्रदेश को सींचती है। जाखन नहर भोजपुर के पास से निकलती है। कटपाथर नहर यमुना नदी से निकलती है। बिजैपुर नहर पूर्वी टोंस से निकलती है।

देहरादून में रौंसिली ( अच्छी दुमट ) डकर। चिकनी मिट्टी ) संक्रा ( मामूनी मिट्टी ) और गोंइड (खाद मिली मिट्टी) चार प्रकार की मिट्टी पाई जाती है।

मसूरी पहाड़ी और जौंसर में बढ़िया पहाड़ी आलू उगाये जाते हैं लगान का रुपया देने के लिये हल्दी मिर्च और अदरख उगाते हैं। देहरा शहर के पास चाय के बगीचे हैं, लेकिन देहरादून की प्रधान फसलें गेहूँ, चावल, धान, महुआ, जौ, मकई, चना, ज्वार तिलहन है।

अजबपुर कलां एक पुराना गांव है और रिस्पनाराव के दाहिने किनारे पर बसा है। हरद्वार से देहरादून को सड़क यहीं होकर जाती है। एनफील्ड ग्रांट नामका बड़ा गांव यमुना के बांये किनारे पर स्थित है। १८५७ में यहां ईसाई किसान बसाये गये। खेती के अतिरिक्त यहां चाय का भी बगीचा है।

आर्केडिया ग्रांट पर देहरादून की चाय कम्पिनी का अधिकार है।

वसन्त पुर एक पुराना गांव है जो हिमालय की तलहटी में बसा हुआ है। १५७५ ईस्वी में यहां एक मुसलमानी हमला हुआ, दूसरा हमला १६५५ ईस्वी में हुआ।

बावर परगना पांच भागों, खातों, में बटा हुआ है।

भोगपुर गांव देहरा शहर से १४ मील की दूरी पर बाहरी हिमालय की तलहटी में बसा है। इसमें जाखन नहर का पानी आता है। पहाड़ और मैदान को उपज का विनिमय यहां के बाजार में होता है। यहां एक मिडिल स्कूल है।

चकराता छावनी की ऊंचाई ६८८५ फुट है। यह कल्सी से २५ मील और मसूरी से ३८ मील दूर है। शिमला से मसूरी को जाने वाली सड़क यहां होकर जाती है। चकराता के पड़ोस का दृश्य सुहावना नहीं है। लेकिन दूर की पहाड़ियों का दृश्य यहां से सुन्दर दिखाई देता है।

देवबन की पहाड़ियों से पीने का पानी मिलता है।

देहरादून शहर इस जिले का केन्द्र स्थान है। यह समुद्र-तल से २३९० फुट ऊंचा है। गंगा और यमुना के बीच की जलविभाजक रेखा से यह कुछ पूर्व की ओर है। शहर रिस्पना राव और बिन्दल नाम की दो छोटी नदियों के बीच में स्थित है। स्टेशन शहर से धुर दक्षिण की ओर है। उत्तर की ओर फारेस्ट कालेज है। हरद्वार से आने वाली रेलवे का यह अन्तिम स्टेशन है। यहां से हरद्वार और सहारनपुर को पक्की सड़क भी गई

है। पक्की सड़क राजपुर, मंसूरी और चकराता को भी गई है। यहां की जलवायु स्वास्थ्यकर है। पड़ोस का दृश्य बड़ा सुन्दर है। इसी से यह शिक्षा का केन्द्र बन गया है। यहां मिशन हाई स्कूल डी० ए० बी० इण्टर कालेज, महादेवी कन्या गुरु कुल, फारेस्ट कालेज, मिलीटरी कालेज और पबलिक स्कूल है। यहीं सर्वे आफिस के नक्शे बनते हैं।

यहां उदासी महन्तों का गुरुद्वारा पुराना और दर्शनीय है। यह १६९९ ईस्वी से ही वास्तव में देहरा शहर का आरम्भ हुआ। गुरु द्वारा से बिगड़ कर देहरा नाम पड़ गया। गुरु राम राय का निवास-स्थान बनते ही यहां उदासी चेले और दूसरे लोग आकर बसने लगे। निवास स्थान के चारों ओर नये नये घर बन गये। गुरुजी औरंगजेब की ओर से टेहरी नरेश फतेह साह के लिये शिफारिशी चिट्ठी लाये थे। इसलिये गुरूजी का बड़ा स्वागत हुआ। उनको मन्दिर के खर्च के लिये पहले चार गांव मिले फिर ४ गांव और मिल गये गुरखा युद्ध के बाद देहरादून का जिला १८१५ में सहारनपुर में मिला लिया गया। आगे चलकर देहरा जिला बन जाने और छावनी होने से शहर की भी वृद्धि हुई यहां भारतीय सरकार का वैज्ञानिक विभाग भी स्थापित हुआ। १९०९ ई० में रेलवे आजाने से शहर की और भी अधिक वृद्धि हुई। १८२७ ईस्वी में देहरा में केवल ५१८ घर और २००० मनुष्य थे। इस समय देहरा शहर की जनसंख्या लगभग ५०,००० है।

दोईवाला गांव और स्टेशन हरद्वार से १२ मील है। यहां से सवालाख मन ईंधन और ५०,००० मन इमारती लकड़ी और ५५००० मन पत्थर बाहर भेजा जाता है। कुछ बासमती चावल भी यहां से बाहर जाता है।

जोवन गढ़ गांव अम्बारी चाय बगान के पास स्थित है।

कलसी पहले अधिक समृद्ध गांव था। यह यमुना की सहायक अमलवा नदी के बायें किनारे पर स्थित है। कलसी के समीप का दृश्य बड़ा सुन्दर है। कलसी के पड़ोस में अशोक का एक शिला लेख है। इसे चित्रशिला कहते हैं। पीने का पानी अमलवा नहर से आता है। यहां तहसील, डाकखाना और स्कूल है। कौलागिर गांव और चाय बगान देहरादून के पास है।

लन्धौर मसूरी पहाड़ी पर स्थित है। यह अंग्रेजी फौज और गोरों के रहने का स्थान है। पेड़ों से ढके हुये पहाड़ी ढालों पर खपरैल और टीन से छाये हुये घर भरे पड़े हैं।

मसूरी पहली पहाड़ियों पर स्थित है। इसकी ऊंचाई समुद्र तल से छः सात हजार फुट है। इसका क्षेत्रफल २२ वर्ग मील है। जनसंख्या ऋतु के अनुसार घटती बढ़ती रहती है। ग्रीष्म ऋतु में यहां सैर करने वालों की अधिकता हो जाती है। यहां हाई स्कूल, डाकघर और बाजार है।

नवादा एक प्राचीन गांव है। पहले यह दून का केन्द्र स्थान था। यहां मन्दिर और धर्मशाला है। पड़ोस में नाग सिद्ध पहाड़ी हैं। इसके दक्षिणी ढाल के पास सुस्वा नदी बहती है।

रामपुर पूर्वी दून का एक बड़ा गांव है। यहां कालंगा नहर से सिंचाई होती है। यह गाँव सोंग नदी के दाहिने किनारे पर स्थित है। यहां कुछ गुरखा और जिले के छोटे कर्मचारी रहा करते हैं।

राजपुर कस्बा देहरादून से मसूरी को जानेवाली सड़क पर स्थित है और मसूरी पहाड़ियों के निचले ढालों पर स्थित है।

पहले देहरा से आने वाली सड़क यहीं समाप्त हो जाती थी। अब यह मसूरी के पास तक पहुँचा दी गई है। सड़क के दोनों ओर घरों की पंक्ति है। कुछ होटल हैं। पहले यहीं लोग ठहरने के लिये आते थे। आगे चलकर मसूरी के उत्थान के साथ साथ राजपुर का पतन हो गया।

ऋषिकेश गंगा के किनारे ऊँचे टीले पर बड़ा सुन्दर बसा है। हरद्वार के कुम्भ के बाद बहुत से यात्री यहां आया करते हैं। यहां कई मन्दिर हैं। भरत का मन्दिर बहुत प्रसिद्ध है। कहते हैं कि रावण को मारने के बाद लक्ष्मण ने यहीं तपस्या की थी। यहीं लक्ष्मण झूला है। धर्मशालायें भी बहुत हैं। यहां साधू बहुत रहते हैं। यहां देहरादून और हरद्वार से सड़क आती है। हरद्वार से रेल भी आ गई है।

यहां कई पाठशालायें और काली कमली वाले का केन्द्र स्थान है।

सहसपुर दून के पुराने गांवों में से एक है। यह देहरादून से २० मील दूर है और सुन्दर सड़क द्वारा जुड़ा हुआ है। यहां थाना, डाकखाना और स्कूल है। सहस्र धारा एक विचित्र गुफा है और बल्दी नदी के ऊँचे सपाट किनारे पर स्थित है। यह राजपुर से पूर्व की ओर बगदा गांव के पास है। चट्टानें ऐसे पत्थर की बनी हैं जिनमें से पानी छन आता है। गुफा की छत से पानी लगातार टपकता रहता है। दूसरी ओर गन्धक का सोता है। इस जल के प्रयोग से कई बीमारियां दूर हो जाती हैं।

तपोवन गंगा के दाहिने किनारे पर एक छोटा गांव है। ऋषि केश की तरह यह भी एक तीर्थ है जहां यात्री बराबर आया करते हैं। रावण को मारने के बाद श्रीरामचन्द्र जी ने ऋषिकेश में और लक्ष्मण जी ने तपोवन में तपस्या की थी। यह लक्ष्मण जी का मन्दिर है।

★　　★　　★

# शाहजहाँपुर ज़िले का भूगोल

यह ज़िला रूहेलखंड कमिश्नरी के दक्षिण-पूर्व है और पूर्व में खीरी, दक्षिण में हरदोई और फर्रुखाबाद से घिरा है। इसके पश्चिम में बदायूँ और बरेली के ज़िले हैं। उत्तर में पीलीभीत का जिला हमारे जिले से मिला हुआ है। उत्तर-पूर्व से दक्षिण पश्चिम तक बड़ी से बड़ी लम्बाई ७२ मील है। अधिक से अधिक चौड़ाई तिलहर और शाहजहांपुर कस्बों के दक्षिण में ३८ मील है। जिले का क्षेत्रफल १७२६ वर्गमील या ११ लाख एकड़ है। सारा प्रदेश एक खुला हुआ मैदान सा है। खेती खूब होती है। बीच में जंगल, बाग, बिखरे हुए पेड़ हैं केवल उत्तर-पूर्व में सघन बन है। कई नदियों और नालों ने काट कर ज़मीन को ऊंचा नीचा कर दिया है। जिले का ढाल दक्षिण पूर्व की ओर है। इसी से नदियां दक्षिण-पूर्व की ओर बहती हैं। अधिक से अधिक उंचाई कटरा के पास समुद्र-तल से ६०८ फुट है कम से कम उंचाई हरदोई की सीमा के पास ४८० फुट है।

खादर अथवा नीची ज़मीन नदियों की घाटियों में है। बांगर अथवा ऊंची भूमि ज़िले के बड़े भाग में फैली हुई है।

चिकनी मिट्टी की कड़ी ऊसर धरती बन कटी में है। यहां पहिले बन था। पीछे से बन कट गया अब केवल ढाक आदि के ही पेड़ बचे हैं। जिले भर की ? धरती भूड़ ( बालू ) है। ? चिकनी मिट्टी है। शेष दुमट है। और खुटार के परगनों में भूड़ बहुत है। जमौर, जलालाबाद निगोही और खेड़ा बझेड़ा में चिकनी मिट्टी बहुत है।

( गर्रा, गोमती, डल, रामगंगा )

जिले की सभी नदियां गंगा जी में मिली हैं। छोटे २ ताल बहुत हैं पर झीलें कम हैं।

सड़क बनाने के लिये कंकड़ बहुत हैं और खनिजों का अभाव है।

चीतल, नील गाय, भेड़िया आदि जंगली जानवर हैं। मछलियां कई स्थानों में मारी जाती हैं। गाय, बैल, भैंस, भेड़, बकरी सब कहीं पलती हैं।

द्वाबा की अपेक्षा यहां अधिक ( ४० इंच ) पानी बरसता है। शीतकाल मेरठ का सा होता है पर आगरा की सी सख्त गरमी नहीं होती है।

यहां आधे से अधिक धरती में खेती होती है। साल में रबी (सरदी) और खरीफ की दो फसलें काटी जाती हैं। गेहूँ, चना, चावल, पोस्त मुख्य फसलें हैं। ज्वार, बाजरा, अरहर और कपास खरीफ में और ईख गरमी में बोई जाती है। पानी में सिंघाड़ा होता है। सिंचाई कुओं से होती है। एक वर्ष में सारदा नहर में पानी आने पर ज़िले के बड़े भाग में सिंचाई हो सकेगी अकालों ने इस जिले को बहुत सताया है। मजदूरी सस्ती है पर सूद अधिक है शक्कर बनाना यहां का प्रधान धंधा है इसका केन्द्र रौसा है। गाढ़ा प्रायः सभी बड़े २ गांवों में बुना जाता है। बाजार बहुत जगह लगते हैं। कुछ स्थानों में मेला भी होता है। ग़दर के बाद सड़कें काफी हो गई हैं। समस्त लम्बाई प्रायः ५०० मील होगी। अवध रुहेलखंड और रुहेलखंड कमायूं रेलवे इस जिले को पार करती हैं। रेल के पुलों

और कुछ पक्के फलों को छोड़ कर नदियों प्राय नावों के ही पुल हैं जो वर्षों के बाद बनते हैं।

साधारण गावों में नाव द्वारा नदी को पार करते हैं। गंगा, रामगंगा और गर्रा में दूर दूर तक नावें चल सकती हैं।
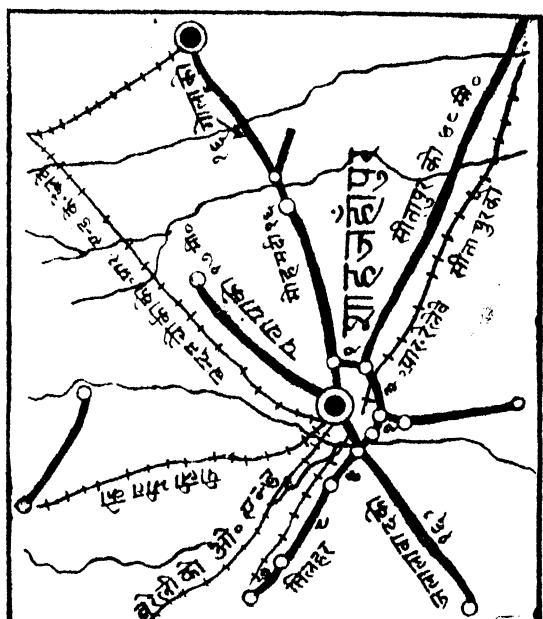
जिले भर की आबादी ९ लाख के ऊपर है। सवा आठ लाख हिन्दू, सवा लाख मुसलमान और २,००० ईसाई हैं। इस प्रकार प्रति वर्ग मील में लगभग ६०० मनुष्य रहते हैं। यहां के कुछ लोग, पास के और जिलों में भी पाये जाते हैं।

हिन्दुओं में चमार, किसान, राजपूत और ब्राह्मण बहुत हैं, कहार काछी, कुरमी, तेली, बनिए, नाई, धोबी आदि बहुत सी जातियों की संख्या कम है। मुसलमानों में पठान, शेख और जुलाहे अधिक संख्या में हैं।

केसरी प्रकाश, हास्यरस, श्री नगर रत्नावली पुस्तकें हिन्दी में बनी, अखबारे मुहब्बत शाहजहां पुर नाभा, अनहरूलबहेर फारसी में बनीं। आर्य दर्पण और तिजारत यहां के समाचार पत्र हैं।

रूहेलखंड पर अंग्रेज़ों का अधिकार होते ही शाहजहांपुर में छावनी बन गई। गदर के बाद यह और भी बढ़ गई।

४१ थानेदार ३१ हेडकान्स्टेबिल २६८ सिपाही हैं। लाठी अक्सर चल जाती है।

जेल में ३२० कैदी रहते हैं। बैब की चटाई, कालीन कंबल और मोटा सूती कपड़ा बनाया जाता है।

शराब, ताड़ी, भांग, गांजा, चाय अफीम को बहुत आमदनी होती है। ३०० स्कूल हैं। ५ अरबी के ६ हिन्दी के १४ संस्कृत के और ७४ फारसी के मदरसे थे। ५ फीसदी लोग पढ़े लिखे हैं। शाहजहांपुर, तिलहर, कांट, कटरा, खुटा और जलालाबाद में शफाखाना है।

## प्राकृतिक बनावट

बन की पेटी—इस ज़िले के धुर उत्तर-पूर्व में बन है। बन के साथ ही इधर बहुत ज़मीन बेकार पड़ी है। इसमें खेती कम होती है। कुओं में पानी बहुत गहराई पर मिलता है। यहां बीमारी बहुत फैलती है। सुअर और दूसरे जंगली जानवर फसल को नुकसान पहुँचाते हैं। इसलिये इधर खेती कम होती है। और लोग भी कम रहते हैं। इस भाग को तराई कहते हैं।

आगे दक्षिण की ओर ज़मीन कुछ ऊंची है। इसका रंग कुछ हलका है। इसमें बालू बहुत है इसलिये इधर पैदावार बहुत कम है। इधर के जंगल और ऊसर में जंगली जानवर काफी हैं। पीने का पानी अच्छा नहीं है। अधिक वर्षा के दिनों में यहां बीमारी भी फैलती है। इसलिये इस भाग में बहुत कम लोग रहते हैं। यह भाग झुकना और गोमती नदियों के बीच में स्थित है। ज़िले का सबसे ख़राब भाग यही है।

बांगर—यहां मटियार की ज़मीन काफी उपजाऊ है। पुवाया, बड़ा गांव, निगोही और शाहजहांपुर और जमौर परगना में अधिकतर ज़मीन बांगर है। गर्रा नदी के दक्षिण में भूड़ या पीली बलुई ज़मीन है। तिलहर कांट और जलालाबाद में अधिकतर भूड़ है।

इसके आगे रामगंगा की तराई है। इधर ज़मीन नीची है। बाढ़ के दिनों में अधिकतर ज़मीन पानी में डूब जाती है। सूखने पर कहीं इसमें बालू पड़ जाती है। तब उसमें झाऊ उग आती है। गरमी में नदी किनारे तरबूज़ और खरबूज़ा उगाये जाते हैं। वैसे इसमें कुछ पैदावार नहीं होती है। अगर बाढ़ के बाद अच्छी ज़मीन पड़ गई तो गेहूँ, चना और दूसरी फसलें होती हैं। इसी तरह की तराई गंगा के किनारे किनारे भी कुछ दूर तक मिलती है। इधर कांस और पतेल (मूंज) होती है।

बनकटी—जलालाबाद के पश्चिम में सबसे अधिक ज़मीन बनकटी की है। यहां ढाक का बन कहीं कहीं अब भी है। कहीं कहीं यह बन कट गया है। इधर चिकनी मिट्टी की कड़ी ज़मीन है। कहीं ऊसर है। कहीं सफेद रेह है। रेह से धोबी लोग कपड़े साफ करते हैं। वैसे यहां कुछ भी नहीं पैदा होता है। बाढ़ के दिनों में इधर भी पानी भर जाता है। यहां धान बहुत होता है।

ज़िले में लगभग १४ फीसदी ज़मीन भूड़ १२ फीसदी चिकनी मिट्टी और शेष मटियार है। ज़िले में लगभग ६० हज़ार एकड़ या ८ फ़ीसदी ज़मीन ऊसर है।

पुवाया और खुटार परगनों में माल, आसन, कारौं महुआ और दूसरे पेड़ों के बन हैं। इन पेड़ों की लकड़ी बड़ी अच्छी होती है और हल, गाड़ी और दूसरी चीज़ों के बनाने के काम आती है। जलालाबाद, जमौर और निगोही परगनों में ढाक है। कहीं कहीं खसखस और कांस है। लगभग ४ फीसदी ज़मीन बन और जंगल से ढकी है।

## नदियां

ज़िले की सब से बड़ी नदी गंगा है। लेकिन यह नदी कुछ ही मील तक हमारे जिले को छूती है। गंगा नदी हमारे जिले को फर्रुखाबाद से अलग करती है। हमारे ज़िले को छूने के पहले यह कई दूसरे जिलों में होकर बहती है। इसका निकास हिमालय की बरफ में है जिसे गंगोत्री कहते हैं। गरमी में बरफ तेजी से पिघलती है इसलिये वर्षा होने के पहले ही हमारी गंगा में बरफ का साफ पानी एक छोटी बाढ़ पैदा कर देता है। लेकिन बहुत बड़ी बाढ़ कुछ दिनों बाद वर्षा ऋतु में आती है। अड़ोस पड़ोस में नीचा खादर होने से गंगा की चौड़ाई कई मील की हो जाती है। उसके पानी का रंग भी मटीला हो जाता है। हमारे जिले के बहुत से लोग गंगा नहाने जाते हैं। ढाई घाट में कार्तिक की पूर्णमासी कतिकी का बड़ा मेला होता है। इसी तरह जेष्ठ की दशमी को दशहरा का मेला लगता है।

रामगंगा भी हिमालय से निकलती है वह कई जिलों में बहती हुई हमारे जिले में आती है। अन्त में वह फिर कन्नौज के पास (फर्रुखाबाद के जिले में) गंगा में मिल जाती है। बरसात के दिनों में बढ़ी हुई रामगंगा बड़ी डरावनी मालूम होती है। पानी का धाड़ना दूर से ही सुनाई देता है। किनारे कट कट कर गिर जाते हैं। कभी कभी रामगंगा समूचे गांवों को काट कर बहा ले जाती है। गांव वाले किनारे से दूर भाऊ या मिट्टी के नये मकान बनाकर रहने लगते हैं। बाढ़ के दिनों में राम गंगा को पार करना आसान नहीं है। कभी कभी दो दो दिन उतारा नहीं होता है। हमारे जिले में रामगंगा के ऊपर एक भी पक्का पुल नहीं बना है। कोला घाट में पानी घटने पर हरसाल नावों का एक पुल बना लिया जाता है। बाढ़ आने के पहले ही वह तोड़ दिया जाता है। बरसात में यहां भी नाव से ही उतारा होता है। रामगंगा को नाव से पार करने के लिये कई घाट हैं। गरमी के दिनों में अक्सर हैं उथला पानी रह जाने से नाव की भी ज़रूरत नहीं पड़ती है। लोग पांव पांव नदी को पार कर जाते हैं। रामगंगा के किनारे अक्सर मगर लेट रहते हैं।

खंडहर के पास रामगंगा में बहगुल नदी मिल जाती है। संगम के नीचे संगाहे का घाट है। यह नदी छोटी है। लेकिन बाहर से हमारे जिले में आती है। इसका पानी रामगंगा से अधिक साफ रहता है। इसके पानी से किसान अपने खेतों को भी सींचते हैं।

गर्रा—जिले भर की सब से अधिक मशहूर नदी गर्रा है। पीलीभीत में इसे देवहा कहते हैं। यह नदी कमायूं की पहाड़ियों से निकलती है। यह नदी जिले के सब से चौड़े भाग में होकर बहती है और जिले को लगभग दो बराबर भागों में बांटती है। कुछ दूर तक गर्रा नदी हमारे जिले को हरदोई से अलग करती है। अन्त में वह रामगंगा से मिल जाती है। गर्रा में बरसात के दिनों में कभी कभी भयानक बाढ़ आजाती है। यह नदी अक्सर अपने किनारे काट डालती है। इसको पार करने के लिये कई जगह घाट हैं। शाहजहांपुर से तीन मील की दूरी पर गर्रा के ऊपर रेल का पुल बना है। शहर के दक्खिनी सिरे पर बड़ा मज़बूत और सुन्दर पक्का पुल हाल में बना है। शहर के पास ही रौसर की कोठी के नीचे खन्नौत नदी गर्रा में मिल जाती है। खन्नौत नदी पीलीभीत के जंगलों से निकल कर आती है। यह नदी बड़ी छोटी है और बहुत ही धीरे धीरे बहती है। इससे इसका पानी बड़ा साफ रहता है। शहर के धोबी अक्सर इसी नदी में अपने कपड़े धोते हैं। इसके ऊपर कई पुल बने हैं।

गोमती नदी पीलीभीत के जंगली दलदलों से निक-

बती है। अपने ज़िले में २५ मील बहने के बाद यह नदी फिर अवध में चली जाती है। गुटैया घाट के पास इस पर एक लोहे का एक अच्छा पुल बना है। हरीपुर के पास गोमती में झुकना नदी मिल जाती है। झुकना नदी बहुत छोटी है। लेकिन इसके किनारे ऊंचे हैं। इसका पानी विषैला समझा जाता है। इसी से झुकना नदी के किनारे कोई गांव नहीं बसा है। कुछ मील और आगे बढ़ने पर गोमती के दाहिने किनारे पर भैंसिनी नदी आ मिलती है। इसका पानी भी अच्छा नहीं है। इनके सिवा इस ज़िले में छोटी छोटी और नदियां हैं। अपने नक़शे में इनके नाम देख लो।

## झीलें

ज़िले का बहुत सा बरसाती पानी बहकर किसी न किसी नदी में पहुंचता है। लेकिन कुछ बहुत नीचे भाग हैं। उनका पानी वहीं रह जाता है। इससे कुछ झीलें बन गई हैं। वे बहुत छोटी हैं पर वे खेतों के सींचने के काम आती हैं। एक झील तिलहर तहसील में पछिया दरोबस्त के पास है। दो झीलें खुदा गंज के उत्तर में है। ढकिया और कटरा के पास भी कुछ झीलें हैं। जलालाबाद में कोई बड़ी झील नहीं है। लेकिन पुवाये में कई झील है। नाहिल के पास वाली झील बहुत बड़ी है।

## जलवायु

हमारे जिले में दिवाली के बाद काफी जाड़ा पड़ने लगता है। तब लोग घरों के अन्दर सोते हैं। गांव में लोग पुआल बिछाते हैं और रात को आग तापते हैं। शहर के लोग बहुत सा कपड़ा पहनते हैं। दिन छोटे होते हैं और रातें बड़ी होती हैं। सबेरे को लोग घाम (धूप) में रहना पसन्द करते हैं। जाड़े में ओस रोज़ पड़ती है। पानी शायद ही कभी बरसता है कभी कभी पाला पड़ जाता है जिससे अरहर और दूसरे मुलायम पौधे सूख जाते हैं। बसन्त के बाद बड़ा अच्छा मौसम रहता है। न अधिक सरदी पड़ती है न गरमी होती है।

वैशाख से गरमी बड़े ज़ोर की हो जाती है। दुपहरी में बाहर जाने को जी नहीं चाहता है। सब लोग खूब नहाते हैं और रात को बाहर सोते हैं। फिर भी गरमी के मारे नींद नहीं आती है। कभी कभी धूल भरी हुई आंधी चलती है इससे दिन में अंधेरा छा जाता है। कुछ पेड़ गिर जाते हैं।

आषाढ़ (जुलाई) से पानी बरसने लगता है। इससे गरमी कुछ कम हो जाती है। लेकिन मच्छड़ और दूसरे कीड़े बढ़ जाते हैं। पर पानी लगातार नहीं बरसता है। कभी आसमान साफ हो जाता है। फिर भी ताल भर जाते हैं। अगर साल भर की वर्षा का पानी इकट्ठा कर लिया जावे उसका एक बूंद भी न सूखने पावे न इधर उधर बहने पावें तो हमारे ज़िले में औसत से वर्षा का पानी सब कहीं एक गज़ गहरा भर जावे। लेकिन हमारे जिले में सब कहीं एक सी वर्षा नहीं होती है। साल में औसत से शाहजहांपुर और पुवा की तहसीलों में लगभग ४० इंच पानी बरसता है। तिलहर में ३६ इंच और जलालाबाद में ३२ इंच वर्षा होती है। जब बहुत कम वर्षा होती है तो अकाल पड़ता है।

बनों के कट जाने से जंगली जानवर बहुत कम रह गये हैं। खुटार के जंगलों में कभी कभी तेन्दुआ मिल जाता है वह गाय बैल को खा जाता है कभी कभी वह एक आध बाहर सोते हुए लड़के को भी ले जाता है। चीतल, नील गाय और हिरण, ढाक दूसरे जंगलों में मिलते हैं। खादर में जङ्गली सुअर रहता है। लोमड़ी, खरगोश और सियार (गीदड़) सब कहीं पाये जाते हैं।

नदियों में तरह तरह की मछलियां और कछुए बहुत हैं। बड़ी नदियों में मगर मिलता है। वह मछलियों और दूसरे जानवरों को मारकर खा जाता है। कभी कभी वह आदमी को भी पानी में घसीट ले जाता है।

इस ज़िले में कई लाख गाय, बैल और भैंस हैं। गाय और भैंस दूध के लिये पाली जाती हैं। बैल और भैंसे हल और गाड़ी चलाते हैं। गड़रिये लोग भेड़ पालते हैं। वे भेड़ों की ऊन से कम्बल भी बनाते हैं। बकरी सभी गांवों में पाली जाती है। सवारी के लिये इस ज़िले के लोग घोड़े पालते हैं। बड़े बड़े कस्बों में घोड़े इक्का चलाते हैं। कहीं कहीं ऊँट भी पाला जाता है। बड़े रईस लोग हाथी रखते हैं। धोबी और दूसरे ग़रीब लोग बोझा ढोने के लिये गधा पालते हैं।

ज़िले में कंकड़ कई स्थानों में पाया जाता है। इसे कूट कर पक्की सड़क बनाई जाती है। चूना भी बनता है।

वैसे हमारे ज़िले के अधिकतर मकान चिकनी मिट्टी से बनाये जाते हैं। यह मिट्टी बहुत से तालाबों में पाई जाती है। बड़े कस्बों में इसी से पक्की ईंटें बना लेते हैं। कुम्हार लोग घड़ा और दूसरे बर्तन बढ़िया चिकनी मिट्टी से ही बनाते हैं।

## सिंचाई

जिले में पानी काफी बरस जाता है। नीचे ज़मीन में भी थोड़ी ही गहराई पर पानी निकल आता है। इसलिये सिंचाई की कठिनाई नहीं है। लेकिन भूड़ की बलुई ज़मीन और पुवाया तहसील में सिंचाई की बड़ी ज़रूरत थी। उसको पूरा करने के लिये हाल में सारदा नहर निकाली गई है। गर्रा के उत्तर में सारदा की बड़ी नहर है। गर्रा और रामगङ्गा के बीच की ज़मीन को सींचने के लिये नहर की कई छोटी छोटी शाखायें हैं। इन नहरों के खुल जाने से सींचने को आराम हो गया है। पर किसानों को नहर के पानी के लिये दाम देना पड़ता है। कई भागों में किसान लोग तालाबों के पानी से अपने खेतों को सींचते हैं। तालाब के ऊपर खेतों में पानी पहुंचाने के लिये दो दो किसान मिलकर बेंड़ी चलाते हैं।

जहां तालाब या नहर नहीं है वहां किसान लोग अपने खेतों को सींचने के लिये कच्चे कुएँ खोद लेते हैं। वे ढेंकुली या रेंहटी चलाकर कुएं से पानी निकालते हैं।

## खेती

ज़िले में ऊसर बंजर की निकम्मी ज़मीन १५ फीसदी से अधिक नहीं है। बाग़, ताल, बन और जंगल भी थोड़े ही हैं। इसलिये हमारे ज़िले की बहुत सी ज़मीन कई तरह की फसल उगाने के काम आती है। खरीफ की फसल वर्षा होते ही जुलाई के महीने में बो दी जाती है। वर्षा के दिनों में सब से अधिक ज़मीन ज्वार बाजरा से घिरी होती है। इनके साथ अरहर उर्द मूंग और तिल भी बो देते हैं। उर्द मूंग तो ज्वार बाजरा के साथ ही अगहन तक कट जाते हैं। अरहर को पकने में देर लगती है वह चैत वैशाख में काटी जाती है। कुछ खेतों में किसान लोग अपने जानवरों को खिलाने के लिये चरी बो देते हैं। चरी के लिये ज्वार को घना बोते हैं। उसमें अरहर भी नहीं मिली रहती है। चरी को पकने के पहले ही हरा काट लेते हैं। खरीफ में धान की फसल प्रधान है। यह तालों के पास बहुत होती है। भूड़ की रेतीली ज़मीन में यह बहुत कम होता है।

रबी की फसल दिवाली से कुछ पहले बोई जाती है। आधे से कुछ अधिक ज़मीन में रबी की फसल बोई जाती है। इसमें गेहूँ प्रधान है। गेहूँ सारे ज़िले में होता है यहां तक कि अच्छे खेतों में फी एकड़ दस मन को पैदावार होती है। कहीं कहीं गेहूँ के साथ चना, मटर और जौ को भी मिला देते हैं। अक्सर चना और जौ को अलग अलग बोते हैं। रामगंगा के खादर और दूसरे तर भागों में किसान लोग पोस्त बो देते हैं। इससे अफीम तयार होती है। अफीम की सरकारी कोठी में ज़िले भर की सब अफीम मोल ले ली जाती है और बाहर भेज दी जाती है।

शाहजहांपुर और जलालपुर के परगनों में ईख बहुत होती है। गांव वाले गन्ने को पेरकर गुड़ बनाते हैं।

रौसर में बहुत सा गन्ना रौसर की कोठी में भेज दिया जाता है वहां इससे शक्कर बनती है। पड़ोस में नये ढंग के मोटे गन्ने सरकारी खेतों में उगाये जाते हैं।

★ ★ ★

# कारबार, व्यापार और मेले

गुड़ और राब बनाने के लिये कई जगह बेल खुले हुये हैं। यहाँ गन्ने के रस को औट कर खंडसारी लोग गुड़ की भेली या राब बनाते हैं। कहीं कहीं खांड भी बनती है। शक्कर तयार करने का सबसे बड़ा कारखाना रौसा में है। यह कारखाना लगभग १०० वर्ष का पुराना है। यहां शराब भी बनती है।

जगह जगह पर जुलाहे लोग गजी या गाढ़ा बुनते हैं। शाहजहां पुर शहर में दरी और रेशम बुनने का काम भी कई जगह होता है। यहीं बैब और मूंज के बान भी बटे जाते हैं। इनसे चटाई (पट्टा) और चारपाई बुनी जाती हैं।

तिलहर में सुन्दर मिट्टी के बरतन बनते हैं। शाहजहांपुर और तिलहर में ठठेरे लोग पीतल के बरतन बनाते हैं। यहां चाकू कैंची और सरौता बनाने का काम भी होता है। गदर से पहले इस

जिले के लुहार लोग तलवार और बन्दूक भी बनाते थे। आजकल वे लोग हल, खुरपा और फाउड़ा बनाते हैं।

यहां से गुड़, अफीम और अनाज बाहर जाता है। कपड़ा और दूसरा सामान हमारे यहां आता है। सामान खरीदने और बेचने के लिये कई जगह बाजार लगते हैं। जितना बड़ा कस्बा होता है उतना ही बड़ा बाजार लगता है। शाहजहांपुर और तिलहर का बाजार सबसे बड़ा है।

हमारे जिले में कई मेले भी लगते हैं। किसी किसी मेले में पचास पचास हजार आदमी इकट्ठे होते हैं। इन मेलों में भी बहुत सा लेन देन होता है। सब से बड़ा मेला कार्तिक को पूर्णमासी को गंगा स्नान के अवसर पर ढाई घाट में लगता है। गोगेपुर में महादेव का मेला फागुन के महीने में लगता है। कोल्हापुर में ब्रह्मन देव का मेला चैत की पूर्णमासी को होता है। सेहरामऊ में देवी का मेला होता है।

## आने जाने के रास्ते

जिले में रेल को बने हुये लगभग ६० वर्ष बीत चुके हैं। ईस्ट इंडियन रेलवे हरदोई से हमारे जिले में आती है और फिर वह जिले को पार करके बरेली चली जाती है। इस जिले में इस बड़ी रेलवे लाइन की लम्बाई लगभग ३५ मील है। कहलिया, रौसा, शाहजहांपुर, बन्थरा, तिलहर और कटरा रेलवे स्टेशन हैं। शाहजहां पुर (केरूगंज) से रूहेलखंड कमायूं रेलवे नाम की दूसरी लाइन पीलीभीत को गई है। रौसा से एक लाइन सीतापुर को गई है। रौसा में रेलवे का कारबार बहुत बढ़ रहा है। लखनऊ से सीतापुर होकर बरेली जाने वाली छोटी लाइन इस जिले के उत्तरी पूर्वी सिरे को पार करती है।

जिले में कई पक्की सड़कें हैं। एक पक्की सड़क बरेली से आती है। वह कटरा और जलालाबाद होती हुई फतेहगढ़ को चली जाती है। दूसरी पक्की सड़क कटरा से शाहजहाँपुर को आती है यहां से वह फिर सीतापुर को चली जाती है। एक पक्की सड़क शाहजहां पुर से सीधी जलालाबाद को और दूसरी पुवायें को गई है। इन सब सड़कों पर अब मोटर गाड़ियां भी चलने लगी हैं। ऊंट गाड़ी इक्का और बैलगाड़ी बहुत पहले ही से चलती थी।

कच्ची सड़कों की लम्बाई कई सौ मील है। इन पर बरसात में बड़ी कीचड़ रहती है और मोटर इक्के आसानी से नहीं चल सकते। बेचारी बैलगाड़ियां फंसती फंसाती किसी तरह चलती ही रहती हैं। सड़कों के रास्ते में पड़ने वाली सभी नदियों पर पुल या घाट हैं। पहले गंगा, रामगंगा और गर्रा में नावें बहुत सा सामान इधर उधर ढोती थीं। अब यह सामान रेल से इधर उधर भेजा जाता है।

## लोग, धर्म और भाषा

जिले में ९०५१३१ मनुष्य रहते हैं। इन में ७५६१२७ हिन्दू १४५३२० मुसलमान हैं। शेष में ईसाई आदि हैं।

हिन्दुओं में सबसे अधिक (लगभग १ लाख) चमार हैं। वे सभी तहसीलों में फैले हुए हैं। वे अधिकतर मजदूरी करते हैं कुछ किसान हैं। बहुत थोड़े लोग चमड़े का काम करते हैं।

दूसरा नम्बर किसानों का है वे बड़ी मेहनत से खेती करते हैं।

तीसरा नम्बर अहीरों का है। वे गाय बैल पालते हैं और खेती करते हैं।

इनके बाद राजपूतों की संख्या लगभग ७० हजार है। वे जमींदार और खेती का काम करते हैं।

ब्राह्मणों की संख्या लगभग ६२ हजार है। इनमें कुछ जिमींदार और कुछ खेतिहर हैं। कुछ पुरोहित हैं। काछी मुराव और कुरमी बड़ी मेहनत से खेती करते हैं।

जिले में लगभग २५ हजार तेली हैं। वे तेल पेरने का काम करते हैं।

वैश्य (बनियों) की तादाद २३००० है। वे लेन देन और सौदागरी का काम करते हैं। कोरी लोग कपड़ा बुनते हैं और गड़रिये भेड़ पालते हैं। इनकी संख्या लगभग २० हजार है। लोहार बढ़ई कायस्थ आदि दूसरी जातियों की संख्या २० हजार से भी कम है।

मुसलमानों में ९८ फीसदी सुन्नी और २ फीसदी शिया है। मुसलमान लोग अधिकतर बड़े बड़े शहरों में रहते हैं। शाहजहांपुर तहसील में वे सब से अधिक और जलालाबाद तहसील में वे सब से कम हैं। इस जिले में हिन्दी बोली जाती है। शहरों के मुसलमान लोग उर्दू या हिन्दुस्तानी बोलते हैं।

जिले में हर १०० आदमियों में सिर्फ ४ ऐसे हैं जो अपना नाम लिख पढ़ सकते हैं। ९६ आदमी दस्तखत करने के बदले अँगूठे की निशानी लगाते हैं।

## इतिहास

माटी ( परगना खुटार ) निगोही, गोला रायपुर और दूसरे स्थानों में पुराने खंडहर मिलते हैं। अहिछत्र राजाओं के बहुत से सिक्के माटी में मिले हैं। यहां किसी समय में उनकी प्रसिद्ध राजधानी थी। कहा जाता है कि राजा बेनु का राज्य भी यहां तक फैला था। राजपूतों के पहिले अहीर, गूजर आदि जातियों का यहां राज्य था। ११९६ ई० में कुतुबुद्दीन ऐबक ने बदायूं को जीत लिया था। उन दिनों हमारे जिले के बड़े भाग में बन था। इसलिये दिल्ली के सुल्तानों ने उत्तर-पूर्व के कटहर ( बन-प्रदेश ) में फौजों को भेजना ठीक न समझा। बदायूं से हरदोई को जाने वाले रास्ते को सुरक्षित रखने के लिये उन्होंने जलालाबाद, कॉंट और गोला में फौजी पड़ाव बना लिये थे। पूरे जिले को दिल्ली राज्य में मिलाना सहज न था। पहिले कटिहरिया तथा दूसरे राजपूतों से लड़ना पड़ता। इन्हें जीतने पर भी लोगों से लगान वसूल करना मुश्किल था। जब दबाये जाते तब यहाँ के लोग अपनी फसलों को जलाकर जंगल में घुस जाते थे। अवसर पाने पर राजपूत लोग सूबेदारों पर हमला भी करते थे। यह बात उन्हें बहुत ही खटकने लगी। १३७९ से १३८५ तक बार बार यह प्रदेश वीरान कर डाला गया। पर वीर राजा खड्ग सिंह ने रामगंगा और सारदा के बीच का सारा प्रदेश जीत लिया। इनके सुपुत्र हरीसिंह जो को बदायूं के सूबेदार बड़े आदर से देखते थे। हुमायूं के समय तक यहाँ के राजपूत स्वाधीन रहे। पर शेरशाह सूरी के एक ख़ूंख्वार सरदार ने इन्हें जीत कर अपना मित्र बनाया। शेरशाह के मरने पर राजपूतों से एकबार फिर स्वतन्त्र हो गये। १५५५ में अकबर के सेनापति खान ज़मान ने इन्हें नष्ट कर दिया। शासनकाल कॉंट-गोला अलग जिला हो गया। हुसेन खां तुकरिया ने हिन्दुओं के मन्दिरों को गिरवा दिया और उन्हें कन्धे पर टुकड़ा पहिनने के लिये बाध्य किया। पर अकबर ने उसे हटा दिया। इस जिले से अकबर को लगभग ९०,००० रुपये की आमदनी होती थी।

१६४७ ई० में बाछिल और गौड़ ठाकुरों ने काट में शाही खजाना लूट लिया। इनको दंड देने के लिये दिलेर खाँ भारी फौज ले आया। चित्तर में १३,००० राजपूत खेत रहे। इस विजय के बदले में दिलेर खाँ को १४ गांव इनाम में मिले। उसे एक क़िला बनाने की भी आज्ञा मिल गई। गर्रा और खन्नौत के संगम पर नोनेर खेड़ा में पहिले भी गूजरों का एक क़िला था। उसी स्थान पर उसने किला बनाया और दिलेरगंज और बहादुरगंज मुहल्लों में पठानों को बसाया। बहुत से हिन्दुओं को ज़बरदस्ती मुसलमान भी बनाया। इस प्रकार शाहजहाँपुर शहर बना। औरंगजेब के समय तक शाहजहाँपुर के पठान बरेली के गवर्नर के अधिकार में रहे। औरंगजेब के मरने पर यहाँ गड़बड़ी फैल गई। १७४० में एक रुहेला यहाँ का सरदार बन गया। पर पुवायाँ गौड़ राजा के हाथ आया। बहुत से हिन्दू जमींदार भी प्रायः स्वतन्त्र हो गये। दक्षिण पूर्व में अवध के नवाब वज़ीर का राज्य था। कुछ दूर गर्रा को छोड़ कर दोनों रियासतों के बीच स्वाभाविक सीमा न थी। रुहेलों का इधर कोई क़िला भी न था। शाहजहाँपुर के पठान भी बरेली के रूहेलों से ख़ुश न थे। मरहठों के भी हमले हो रहे थे। १७७२ ई० में वारेन हेस्टिंग्स ने कर्नल चैम्पियन की मातहती में एक अंग्रेजी सेना शुजाउद्दौला की सहायता के लिये भेज दी। दोनों फौजों ने १७ अप्रैल सन् १७७४ को शाहाबाद से रूहेलों पर चढ़ाई करने के लिये कूच किया। कर्ज़ा अदा करने और मरहठों को रोकने की शर्तें एक चिट्ठी में रूहेला सरदार के पास भेज दी गई। जवाब से सन्तुष्ट न होने पर वज़ीर की फौज ने बिना लड़ेही शाहजहां पुर पर क़ब्जा कर लिया। बहुत से जमींदार और पठान भी फौज में आ मिले। इस

समय रूहेला सरदार बड़े ही अनुकूल स्थान पर डटा था। पहिले अंग्रेजी फौज ने बदायूं या पीलीभीत की ओर जाने का बहाना किया। फिर अचानक जब बरेली की सड़क पर अंग्रेजी फौज आडटी तो रूहेलों की फौज में गड़बड़ी फैल गई। कटरा के पास लड़ाई हुई। रूहेले वीरता से लड़े पर अंग्रेजी तोपों का सामना न कर सके। रूहेला सरदार हाफिज अहमद खां २००० सिपाहियों के साथ खेत रहे। चेम्पियन के केवल १३२४ सिपाही मरे वज़ीर के २५ सिपाही मारे गये। कटरा से विजयी सेना पीलीभीत की ओर बढ़ी और वहां से फिर बरेली पहुँची। २७ वर्ष यहां अवध का राज रहा। १० नवम्बर १८०१ में यह जिला अंग्रेजी कम्पिनी को मिला १८५७ में गदर यहां भी फैला। पहिले गिरजाघर पर हमला हुआ। जेल और शहर बागियों के हाथ आया। गोरे लोग पुवायां के राजा के यहां गये। राजा अंग्रेजों का मित्र था। अन्त में बागियों को देखकर वे लोग मुहम्मदी चले गये।

बिचपुरिया (जलालाबाद) और कटरा में घमासान लड़ाइयां हुई। फतेहगढ़ और लखनऊ पर अंग्रेजों का फिर से कब्जा हो गया। धीरे धीरे सभी जगह बागी दबा दिये गये। गदर के बाद नाना साहब नैपाल की ओर भाग गये। जिले में शान्ति हो गई। प्लेग और अकाल को छोड़कर तब से अब तक कोई विशेष घटना न हुई।

## शासन प्रबन्ध

जिले का सबसे बड़ा हाकिम कलक्टर या मजिस्ट्रेट कहलाता है। उसका दफ्तर शाहजहांपुर शहर में है। वहीं वह कचहरी करता है। कभी कभी वह जिले का दौरा लगाता है। उसको पुलिस से बड़ी मदद मिलती है। खुफिया पुलिस के लोग भेष बदल कर जर्मन का पता लगाते हैं। दूसरे पुलिस के लोग वर्दी पहनते हैं। इनका सब से बड़ा हाकिम पुलिस सुपरिण्टेण्डेण्ट कहलाता है। उसको बहुत से थानेदार लोग मदद देते हैं। ये लोग अपने थाने की देख भाल करते हैं। इनको कस्बों में सिपाहियों और गांवों में चौकीदारों से मदद मिलती है।

मुकदमों का फैसला करने में जज, ज्वाइन्ट मजिस्ट्रेट और डिप्टी कलक्टरों से मदद मिलती है। माल के मुकदमे तिलहर में तय किये जाते हैं। माल गुजारी वसूल करने के लिये पटवारी कानूनगो नायब तहसीलदार और तहसीलदार होते हैं।

शहर की सफाई और तालीम का म्यूनिसिपैलिटी के मेम्बर करते हैं। इनके शहर के लोग हर तीसरे वर्ष चुना करते हैं। इसी तरह जिले भर की तालीम सफाई आदि का प्रबन्ध डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के मेम्बर लोग करते हैं। इन मेम्बरों को देहात के लोग चुना करते हैं।

शाहजहांपुर गर्रा में बायें और खन्नौत के दाहिने किनारे पर ऊँची जमीन पर बसा है। शहर से कुछ ही दूर पर ये दोनों नदियां एक दूसरे से मिल जाती हैं। यह रेलवे का एक जंकशन है। अवध रूहेलखंड या ईस्ट इंडियन रेलवे की बड़ी लाइन यहीं होकर लखनऊ से बरेली को गई है। इस बड़ी लाइन में एक छोटी लाइन मिल जाती है। यह छोटी लइन गर्रा के ऊँचे किनारे पर बसे हुए केरूगंज से आती है और पीलीभीत को चली जाती है। जहां केरूगंज का आजकल स्टेशन है वहां पहले एक पुराना किला था। दूसरी छोटी लाइन खन्नौत के दूसरे किनारे पर बसे हुए रौसा सीतापुर को जाती है। शहर से पक्की सड़क भी पूर्व की ओर सीतापुर को पश्चिम की ओर बरेली को उत्तर की ओर पुवायां को और दक्षिण की ओर जलालाबाद को गई है। कच्ची सड़कें यहां से हरदोई मुहम्मदी और पीलीभीत को जाती हैं।

कोतवाली के अहाते में बहादुर खां की मस्जिद शहर भर में सब से पुरानी इमारत है। इस १६४७ ई० का एक फारसी लेख है। शहर के दक्षिणी सिरे पर गूजरों का किला बहुत पुराना था। रूहेलों ने इसकी मरम्मत कराई थी। लेकिन गदर के बाद यह किला तोड़ डाला गया। गदर के दिनों में यहां बहुत मार काट हुई। शहर में बैब के बान से चटाई बुनने और रेशमी कपड़ा तयार करने का काम होता है। खन्नौत का साफ बढ़िया रेशमी कपड़ा धोने के लिये बड़ा अच्छा रहता है। कुछ शक्कर का भी व्यापार होता है। बहादुरगंज का बाजार बहुत बड़ा है। शहर में तीन अंग्रेजी हाई स्कूल और दो वर्नाक्यूलर मिडिल स्कूल हैं। यहीं जिले की बड़ी कचहरी

है। डिस्ट्रिक्ट बोर्ड और म्यूनिसिपिल बोर्ड का दफ्तर है। शहर से ही मिली हुई छावनी है। यहां फौज रहती है। फौज के कपड़े सीने का काम यहां बहुत होता है।

## शाहजहांपुर

बन्थरा गांव उस सड़क पर पड़ता है जो शाहजहांपुर से बरेली को जाती है। सड़क से उत्तर की ओर रेलवे लाइन है। यहां डाकघर और स्कूल भी है। यह गांव शाहजहांपुर से लगभग ६ मील दूर है।

कहेलिया गांव शाहजहांपुर से ११ मील की दूरी पर रेलवे का स्टेशन है। स्टेशन के पास ही हफ्ते में दो बार बाजार लगता है।

कांट एक पुराना कस्बा है। शाहजहांपुर से जलालाबाद आने वाली सड़क के अधबिच है। पहले यह शाहजहांपुर से अधिक मशहूर था। यहां की एक पुरानी टूटी फूटी मस्जिद में सवा तीन सौ वर्ष का पुराना लेख है। यहां एक मिडिल स्कूल, थाना और डाकखाना है।

मदनापुर शाहजहांपुर से १७ मील की दूरी पर बसा है। यहां होकर एक पक्की सड़क गई है जो कटरा से जलालाबाद को जाती है।

रौसा या रौसर एक छोटा गांव है। यहां खन्नौत और गर्रा का संगम है। शक्कर के कारखाने ने इसे बहुत मशहूर कर दिया है। आजकल यहां रेलवे का कारबार भी बढ़ रहा है। सीतापुर को जानेवाली रेलवे लाइन यहीं पर असली और बड़ी लाइन से अलग होती है। इसके पड़ोस में ईख के माडल फार्म हैं। इनमें गन्ने को सुधारने के लिये बहुत छानबीन की जाती है।

सेहरामऊ ( दक्षिणी या जनूबी ) यह गांव कहेलिया स्टेशन से दो मील और शाहजहांपुर से १० मील दूर है। यहां थाना, डाकखाना, बाड़ा और स्कूल है। आषाढ़ के महीने में यहां देवी का मेला होता है। इस मेले में लगभग दस बारह हजार आदमी इकट्ठा हो जाते हैं।

पुवायां कस्बा शाहजहांपुर से १७ मील दूर है। यहां तक एक पक्की सड़क आती है। यह कस्बा अब से लगभग दो सौ वर्ष पहले बसाया गया था। यहीं राजा साहब का महल है। गदर में यहां के राजा साहब ने अंग्रेजों की बड़ी मदद की। आज कल यहां थाना, तहसील, मिडिल स्कूल और डाकखाना है।

यहां खांड और पीतल के बरतनों का व्यापार होता है। पीतल के बर्तन यहां बनते हैं और अधिकतर खीरी में बिकते हैं। हफ्ते में यहां दो दिन बाजार लगता है। दशहरा में छड़ियों का मेला भी होता है।

सेहरा मऊ ( उत्तरी या शुमाली ) उल नदी के पास पुवायें से २४ मील दूर है। यहां से जंगल दूर नहीं है। रेलवे स्टेशन दो मील दूर जोगराजपुर में है। यहां थाना डाकखाना और बाड़ा है। हफ्ते में दो बार छोटा बाजार भी लगता है।

## पुवायां

बड़ा गांव सचमुच एक बड़ा गांव है। यह शाहजहांपुर से १४ मील दूर है और उस पक्की सड़क पर पड़ता है जो शहर से पुवायें को जाती है। पहले यहां खांड की बड़ी मंडी थी।

गोला गांव आजकल बहुत छोटा रह गया है। पर पुराने जमाने में यह बहुत मशहूर था। यह गांव शाहजहांपुर से १० मील की दूरी पर खन्नौत के दाहिने किनारे पर बसा है। पहले यहां कटिहरिया राजपूतों का बड़ा जोर था। गोला के दक्षिण में बहुत बड़ा और ऊंचा खेड़ा है। यहां कभी कभी पुराने सिक्के निकल आते हैं। हरी और नीली गुट्टी ( मिट्टी के बरतनों और ईंटों के टुकड़े ) बहुत बिखरे हुए हैं।

जोगराजपुर गांव है। लखनऊ से सीतापुर होकर बरेली जाने वाली छोटी लाइन पास ही है। स्टेशन को सेहरामऊ शुमाली ( उत्तरी ) के नाम से पुकारते हैं। अड़ोस पड़ोस के बन की लकड़ी यहीं से बाहर भेजी जाती है।

खुटार कटिहरिया राजपूतों की बस्ती है। यहां थाना, डाकखाना, शफाखाना और स्कूल है।

माटी—जिले के उत्तरी सिरे पर शहर से ४२ मील दूर है। यह गांव बहुत ही पुराना है। यहां पर कभी कभी चांदी और तांबे के बहुत पुराने सिक्के मिलते हैं। पुराने खंडहर दो मील लम्बे और एक मील चौड़े हैं। उत्तर पश्चिम की ओर एक बहुत पुराना ताल और मन्दिर है।

**नाहिल**—इस जिले के कटिहरिया राजपूतों का सदर मुकाम है। इसके उत्तर पूर्व की ओर एक बड़ी झील है। यहां हफ्ते में दो बार बाजार लगता है।

**तिलहर**—अब से लगभग चार सौ वर्ष पहले तिलोकचन्द नामी एक बाछिल राजपूत ने इस कस्बे को बसाया था। इसी से इसका नाम तिलहर पड़ गया। शाहजहांपुर से बरेली जाने वाले शाही रास्ते की हिफाजत के लिये यहां एक क़िला भी बनाया गया था। पीछे से वह वीरान हो गया। यहां रेलवे का स्टेशन बन जाने से इस क़स्बे का व्यापार कुछ बढ़ गया। यहां खांड का कारबार होता है। यहाँ अनाज की भी बड़ी मंडी है। यहाँ चाक़ू सरौते भी अच्छे बनते हैं। यहीं तहसील, थाना, डाकखाना और दो मिडिल स्कूल हैं।

निगोही एक बहुत पुराना गाँव है। इसके पास ही कई पुराने खेड़े हैं। यहीं कई तरह के पुराने कुएँ भी हैं।

## तिलहर

बफेड़ा गांव एक बड़े पुराने खेडे के पास है। इसीलिये इसे खेड़ा-बफेड़ा भी कहते हैं। यह गाँव तिलहर से १३ मील दूर है। यहाँ वालों ने गदर के दिनों में कुछ अंग्रेजों को अपने घरों में छिपाकर उनकी जान बचाई थी।

गढ़िया रंगी रामगंगा के बायें किनारे पर कुछ ऊंची जमीन पर बसा है। यहाँ हफ्ते में दो बार बाजार लगता है। जलालपुर गाँव को जलाल खाँ नाम के एक रूहेले ने बसाया था। यहाँ एक बाजार लगता है जिसमें जानवरों की बिक्री होती है।

कटरा या मीरनपुर कटरा एक बड़ा कस्बा है। बरेली से फतेहगढ़ जाने वाली पक्की सड़क यहाँ होकर गुजरती है। यहां से दूसरी पक्की सड़क शाहजहाँपुर होती हुई सीतापुर को गई है। जहाँ दोनो सड़कें मिलती हैं उसके पास ही फौजी पड़ाव है। रेलवे स्टेशन यहाँ से सिर्फ आध मील दूर है।

पुराना गाँव मीरनपुर था। उसी के खंडहरों के ऊपर कटरा बसाया गया। १७७४ ई० में यहाँ एक बड़ी लड़ाई हुई थी अवध का नवाब एक अंग्रेज़ी फौज किराये पर लेकर यहाँ के रूहेले सरदार पर चढ़ आया। रूहेला सरदार मारा गया। उसकी फौज तितर बितर होकर फतेहगंज की ओर भाग गई। तब से रूहेलों के राज का अन्त हो गया।

यहाँ गल्ले का काफी व्यापार होता है। हफ्ते में दो बार बाजार लगता है।

खमरिया एक बड़ा गाँव है। तिलहर से दक्षिण-पश्चिम की ओर १४ मील दूर है। यहाँ एक सुन्दर मन्दिर है। हफ्ते में दो दिन बाजार लगता है।

खुदागंज गर्रा के दाहिने किनारे पर तिलहर से १२ मील की दूरी पर बसा है। कटरा से बीसलपुर जाने वाली सड़क यहाँ होकर गुज़रती है। रेल के निकल जाने से यहाँ का व्यापार कुछ कम होगया फिर भी यहाँ का बाजार काफी अच्छा है। यहाँ एक मिडिल स्कूल थाना और डाकखाना है।

## जलालाबाद

जलालाबाद काफी बड़ा क़स्बा है। जलालुद्दीन खिलजी के बाद इसका नाम जलालाबाद पड़ गया। शाहजहांपुर से यह कस्बा लगभग २० मील दूर है। यहाँ दो पक्की सड़कें मिलती हैं। एक कटरा से आती है। दूसरी शाहजहाँपुर से आती है। दोनों सड़कें मिलकर एक हो गई हैं। यह सड़क फर्रुखाबाद को चली गई है। पहले यह सड़क रामगंगा के बायें किनारे से कुछ ही दूर पर चलती है फिर वह अल्लाहगंज के पास रामगंगा को पार करती है। जलालाबाद से एक कच्ची सड़क कुन्डरिया को जाती है। यह सड़क खंडहर के पास बहगुल को और परौर के पास रामगंगा को पार करती है। जलालाबाद से कुछ ही दूर उत्तर की ओर एक नहर की शाखा बहती है।

कहते हैं यहां का पुराना किला बाछिल ठाकुरों ने बनवाया था फिर यह क़िला चन्देले ठाकुरों ने ले लिया। अन्त में यह फिर मुसलमानों के हाथ आया। पहले किले की दीवारें २५ फुट ऊंची थीं। अब से लगभग डेढ़ सौ वर्ष पहले हाफिज रहमत खां ने इसकी मरम्मत करवाई थी। पर आजकल यह बड़ी टूटी फूटी हालत में है। इसके ऊपर तहसील और मिडिल स्कूल की इमारत है। इस समय भी कस्बे का यही सबसे ऊंचा भाग है। कई सड़कों के मिलने से पहले जलालाबाद का व्यापार बहुत

बढ़ा चढ़ा था। रेल के खुल जाने से यहां का व्यापार बहुत घट गया। गदर के दिनों में इधर के लोग अंग्रेजों से लड़े थे। गदर के दब जाने पर लोगों को दंड मिला। इससे भी यह कस्बा काफी घट गया। फिर भी यहां हर सोमवार और बृहस्पतिवार को बाजार लगता है। यहां थाना डाकखाना और शफाखाना भी है।

**कलान**—यह गांव जलालाबाद से १४ मील और शाहजहांपुर से ३४ मील दूर है। जरीनपुर और परौर से आने वाली कच्ची सड़कें यहीं मिली हैं। पूर्व को ओर सोत नदी बहती है। गंगा जी का बदखिनी घाट यहां से कुछ ही मील दूर है। कलान में एक स्कूल, थाना और डाकखाना है।

**खजुरी**—अरिल नदी के पास एक बड़ा गांव है। यहां हफ्ते में दो दिन बाजार लगता है। यहां का दशहरा अड़ोस पड़ोस में काफी मशहूर है।

खंडहर बहगुल के बायें किनारे पर एक बड़ा गांव है। कुछ ही दूर पर बहगुल और रामगंगा का संगम है। गदर के दिनों में यहां के चन्देले ठाकुर जलालाबाद के पठानों से बहादुरी से लड़े थे। पर पठानों की मदद के लिये बरेली से एक फौज आगई। दोनों ने मिलकर खंडहर को उजाड़ दिया। पीछे से दुबारा बसने पर भी इसका नाम खंडहर पड़ गया। यहां एक डाकखाना और स्कूल है। यहां के रामलीला (दशहरा) में लगभग सात हजार आदमियों की भीड़ इकट्ठी हो जाती है। कुंडरिया रामगंगा के दाहिने किनारे पर जलालाबाद से १४ मील की दूरी पर बसा है। बड़ा गांव होने के सिवा यहां थाना डाकखाना और स्कूल है। यहां हफ्ते में दो बार बाजार लगता है। दशहरा के अवसर पर यहां देवी जी का मेला होता है।

मिर्जापुर एक बड़ा गांव है। यहां डाकखाना और एक मिडिल स्कूल है।

परौर रामगंगा के दाहिने किनारे पर एक बड़ा गांव है। यहां राजा साहब का पक्का मकान बना है। हफ्ते में दो बार बाजार भी लगता है।

पिरथीपुर ढाई सोत नदी के किनारे बसा है। जलालाबाद से यहां तक एक अच्छी कच्ची सड़क आती है। यहां से आगे गंगा जी के किनारे तक सड़क अच्छी नहीं है। भरतपुर के पास गंगा के किनारे कतिकी और दशहरा का बड़ा मेला लगता है। दूर दूर के लोग लगभग ५०००० आदमी स्नान करने आते हैं। यहीं बैलों की भी बिक्री होती है।

जरीनपुर उस कच्ची सड़क पर बसा है जो जलालाबाद से ढाई घाट को जाती है। यहां हफ्ते में दो बार बाजार लगता है।

कोल्हापुर रामगंगा के दाहिने किनारे पर शाहजहांपुर से ३० मील दूर है। यहां हर इतवार और बुधवार को बाजार लगता है। चैत की पूर्णमासी को यहां ब्रह्मदेव का भारी मेला होता है।

★ ★ ★

# हमीरपुर

## स्थिति, सीमा और विस्तार

हमीरपुर ज़िला यमुना नदी के दक्षिण में ब्रिटिश बुन्देलखण्ड को घेरे हुए है। इसकी औसत चौड़ाई ४० मील और लम्बाई ४६ मील है। क्षेत्रफल २३०० वर्ग मील है।

हमीरपुर ज़िले के पश्चिम और उत्तर पश्चिम में झांसी और जालौन के ज़िले हैं। धसान नदी ज़िले को इन ज़िलों और बाउनी रियासत से अलग करती है। उत्तर की ओर यमुना नदी इस ज़िले को कानपुर और फतेहपुर ज़िलों से अलग करती है। पूर्व की ओर केन नदी इस ज़िले और बांदा ज़िले के बीच में बहती है। दक्षिण की ओर चरखारी छतरपुर और दूसरी रियासतें हमीरपुर ज़िले से मिली हुई हैं।

## बनावट

अगर धसान नदी से बेतवा नदी तक एक ऐसी सीधी रेखा खींचे जो राठ कस्बे में होकर गुज़रे तो हमीरपुर ज़िला दो भिन्न भागों में बट जायगा। इस रेखा के उत्तर में बारीक मिट्टी का समतल मैदान मिलेगा। रेखा के दक्षिण में अधिकतर पथरीली चट्टानें हैं। कहीं कहीं बढ़ते बढ़ते पहाड़ियों का झुंड मिलता है। लेकिन अड़ोस पड़ोस की

ज़मीन से उनकी उंचाई तीन चार सौ फुट से अधिक नहीं है। पत्थरों का रंग भी एक सा नहीं है। कहीं कहीं उनमें नीली, सफेद या गुलाबी रंग की धारियां हैं। कभी पहाड़ियां ज़मीन के कुछ नीचे छिप जाती हैं। कभी वे ऊपर दिखाई देने लगती हैं। पहाड़ियों की सब से अधिक प्रसिद्ध श्रेणी वह है जो नौगांव से महोवा को गई है। दूसरी श्रेणी अजनर से कुल पहाड़ को जाती है। इनमें सेलिया या हरा पत्थर बहुत मिलता है।

हमीरपुर ज़िले में कई तरह की मिट्टी मिलती है। माड़ और काबर मिट्टी का रंग काला होता है। यह काली चट्टानों के फिसलने से बनी है। वह अपने में नमी बहुत भर लेती है। लेकिन सूखने पर उसमें बड़ी बड़ी दरारें पड़ जाती हैं। फिर वह इतनी कड़ी हो जाती है कि उसमें हल नहीं चल सकता है।

पड़ुवा मिट्टी हलके रंग की होती है। वह बालू और चिकनी मिट्टी के मिलने से बनती है।

माड़ और काबर के पास मोटी जमीन मिलती है। पड़ुवा के पड़ोस में ज़मीन पतली होती है।

जो ज़मीन नदी के पास होती है और नम होती है उसे कछार या तरी कहते हैं।

ज़िले भर में लगभग २५ फीसदी माड़। २४ फीसदी काबर ३० फी सदी पड़ुआ और २१ फीसदी राकड़ मिट्टी है।

## नदियां

हमीरपुर ज़िले में यमुना, बेतवा, धसान और केन बड़ी नदियां हैं। इनके सिवा और बहुत सी छोटी छोटी पहाड़ी नदियां हैं। इनमें कभी बिल्कुल पानी नहीं रहता है। कभी ये उमड़ कर किनारों तक भर जाती हैं। पहाड़ी भाग में ये बहुत तेज़ बहती हैं। इस ओर इनके सपाट किनारे कांटेदार झाड़ियों से ढके रहते हैं। लेकिन वे बहुत ऊँचे नहीं होते हैं। आगे बढ़कर वे अपनी तली को काट-काट कर बहुत गहरा बना देती हैं। अड़ोस पड़ोस की ज़मीन इनकी तली से बहुत ऊँची होती है। इनका रास्ता बहुत टेढ़ा होता है। अन्त में ये अपना पानी किसी न किसी बड़ी नदी में गिरा देती हैं। आगे इस ज़िले की बड़ी नदियों का कुछ और वर्णन है।

यमुना नदी मिस्रीपुर गांव के पास पहले पहल अपने ज़िले को छूती है। यहां पर इसने अचानक मुड़कर एक फंदा सा बना लिया है। इसी मोड़ में बाउनी रियासत का एक गांव है। यहां से वह ठीक पूर्व को ओर बहकर जमरेही तीर पहुंचती है। आगे वह अचानक दक्षिण की ओर मुड़ती है और सिकरोही गांव में पहुँचती है। इसके आगे बहते बहते वह हमीरपुर को छूती है। हमीरपुर ऊँची जगह पर बसा है। इसके एक ओर यमुना और दूसरी ओर बेतवा नदी बहती है। यहां से थोड़ी दूर आगे बेतवा नदी यमुना में मिल जाती है। संगम से आगे यमुना नदी पूर्व को ओर बहती है। ज़िले में यमुना नदी की पूरी लम्बाई सिर्फ ३५ मील है। इसका दक्षिणी किनारा यहां सब कहीं ऊँचा है। उत्तरी किनारा नीचा है।

जमरेही तीर और हमीरपुर के पास अच्छे खेत हैं। और जगह किनारों पर अक्सर गहरे खड्ड मिलते हैं। यमुना में छोटी छोटी नावें चला करती हैं कहीं कहीं कंकड़ों के ढेर मिलते हैं। कहीं किनारों पर दलदल हो जाते हैं। वहां नावें नहीं चल सकतीं। मिस्रीपुर और अमरोही तीर के बीच में पानी के इधर उधर दूर तक बालू है। पर बाढ़ में यमुना की चौड़ाई एक मील से ऊपर हो जाती है। उन दिनों बालू पानी के नीचे डूब जाती है। आगे नदी का पानी दक्षिणी किनारे से लगा हुआ बहता है। इससे इस तरफ बालू या कीचड़ नहीं पड़ने पाती है। हमारे जिले में यमुना के ऊपर कहीं भी पुल नहीं बना है। अगर हम दूसरे किनारे पर जाना चाहें तो नाव से ही नदी को पार कर सकते हैं।

जहां बेतवा नदी जिले को छूती है वहीं धसान नदी इसमें आकर मिली है। इस संगम से आगे बहुत दूर तक बेतवा नदी हमारे जिले को सीमा बनाती है। आखिरी भाग में वह हमीरपुर जिले की नदी हो जाती है। वह इस जिले में बहती है और हमीरपुर से छः मील की दूरी पर यमुना में मिल जाती है। इसका बहाव पूर्व की ओर है। लेकिन इसमें थोड़ी थोड़ी दूर पर बहुत मोड़ हैं। यदि दो आदमी धसान-बेतवा के संगम से यमुना-बेतवा के संगम तक दौड़ लगावें। लेकिन एक नदी के किनारे किनारे दौड़े और दूसरा नाक की सीध में दौड़े तो इस दौड़ में लगातार किनारे किनारे दौड़ने वाले आदमी को दुगुना फासला तय करना पड़ेगा।

बेतवा नदी के किनारे एक दम सपाट हैं। नदी की धारा और ऊँचे किनारों के बीच में खेत नहीं मिलते हैं। ऊपरी भाग में इसकी तली में पत्थर और चट्टानें मिलती

हैं। नीचे की ओर तली में बालू है। इसके किनारे ऊँचे नीचे खड्डों और ग़ारों से बहुत कटे फटे हैं। बरसात के दिनों में नदी बड़ी गहरी हो जाती है। लेकिन बाढ़ घट जाने पर इसमें इतना कम पानी रहता है कि इसको पार करने के लिये नाव की जरूरत नहीं पड़ती है। हमारे जिले में बेतवा के ऊपर एक भी पुल नहीं बना है। सिर्फ हमीरपुर और चंदौत में नाव का घाट है। गहरे पानी में नाव चलती है। पानी कम होने पर मुसाफिर लोग नाव से उतर पड़ते हैं और पांव पांव सूखे किनारे पर आ जाते हैं।

धसान नदी एक दो गांवों को अलग छूने के बाद लहचूरा घाट के पास इस ज़िले में घुसती है। लगभग ३३ मील तक यह नदी हमीरपुर ज़िले और झांसी ज़िले के बीच में सीमा बनाती है। चंदवारी गांव के पास धसान और बेतवा का संगम है। लहचूरा के आगे कई मील तक इस की तली पथरीली है। आगे रेतीली हो जाती है। बेतवा की तरह धसान के किनारे भी खड्डों से कटे फटे हैं। यह नदी बड़ी उथली है। सिर्फ एक जगह झांसी से मानिकपुर जाने वाली रेल इस नदी को पुल के ऊपर से पार करती है। वैसे लोग अक्सर इसको पैदल पार कर लेते हैं।

बेतवा और धसान में कई छोटी छोटी नदियां आकर मिलती हैं।

केन नदी पूर्व की ओर इस ज़िले को बांदा ज़िले से अलग करती है। इसके किनारे बहुत कटे फटे नहीं हैं। लेकिन इस ज़िले का बहुत सा पानी चन्द्रावल और दूसरी नदियों के जरिये से बह आता है। केन नदी राजापूर के पास अपना पानी यमुना में गिराती है।

हमीरपुर ज़िले में मशहूर झीलें तो नहीं हैं। न ज़िले में पानी ही अधिक बरसता है और न ज़मीन ही बहुत नीची है जिसमें दूर दूर का पानी बह कर इकट्ठा हो जावे। लेकिन हमारे ज़िले में बड़े बड़े पक्के ताल कई जगह हैं। पुराने ज़माने में चन्देले राजा अपनी प्रजा को बहुत चाहते थे। उन्होंने जगह जगह पर लोगों के लिये बहुत से पक्के ताल बनवा दिये। महोबा का मदन सागर और जैतपुर का बेला ताल बहुत मशहूर है।

## खनिज

हमीरपुर ज़िले में मकान बनाने के लिये पत्थर कई जगह से निकलता है। सड़क कूटने और चूना तैयार करने के लिये कंकड़ भी बहुत मिलता है।

## पैदावार

इस ज़िले की सवा दो लाख एकड़ (लगभग १६ फीसदी) ज़मीन वीरान है। इसमें किसी तरह की खेती नहीं होती है। ज़िले के उत्तरी भाग में पेड़ों की कमी है। काली ज़मीन में बबूल अपने आप उगता है। नदियों के पास कई तरह के छोटे छोटे झाड़ उगते हैं। दक्षिण की ओर तेंदू, महुआ सेमल, ढाक, दूधी और दूसरे पेड़ों के जङ्गल कई पहाड़ी भागों में मिलते हैं। महुआ, आम, जामुन, शीशम, नीम, गूलर, बरगद और पीपल के पेड़ गांवों के पास बहुत लगाए जाते हैं। तुम्हारे पड़ोस में जो पेड़ मिलते हैं उनके नाम बतलाओ।

काँस से ज़िले के लोगों को बड़ी कठिनाई होती है। अधिक वर्षा के दिनों किसान मार की ज़मीन में कोई फसल नहीं बो पाता है। तब काँस उग आते हैं। उनके झुंड बहुत बड़े तो नहीं होते हैं, लेकिन उनकी जड़ें इतनी गहरी होती हैं कि ये उखाड़ी नहीं जा सकतीं। कांस के बीज सफेद और हलके घुआ में छिपे रहते हैं। हवा उन्हें इधर उधर बखेर देती है। इस लिए पानी पाने पर दूसरे वर्ष काँस का जङ्गल और भी अधिक बढ़ जाता है। जब तक वह दस बीस वर्ष में अपने आप सूख न जावे तब तक वह बराबर बना रहता है।

हमीरपुर ज़िले का दक्षिणी भाग बहुत ऊँचा नीचा है। जगह जगह पर छोटी छोटी पहाड़ियाँ हैं। पहाड़ियों की तलहटी में ही गांव बसे हैं। उत्तरी भाग में यमुना के किनारे तक कुछ कुछ काली ज़मीन का मैदान है। इस ओर पहाड़ियों का नाम नहीं है। मैदान और पठार को अलग करने वाली रेखा राठ नगर में होती हुई पूर्व से पश्चिम को चली गई है।

हमीरपुर एक कृषि प्रधान ज़िला है। पर मौदहा में सोने चाँदी के ज़ेवर अच्छे बनते हैं। कुछ ज़ेवरों में मछली बनी रहती है। आरसी भी बहुत प्रसिद्ध हैं।

महोबा के दक्षिण श्री नगर में पीतल की मूर्तियाँ और खिलौने अच्छे बनते हैं और मथुरा इलाहाबाद और फैजाबाद को भेज दिये जाते हैं।

मकान बनाने का पत्थर बहुत है पर निकाला नहीं जाता है। पहाड़ी, गढ़ी और गरोन में सड़क बनाने के लिए गिट्टी निकाली जाती है।

कुल पहाड़ तहसील में गौदारी की खान से सुन्दर

पत्थर निकलता है। इन पत्थरों से खिलौने और बरतन बनते हैं। हर साल लगभग २५,००० रुपये के बर्तन और खिलौने हरद्वार, इलाहाबाद, फैज़ाबाद, बनारस, कलकत्ता और जगन्नाथपुरी को भेजे जाते हैं।
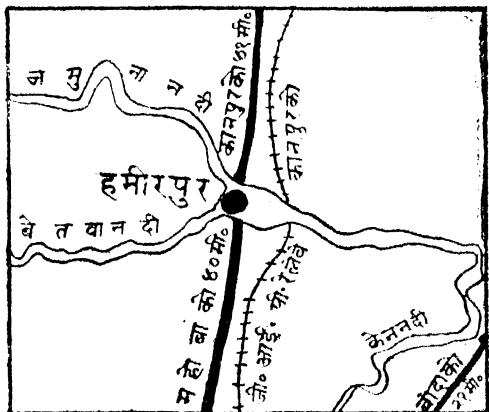
चरागाह अधिक होने से इस ज़िले में गाय, बैल, भैंस और बकरी अधिक हैं। मरे हुए जानवरों से ३,००० मन खाल मिलती है। क़त्ल किये हुये जानवरों से ६,००० मन खाल निकाली जाती है। इसके अतिरिक्त ३,००० मन खाल भेड़ बकरियों से मिलती है। बौंट फल और धवई पत्तियों से रंगिया लोग चमड़े को कमाते हैं। चमार लोग चरस पखाल और जूते बनाने में लगभग ४,००० मन चमड़ा ख़र्च करते हैं।

महोबा पान की खेती के लिये मशहूर है। महोबा के आस पास छाये हुये खेतों की अधिकता है। पान की बेल को धूप से बचाने के लिए छा देते हैं। महोबा के पास महाराजपुर (चरखारी राज्य) में भी पान के खेत हैं। लगभग १६ लाख रुपए के पान महोबा से बनारस, लाहौर, पेशावर, नैनीताल और राजपूताना आदि स्थानों को भेजे जाते हैं।

इस ज़िले में तेल पेरने का काम भी बहुत होता है। यहां लगभग डेढ़ लाख मन कपास होती है। कपास को ओटने, कातने और बुनने में भी बहुत से आदमी लगे हुए हैं।

यहाँ लगभग ३०,००० भेड़ें हैं जिनसे ८०० मन ऊन कतरली जाती है। लगभग ७०० मन धुनी हुई ऊन भदोही, मिर्ज़ापुर और झांसी को भेज दी जाती है। बची हुई ऊन से गड़रिए लोग कम्बल बुनते हैं।

## जलवायु

यहाँ गरमी के दिनों में खूब गरमी पड़ती है। हवा में आग सी निकलती है। वह बड़ी खुश्क होती है। अगर कोई भीगा कपड़ा फैला दें तो ज़रा देर में सूख जायगा। गरम हवायें दोपहर से रात तक चलती रहती हैं। इस बीच में रास्ता चलने वालों को बड़ी तकलीफ़ होती है। तेज धूप से बचने के लिए छायादार पेड़ भी बहुत मिलते हैं। दक्षिण की पहाड़ी चट्टानें और भी अधिक तपने लगती हैं। पर इधर धूल बहुत नहीं उड़ती है। आसमान साफ़ रहता है। सरदी की रातें बड़ी ठंडी होती हैं पर दोपहर के समय काफ़ी गरमी हो जाती है।

यहां वर्षा का कोई ठीक नहीं है। किसी साल तो इतने ज़ोर की वर्षा होती है कि नदियों में बाढ़ आ जाती है। किसी साल बहुत कम पानी बरसता है। किसान खेत नहीं बो पाते हैं और लोग भूखों मरते हैं। औसत से तुम्हारे यहां साल में ३६ इंच पानी बरसता है। साल में जितना पानी बरसता है वह अगर सब का सब जहां तहां पड़ा रहे और उसका एक भी बूंद न इधर उधर बहे न सूखे तो वह एक गज़ गहरा हो जायगा। महोबा में सबसे अधिक (३८½ इंच) पानी बरसता है। हमीरपुर में सबसे कम (३३½ इंच) पानी बरसता है।

समय पर वर्षा होने से फसल अच्छी होती है। वर्षा के दिनों में मच्छड़ बहुत बढ़ जाते हैं। उनके बार बार काटने से अक्सर लोगों को मलेरिया बुखार हो आता है।

## पशु

ज़िले से चीता मिट गया है। लेकिन कुलपहाड़ और महोबा के बनों और पहाड़ियों में तेंदुआ अब भी बहुत हैं। वह अक्सर जानवरों को मार डालता है और कभी कभी आदमियों पर भी हमला कर देता है। भालू कम रह गए हैं। बनों और नदियों के खड्डों में भेड़िया और लकड़बग्घा बहुत रहते हैं। गीदड़ और लोमड़ी तो सब कहीं हैं। उनसे कोई ख़ास नुक़सान नहीं होता है। जङ्गली सुअर इतने अधिक हैं कि वे खेतों को अक्सर नुक्सान पहुँचाते रहते हैं। जङ्गलों में नील गाय और मैदानों में हिरनों के झुंड देखने में आते हैं। खरगोश दक्षिण में बहुत हैं। महोबा और कुछ दूसरे स्थानों में लंगूरों के झुंड लोगों को बहुत तंग करते रहते हैं।

नदियों में तरह तरह की मछलियां हैं। बड़ी नदियों

में मगर भी रहता है। वह कभी कभी आदमी को नदी में खींच ले जाता है।

पालतू जानवरों में यहाँ गाय, बैल और भैंसे बहुत पाले जाते हैं। गाय बैल तो दो लाख से ऊपर हैं। बार बार अकाल पड़ने से इनकी नस्ल अच्छी नहीं रही। खेती बढ़ने से चरागाह कम बचे। इससे इनकी संख्या भी कम हो गई। भैंस तो कुछ ही हजार हैं। इस ज़िले में भेड़ बकरी भी बहुत हैं। बकरियां कटीली कड़वी सभी तरह की पत्तियाँ खा लेती हैं। इससे बकरियाँ भेड़ों से कहीं अधिक हैं।

यहां ऊँट, गधे, खच्चर और घोड़े बहुत कम हैं।

## खेती

ज़िले के बहुत से भागों में अच्छी खेती नहीं होती है। कारण यह है कि यहां समय से वर्षा नहीं होती है। बहुत से गांवों में खेतों को निराने और फसल से कटीले जंगली पौधों को अलग करने के लिए ठीक ठीक मज़दूरों की कमी न होने से खेतों की देखभाल भी अच्छी होती है। यहां किसान अपने खेतों में खाद भी डालते हैं। इस लिए इधर फसल खूब होती है। तुम्हारे ज़िले की माड़ या काली ज़मीन में सिंचाई की ज़रूरत नहीं पड़ती है। लेकिन अगर इधर किसान कुओं से अपने खेतों को सींचना भी चाहें तो कुओं में इतना कम पानी रहता है कि खेत ठीक ठीक सींचे नहीं जा सकते।

वर्षा होते ही किसान अपने खेतों को जोतना बोना शुरू कर देते हैं। इन दिनों जितनी ज़मीन जोती बोई जाती है उसकी लगभग आधी में ज्वार होती है। इसके साथ अरहर भी मिली रहती है। माड़ के काले खेतों में सब कहीं ज्वार नज़र आती है। हलकी मिट्टी में किसान लोग ज्वार के साथ उर्द मूंग को भी मिला देते हैं। बहुत अच्छे खेत में फी एकड़ १८ मन ज्वार पैदा होती है। मामूली खेतों में सात आठ मन फी एकड़ होती है। इसे अगहन के महीने में काटते हैं।

कपास—ज़िले की लगभग १८ फीसदी ज़मीन कपास की खेती से घिर जाती है। यह बरसात के शुरू में बोई जाती है। किसान लोग इसके साथ में भी अक्सर अरहर, तिल, उर्द और मूंग बो देते हैं। पडुआ और राकड़ ज़मीन में कपास बहुत होती है।

अरहर अलग नहीं उगाई जाती है। यह ज्वार या बाजरा के साथ होती है। बाजरा को यहां लड़हरा भी कहते हैं। ज्वार के बाद इसी का स्थान है। यह खेती को १५ फीसदी ज़मीन घेरे हुए है। यह माड़ की काली और भारी मिट्टी में नहीं होती है। काबर में भी कम उगती है। लेकिन नदियों के पास हलकी ज़मीन में बहुत होती है। बाजरा सावन में बोया जाता है और क्वार कार्तिक में कटता है।

झीलों और तालाबों के पास धान बहुत होता है। साठिया चावल साठ दिन में तैयार हो जाता है।

राठ और कुल पहाड़ के पास कुछ नील भी होता है।

पान महोबा में सैकड़ों वर्षों से होता चला आ रहा है। कुछ राठ में भी होता है। इसका काम तम्बोली लोगों के हाथ में है। पान का बग़ीचा १८ बीघा से ४० बीघा तक होता है। पान की बेल को धूप से बचाने के लिये बग़ीचे को पत्तियों से छा देते हैं। पान के बग़ीचे का लगान तीस चालीस रुपये बीघा होता है। लेकिन इससे तम्बोलियों को आमदनी भी बहुत होती है।

सावन में बोई जाने वाली फ़सल को खरीफ और कार्तिक में बोई जाने वाली फसल को रबी कहते हैं। रबी की फसल की ८० या ६० फीसदी ज़मीन चना से घिरी हुई है। यह अलग भी बोया जाता है और दूसरी फ़सलों के साथ भी मिला दिया जाता है। चना सभी तरह की ज़मीन में उगता है। कुछ भागों में गेहूँ और जौ भी उगाते हैं। इन्हीं दिनों अलसी और सरसों तेल के लिए उगाते हैं। मटर और मसूर दाल के लिए बोई जाती हैं।

थोड़ी थोड़ी अफ़ीम और तम्बाकू लगभग सभी परगनों में उगाई जाती है।

## सिंचाई

इस ज़िले की काली ज़मीन बहुत दिन तक अपनी नमी को बनाए रहती है। अगर ठीक समय पर पानी बरस जाय तो आधे से अधिक ज़मीन को अलग से सिंचाई की ज़रूरत नहीं पड़ती है। यहाँ के लोग समझते हैं कि अलग से खेत में पानी देने से फसल खराब हो जायगी। यहां कुआं बनाने में भी बहुत खर्च होता है। इस लिए इस ज़िले की बहुत थोड़ी ज़मीन सींची जाती है। सींची जाने वाली ज़मीन को सब से अधिक पानी कुओं से मिलता है। कुलपहाड़ के परगने में सबसे

अधिक कुएँ हैं। इसके बाद महोबा का दूसरा नम्बर है। बहुत गहरे कुओं में चुर या चरस से पानी निकाला जाता है। जहां कुओं में नजदीक पानी मिलता है वहां ढेकलो से पानी ऊपर लाया जाता है। कहीं कहीं रहट भी चलता है। हमीरपुर, महोबा और कुल पहाड़ के परगनों में दो तीन हज़ार एकड़ भूमि नहरों से सींची जाती है। बेतवा नहर की हमीरपुर-शाखा केवल ११½ मील लम्बी है। यह नहर सिर्फ़ हमीरपुर परगने को सींचती है। यह नहर झांसी ज़िले से यहां आती है। हमीरपुर शहर के पास यह नहर फिर बेतवा में अपना बचा हुआ पानी गिरा देती है। धसान नहर ज़िले के पश्चिमी भाग को सींचती है। कुछ सिंचाई बेलाताल और दूसरे तालों से हो जाती है।

सिंचाई का ठीक इन्तज़ाम न होने से अकाल के दिनों में इस ज़िले के बहुत से लोग भूखों मरने लगते हैं। अब से लगभग सौ वर्ष पूर्व एक ऐसा अकाल पड़ा जिससे इस ज़िले में लगभग आधे घर खाली हो गए। छोटे मोटे अकाल तो पड़ते ही रहते हैं।

## व्यापार

ज़िले में थोड़ा बहुत व्यापार गांवों के छोटे छोटे बाज़ारों में होता है। यहां छानी बुज़ुर्ग में सिद्ध हर्ष बाबा का मेला सब से बड़ा होता है। यह मेला पौष की पूर्णमासी को लगता है।

इस ज़िले से चना, दाल, घी, कपास, तिल और पान बाहर भेजे जाते हैं। महोबा के पान बड़े नामी होते हैं और दूर दूर बिकते हैं। ज़िले में कई ऐसी चीज़ों की जरूरत पड़ती है जो यहां नहीं होती हैं। दूकानदार बाहर से इन चीज़ों को मँगाते हैं। बाहर से आनेवाली चीज़ों में शक्कर, चावल, गेहूँ, नमक, मिट्टी का तेल और कपड़ा मुख्य है।

## आने जाने के मार्ग

मानिकपुर जाने वाली रेल ज़िले में होकर जाती है। हरपालपुर, घुपलाताल (जैतपुर), कुलपहाड़, सूप, महोबा (कारी पहाड़ी) और कबाई लाइन के स्टेशन हैं जो इस ज़िले में पड़ते हैं। कानपुर से बांदा को मिलानेवाली रेलवे भी इस ज़िले में होकर गुज़रती है। हमीरपुर से कुछ ही मील की दूरी पर यह रेल यमुना को पार करती है। अपने नक़शे में इसके स्टेशनों को ढूँढ़ो।

## पक्की सड़कें

तुम्हारे ज़िले में एक पक्की सड़क २७ मील लम्बी है। यह सड़क तुम्हारे ज़िले को छोड़ने के बाद एक तरफ़ झांसी और दूसरी तरफ़ कानपुर को जाती है। दूसरी पक्की सड़क बांदा से आती है और तुम्हारे ज़िले में होकर फतेहपुर को जाती है। यह भी लगभग इतनी ही लम्बी है। कबरई के पास ये दोनों पक्की सड़कें एक दूसरे से मिल गई हैं।

छोटी छोटी पक्की सड़कें कई हैं। एक पक्की सड़क हमीरपुर शहर का चक्कर काटती है। हमीरपुर से राठ को जाने वाली सड़क भी पक्की है। इसी तरह राठ से कुल पहाड़ को पक्की सड़क गई है। एक पक्की सड़क महोबा से चरखारी को और दूसरी छतरपुर को जाती है।

कच्ची सड़कें तो लगभग ४०० मील लम्बी हैं। वे बहुत से गांवों को एक दूसरे से मिलाती हैं।

जहां इन सड़कों के रास्ते में बड़ी नदियां पड़ती हैं वहां उनको पार करने के लिए घाट पर नाव रहती है। कानपुर, हमीरपुर और महोबा की सड़क के रास्ते में बरसात के बाद कुछ महीनों के लिए यमुना और बेतवा पर हर साल नाव का पुल बन जाता है।

## शासन

हमीरपुर ज़िले का सब से बड़ा हाकिम कलक्टर कहलाता है। वह हमीरपुर में रहता है। वहीं वह कचहरी करता है कभी कभी वह ज़िले का दौरा लगाता है। कलक्टर को पुलिस से बड़ी मदद मिलती है। खुफिया पुलिस के लोग भेष बदल कर जुर्म का पता लगाते हैं। दूसरे पुलिस के लोग वर्दी पहनते हैं। इनका सब से बड़ा अफसर पुलिस सुपरिन्टेण्डेण्ट या कप्तान कहलाता है। उसको बहुत से थानेदार मदद देते हैं। ये लोग अपने थाने की देखभाल करते हैं। इनको कस्बों में सिपाहियों और गांवों में चौकीदारों से मदद मिलती है। मुकदमों का फैसला करने के लिये जज, ज्वाइण्ट मजिस्ट्रेट, दो डिप्टी कलक्टर और एक असिस्टेण्ट मजिस्ट्रेट से मदद मिलती है। ज्वाइण्ट मजिस्ट्रेट महोबा में रहता है। मालगुज़ारी वसूल करने के लिये पटवारी, कानूनगो, नायब तहसीलदार और तहसीलदार होते हैं।

शहर की सफाई और शिक्षा का काम म्यूनिसिपैलिटी के मेम्बर करते हैं। इनको शहर के लिये हर तीसरे वर्ष चुना करते हैं। इसी तरह ज़िले भर की शिक्षा सफाई आदि का प्रबन्ध डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के मेम्बर करते हैं। इन मेम्बरों को देहात के लोग चुनते हैं।

## इतिहास

बहुत पुराने समय में हमीरपुर ज़िले का अधिकतर भाग जंगल से ढका हुआ था। यहां कोल, भील और गोंड लोगों की बस्तियां थीं। यहां के शिलालेखों से मालूम होता है कि अब से लगभग ढाई हज़ार वर्ष पहले यहां गुप्तवंश के राजा लोग राज करते थे। हमारे ज़िले में राजहर्ष का एक ताबेदार ब्राह्मण राजा यहां राज करने लगा।

हर्षवर्धन के मरने पर गहरवार राजा हुए फिर चन्देलों का राज हुआ। इन लोगों ने अपना राज बहुत बढ़ा लिया था। इनमें आल्हा ऊदल और परमाल का नाम बहुत मशहूर है। अब से लगभग १००० वर्ष पहले पंजाब देश में पहले पहल बाहर से मुसलमान लोग लड़ने आये। उस समय हमारे जिले के लोगों ने पंजाब को मदद की लेकिन मुसलमानी आधीनता स्वीकार करनी पड़ी। अकबर ने हमीरपुर को दो सूबों में बांट दिया था। इसी समय बुन्देले उठ खड़े हुए। राजा छत्रसाल ने मुग़लों के दांत खट्टे कर दिये।

जैतपुर और कुछ पहाड़ के पास गहरी लड़ाइयां हुईं। मरहठों ने समय से मदद दो जिससे आगे चलकर यहां मरहठों का राज होगया। मरहठों से यह देश अंग्रेज़ों को मिला। गदर के दिनों में यहां बड़ी मारकाट हुई। तब से अब तक ज़िले में कोई विशेष घटना न हुई।

## तहसील हमीरपुर

हमीरपुर कस्बा बहुत बड़ा नहीं है। सिर्फ जिले का सदर मुकाम है। पर क़स्बा की स्थिति बड़ी अच्छी है।

यमुना और बेतवा नदी के बीच में संगम से कुछ दूर पश्चिम की ओर काफ़ी ऊंची ज़मीन है। हमीर पुर इसी ऊंची ज़मीन पर बसा है। इस तरह से यह क़स्बा दो नदियों के किनारे बना है। यहां के कुछ लोग बेतवा में नहाते हैं कुछ यमुना में नहाते हैं। दोनों नदियों को पार करने के लिये घाट पर नावें रहती हैं। पानी घट जाने पर इन नदियों के ऊपर नावों का पुल बन जाता है। यमुना पार करते ही दूसरी ओर पक्की सड़क मिलती है। इस पर कानपुर के लिये मोटर चला करते हैं। बेतवा को पार करने पर महोबा के लिये मोटर मिलता है। यहां कचहरी, अस्पताल, हाई स्कूल, जेल आदि की इमारतें तो कुछ बड़ी हैं।। साधारण लोगों के छोटे खपड़ैल से छाये हुए घरों को देखने से हमीर पुर एक मामूली कस्बा मालूम होता है। कस्बे में दो छोटे बाज़ार हैं। यहां कोई बड़ा कारबार नहीं है।

इस क़स्बे को अब से १ हज़ार वर्ष पहले राजा हम्मीर देव ने बसाया था। मुसलमानों का हमला होने पर वे अलवर से भागकर यहां आये थे। उन्होंने यहां एक किला बनवाया था जिसके खंडहर अब तक मौजूद हैं। कहा जाता है कि पृथिवीराज ने महोबा जाते समय अपने कुछ सिपाही यहां छोड़ दिये थे।

छानी यह एक बड़ा गांव है। यहां हर शनिवार को बाज़ार लगता है। १९३३ ई० से यहां मेले के साथ कृषि प्रदर्शिनी ( नुमायश ) भी होने लगी है। यहां एक प्रायमरी स्कूल और डाकबंगला भी है।

## हमीरपुर

झलोखर—यह गांव हमीरपुर से ८ मील की दूरी पर बसा है। बेतवा नहर की हमीरपुर शाखा इस गांव के पास होकर जाती है। यहां देउजी भुइया रानी का एक बहुत पुराना मन्दिर है। लोगों का विश्वास है कि इसके पड़ोस की मिट्टी बात वा गठिया को दूर कर देती है।

पचखुरा हमीरपुर से १२ मील दूर है। यहां से एक कच्ची सड़क यमुना के सुरौली घाट को जाती है। यह पुराना गांव है और ऊंचे टीले पर बसा है। वर्षा होने पर यहां कभी कभी बहुत पुराने सिक्के निकल आते हैं।

सुमेरपुर—हमीरपुर से महोबा को जाने वाली सड़क पर बसा है। यहां अनाज और ढोर ( गाय बैल ) का बड़ा भारी बाज़ार है। बाज़ार बुधवार और शनिवार को लगता है। यह नगर पुराना है। इसके पास ही तीन और पुराने खेड़े हैं। गांव के बाहर दो पुराने क़िलों के खण्डहर हैं। गुसाइयों का मन्दिर सब से अधिक पुराना है। ग़दर के दिनों में यहां बड़ी गड़बड़ी रही। इसको सुमेरा कहार ने बसाया था इससे इसका नाम सुमेरपुर पड़ गया।

सुरौली बुज़ुर्ग यमुना के किनारे एक बड़ा गांव है। फतेहपुर जाने वाले लोग इसी घाट से यमुना नदी को पार करते हैं। हमीर पुर से यह सिर्फ १० मील है। यहां के गौड़ राजपूतों ने गदर में तोप लगाकर नाव वालों से कर लेना शुरू कर दिया था। इसे कुछ वर्ष के लिये यह गांव उनसे छिन गया। पीछे से यह उन्हें फिर लौटा दिया गया।

बिदोखर—यह गांव हमीरपुर से १४ मील दूर है। अब से डेढ़ सौ वर्ष पहले बांदा के नवाब ने इस शहर को उजाड़ दिया। कार्तिक महीने में यहां एक मेला लगता है।

महोबा—का क़स्बा ज़िले के इतिहास में सब से अधिक प्रसिद्ध है। यह क़स्बा हमीरपुर से ५४ मील दूर है। फतेहपुर से बांदा और सागर को जाने वाली सड़क यहां होकर जाती है। रेलवे स्टेशन कस्बे से २ मील उत्तर पश्चिम को ओर है। यहां कई पुराने तालाब हैं। एक पुराने चौकोर क़िले में आज कल तहसील और थाने की इमारतें हैं। यहां तार घर, डाकखाना शफ़ाखाना और स्कूल भी है।

यह क़स्बा तीन भागों में बटा हुआ है। (१) राना किला एक निचली पहाड़ी के उत्तर की ओर है। (२) भीतरी क़िला पहाड़ी चोटी पर है। (३) दरीबा दक्षिण की ओर एक छोटा गांव है। यहीं पान की दुकानें हैं।

इसके एक मुहल्ले का नाम मालिकपुरा है। कहते हैं कि मालिक शाह नाम का एक अरबी था। उसने यहां के आखिरी भार राजा को मार डाला। राजा के १४ रानियां थीं। वे बिना आग के ही अपनेआप आग पैदा करके सती हो गईं। इसी से बरोखर ताल के पास एक जगह चौदह रानी की सती कहलाती है।

महोबा की पुरानी शान तो चली गई। लेकिन यहां का व्यापार कुछ कुछ बढ़ रहा है। यहां अनाज, महुआ, घी और पान का व्यापार होता है। यहां एक एक चीज़ का बाज़ार एक एक दिन अलग अलग लगता है। ढोर का बाज़ार शुक्रवार को और अनाज का बाज़ार शनिवार को लगता है। पान का बाज़ार सोमवार को होता है। यहां हर साल कीरत सागर (ताल) के किनारे सावन के महीने में कजलिया का मेला लगता है। भादों के महीने में गोखर पहाड़ी के ऊपर सिद्ध मेला होता है। यहां के लोग कहते हैं कि महोबा नगर बहुत पुराने समय से चला आया है। त्रेतायुग में इसे केकपुर कहते थे। द्वापर में यह पाटनपुर कहलाने लगा। कलियुग में इसका नाम महोत्सव से बिगड़कर महोबा पड़ गया। कलियुग में इसको बनाने वाले चन्देल राजा चन्द्रवर्मा ने यहां एक बड़ा यज्ञ करवाया था इसी से यह महोत्सव नगर या महोबा कहलाने लगा। चन्देल राजाओं ने ८०० ई० में खजुराहो को छोड़ कर यहां राजधानी बनाई। चन्देलों के आखिरी बड़े राजा परमाल के समय में पृथिवी राज चौहान ने महोबा को लुटवा दिया था। यहां आल्हा ऊदल का नाम भी बहुत मशहूर है।

## महोबा-तहसील

कबरई चार छोटे छोटे गांवों के मिलने से बना है। महोबा से बांदा जानेवाली सड़क इसके पास होकर जाती है। इसके पड़ोस में एक बहुत पुराना ताल और चकरिया दाई का मन्दिर है।

मकरबई गांव महोबा से नौ मील पूर्व कबरई जाने वाली सड़क पर बसा है। इसके पास ही परमाल की बैठक बनी है। यहीं एक पुराना तालाब है। पास ही एक मन्दिर के खंडहर हैं।

श्रीनगर—इसे महाराज छत्रसाल के एक लड़के ने बसाया था। महोबा से छतरपुर जानेवाली सड़क यहां होकर जाती है। यहां थाना, डाकखाना और स्कूल हैं। पास ही दो पुराने ताल बने हैं। बड़ा ताल अधिक सुन्दर है। इसके बीच में एक टापू है। उस पर एक चन्देल के बनवाये हुए मन्दिर के खंडहर हैं। हर सोमवार और शुक्रवार को बाज़ार लगता है। पहले यहां पीतल की मूर्तियां बड़ी सुन्दर बनती थीं।

जैतपुर कस्बा कुल पहाड़ से सिर्फ़ ७ मील दूर है। राठ और कुल पहाड़ से नौ गांव जाने वाली सड़कें यहीं मिलती हैं। बेलाताल रेलवे स्टेशन यहां से सिर्फ २ मील दूर है। कुछ दूर पूर्व की ओर बेला ताल है। इस गहरे ताल का घेर नौ मील है। ताल के पश्चिम की ओर छोटी छोटी पहाड़ियां हैं। एक पहाड़ी के ऊपर पुराना किला है कहते हैं कि इस किले और जैतपुर क़स्बे को महाराज छत्रसाल के पहले फरुखाबाद के बंगशनवाब ने छत्र साल और पेशवा बाजी राव की फौजों ने नवाब की फौज को जैतपुर के क़िले में घेर लिया। घेरा सवा तीन महीने तक पड़ा रहा। अन्त में नवाब को हार माननी पड़ी। उसके बाद मुसलमान इस ज़िले को छोड़ कर चले गये।

यहां बुधवार और शनिवार को बाजार लगता है। कार्तिक की पूर्णमाशी को श्री कृष्ण लीला का मेला लगता है।

कुल पहाड़ एक बड़ा कस्बा है जो हमीरपुर से ६० मील दूर है। रेलवे यहां से दो मील दक्षिण की ओर है। पास ही बुन्देलों के बनवाये पुराने ताल हैं। इनमें

गढ़ा ताल सबसे अधिक प्रसिद्ध है। कस्बे में हर मंगलवार और शुक्रवार को बाजार लगता है। यहां के सरौता और चाकू मशहूर हैं। यहां अनाज और कपास का भी व्यापार होता है। कपास ओटने का एक कारखाना भी है। भादों के महीने में यहां जलविहार का मेला होता है। कहते हैं कि यह कस्बा कुलहुआ और पहड़िया नाम के गांवों के मिलने से बना था इसी लिये इसका नाम कुल पहाड़ पड़ गया।

## पंवारी

पनवारी में मऊ, राठ और कुल पहाड़ से आने वाली सड़कें मिलती हैं। यहां एक बड़ा मन्दिर है कहते हैं महाभारत के राजा पांडु यहीं रहते थे।

सुंगरा एक छोटा गांव है जो महोबा से पंवारी जाने वाली सड़क पर पड़ता है। पहले इधर सुअर बहुत थे। सुअर का ही दूसरा नाम सुंगर है। इसी से बिगड़ कर सुंगरा हो गया। जैतपुर के राजाओं ने यहां एक किला बनवाया था। इसके भीतर एक बाउली है। हर इतवार को यहां बाजार लगता है।

सूपा अर्जुन नदी के किनारे पर हमीरपुर से ४५ मील दूर है। यहां एक किला है जिसे १८०५ ई० में अंग्रेजों ने तोड़ डाला था। यहां कपास का व्यापार होता है और हर इतवार को बाजार लगता है।

## राठ

राठ कस्बा जिले भर में सबसे बड़ा है। यहां तहसील थाना, डाकखाना और शफाखाना है। यहां कपड़ा बुनने और रंगने का काम होता है। यहीं ज़िले भर में सबसे बड़ी व्यापार की मंडी है। यहां का सागर ताल बहुत सुन्दर है। इसके पक्के घाट बहुत बड़े हैं। पास ही चन्देल बैठकें हैं। यहां दो किलों और कई हिन्दू और जैन मन्दिरों के खंडहर हैं। औरंगजेब के मरने के बाद राजा छत्रसाल ने राठ को जीत लिया था। गदर के दिनों में यहां बड़ी मारकाट मची।

आउंटा एक बड़ा गांव है जो राठ से छः मील और हमीरपुर से ४३ मील दूर है। यहां हर गुरुवार को बाजार लगता है जिसमें अनाज, पान और कपड़ा बिकता है।

चन्दौत बेतवा नदी के किनारे राठ से २२ मील और हमीरपुर से ४० मील दूर है। राठ से काल्पी जाने वाली सड़क का घाट यहीं है। पहले यहीं परिहार लोगों का ज़ोर था। फिर लोधी लोगों ने उन्हें भगा दिया। अब से लगभग ढाई सौ वर्ष पहले महाराज छत्रसाल ने यहां हमला किया था।

## राठ तहसील

जलालपुर बेतवा के दाहिने किनारे पर हमीरपुर से २० मील की दूरी पर बसा है। पहले यहां बहुत व्यापार होता था इसके घट जाने से यहां बहुत से घर खाली हो गये इसका पुराना नाम खंडौत था। आज कल इसी नाम से पड़ोस के खेड़े को पुकारते हैं पृथिवी राज ने महोबा पर चढ़ाई करने के समय यहां एक थाना बनाया था।

काशीपुर गांव राठ से १८ मील की दूरी पर धसान नदी के किनारे बसा है। गदर के दिनों में यहां एक थाना बनाया था।

काशीपुर गांव राठ से १८ मील की दूरी पर यहां प्रसिद्ध बागी देशपत का अड्डा था।

मझगवां धसान नदी के पाट से १३ मील उत्तर पश्चिम की ओर है। कहते हैं परिहार राजपूत आबू पहाड़ से चलकर यहां बस गये। उनके राजा ने रामगढ़ किला बनवाया। नदी के पास उसके खंडहर अब तक मौजूद हैं।

## मौदहा तहसील

मेंवार एक बड़ा गांव है। यह हमीरपुर से राठ जाने वाली सड़क पर बसा है। इसके पड़ोस में फौजी पड़ाव है। यहाँ हर इतवार को बाज़ार लगता है। थाना डाकखाना और मिडिल स्कूल है।

बिहुनी टोला बरमा नदी के किनारे हमीरपुर से ४० मील दूर है। यहां एक बाज़ार है। कुछ लोग कपड़ा बुनने का काम करते हैं। यहां एक बड़ा सुन्दर मन्दिर बना है। पास ही एक पुराना खेड़ा है।

गहरौली के पास चन्देलों का बनवाया हुआ एक पुराना ताल है। इसके किनारे धनुष यज्ञ का मेला लगता है। पास ही कई पुराने मन्दिरों के खंडहर हैं। हर शुक्रवार को बाज़ार लगता है। यहां एक प्राइमरी स्कूल भी है। करेला ज़िले भर में सब से बड़ा गांव है। यहां हर मंगलवार और शनिवार को बाज़ार लगता है। श्रावण की पूर्णमासी को महामुनि तालाब के किनारे कजलिया का मेला लगता है। गांव के ऊपर की ओर एक पहाड़ी है। यहां देवताओं की मूर्तियां अब तक मिलती हैं।

यहां पर बने हुये मन्दिर के पास से दूर का दृश्य दिखाई देता है।

पहाड़ी भिटारी मौदहा के पश्चिम में एक बड़ा गांव है। इसके पास एक छोटी पहाड़ी है और यह एक भीटे (टीले) के ऊपर बसा है इसलिये इसका यह नाम पड़ गया। यहां ज़मीन के नीचे एक विचित्र मन्दिर बना है। हर बुधवार को बाज़ार लगता है।

**शायर**—मौदहा से ६ मील और हमीरपुर से १८ मील दूर है। इसके पास एक कच्चा किला बना है। इसे बांदा के राजा गुमान सिंह ने बनवाया था। कार्तिक की पूर्णमासी को यहां सिद्धों का मेला होता है। अतरा में एक ब्राह्मणों की बस्ती है। भादों के महीने में वहां कंस लीला होती है। यहां प्राइमरी स्कूल भी है।

मौदहा कस्बा हमीरपुर से २० मील की दूरी पर महोबा जाने वाली सड़क के पास बसा है। बांदा से कालपी जाने वाली सड़क यहीं होकर जाती है। तहसील के सिवा यहां थाना डाकखाना और स्कूल है।

चरखारी के राजा ने यहां एक किला बनवाया था।

बांदा के नवाब ने उसे फिर से दुरुस्त करवाया यहां पांच बड़े बड़े ताल बनाये गये। इलाही ताल के किनारे जेठ के महीने में सैयद सालार या गाज़ी मियां का मेला लगता है। भादों के महीने में कंशवध का मेला अधिक प्रसिद्ध है।

मुस्करा यह कस्बा हमीरपुर से २८ मील दूर राठ जानेवाली सड़क पर बसा है। कहते हैं कि यह नाम महेश खेड़ा से बिगड़ कर बना है। महेश के मन्दिर के चिन्ह अब तक मिलते हैं। पौष (पूस) के महीने में यहां सैरा का मेला लगता है। हर रविवार को बाज़ार लगता है। यहां पीने की तम्बाकू और पेड़े अच्छे बनते हैं। यहां थाना, डाकखाना और मिडिल स्कूल भी है।

खन्ना—यह हमीरपुर से महोबा जाने वाली पक्की सड़क पर है यहां थाना डाकखाना और स्कूल है। यहां पौष मास की पंचमी को विलन्दर बाबा का मेला लगता है।

खँड़ेह—यह कानपुर से बाँदा जानेवाली रेलवे पर एक स्टेशन है। लेकिन स्टेशन का नाम अकोना इस गाँव में दो मन्दिर हैं। ये द्विवेदियों के बनवाये हुये हैं। पत्थर का इनका काम ज़िले में सर्व प्रसिद्ध है। यहाँ डाकखाना, मवेशीखाना स्कूल और औषधालय है।

कहरा—यह खँड़ेह से तीन कोस की दूरी पर बसा है यहां भी स्कूल है।

मवई खुर्द—यहां क्षत्रियों की बस्ती है। यहां एक मन्दिर और तालाब है। पौष के महीने में यहां मेला और दंगल होता है।

इचौली—यह मटौंध से खन्ना जाने वाली कच्ची सड़क के समीप है यहां स्टेशन, स्कूल और डाकखाना है।

★ ★ ★

# झांसी

## स्थिति और सीमा

ज़िला बुन्देलखंड के सब ज़िलों से अधिक बड़ा है। इसकी सूरत एक बन्द थैली से कुछ कुछ मिलती है। यमुना नदी के दक्षिण में यह सबसे मशहूर ज़िला है। हमारा ज़िला बहुत सी रियासतों और ज़िलों को छूता है। कोई अकेला ज़िला इतनी रियासतों को नहीं छूता है।

इसके उत्तर और उत्तर-पश्चिम में जालौन का ज़िला और समथर, दतिया और ग्वालियर राज्य है। पश्चिम की ओर लगभग ६० मील तक बेतवा नदी हमारे ज़िले को ग्वालियर राज्य से अलग करती है। यह नदी ज़िले को दो बार पार करती है और अन्त में फिर उत्तर की ओर पहुँच कर जालौन ज़िले और झांसी ज़िले के बीच में सीमा बनाती है। दक्षिण की ओर झांसी ज़िला मध्यप्रान्त के सागर ज़िले को छूता है। पूर्व की ओर ओरछा राज्य लगभग १०० मील तक झांसी ज़िले से मिला हुआ है। इसमें सिर्फ ३६ मील तक जमनी नदी हमारे ज़िले को ओरछा से अलग करती है। अधिक आगे पूर्व की ओर धसान नदी ज़िले को अलीपुरा, गौरिहार, बीहट, जिगनी और सरीला रियासतों से अलग करती है। ये सब रियासतें हमीरपुर ज़िले में शामिल हैं। ओरछा दतिया आदि पड़ोसी रियासतों से कुछ गांव झांसी ज़िले के
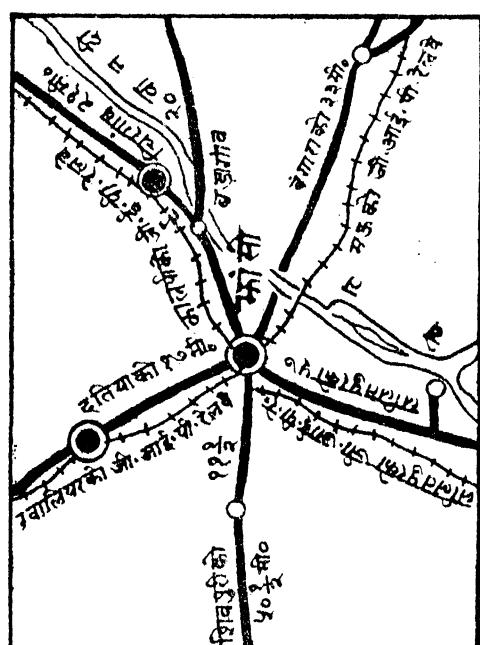
भीतर घुसे हुये हैं। पहले बेतवा के दक्षिण में ललितपुर अलग एक ज़िला था। वह झांसी से कुछ अधिक

बड़ा था। अब वह झांसी में ही शामिल कर दिया गया है। दोनों के मिल जाने से आजकल झांसी ज़िले का क्षेत्रफल ३६०६ वर्गमील और जनसंख्या ७,७५,००० है।

## प्राकृतिक विभाग

अगर एक सिरे से दूसरे सिरे तक झांसी ज़िले की सैर की जावे तो तरह तरह के सुन्दर दृश्य मिलेंगे धुर दक्षिण में विन्ध्याचल की ऊँची पहाड़ियां हैं। धसान नदी के ऊपर लखनजोर की पहाड़ी है। इसकी ऊँचाई आध मील से कुछ ही कम है। अगर नदी के किनारे से पहाड़ी की चोटी पर चढ़ें तो कई घंटे लग जावें। इसी तरह की सपाट पहाड़ियां दक्षिण में सब कहीं फैली हुई हैं। इनकी तलहटी से लेकर ललितपुर के पास तक लहरदार ऊँचा नीचा काली मिट्टी का मैदान उत्तर की ओर फैला हुआ है। बीच बीच में यह मैदान इतने नालों से कटा हुआ है कि शायद उन्हें ठीक ठीक गिना भी नहीं जा सकता। ललितपुर से आगे लाल धरती मिलती है। इस ओर असंख्य पहाड़ी टीले बिखरे हुये हैं। ये टीले कहीं नंगे हैं कहीं इनके ऊपर झरबेरी की कटीली झाड़ियाँ हैं। बेतवा नदी की घाटी को छोड़कर इस तरह की लाल ज़मीन झाँसी शहर तक चली गई है। मऊ तहसील के दक्षिण-पश्चिम में भी काफी दूर तक इसी तरह की ज़मीन है।

इसके आगे काली मिट्टी का समतल मैदान मिलता है। इसमें चट्टानें भी कम हैं। अन्त में पश्चिम की ओर चट्टानें एकदम छिप जाती हैं। लेकिन पूर्व की ओर लम्बी लम्बी पहाड़ियाँ दूर तक फैली हुई हैं। इधर नदियों के किनारे भी गहरे कटे हुये हैं। अगर हमें किसी खड्डे में चलना पड़े तो हम सामने तो दूर तक देख सकते हैं लेकिन दाहिनी या बाईं ओर १० गज़ दूर की चीज़ भी न देख सकें। खाने-पीने की सभी चीजें ज़मीन से मिलती हैं। काली मिट्टी को किसान लोग मार और काबर नाम से पुकारते हैं। कोई कोई इसे मोटी या रेगर भी कहते हैं। बहुत पुराने समय में कुछ जली हुई चट्टानें इकट्ठी हो गईं। इनसे घिस कर जो मिट्टी बनी वह भी काली हो गई। पानी पाने पर यह मिट्टी फैल जाती है और फिसलनी हो जाती है। लेकिन गरमी में सूखने पर वह सिकुड़ जाती है। उसमें दरारें दिखाई देने लगती हैं। फिर भी इसमें अधिक समय तक नमी बनी रहती है और किसानों को ऐसी मिट्टी वाले खेत सींचने नहीं पड़ते हैं। पर बहुत वर्षा होने पर इसमें दलदल हो जाता है। इसमें जोतना बोना बन्द हो जाता है। पडुआ मिट्टी अधिक भारी होती है। इसका रंग कुछ हलका होता है। राकड़ ज़मीन नालों के पास मिलती है। किसी किसी ज़मीन में कंकड़ पत्थर भी मिले रहते हैं। किसान लोग हलकी मिट्टी को पतरो और भारी को मोटो कहते हैं। जहां खूब खेती होती है उसे वे तरेता कहते हैं। जिस धरती में खेती नहीं हो सकती है उसे वो हार या डांग कहते हैं। नदी-नालों के पास की तर ज़मीन को वे तरी कहते हैं।

## नदियां

पानी सदा ऊंचे भाग से नीचे भाग की ओर बहता है। झांसी ज़िले के कुछ भाग ऊंचे हैं और कुछ नीचे हैं। इसलिये ज़िले में जो पानी बरसता है वह बड़े बड़े नालों या नदियों की सूरत में निचले भाग की ओर बहता है। बेतवा, धसान, पहुज और जमनी नदियों को देखने से ज़िले के ढाल का पता लग जायगा। बेतवा नदी कुमारी गांव के पास भूपाल राज्य से निकलती है। फिर यह उत्तर-पूर्व की ओर बहती है। ललितपुर से कुछ दूरी पर दक्षिणी-पश्चिमी कोने से यह नदी अपने ज़िले में घुसती है। पहले तीस मील तक यह नदी इस ज़िले और ग्वालियर राज्य के बीच में सीमा बनाती है। फिर उत्तर-पूर्व की ओर मुड़ कर यह नदी अपने ज़िले के अन्दर आती है। लेकिन ज़िलों को पार करके यह नदी ओरछा राज्य में चली जाती है। अन्त में वह फिर झांसी शहर के पास ज़िले में घुसती है। वह बराबर उत्तर-पूर्व की ओर बहती है। और झांसी ज़िले को जालौन से अलग करती है। इसका रास्ता अधिकतर पहाड़ी है। इससे यह कहीं कहीं झरने बनाती है। कहीं गहरे कुंड बन गये हैं। विन्ध्याचल पहाड़ को पार करते समय इसमें बड़ी गहरी कन्दरा बन गई है। लेकिन झांसी
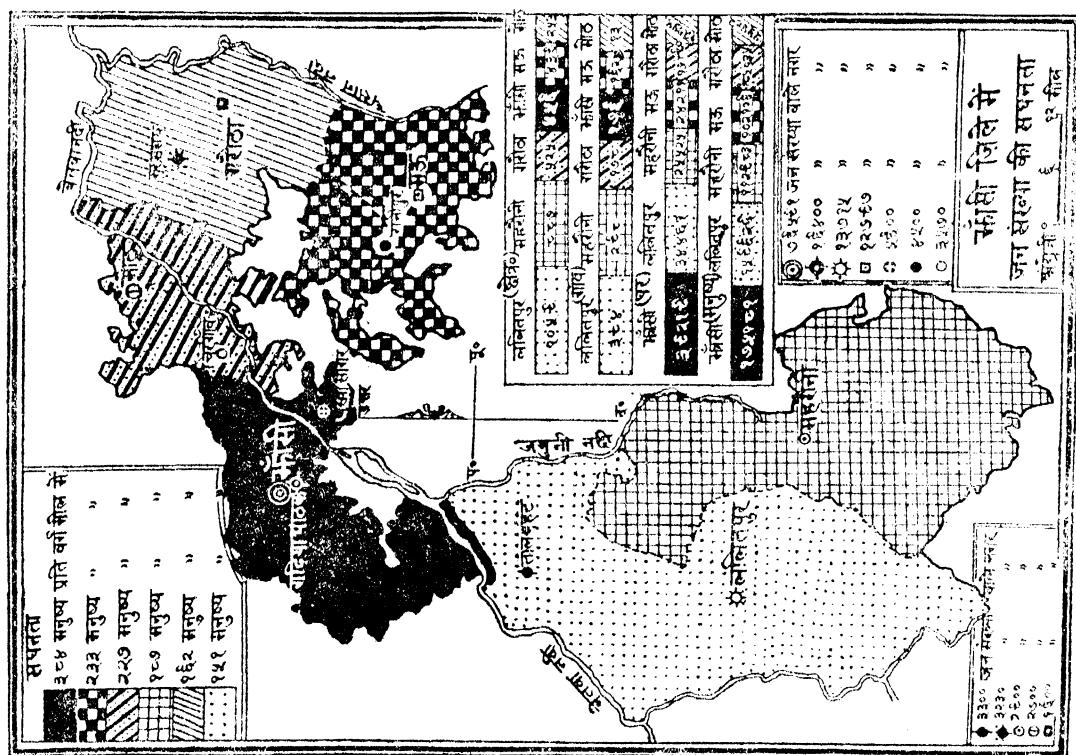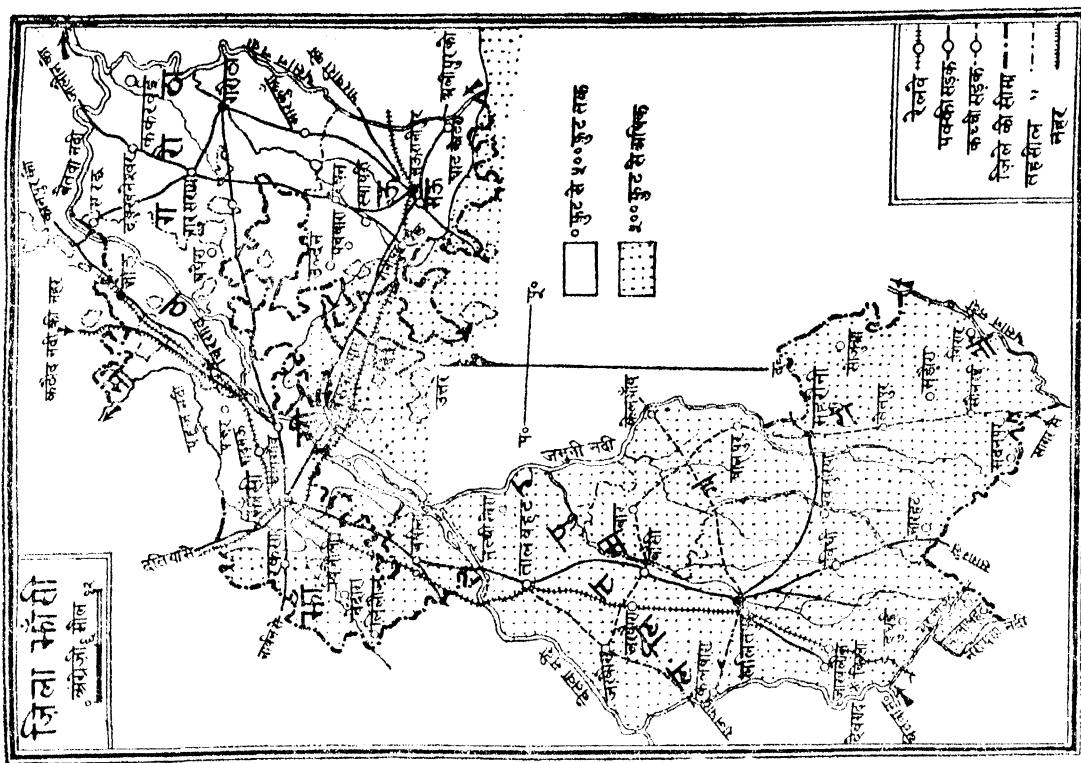
की सड़क के आगे बेतवा बहुत चौड़ी होगई है। इसके बीच में कई टापू हो गये हैं। इसकी दो धारायें भी हो गई हैं। इन धाराओं के बीच में जंगल से ढकी हुई पहाड़ी है। मानिक पुर से आनेवाली रेल के पुल के पास फिर ये दोनों धारायें मिलकर एक हो गई हैं। धुकवान और परीछा के पास इसमें बांध बनाये गये हैं यहीं से सिंचाई की नहर निकलती है। पर इसमें नावों के चलने के लिये लगातार गहरा पानी रहता है। सिर्फ खास स्थानों पर इसको पार करने के लिये घाट बने हैं।

**धसान**—बहुत छोटी नदी है। यह नदी भी भोपाल राज्य से निकलती है। पहले पहल यह नदी ललितपुर तहसील के दक्षिणी सिरे को छूती है। फिर यह लगभग १२ मील तक इस तहसील को सागर ज़िले से अलग करती है। लखनझौर पहाड़ी के पास यह विन्ध्याचल को काटती है। इसके आगे यह पहाड़ी तली में बहती हुई ओर्छा राज्य में घुसती है। लगभग साठ मील इस राज्य में बहने के बाद घाट कोटरा के पास धसान नदी फिर झांसी ज़िले को छूती है। और इसे हमीरपुर ज़िले से अलग करती है। अन्त में यह नदी हमारे ज़िले के उत्तरा-पूर्वी कोने के पास बेतवा में मिल जाती है। इस ओर इसकी तली कहीं रेतीली है कहीं पथरीली है। इसके किनारे बहुत ऊंचे हो गये हैं। वे अक्सर दो तीन मील तक गारों से कटे हुये हैं। बरसाती बाढ़ को छोड़ कर नदी में बहुत पानी नहीं रहता है। फिर भी इसको पार करने के लिये कई जगह नाव के घाट हैं। घाट लचूरा के पास इसके ऊपर रेल का मज़बूत पुल बना हुआ है। उर, सुखनई और लखरी आदि छोटी नदियां धसान में गिरती हैं।

जमनी नदी मदनपुर नगर के पास विन्ध्याचल से निकलती है और उत्तर की ओर बहती है। इसमें बहुत से नाले भी मिल गये हैं। महरौनी और बानपुर के बीच में यह कुछ पूर्व की ओर मुड़ जाती है। लेकिन आगे चलकर यह नदी फिर उत्तर की ओर मुड़ती है। लगभग २० मील तक यह ओरछा राज्य और झांसी ज़िले के बीच में सीमा बनाती है। इसी बीच में शाहज़ाद और सजनम नदियां आकर इसमें मिल जाती हैं। वर्षा ऋतु में ये नदियां उमड़ कर बड़ी डरावनी हो जाती हैं। लेकिन और दिनों में इनमें बहुत ही कम पानी रहता है। इनके किनारों पर कंकड़ बहुत हैं। यहां खेती बिल्कुल नहीं होती है।

पहूज नदी ग्वालियर राज्य से निकलती है। पश्चिम की ओर से पछोर-झांसी सड़क के पास यह नदी ज़िले में घुसती है। झांसी शहर इससे केवल तीन मील दूर रह जाता है। फिर पहूज नदी बाहर निकल कर ज़िले की पश्चिमी सीमा बनाती है। अन्त में भांडेर के पास पहूज नदी सीमा को छोड़ देती है और बहती बहती जालौन ज़िले में सिन्ध नदी से मिल जाती है। इसका रास्ता बहुत ही ऊंचा नीचा है।

## झील और तालाब

ज़िले में इतनी बड़ी झीलें तो नहीं हैं जिनकी लम्बाई चौड़ाई कई मील हो या जिनमें बहुत गहरा पानी हो। पर ज़िले की ऊंची नीची पथरीली ज़मीन में तालाब बहुत बन गये हैं। इनमें बरसात का बहुत सा पानी दूर दूर से आकर भर जाता है। पुराने ज़माने के चन्देल राजाओं ने लोगों के आराम के लिये बहुत से तालाबों को पक्का बनवा दिया। बरवा सागर या अर्जर को देखने के लिये लोग आते हैं। भसनेह के पास बोडा नाले का बाँध बने कुछ साल हुए सबसे बड़ा तालाब तयार किया गया। इस पर लगभग आठ लाख रुपये खर्च हुये। इससे बड़ी सिंचाई भी होती है। पचवारा, मगरवारा और काचनेह ताल भी बहुत मशहूर हैं। बहुत से तालाब सिंचाई के काम आते हैं।

## जलवायु

ज़िले में दिवाली से कुछ पहले ही सरदी पड़नी शुरू हो जाती है। दिसम्बर जनवरी में इतनी सरदी पड़ती है कि सभी लोग गरम कपड़े पहनते हैं। रात को भीतर सोते हैं। कुछ लोग आग तापते हैं। कभी कभी पाला भी पड़ता है जिससे अरहर और दूसरे मुलायम पौधे सूख जाते हैं।

होली से कुछ पहले न सरदी रहती है न गरमी। इसे बसन्त कहते हैं। लेकिन कुछ दिनों में गरमी बढ़ने लगती है। मई में बड़ी तेज़ गरमी पड़ती है।

हवा से लपट सी निकलती है। नंगे पैर गरम धरती पर चलने से पैर में छाले पड़ जाते हैं। कभी कभी ज़ोर की आंधी चलती है जिससे छप्पर उड़ जाते हैं और पेड़ उखड़ जाते हैं।

इसके बाद जुलाई में पानी बरसने लगता है। साल भर में एक गज़ से ऊपर (३८½ इंच) वर्षा होती है।

झांसी ज़िले में हवा में अक्सर खुश्की रहती है। अगर भीगा कपड़ा कमरे के अन्दर भी डाल दें तो वह जल्द सूख जाता है। पानी इधर उधर बहुत इकट्ठा नहीं होने पाता है। इससे मच्छड़ नहीं बढ़ते हैं। लोग तन्दुरुस्त बने रहते हैं। इस तरह ज़िले की जलवायु बड़ी अच्छी है। जहां कहीं काली मिट्टी है वहां मच्छड़ अधिक पाये जाते हैं।

## सिंचाई

जैसे हम पानी पीते हैं वैसे ही गेहूँ और दूसरे पौधे भी पानी चाहते हैं। अगर इन्हें ठीक ठीक पानी न मिले तो ये सूख जावें। झांसी ज़िले में साल भर लगातार पानी नहीं बरसता है। इसलिये खेतों को सींचने की ज़रूरत पड़ती है। सिंचाई का काम कुछ तो कुओं से होता है। ललितपुर में कुआं खुदाने में अधिक ख़र्च नहीं होता है। लेकिन झांसी की पथरीली ज़मीन में कुआं बनवाने में बहुत रुपये लग जाते हैं।

तालाब भी कई हज़ार एकड़ ज़मीन सींचते हैं। तालाब कई जगह हैं। लेकिन बड़वा सागर, कचनेह, मगरवारा और पचवारा बहुत मशहूर हैं।

इस ज़िले में नहर भी सींचने में बड़ी सहायता देती हैं। अब से पचास वर्ष पहले परीक्षा गांव के पास मौज़ा खुर्द में बेतवा नदी के ऊपर एक पक्का बांध बनाया गया। यह बांध झांसी शहर से सिर्फ १४ मील दूर है। यह बांध ५५ फुट ऊँचा और लगभग एक मील लम्बा है। इसके बन जाने से ऊपर की ओर १७ माल तक नदी फैलकर चौड़ी हो जाती है। यहीं पर बड़े दरवाज़े बना दिये गये हैं जिनमें होकर नहर को पानी मिलता है। असली नहर झांसी से कानपुर जाने वाली सड़क के साथ चलती है। मेरठ के उत्तर-पश्चिम में पुलिया गांव के पास यह दो शाखाओं में बट जाती है। इन्हें हमीरपुर नहर और कुठौंद नहर कहते हैं। इस नहर के बनाने में लगभग ५ लाख रुपया ख़र्च हो गया। लेकिन इसके पानी से २१०० एकड़ ज़मीन सींची जाती है।

पहूज नदी से गढ़मऊ के पास सिंचाई की नहरें निकाली गई हैं। इनसे भी ज़मीन सींची जाती है। इतना होने पर भी हमारे ज़िले में सिंचाई काफी नहीं है। इसी से पानी कम बरसने से हमारे यहां अकाल पड़ता है। बहुत से घरों में रोटी बनाने के लिये अनाज नहीं रहता है। वे भूखों मरने लगते हैं। अब से डेढ़ सौ वर्ष पहले के अकाल में इतने लोग भूखों मरे कि लोग उसे चालीसा कह कर अब तक याद करते हैं। सम्बत १८४० में होने से उसका नाम चालीसा पड़ गया।

कांस एक लम्बी पैनी और पतली घास है। इसकी उंचाई १ हाथ से २ गज़ तक होती है। इसकी जड़ें पौधे से भी अधिक बड़ी होती हैं और दो ढाई गज़ गहरी होती हैं। कांस छप्पर छाने या ढोर चराने के काम आता है। पानी पाने से यह खूब फैलता है। इसका बीज सफेद रुए में छिपा रहता है। यह इतना हलका होता है कि हवा के साथ उड़कर यह इधर उधर फैल जाता है। जब एक बार कांस का राज हो जाता है तो वहां हल नहीं चल सकता। किसान बिचारे का कोई वश नहीं चलता है इस ज़िले का बहुत सा भाग कांस से ढका हुआ है जहां किसी तरह की खेती नहीं होती है। अगर हम सब तरह की ऊसर ज़मीन को शामिल करलें तो औसत से हर सौ बीघे पीछे पन्द्रह बीघे ऐसे मिलेंगे जहां खेती हो ही नहीं सकती है।

हर साल हमारे ज़िले की कुछ अच्छी ज़मीन कट कर नालों में बह जाती है। इसको रोकने के लिये कहीं कहीं बबूल और दूसरे पेड़ लगाये गये हैं। पेड़ की जड़ें मिट्टी को रोके रहती हैं, इससे मिट्टी जल्द कटने नहीं पाती है।

झांसी ज़िले में १११२१३ एकड़ ज़मीन बन से घिरी हुई है। इसमें कहीं कहीं सागौन, बांस, महुआ आदि से अच्छी लकड़ी मिलती है। अधिकतर जंगल से जलाने के लिये ईंधन भले ही मिल जावे पर

घर पाटने या हल और गाड़ी बनाने के लिये सुडौल लकड़ी वहां नहीं होती है। कहीं कहीं पहाड़ों पर धौ की मजबूत लकड़ी मिलती है। इसे किसान खेती के हलों और बखरों के काम में लाते हैं जानवरों के चरने के लिये घास सब कहीं उगती है।

## पशु

जिले भर के जंगलों में तरह तरह के जंगली जानवर रहते हैं। चीता और तेन्दुआ दोनों बड़े भयानक होते हैं। वे जानवरों को मार कर खा जाते हैं। कभी वे आदमियों पर भी हमला करते हैं। इसीलिये इन जानवरों को मारने के लिये इनाम दिया जाता है। भेड़िया और बनबिलाव अक्सर खोहों और गारों में रहते हैं। भेड़िया गांव में रात को चुप चाप आता है और भेंड़ बकरियों को चुरा ले जाता है। कभी कभी वह सोते हुए बच्चे को भी ले जाता है। जंगली कुत्ते भी खूंख्वार होते हैं। सियार और लोमड़ियों की तादाद बहुत है लेकिन वे लोगों को कोई खास नुक़सान नहीं पहुँचाते हैं। जंगली हिरणों के झुंड अक्सर खेतों को चर जाते हैं। लेकिन आदमी को देखते ही वे लम्बी छलांगें मारते हैं और देखते देखते ओझल हो जाते हैं। बनैला सुअर इनसे भी अधिक हानि खेतों को पहुँचाता है। वह गारों या कटीले झाड़ों में रहता है। किसान लोग इससे अपनी फसल को बचाने के लिये खेत के चारों ओर कटीले झाड़ जमा कर देते हैं। चिंकारा, नीलगाय, सम्बर और चीतल भी खेतों को चर जाते हैं। कहीं कहीं भालू भी मिलता है। बन्दर, खरगोश और सेही तो सब कहीं बहुत हैं।

जिले में मोर, तोता आदि सुन्दर पक्षी भी बहुत हैं। नदियों में कई तरह की मछलियां पाई जाती हैं। बड़ी नदियों में मगर भी मिलते हैं जो बड़े जानवरों और आदमियों को भी घसीट ले जाते हैं।

घास की अधिकता होने से हमारे यहां गाय भैंस अहीर और गूजर लोग बहुत पालते हैं। इससे घी दूध की कमी नहीं है। कभी कभी यहां से अच्छा घी बाहर भेजा जाता है। पर हल खींचने वाले अच्छे बैलों की कमी है। यहां के बैल दुबले पतले होते हैं। चन्देरी बैल अच्छा गिना जाता है।

अच्छे घोड़े भी बाहर से आते हैं। भेड़ बकरियों की संख्या कई लाख है।

## खेती

जिले में बहुत सी ज़मीन ऊसर है जंगल और कांस भी काफी फैले हुए हैं। इसलिये यहां खेती आधे से कम हिस्से में होती है। ललितपुर तहसील में तो एक चौथाई से कुछ कम ही ज़मीन ऐसी है जिसमें खेती होती है। खेती की ज़मीन वर्षा और कांस की कमी या अधिकता के अनुसार घटती बढ़ती रहती है। बहुत से खेतों में साल भर में सिर्फ एक फसल होती है। कुछ ऐसे हैं जिनमें अच्छी ज़मीन और सिंचाई होने से साल में दो फसलें तयार हो जाती हैं।

काली ज़मीन में ज्वार बहुत उगाई जाती है। वर्षा होते ही किसान लोग ज्वार को जुलाई महीने में बो देते हैं। कभी कभी इसके साथ अरहर भी बोई जाती है। मामूली ज़मीन में बाजरा बोया जाता है। ज्वार बाजरा की कटाई दिवाली के लगभग १ माह के बाद होने लगती है। लेकिन अरहर को पकने में देर लगती है। उसकी कटाई होली के बाद होती है। तिल, उर्द, मूंग को ज्वार बाजरा के ही साथ बोते और काटते हैं। कपास भी इन्हीं दिनों में बोई जाती है इसके टेंट सरदी में बीने (इकट्ठे किये) जाते हैं। पहले उस ज़िले में गेहूँ बहुत होता था। अब इसकी खेती कुछ कम हो गई है। गेहूँ सरदी के शुरू होते ही बोया जाता है और होली के बाद कटता है। इन्हीं दिनों में चना, मटर, सरसों और जौ को बोते हैं। चना के खेत बहुत हैं।

## आने जाने के मार्ग

जिले में झांसी शहर रेल का बड़ा जंकशन है। यहां कई रेलवे लाइनें मिलती हैं। एक लाइन यहां से मानिकपुर को गई है। एक लाइन झांसी से चिरगांव और मोठ होती हुई कानपुर को गई है। एक लाइन झांसी से आगरा होती हुई दिल्ली को गई है। पर हमारे जिले में इस लाइन की लम्बाई सिर्फ १२ मील है। इसके बाद यह लाइन दतिया राज्य में घुसती है। सब से बड़ी लाइन वह है जो झांसी से ललितपुर होती हुई भोपाल को गई है।

झांसी शहर में पक्की सड़कों का भी अड्डा है। झांसी से एक पक्की सड़क कानपुर को आती है।

दूसरी ओर यह सड़क सागर को गई है। झांसी से ग्वालियर को भी पक्की सड़क गई है। झांसी से ललितपुर होती हुई मरौरा को जाने वाली सड़क भी पक्की है। इसी तरह झांसी से मऊ होती हुई नौ गांव को जो सड़क जाती है वह भी पक्की है। रेलवे स्टेशनों से पड़ोस के कस्बे को मिलाने वाली सड़कें अक्सर पक्की हैं। पर कच्ची सड़कें बहुत ज़्यादा हैं। वर्षा में इनमें दलदल हो जाता है। गरमी के दिनों में इन पर धूल उड़ा करती है पर गाड़ी फंसने का डर नहीं रहता है। पक्की सड़कों के रास्ते में जो नदी पड़ती है उन पर अक्सर पुल बने हैं।

## व्यापार

अब से ८० वर्ष पहले मऊ—रानीपुर ज़िले भर में सबसे बड़ा मंडा था। लगभग ७ लाख रुपये का आलू, रंग और सूती कपड़ा बाहर जाया करता था। यहां की छींट, चुनरी और खरुआ को लोग बहुत पसन्द करते थे। बहुत से गांवों में सुन्दर साड़ी और धोती बनती थी। झांसी की कालीनें भी मशहूर थीं। घी, दाल और दूसरी चीज़ें भी खूब बिकती थीं। यह सब व्यापार बंजारे लोग अपने जानवरों की पीठ पर लाद कर करते थे। पालों का पान और जंगल से शहद, बल्ली, लाख और गोंद बाहर जाता था। कुछ सामान यहां से कालपी और कुछ ग्वालियर की ओर पहुँचता था।

रेल के निकलने पर झांसी शहर की स्थिति बड़ी अच्छी हो गई। यहां दो लाइनें मिल गई। अब सब व्यापार यहां होकर बाहर जाने लगा। छोटा मोटा व्यापार देहाती बाज़ारों में भी होता है। ज़िले में कई बड़े बड़े मेले लगते हैं। मऊ का जल बिहार और ललितपुर का रथ मेला देखने के लिये हज़ारों आदमी आते हैं। यहां बहुत सा माल बिकता है।

## कारबार

बिजावर की पहाड़ियों में लोहा पहले बहुत साफ़ किया जाता था। जब से जंगल से लकड़ी लेने की मनाई हुई तब से भट्टियां बन्द पड़ी हैं। लोहे के पास ही कहीं कहीं २ गज़ की गहराई पर तांबा भी मिलता है।

इस ज़िले में पक्की सड़क बनाने के लिये गिट्टी या छोटा पत्थर बहुत है। ललितपुर में बलुआ पत्थर बहुत हैं। मकान बनाने का पत्थर झांसी, कानपुर, सागर और आगरा को भेजा जाता है। कैलगवां में ऐसा पत्थर मिलता है जिससे सुन्दर प्याले बनते हैं।

अनुमान किया जाता है कि पाठर में सोना, परोना में चांदी और सोनरई में तांबा बहुत है। इसको खोजने की तयारी हो रही है।

झांसी ज़िले में लगभग सवालाख एकड़ ज़मीन बन से घिरी हुई है। इसमें साखू तेंदू आदि पेड़ों से मज़बूत लकड़ी मिलती हैं। बांस भी बहुत हैं। बहुत से लोग बन में लकड़ी का काम करते हैं। ईंधन इकट्ठा करने और लाख, गोंद, कत्था और शहद छुड़ाने में भी बहुत से लोग लगे हैं।

इस ज़िले में केवड़ा और खस बहुत है पर उससे सुगन्धित तेल निकालने का कोई प्रयत्न नहीं किया गया। खस से केवल (गरमियों में) टट्टियां बनाई जाती हैं। इस ज़िले में लगभग एक लाख मन कपास होता है। इसको ओटने के लिये मऊ में एक मिल है। पर अधिकतर कपास हाथ से ओटा जाता है। हाथ से कातने बुनने का काम कई जगह होता है। १३ मन से अधिक सूत हर साल काता जाता है। यहां के कुरते बुनाई के लिये बहुत प्रसिद्ध है। पर कोरी लोग अधिक हैं। रंगाई और छपाई का काम भी कई जगह होता है। कुछ लोग दरी बुनते हैं।

## लोग, धर्म, भाषा और पेशे

ज़िले में ५,४५,००० मनुष्य रहते हैं। ज़िले में ९४ फीसदी हिन्दू पांच फीसदी मुसलमान और शेष ईसाई, पारसी और जैन हैं।

हिन्दुओं में चमारों की संख्या सबसे अधिक है। वे ज़िले भर में फैले हुए हैं पर मऊ और महरानी में उनके घर बहुत हैं। वे अक्सर मज़दूरी करते हैं उनके पास खेत बहुत कम हैं।

काछी लोगों का स्थान दूसरा है वे बेचने के लिये तरकारी उगाते हैं। इसलिये उनकी संख्या वहीं अधिक है जहाँ सिंचाई की सुविधा है और बाज़ार पास है।

संख्या में ब्राह्मणों का तीसरा स्थान है। इनमें

कुछ दक्षिण और मारवाणी ब्राह्मण हैं। पहले इनका यहां राज था। अब वे ज़मींदार और किसान हैं। ज़िले की लगभग ¼ ज़मीन इनके अधिकार में है। इसके बाद अहीर और गड़रियों का स्थान है। अहीर लोग गाय भैंस पालते हैं। गड़रिया भेड़ बकरी चराते हैं। राजपूत बड़े बड़े ज़मींदार और किसान हैं। पहले वे यहां राज करते थे। मरोठा तहसील में कुर्मी और घोष ठाकुरों की जमींदारी अधिक है।

आधे से अधिक मुसलमान लोग खेती करते हैं। कुछ धुना और जुलाहे हैं।

यहां की भाषा बुन्देली या बुन्देलखण्डी हिन्दी है। पढ़े लिखे लोग पश्चिमी हिन्दी या उर्दू बोलते हैं। कुछ मरहठों के घरों में मरहठी बोली जाती है। अब से २०० वर्ष पहले कुछ कंघी बनाने वाले लोग अजमेर से आकर यहाँ बस गये। वे बंजारी बोलते हैं।

बहुत पुराने समय में इस जिले के बड़े भाग में जङ्गल था। पर देवगढ़ और दूसरे स्थानों में पुराने शिलालेख मिले हैं। इनसे पता चला है कि अब से पन्द्रह सौ वर्ष पहले यहां मौर्यवंश का राज्य था। इसी समय हूण लोगों का हमला हुआ। छठी सदी में यहां राजा हर्षवर्द्धन ने राज्य किया।

पहले इसका नाम जजभुक्ति था। यहीं नवीं सदी में राजा भोज का राज्य हुआ। इसके बाद चन्देले राजा हुए। इन्होंने कन्नौज के राजा को भी हरा दिया। जब पञ्जाब के राजा जयपाल पर अफ़ग़ानिस्तान के सुल्तान ने हमला किया तो पंजाब के मदद के लिये चन्देलों ने एक फौज भेजी थी। लेकिन मुसलमान मज़बूत होते गये। जब कन्नौज के राजा ने मुसलमानों की अधीनता स्वीकार कर ली तो यहाँ के लोग कन्नौज वालों से बड़े नाराज़ हुए। इससे यहाँ भी मुसलमानी हमला हुआ।

यहाँ का राजा परमाल बहुत मशहूर है। पृथिवीराज चौहान और उसके बीच में पहूज नदी के पास बड़ी भारी लड़ाई हुई। ललितपुर के पास मदनपुर गांव में एक ऐसा पत्थर मिला है जिस पर पृथिवीराज ने अपनी जीत का हाल खुदवाया था। लेकिन अब से सात सौ वर्ष पहले सुल्तान कुतुबुद्दीन ने इस ज़िले को अपने राज में मिला लिया। इस तरह चन्देली राज्य का अन्त हो गया। इन चन्देले लोगों ने बहुत से ताल, मन्दिर और महल बनवाये थे। उनके निशान अब तक बाकी हैं। कुछ ही समय में वीर बुन्देले लोग उठे। इनका पहला सरदार ईश्वर को प्रसन्न करने के लिये छुरी लेकर अपने को बलिदान करने लगा। उसका एक बूँद खून ज़मीन पर गिरा कि उसका हाथ रोक लिया गया। वह फिर राजा हो गया। पर लोहू का बूंद नीचे गिरने के कारण उसके वंश के लोग बुन्देले कहलाने लगे।

बाहरी हमले होने पर भी चन्देले लोग बड़े बलवान हो गये। अन्त में अकबर ने बुन्देले राजपूतों को अपने वश में कर लिया।

अब से २०० वर्ष पहले यहां के राजा छत्रसाल ने मरहठों की मदद से मुग़लों के दांत खट्टे कर दिये। अब मरहठों का राज्य तेज़ी से बढ़ने लगा। उनके एक सरदार नारूशंकर ने झांसी शहर को बसाया और किले को मज़बूत बना दिया। आगे चलकर १८०० ई० तक इधर का मरहठा राजा पूना दरबार से अलग होकर स्वाधीन हो गया। इसी बीच जो अँग्रेज़ी सौदागर हिन्दुस्तान में व्यापार करने आये थे वे राजा बन गये। उनका राज बढ़ते बढ़ते धसान नदी तक फैल गया। इस तरह १८१७ ई० में नारूशंकर का नाती (लड़के का लड़का) अँग्रेज़ों के अधीन हो गया। होते होते १८५३ में इस ख़ानदान का आख़िरी राजा बिना सन्तान के मर गया। झांसी का राज अँग्रेज़ी राज्य में मिला लिया गया। विधवा रानी लक्ष्मीबाई को ५००० रू० साल की पेन्शन बँध गई।

तीन चार वर्ष में यहां ग़दर हुआ। अँग्रेज़ अफसर मार डाले गये बाग़ियों ने राज लक्ष्मीबाई को सौंपा। कुछ अँग्रेज़ बरेठा में कैद कर लिये गये और बानपुर का राजा चन्देरी का मालिक बन गया। उसने बानपुर में नये ढँग का तोपखाना तयार करवाया। झांसी की रानी ने पंडवाहा मऊरानी आदि स्थानों पर अधिकार कर लिया। रानी बड़ी बहादुर निकली उसका राज बेतवा और धसान नदियों के बीच में सब कहीं फैल गया। फिर वह बाग़ी नाना साहब, तांतिया टोपी और बानपुर के राजा से मिल गई।

इतने में अंग्रेज़ी फौज बढ़ने लगी। इसे रोकने

के लिये तांतियाटोपी ने रास्ते के जंगल में आग लगा दी। लेकिन कुछ ही समय में इस फौज ने झांसी को घेर लिया और ले लिया। रानी मरदाना पोशाक पहन कर कालपी की ओर चली आई। लड़ाई कई महीने तक चलती रही लेकिन आपस की फूट से बागी हार गये। सब कहीं अंग्रेज़ी राज्य हो गया। तब से अब तक जिले में कोई खास घटना न हुई।

## राज-प्रबन्ध

जिले का सबसे बड़ा हाकिम कलक्टर कहलाता है। उसका दफ़्तर झांसी शहर में है। यहीं वह कचहरी करता है। समय समय पर वह जिले का दौरा भी करता है। उसका एक सहायक ललितपुर में रहता है। तीन डिप्टीकलक्टर और असिस्टेण्ट मजिस्ट्रेट उसके काम में हाथ बटाते हैं। झांसी छावनी के लिये एक कण्टून मैजिस्ट्रेट अलग होता है। छावनी के सारे मुकद्दमे उसी के पास जाते हैं।

कलक्टर को पुलिस से बड़ी मदद मिलती है। खुफिया पुलिस के लोग भेष बदल कर जुर्म का पता लगाते हैं। दूसरे पुलिस के लोग वर्दी पहनते हैं। इनका सबसे बड़ा हाकिम पुलिस सुपरिंटेण्डेण्ट कहलाता है। उसको बहुत से थानेदार लोग मदद देते हैं। ये लोग अपने अपने थाने की देखभाल करते हैं। इसको कस्बों में सिपाहियों और गांवों में चौकीदारों से मदद मिलती है।

मुकदमों का फैसला करने के लिये जज, कलक्टर ज्वाइंट मजिस्ट्रेट और डिप्टी कलक्टर से मदद मिलती है। मालगुज़ारी वसूल करने के लिये पटवारी कानूनगो नायब तहसीलदार और तहसीलदार होते हैं।

शहर की सफाई और शिक्षा का काम म्युनिसिपेलिटी के मेम्बर करते हैं। इनको शहर के लोग हर तीसरे वर्ष चुना करते हैं। इसी तरह जिले भर की शिक्षा सफाई आदि का प्रबन्ध डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के मेम्बर लोग करते हैं। इन मेम्बरों को देहात के लोग चुना करते हैं।

## झांसी-तहसील

बबीन एक बड़ा गांव है। ललितपुर से झांसी जाने वाली पक्की सड़क यहीं होकर जाती है। झांसी शहर यहां से १७ मील दूर है। गांव में तीन बड़े तालाब हैं। यहां एक स्कूल, थाना और डाकखाना है। इसी नाम की रेलवे स्टेशन गांव से २ मील दूर है। लेकिन यहां तक पक्की सड़क जाती है।

बड़ा गांव बेतवा नदी के बायें किनारे पर बसा है। इसके पास ही फौजी कैम्प है। लेकिन बरसात में इधर बाढ़ आ जाती है।

बड़वा सागर—उस सड़क पर बसा है जो मऊ से झांसी को जाती है। झांसी शहर यहां से १२ मील दूर है। झांसी-मानिकपुर लाइन यहां से सिर्फ दो मील दक्षिण-पूर्व की ओर है। यहां से ½ मील पूर्व की ओर बड़ी झील है। अब से २०० वर्ष पहले इस झील और इसके किनारे पर बसे हुए क़िले को ओरछा के राजा उदेत सिंह ने बनवाया था। इसी के पानी से सिंचाई हो जाने के कारण यहां तरह तरह की तरकारी उगाई जाती है। यह झांसी शहर में बिकने जाती है। यहां अजायब घर बनाने के लिये महोबा आदि स्थानों से मूर्तियां मंगाकर इकट्ठी की गई थीं। इसके पास ही कई मठों के खंडहर हैं।

बिजोली इस गांव में होकर झांसी से सागर को पक्की सड़क जाती है। इसके पास ही सिंचाई का एक ताल है। किनारे पर एक पुराना चन्देरी मन्दिर है।

रकसा गांव झांसी से ७ मील दूर है और झांसी-सीपरी सड़क पर पड़ता है। गांव के पास ही ईंटों का बना हुआ पुराना टूटा फूटा किला है। अच्छी ज़मीन को नालों के कटने से बचाने के लिये यहां कई प्रयत्न हुए।

झांसी शहर कलकत्ता और बम्बई से लगभग बराबर दूरी पर है। यह एक बड़ा रेलवे जंकशन है। यहां से एक लाइन मऊ हरपालपुर, महोबा, बांदा और करवी होती हुई मानिकपुर को गई है। दूसरी लाइन उत्तर की ओर कानपुर को और दक्षिण को ओर इटारसी को गई है। एक लाइन आगरा को जाती है। यहां से कई पक्की सड़कें भी पड़ोस के शहरों को जाती हैं। कच्ची सड़कों का तो जाल सा बिछा हुआ है।

लेकिन यह शहर बहुत पुराना नहीं है। अब से

लगभग चार सौ वर्ष पहले बेगरा पहाड़ी के नीचे अपने दो घर बना लिये थे। जिस पहाड़ी पर क़िला बना है उसी का नाम बांगरा है। उस समय यहां किला न था। वे पहाड़ी के ऊपर बैठकर दूर तक अपने ढोरों को देख सकते थे। फिर ८० वर्ष बाद ओरछाबाद के बीरसिंह महाराज ने यहां किला बनवा दिया। क़िले के पड़ोस में रहने से जान माल की रक्षा होती थी। इसलिये क़िले के नीचे अब एक बड़ा क़स्बा हो गया। अब से ३०० वर्ष पहले यह क़िला मुग़लों के हाथ में चला गया। लेकिन वे इसे बहुत दिनों तक न रख सके। १०० वर्ष बाद मरहठों ने इस क़िले को उनसे छीन लिया। उन्होंने इसे बहुत मजबूत भी बना लिया। अब से लगभग सौ वर्ष पहले मरहठों ने लक्ष्मी तालाब, मन्दिर और शहर की चार दीवारी बनवायी। ग़दर से तीन चार वर्ष पहले झांसी का क़िला और शहर अंग्रेजों के हाथ में आया। ग़दर में इनकी हालत बड़ी नाज़ुक हो गई। १८६० ई० में यह शहर और किला सिन्धिया महाराज को दे दिया गया। ग्वालियर के किले में अंग्रेजी फौज रहने लगी। १८८५ ई० से फिर अदल बदल हो गया। झांसी में अंग्रेजी फौज रहने लगी और ग्वालियर पर सिन्धिया महाराज का अधिकार हो गया। तब से अब तक यहां बराबर अंग्रेजी शासन है। किले के भीतर शिवरात्रि को लोग मन्दिर का दर्शन करने जा सकते हैं।

कई रेलों और सड़कों का मेल होने से झांसी शहर का कारबार बहुत बढ़ गया है। पास ही रेलवे का कारखाना है जहां रेल के डब्बों की रँगाई, मरम्मत और बनाने का काम होता है। यह शहर जिले भर की राजधानी है। इसलिये यहां बड़ी बड़ी कचहरी और दफ़्तर हैं। जिले भर के बड़े बड़े मुक़द्दमे यहीं तय होने जाते हैं। यहां एक कालेज और कई स्कूल हैं। यहीं बेतवा नहर का बड़ा दफ़्तर है। यहां जी० आई० पी० रेलवे का एक बहुत बड़ा कारखाना है जिसमें लगभग चार हज़ार आदमी काम करते हैं। यहां कालीन भी अच्छे बनते हैं। यहां एक इण्टर (Gourn ment Inter) कालेज और तीन हाई स्कूल हैं।

## कोच भवन

यह गांव झांसी से ४ मील पूर्व की ओर कानपुर जाने वाली सड़क पर बसा है। इसके पास सिंचाई का एक पक्का बड़ा ताल है।

## मोठ

मोठ क़स्बा झांसी से कानपुर जाने वाली पक्की सड़क से लगा हुआ बसा है। यहां तहसील, थाना, डाकखाना स्कूल और रेलवे स्टेशन है। पड़ोस में ही गुसाइयों के बनवाये हुए किले के खंडहर हैं।

बघैरा में एक पहाड़ी के ऊपर एक छोटा मन्दिर है। यहां दो कच्ची सड़कें मिलती हैं।

चिरगांव पहले बुन्देले सरदारों के हाथ में था। ग़दर के बाद उनकी जागीर छिन गई और किला तोड़ दिया गया। फिर भी यहां का व्यापार कुछ कुछ बढ़ रहा है। इराछ गांव बेतवा नदी के दाहिने किनारे पर बसा है। नदी को पार करने के लिये यहां एक घाट है। यहां होकर एक पक्की सड़क झांसी को जाती है। झांसी शहर यहां से ४२ मील दूर है। गांव के बाज़ार में फसली चीज़ों को छोड़कर छींट और चुनरी भी बिकने आती हैं। चुनरी लाल या पीली रंगी होती है। इसके बीच बीच में सुन्दर बेल बूटे रंगे रहते हैं। औरतें चुनरी ओढ़ना बहुत पसन्द करती हैं।

मुसलमानी समय में यह क़स्बा सूबा आगरा की एक सरकार की राजधानी था। यहां बहुत पुराने खंडहर हैं। यहां की मस्जिदों और दूसरी इमारतों में इनसे कहीं अधिक पुराने हिन्दू राजाओं के समय के खम्भे और पत्थर लगे हुए मिलते हैं। पर अब वे अधिकतर खंडहर हैं।

पूंछ गांव झांसी से ४० मील और मोठ से ९ मील दूर है। झांसी—कानपुर सड़क यहां होकर जाती है। पास ही रेलवे स्टेशन है। यहां काफी बड़ा बाज़ार लगता है। यहीं बहुत मोटी कच्ची दीवारों से घिरा हुआ पुराना किला है।

**भसनेह**—यह गांव गरौठा से आठ मील दूर है। इसके पास ही बन है। यहां से १२ मील उत्तर की ओर एक पहाड़ी पर एक पुराना किला

बना है। गदर के दिनों में भासनेह के ठाकुरों ने किले पर अपना अधिकार कर लिया था।

गरौठा गांव धसान नदी से ७ मील दूर लखेरी नाले के किनारे बसा हुआ है। इसके अड़ोस पड़ोस में कटी फटी जमीन और जंगल है। वैसे तो यहां से झांसी और दूसरे कस्बों को सड़क गई है। पर बरसात में रास्ते के नालों को पार करना मुश्किल हो जाता है। इन दिनों लोग मऊ रेलवे स्टेशन पर गाड़ी में सवार होकर झांसी पहुँचते हैं।

**गुरसराय**—यह क़स्बा बेतवा और धसान नदियों के बीच में समतल जमीन पर बसा है। यहां से एक पक्की सड़क गरौठा को गई है। कच्ची सड़क मोठ और दूसरे गांवों को भी गई है। गांव के आधे मकान पक्के बने हैं। बीच में बाजार है। पास ही क़िला और पक्का ताल है। पहले मिर्जापुर की ओर से आने वाली गुड़ का व्यापार बहुत होता था। इसलिये इसका नाम गुर (गुड़) सराय पड़ गया। गरौठा तहसील में यह सबसे बड़ा कस्बा है यहाँ पुराने समय का बना हुआ एक किला है जिसमें यहाँ के सबसे बड़े जमीदार रहते हैं ये पेशवा वंश के जागीरदार हैं।

## मऊ तहसील

मऊ नगर झांसी से ३९ मील दूर नौ गांव जाने वाली पक्की सड़क पर बसा है। यहाँ से उत्तर की ओर गुर सराय को और दक्षिण की ओर टीकमगढ़ को पक्की सड़कें गई हैं। कच्ची सड़कें गरौठा और लहचूरा को गई हैं। अक्सर इसे मऊ-रानीपुर कहते हैं। लेकिन रानीपुर गांव यहां से ४ मील पश्चिम की ओर सुपरार और सुखनई नदियों के संगम पर बसा है। सुखनई नदी मऊ कस्बे को स्टेशन से अलग करती है। गांव के मकान बीच बीच में पेड़ होने से बड़े सुडौल मालूम होते हैं। यहां कई मन्दिर हैं। चौड़ी पक्की-सड़क के दोनों ओर दुकानें हैं। एक भाग में उनका रंग कुछ लाल है। इसी से बाजार का नाम ही लाल बाजार हो गया। मरहठों ने यहां कुछ कुछ किलाबन्दी करवाई थी। लगभग सौ वर्ष पहले पिंडारियों ने इसे एकदम लूट लिया था। गदर में भी यहां के लोगों को बड़ी हानि उठानी पड़ी।

फिर भी यहां काफी व्यापार होता है। यहां का खरूआ, पतरी, चांती, और जमरूदी कपड़ा बहुत मशहूर है। यहां से चना, दाल और घी बाहर को बहुत जाता है। शक्कर, नमक, कपड़ा और गेहूँ बाहर से आता है।

भादों के महीने में सुखनई नदी के किनारे यहां जल विहार मेला लगता है। यहां के मेले में गाय-बैल और दूसरे जानवर भी बहुत बिकते हैं।

अड़जार गांव के दक्षिण में एक बड़ी झील है। इससे खेत सींचे जाते हैं। कहते हैं कि सन् १६७१ ई० में ओरछा के सुजन सिंह ने इसे बनवाया था। इसके पक्के किनारों के भीतर ५८ मील का पानी बह आता है। इस में एक बांध मरहठों ने तयार कराया था।

कटेरा कस्बा मऊ से १५ मील और झांसी से ३० मील दूर है। यहीं मिट्टी के बर्तन कुल्हाड़ी, बसूला आदि अच्छे बनते हैं।

घाट कोटरा धसान नदी के पास है। यह गांव मऊ से १२ मील और झांसी से ५२ मील दूर है। जैसा इसके नाम से ही जाहिर है। यहां नदी पार करने के लिये १ घाट है।

घाट लहचुरा धसान के किनारे पर झांसी से ५० मील और मऊ से १० मील दूर है। नदी को पार करने के लिये यहाँ एक घाट है। लेकिन यहाँ से ३ मील दूर धसान नदी के ऊपर झांसी मानिकपुर रेलवे का पुल है। लहचुरा के पास ही सिंचाई के लिये एक बड़ा २२१० फुट लम्बा, बाँध बना हुआ है।

**रानीपुर**—अब से ढाई सौ वर्ष पहले ओरछा-नरेश की विधवा रानी हीरादेवी ने इसे बसाया था। इसीलिये इसका यह नाम पड़ गया। यह सुखनई नदी के बायें किनारे बसा है। नदी की रेतीली तली में साफ पानी बहता है। पश्चिम की ओर बाजार है। बाहर मरहठों का बनवाया ईंट का पुराना किला है। पर यह गाँव धीरे धीरे घट रहा है।

**सकरार**—एक छोटा गाँव है। यह झांसी और मऊ से बराबर की दूरी पर है। उत्तर-पश्चिम

की ओर आल्हा-ऊदल की बनवाई हुई बैठक के खंडहर हैं।

**सियाउरी**—एक बड़ा गाँव है। यहीं रानीपुर से आने वाली सड़क मऊ से गुरसराय जाने वाली असली सड़क में मिलती है। यहाँ सिंचाई का एक बड़ा ताल है।

## ललितपुर तहसील

ललितपुर—पहले यहां ज़िले का सब से बड़ा दफ़्तर था। अब यह झाँसी में शामिल कर दिया गया है यहाँ अब केवल तहसील है इस तहसील का यही सबसे बड़ा शहर है और रेलवे स्टेशन है यह शाहज़ाद नदी के पश्चिमी किनारे पर बसा है। इसके उत्तर में बियना नाला है। कटरा और नजही यहाँ के दो बाजार हैं। यहाँ से तिलहन, चमड़ा, घी, घास, हड्डी और लकड़ी बाहर जाती है। शक्कर, नमक और कपड़ा बाहर से आता है। यहाँ लगभग ५० हिन्दू मन्दिर हैं। यहाँ अंग्रेज़ी हाई स्कूल भी है।

ताल बेहत-क़स्बा झाँसी से सागर जाने वाली सड़क से लगा हुआ बसा है। यह क़स्बा झाँसी से ३० मील और ललितपुर से ३६ मील दूर है। स्टेशन क़स्बे से सिर्फ़ डेढ़ मील दूर है। इसके नाम से ही ज़ाहिर है कि यहां एक बड़ा ताल है।

गोंड बोली में बेहत गाँव को कहते हैं। इसका बहुत सा भाग पहाड़ी के पश्चिम में बसा है अब से लगभग तीन सौ वर्ष पहले चन्देरी के राजा ने यहाँ एक किला बनवाया था। ग़दर में क़िला टूट फूट गया। पास ही नरसिंह का मन्दिर और एक पठान दरगाह है। गाँव के बीच में एक बाजार है। इसके इधर उधर खपड़ैल से छाई हुई नीची दुकानें हैं।

ताल क़स्बे से एक चौथाई मील दूर है। यह बड़ा ताल दो बाँधों के बनाने से तयार किया गया। कहते हैं कि इसका बनाने वाला भूरा ब्राह्मण था। यहाँ के किसान लोग इस भले ब्राह्मण को अब भी बड़े प्रेम से याद करते हैं।

जाखलोन से एक कच्ची सड़क ललितपुर को जाती है जो वहां से उत्तर-पूर्व की ओर १२ मील दूर है। स्टेशन लगभग आध मील दूर है। गांव से स्टेशन को पक्की सड़क जाती है। यहां थाना, डाकखाना और स्कूल है। यहां हरबार को बाज़ार लगता है।

जखौरा गांव ललितपुर से उत्तर-पश्चिम की ओर १७ मील दूर है। एक बड़े तालाब के बांध के नीचे गांव बड़ा सुन्दर बसा है। यहां हर बृहस्पतिवार को बाज़ार लगता है। इसी नाम को स्टेशन गांव से पूर्व पांच मील दूर है।

मदनपुर—यह गाँव ललितपुर से ३५ मील की दूरी पर विन्ध्याचल के सबसे आसान दर्रे के पास बसा है। पड़ोस में ही चन्देलों का बनवाया हुआ पक्का ताल है। गांव के ठीक दक्षिण में पत्थर निकलता है। पहले यहां कच्चा लोहा भी साफ किया जाता था। इसके पड़ोस में बहुत पुराने खंडहर हैं। यहां की पुरानी बारादरी पर पृथ्वीराज चौहान के दो लेख खुदे हैं।

पाली एक बड़ा गांव है। ललितपुर से दक्षिण की ओर यह गाँव १ मील दूर है। बुन्देलों का बनवाया हुआ क़िला एकदम उजड़ गया है। यहाँ पान के बड़े बड़े बगीचे हैं। हर बार जो बाज़ार लगता है। एक मील दूर पहाड़ी चोटी पर जङ्गल से घिरा हुआ नील कंठ महादेव का मन्दिर है।

सीरों कलां—यह गांव ललितपुर से १० मील उत्तर-पश्चिम की ओर है। पहले यह बहुत बड़ा था। यहाँ बहुत से पुराने मन्दिर हैं। एक चौकोर शिला पर कन्नौज के कई राजाओं, भोज, महीपाल और दूसरे नामों के साथ ९६० से १०२५ तक कई सम्वत खुदे हैं।

बल बेहत—एक बड़ा गांव और परगना है। ललितपुर से २८ मील दक्षिण में यह गांव विन्ध्याचल पहाड़ पर बसा है। इसी से यहां के घर बलुआ पत्थर के बने हैं। उत्तर की ओर एक पुराना मरहठों का बनवाया हुआ किला है। कुछ लोग कहते हैं कि इस किले को गोंड लोगों ने बनवाया था। इसके अन्दर एक बाउली है। इससे तुम बिना रस्सी के ही पानी भर सकते हो पश्चिम की ओर एक सुन्दर मन्दिर है। जो एक छोटी धारा के किनारे बसा है। ग़दर के दिनों में बुन्देला सरदारों ने इस किले को छीन लिया था। इसे लेने के लिये सागर से एक

फौज भेजी गई थी। लेकिन यह फौज भी बुन्देलों से मिल गई और बाग़ी बन गई।

बांसी गांव उस पक्की सड़क पर बसा है जो ललितपुर से झांसी को गई है। यह ललितपुर से सिर्फ १३ मील दूर है। लेकिन झांसी यहां से ४३ मील दूर है। यहां पहुँचने के लिये जखौरा स्टेशन पर उतरते हैं जो गांव से सिर्फ पांच मील दूर है। यहां हर बुधवार और रविवार को बाजार लगता है। कोई तीन सौ बर्ष पहले यहां के राजा कृष्णराव ने एक क़िला बनवाया था। अब उस क़िले में डिस्ट्रिक्ट (जिले) का बंगला है।

बांट (Bant) गांव जखलोन रेलवे स्टेशन से सिर्फ ४ मील दूर है। लेकिन बरसात में शाहजाद नदी में बाढ़ आने से स्टेशन तक पहुँचना कठिन हो जाता है। १८६८ के अकाल में यहां एक सुन्दर सिंचाई का ताल बनवाया गया था। ताल के ऊपर चुआन झरना है। इसके पास ही शिवरात्रि को महादेव का मेला लगता है।

बिजरोया के लोग कई छोटे छोटे गांवों में बसे हैं। इसी नाम की स्टेशन यहां से २ मील दूर है। कहते हैं कि यहां बारी बारी से भील, गोंड, चन्देल और बुन्देल लोगों की बस्तियां बसीं। यहां से दो मील दूर स्टेशन पर बांसों की मंडी है।

चांदपुर के पास कई पुराने जैन मन्दिरों के खंडहर हैं। पास ही बहुत से पुराने मन्दिर हैं। एक जगह ८ सौ वर्ष का पुराना लेख खुदा हुआ है।

देवगढ़ दक्षिणी-पश्चिमी सीमा पर एक प्रसिद्ध स्थान है। यहां से कुछ ही दूर बेतवा के किनारे करनाली क़िला बना हुआ है। पास ही जैनियों के १६ मन्दिर हैं। मैदान में प्रसिद्ध दशावतार विष्णु (दस अवतारों) का मन्दिर है। एक मन्दिर पर राजा भोज के समय का लेख खुदा हुआ है।

धौरी गांव ललितपुर से १८ मील दक्षिण की ओर विन्ध्याचल पठार पर बसा है। कहते हैं कि पुराने समय में जब जरासन्ध ने मथुरा पर चढ़ाई की तो श्रीकृष्ण और बलराम दौड़ कर यहां छिप गये इसी से इसका नाम दौरी पड़ गया। इस गांव के पड़ोस में जंगल बहुत है। दो मील की दूरी पर हरदारी से पत्थर निकलता है। इसी से आजकल यहां से लकड़ी और पत्थर बाहर को भेजे जाते हैं।

दुधई—ललितपुर से ठीक दक्षिण में आजकल यह एक छोटा गांव है। पर इसके पड़ोस के खंडहरों को देखने से मालूम होता है कि पुराने समय में यह बड़ा भारी शहर रहा होगा। मुझा नाला के आर पार बांध बन जाने से नीचे एक चौकोर चुआ (सोता) निकल आया। इससे यहां एक झील तयार हो गई जो सिंचाई के काम आती है। तालाब के पूर्व में जंगल से ढका हुआ वामन का मन्दिर है।

हरसपुर—ललितपुर से १६ मील उत्तर की ओर एक छोटा गांव है। पर कहा जाता है कि पुराने समय में यह गोंड और चन्देलों की राजधानी रह चुका है।

महरोनी—महरोनी ललितपुर के दक्षिण पूर्व में २३ मील की दूरी पर स्थित है। टीकमगढ़ को जाने वाली पक्की सड़क यहाँ होकर जाती है। यहाँ तहसील, थाना, डाकखाना और टाउन स्कूल है। हर सोमवार को यहाँ काफी बड़ा बाजार लगता है जिस क़िले में आजकल थाना और तहसील है उसे चन्देरी के राजा मानसिंह ने अब से लगभग दो सौ वर्ष पहले बनवाया था। फिर यह सिन्धिया महाराज के हाथ लगा। ओर्छा के राजा ने इसको लेने की कोशिश की लेकिन वे उसे ले न सके।

सुनरई गाँव ललितपुर से ३६ मील दक्षिण-पूर्व की ओर है। यहाँ महाराज छत्रसाल के नाती (लड़के का लड़का) का बनवाया हुआ लगभग २०० वर्ष का पुराना क़िला है। गदर में यह बहुत कुछ टूट गया। यहाँ कुछ पुराने मन्दिर हैं। पास में ताँबा निकलता है।

## महरोनी तहसील

बानपुर गाँव जमनी नदी से सिर्फ ढाई मील है। यहाँ से एक कच्ची सड़क टीकमगढ़ को और दूसरी ललितपुर को जाती है। पुराना महल टूटी फूटी हालत में है। गदर के दिनों में राजा अंग्रेजों से लड़ा था। इसी से उसका राज छिन गया। पहले यहाँ का पान बहुत मशहूर था।

बार—यह गांव ललितपुर से १७ मील दूर है।

यह पहाड़ी के पूर्वी ढाल पर बसा है। यहीं बाँध बना कर सिंचाई का ताल तयार किया गया। बाँध के पास केवड़ा के पेड़ हैं पहाड़ियों पर बन है जिसके बीच में बुन्देले राजपूतों की पुरानी इमारतों के खंडहर हैं।

धौरी सागर गाँव मदौरा से ८ मील और ललितपुर से ४२ मील दक्षिण-पूर्व की ओर बसा है। यहीं महाराज छत्रसाल ने मुग़लों की शाही सेना को हराया था। सिंचाई के ताल के ऊपर बसा हुआ गाँव बड़ा सुन्दर मालूम होता है।

गिरार गांव धसान नदी के किनारे एक पहाड़ी के ऊपर बसा है। यहां कई पुराने मन्दिर और क़िले के खंडहर हैं।

मदौरा गाँव ललितपुर के दक्षिण पूर्व में ३४ मील की दूरी पर बसा है। यहाँ एक स्कूल, थाना और डाकखाना है। गाँव दक्षिणी सिरे पर मरहठों का बनवाया हुआ एक टूटा क़िला है। इसके नीचे सिंचाई का एक ताल है।

सढ़मार—मदौरा से ३ मील उत्तर और ललितपुर से ३१ मील दक्षिण पूर्व की ओर बसा है। यहाँ कई जैन मन्दिर हैं। एक सती शिला के ऊपर सम्बत १८१३ और बादशाह आलम गीर का नाम खुदा हुआ है।

★ ★ ★

# जालौन

## स्थिति और सीमा

यमुना नदी उत्तर की ओर सब कहीं जालौन ज़िले को घेरे हुए है। इटावा या कानपुर ज़िले दूसरी ओर हैं। पश्चिम की ओर पहुज नदी ज़िले को ग्वालियर राज्य से अलग करती है। सिर्फ उत्तरी-कोने के पास दतिया राज्य की ज़मीन ज़िले के अन्दर घुस आई है। पहुज और सिन्ध नदी का संगम इसी राज्य में है। सिन्ध नदी कुछ ही दूर आगे यमुना में मिल जाती है। दक्षिण-पूर्व की ओर बेतवा नदी ज़िले को झांसी और हमीरपुर के ज़िलों से अलग करती है। इस ज़िले की अधिकतर सीमा नदियां बनाती हैं। इन नदियों को पार करने पर ही हम दूसरे ज़िले में पहुँचते हैं। लेकिन दक्षिण-पश्चिम की ओर कोई नदी नहीं है। पूर्व की ओर जालौन ज़िले और बाउनी राज्य के बीच में कोई नदी नहीं बहती है। फिर भी हद बनी हुई है।

इस ज़िले में पहाड़ नहीं हैं। सिर्फ उरई तहसील में सैयद नगर के पास दो पहाड़ी टीले हैं। और सब कहीं प्रायः समतल ज़मीन है। यमुना बेतवा और पहुज नदियों के पास ऊँचे किनारे हैं। बीच का भाग नीचा है। इस तरह इस ज़िले की बनावट एक कटोरे की तरह है जिसके किनारे ऊँचे हों और बीच का भाग नीचा हो। नदियों के पास वाले किनारे बहुत कट फट गये हैं। वहाँ ग़ारों (खड्डों) का जाल सा बन गया है। ये खड्ड बरसाती पानी से कटते कटते नदी के किनारे से एक दो मील भीतर की ओर पहुँच गये हैं।

ज़िले के ढाल का ठीक ठीक पता बेतवा का नहरों से चल जाता है। कुठौंद और हमीरपुर की नहरें बहुत टेढ़ी बनी हैं। बात यह है कि पानी सदा ऊंची ज़मीन से नीची ज़मीन की ओर बहता है। इसलिये जिधर को अच्छा ढाल मिला उधर ही नहर भी खोदी गई।

बीच के निचले भाग का बरसाती पानी बहा ले जाने का काम नोन और मेलुंगा नाम की दो छोटी नदियां करती हैं। इनका रास्ता भी सीधा नहीं है। उनका बहाव उत्तर-पूर्व की ओर है। बीच वाले हिस्से में वे एक दूसरे से बहुत दूर हो जाती हैं। लेकिन जब यमुना नदी आठ मील रह जाती है तो वे एक दूसरे से मिल जाती हैं। इस तरह यमुना में दोनों का मिला हुआ पानी गिरता है। जहां इनका और यमुना का संगम है वह स्थान भी काल्पी से ऊपर आठ ही मील दूर है। बड़ी नदियों की तरह इनके किनारों पर भी बड़े गहरे खड्ड या ग़ार बन गये हैं। इससे काल्पी परगना बहुत कटा फटा दिखाई

देता है। इन्हीं में खेतों की बहुत सी अच्छी मिट्टी भी बह आई।

जिले की बाहरी सीमा पर सब कहीं खड्डों या गारों की पेटी है। इधर बीच बीच में एक आध अच्छे खेत हैं। लेकिन अधिकतर उजाड़ टीले हैं जिन पर कंकड़ बिछे हुए हैं।

भरे खेत नजर आते हैं। केवल कहीं कहीं छोटे छोटे जङ्गल हैं। ऊँचे टीलों पर लाल ईंट और खपड़ैल वाले गांव मिलते हैं। गांव दूर दूर बसे हैं। किसी किसी गांव के पास पुराने किले के खंडहर दिखाई देते हैं। उत्तर की ओर मार और काबर की काली जमीन छिप जाती है। पड़वा मिट्टी नजर आने लगती
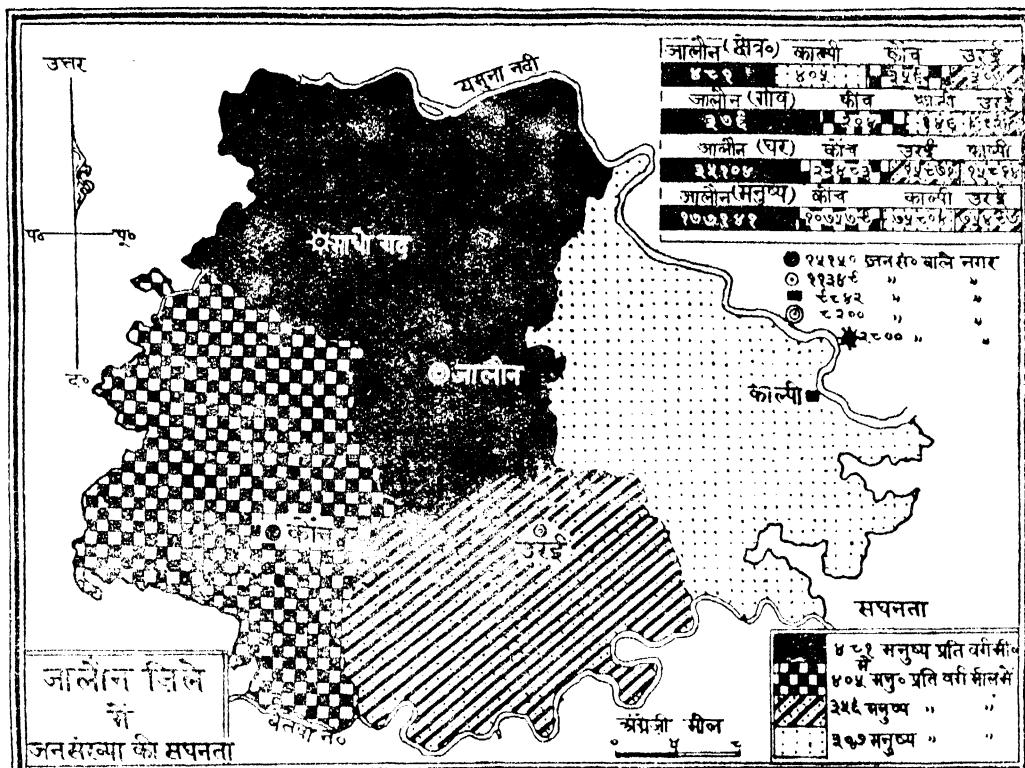
इसके ऊपर हलके रंग की बड़ी जमीन मिलती है। यहां की अच्छी मिट्टी बरसाती पानी के साथ नीचे बह गई अधिक आगे बीच के निचले भाग की ओर बढ़ने पर जमीन का रंग धुँधला हो जाता है। इस जमीन को किसान लोग काबर कहते हैं।

अन्त में काली मिट्टी मिलती है जिसे मार कहते हैं। जिले के बीच और दक्षिणी भाग में सब कहीं काबर और मार की धुंधली काली मिट्टी मिलती है। औसत से १० बीघे में ७ बीघे जमीन काली है। १ बीघा पड़वा और २ बीघे राकड़ जमीन है।

यह जिला प्रायः सब कहीं बारीक मुलायम मिट्टी से बना है। पहाड़ों की पथरीली जमीन का यहां नाम नहीं है। बीच वाले हिस्से में सब कहीं हरे

है। इधर खेती अच्छी है। गांव पास पास हैं। इनके अड़ोस पड़ोस में महुआ और आम के बगीचे हैं।

जिले में सोना चांदी आदि खनिज पदार्थ नहीं हैं। सिर्फ बेतवा नदी के पास मकान बनाने के लिये कुछ पत्थर मिलता है। सड़क कूटने के लिये कंकड़ बहुत जगह मिलता है।

मार की काली जमीन बड़ी उपजाऊ होती है। इसमें हर साल बिना खाद और सिंचाई के गेहूँ और चना की मिली हुई फसल अच्छी होती है। लेकिन अगर ज्यादा पानी बरस जावे तो इसमें हल चलाना मुश्किल हो जाता है। इसमें काँस उग आते हैं। जिनको अलग करना कठिन हो जाता है। पड़वा की जमीन चिकनी मिट्टी और बालू के मिलने से बनती

है। यह हलके रंग की होती है। लेकिन काबर मिट्टी दोनों के बीच की होती है। इसका धुंधला रंग न तो माड़ की तरह गहरा काला होता है न पड़वा की तरह सफेद होता है।

इस जिले में सब मिलाकर लगभग बीस फीसदी जमीन ऐसी है जहां कुछ नहीं पैदा होता है। २ फीसदी जमीन ऐसी है हां कांस, बबूल, ढाक और करौंदा का जङ्गल है। नीम, महुआ और आम के पेड़ भी जिले की एक फीसदी जमीन घेरे हुए हैं।

## नदियाँ

**यमुना नदी**—मितौरा गांव के पास जालोन जिले को पहले पहल छूती है। यहीं सिन्ध नदी इसमें मिलती है। यमुना नदी हमारे जिले की उत्तरी सीमा बनाती है। अगर हम इस जिले में यमुना के किनारे १५ मील प्रतिदिन की चाल से लगातार चलना शुरू करें तो हमको ठीक चार दिन लग जावेंगे। शेर गढ़ घाट के पास जालौन से औरैय्या जाने वाले मुसाफिर मिलेंगे।

ये लोग अपना सफर पैदल बैलगाड़ी या मोटर से पूरा करते हैं। वे यमुना को नाव से पार करते हैं। लेकिन काल्पी में एक पक्का पुल है जिस पर होकर उरई से कानपुर को रेल जाया करती है। जाड़े और गरमी के दिनों में यमुना नदी कहीं कहीं पाँज हो जाती है। तभी मुसाफिरों के लिये काल्पी में नाव का पुल तयार कर दिया जाता है। किनारों पर कई नाले हैं। इनसे बहुत से खड्ड बन गये हैं।

**बेतवा नदी**—६० मील तक जिले की दक्षिणी-पूर्वी सीमा बनाती है। यह नदी जिले को झांसी और हमीरपुर से अलग करती है। इसकी तली में यहां पत्थर नहीं है। पर बरसात में यह नदी काफी तेजी से बहती है। इन दिनों तुम इसे बिना नाव के पार नहीं कर सकते। गरमी के दिनों में इसमें इतना कम पानी रह जाता है कि इसे पार करने के लिये नाव की जरूरत नहीं पड़ती है। कुछ दूर तक इसके दोनों किनारे ऐसे ऊंचे नीचे और कटे हैं कि उन पर खेती नहीं हो सकती है।

**पहुज नदी**—बहुत छोटी है। यह नदी ग्वालियर राज्य से निकलती है और झांसी जिले में होकर इस जिले में आती है। यह जिले के बीच में बहती है। इसकी तली अक्सर पथरीली और रेतीली है। वर्षा ऋतु में जब इसमें अचानक बाढ़ आ जाती है तब इसे पार करना कठिन हो जाता है। बहुत दूर तक इसके किनारों को नालों और खड्डों ने काट दिया है। इसलिये सिंचाई के काम नहीं आती है।

## पशु

जालौन जिले में कई तरह के जानवर रहते हैं। चीता बहुत कम पाया जाता है। वह कभी कभी पश्चिम की रियासतों से भाग कर यहां आ जाता है। बड़ी बड़ी नदियों के खड्डों में तेंदुआ बहुत मिलते हैं। उन्हीं के पड़ोस में भेड़िया और बन बिलाव भी रहते हैं। काली मिट्टी के मैदान में हिरणों के झुण्ड अक्सर चरते दिखाई देते हैं। सियार और लोमड़ी नदियों के आस पास बहुत हैं। जङ्गली सुअर बहुत सी जगह किसानों के खेतों को नुकसान पहुँचाते रहते हैं। खरगोश, सेही और सांप सब कहीं पाये जाते हैं। बड़ी बड़ी नदियों में मगर, मछली और कछुये रहते हैं।

इस जिले के ढोर कुछ नाटे होते हैं। कोई कोई जमादार बाहर से बढ़िया बैल मँगाते हैं। ढोर खरीदने का सबसे बड़ा बाजार कूंच में लगता है। अमरबेड़ा और दूसरे बाजारों में भी बैल बिकते हैं। यहां अक्सर अकाल पड़ने के कारण बैल कम रह गये। जो बचे वह अच्छे न रहे। घोड़े भी बाहर से आते हैं। मालदार पट्टीदार उन पर चढ़ा करते हैं। घोड़े बोझ ढोने के काम आते हैं।

इस जिले में घास की अधिकता होने से भेड़ बकरी भी बहुत हैं। गूजर गड़रिया और अहीर लोग इन्हें बहुत पालते हैं। वे उनका दूध यहीं खर्च करते हैं और घी जिले के बाहर भेजते हैं।

## जलवायु

इस जिले में होली के कुछ ही दिन बाद गरमी पड़ने लगती है। एक दो महीने में खेतों में हरियाली का नाम नहीं रहता है। सभी घास झुलस जाती है। हवा आग की तरह गरम चलती है। इसमें धूल भी खूब मिली रहती है। इन धूल भरी आंधियों के आने

पर कुछ ठंडक पड़ने लगती है। फिर पानी बरसता है। कुछ दिन लगातार वर्षा के बाद फिर बाद में आस्मान साफ हो जाता है। यहां कभी बहुत कम पानी बरसता है। इससे कोई फसल नहीं उग पाती है। सब कहीं अकाल पड़ता है लोग भूखों मरने लगते हैं। जब कभी बहुत अधिक पानी गिरता है तो भी काली जमीन को बहुत नुकसान पहुँचता है।

## सिंचाई

जिले में पानी बहुत गहराई पर मिलता है। कुएँ पन्द्रह बीस गज गहरे होते हैं। बीच के भाग में तीस गज या इससे भी अधिक गहरे कुएँ होते हैं। इतने गहरे कुओं से पानी खींचकर खेत सींचना आसान नहीं है। इसीलिए सिंचाई के कुएं कम हैं। ताल भी अधिक नहीं हैं। नहर की सिंचाई बड़े काम की है। बेतवा नहर झांसी जिले से मिलती है। आगे बढ़ने पर इसकी दो शाखायें हो गई हैं। पश्चिमी शाखा कुठौंद कहलाती है। कुठौंद नहर दक्षिण पश्चिम की ओर से आती है। जिले में इस नहर का पूरा मार्ग ४४३ मील लम्बा है। पूर्वी शाखा इंगोई के पास हमारे जिले में घुसती है। इसका समूचा मार्ग ८३ मील लम्बा है। यह अन्त में हमीरपुर के पास अपना फालतू पानी यमुना में गिरा देती है।

जिले में इस पूर्वी शाखा या हमीरपुर नहर की लम्बाई ४६ मील है।

काली मिट्टी अपनी नमी काफी देर तक बनाये रखती है। उसको अलग बहुत सिंचाई की जरूरत नहीं पड़ती है। इसलिये नहर का रास्ता इस तरह गया है कि वह अधिकतर हलकी जमीन में होकर गुजरे। फिर भी इसका कुछ भाग काली भारी मिट्टी में स्थित है। छोटे मोटे सभी राजवाहों को मिलाकर इसकी लम्बाई लगभग ५०० मील है। इसके खोलने में तीन लाख से ऊपर खर्च हुआ। लेकिन इससे सात लाख एकड़ जमीन सींची जा सकती है।

## खेती

जिले के किसान अधिकतर गरीब और अनपढ़ हैं। जिस खेत में वे ज्वार या कपास बोते हैं उसे वे आषाढ़ के महीने में पानी बरसने पर सिर्फ एक दो बार जोतते हैं। इसी समय वे बाजरा धान, तिल और मकई भी बोते हैं।

हलके खेतों में कपास के साथ किसान लोग अरहर, मोठ, माश और कोदों को अक्सर मिला कर बोते हैं। जब ज्वार बाजरा की उंचाई एक दो फुट होती है तब किसान लोग हल चलाकर गुड़ाई कर देते हैं।

कुआर के महीने में किसान को बड़ी मेहनत करनी पड़ती है। गेहूँ और चना के खेत चार पांच बार जोते जाते हैं। इन दिनों की बोई हुई फसल को जंगली जानवरों से बचाने के लिये मेंड़ों पर कांटेदार पौदे इकट्ठे कर दिये जाते हैं। इधर ज्वार बाजरा की कटनई होती है। गेहूँ चना की फसल होली के बाद कटती है।

माड़ की काली जमीन में खाद की जरूरत नहीं पड़ती है। लेकिन उत्तर की ओर पड़वा जमीन में लोग अक्सर खाद देते हैं।

## आने जाने के मार्ग

पहले इस जिले में आने जाने में बड़ी मुश्किल पड़ती थी। न अच्छी सड़कें थीं न रेल ही थी। पानी की कमी से यहां अक्सर अकाल पड़ने लगे। १८३८ ई० में अकाल इतना विकराल था कि जिले के आधे से अधिक घर खाली हो गये। इसी तरह के अकाल लगभग हर दसवें साल पड़ने लगे। अकाल को दूर करने के लिये बहुत से उपाय किये गये। उनमें से एक यह था कि भीतरी भागों में अनाज पहुँचाने के लिये रेल और सड़कें खोली गईं। जो रेल पहले अकाल के लिये खोली गई वही रेल अब कानपुर को बम्बई से मिलाती है। इस रेल के ४५ मील जालौन जिले में पडते हैं। पिरोना, ऐत, उरई और कालपी उसके बड़े स्टेशन हैं। ऐत और कूंच के बीच में एक शाखा लाइन अलग है।

## पक्की

कानपुर, झांसी और सागर को मिलानेवाली पक्की सड़क ४४ मील तक अपने जिले में होकर जाती है। भुवा और पिरोना में दो छोटी सड़कें यहां और मिलती हैं। एक पक्की सड़क कूँच को उरई और ऐत से मिलाती है। दूसरी जालौन होती

हुई शेरगढ़ घाट को जाती है। कच्ची सड़कें यहां और भी अधिक हैं। बरसात के दिनों में आज कल भी छोटी छोटी नदियां रुकावट डालती हैं। पर यमुना नदी पर लगभग ७५ घाट हैं जहां मुसाफिरों को इस पार से उस पार ले जाने के लिये नाव रहती है। बाढ़ घटने पर काल्पी में नावों का पुल बन जाता है। यहीं रेल का सुन्दर और मजबूत पुल बना है। इसके सिवा बेतवा नदी पर तीन घाट हैं। एक घाट पहुज नदी पर है।

## व्यापार

कूंच और काल्पी बहुत पुराने समय से व्यापार के लिये मशहूर हैं। रेल खुलने के बहुत पहले से ही काल्पी उत्तरी हिन्दुस्तान में व्यापार की सब से बड़ी मंडी थी। बरसात में रास्ते बन्द हो जाने पर भी यहां गुड़, घी, नमक और चना का बड़ा व्यापार होता था। यह सामान दिल्ली, आगरा, मिर्जापुर और पटना तक पहुँचता था। हर साल पचास साठ लाख की तो कपास ही बिकती थी। १८४० ई० के बाद व्यापार घटने लगा।

आजकल व्यापार का सामान रेल से भेजा जाता है। एक ओर वह बम्बई को जाता है दूसरी ओर वह कानपुर और दूसरे शहरों में पहुँचता है।

पहले इस जिले में कपड़ा बुनने और रंगने का काम भी बहुत होता था। आजकल यह कारबार बहुत ढीला पड़ गया है।

सैयद नगर जामुर्दी कपड़े के लिये मशहूर था। यह ऐकरी के थान से तयार किया जाता था। वह ६३ गज लम्बा और दो गज चौड़ा होता था। उसको पहले धोकर साफ कर लेते थे। फिर उसे आठ दिन तक अंडी के तेल और नमकीन मिट्टी या रस्सी से रगड़ते थे। इसके बाद साबुन से धोकर उसे हर्रा के पानी में डुबाते थे। सूखने पर गेरू गोंद फिटकरी और पानी को मिलाकर छपाई होती थी। कई बार रंगाई, छपाई और गरम धुलाई के बाद बड़ा बढ़िया कपड़ा तयार होता था। उसका एक एक थान ९० रु० को बिकता था। वह पीलीभीत, बरेली, कोसी, हाथरस और नैपाल तक पहुँचता था। कोटरा में चुनरी का काम होता था। इससे यहां के लोगों को हरसाल १० हजार रुपये की आमदनी होती थी। आजकल यहां खरूआ और अमौआ कपड़े का कुछ काम होता है। कुछ साड़ी की रेशमी किनारी और गुलबदन का काम भी होता है। आजकल काल्पी में कपास ओटने की दो मिलें हैं। इसी तरह की एक एक मिल ऐत और कूंच में है।

## लोग

इस जिले के लोग अधिकतर छोटे छोटे गांवों में रहते हैं। सिर्फ काल्पी, कूंच, जालौन और उरई ऐसे कस्बे हैं जहां पाँच हजार से ऊपर मनुष्य रहते हैं। उरई तहसील में रेल और सड़कों की सुविधा होने के कारण व्यापार बढ़ गया। जमीन अच्छी है सिंचाई का भी आरम्भ है। इसी तरह जालौन तहसील में भी खेती अच्छी होती है। इसलिये इन दोनों तहसीलों में जिले की घनी आबादी बसी हुई है। काल्पी का पुराना व्यापार मिट गया। बहुत सी अच्छी जमीन नालों में बह गई। इसलिये यहां बहुत से लोगों की गुजर न हो सकी। कुछ लोग रोजी की तलाश में इधर उधर चले गये। इस तरह काल्पी तहसील की आबादी लगातार घट रही है।

इस जिले में लगभग पौने चार लाख मनुष्य रहते हैं। इनमें सौ पीछे लगभग ९४ हिन्दू और ६ मुसलमान हैं। जैन, ईसाई आदि तो १०० पीछे एक से भी कम हैं। हिन्दुओं में सब से अधिक (१८ फीसदी) चमार हैं। वे सभी तहसीलों में फैले हुए हैं और मेहनत मजदूरी करते हैं।

दूसरा स्थान ब्राह्मणों का है। वे १३३ फीसदी हैं। इनमें कुछ मरहठे हैं।

तीसरा नम्बर राजपूतों का है। वे लगभग ९३ फीसदी हैं। वे लोग जमींदार हैं जिले में ८ फीसदी काछी हैं। वे अधिकतर शाकभाजी उगाते हैं।

कोरी लोगों का पुराना काम कपड़ा बुनना था। वह तो मिट गया। अब वे खेती या मजदूरी करते हैं।

अहीर और गड़रिया लोग ढोर चराते हैं। कुरमी महाजन आदि दूसरे हिन्दू लोग बहुत कम हैं।

मुसलमान अधिकतर खेतिहर हैं। कुछ कपड़ा बुनते हैं।

यहां की भाषा बुन्देलखंडी हिन्दी है। कुछ मेवाती लोग राजस्थानी बोलते हैं।

## इतिहास

इस जिले के बहुत पुराने इतिहास का ठीक ठीक पता लगाना कठिन है। पर इसमें कोई शक नहीं कि यहां मौर्य और गुप्त वंश के राजाओं ने राज्य किया। अब से तेरह सौ वर्ष पहले यहां हर्ष वर्द्धन का राज्य था। आगे चलकर भी यहां कन्नौज के राजा राज्य करते रहे। अब से १००० वर्ष पहले खजुराहो और महोबा के चन्देले राजपूत जड़ पकड़ गये। काल्पी में चन्देल लोगों का मज़बूत क़िला था। फिर पहुज नदी के किनारे पर बसे हुये सिरसा नगर के पास पृथिवी राज चौहान के साथ चन्देलों का घमासान युद्ध हुआ। पृथिवी राज बड़ा बहादुर था चन्देले हार गये।

इसी समय मुसलमानों के हमले होने लगे। लेकिन बुन्देले लोगों ने अपना राज्य कर लिया।

बुन्देला नाम कैसे पड़ा? इसकी कथा पुरानी है। एक बार इनके पहले राजा पंचम का राजपाट छिन गया। इन्होंने ईश्वर से बड़ी प्रार्थना की अन्त में वे छुरी लेकर अपने को बलिदान करने लगे। इनकी गर्दन से लोहू का एक ही बून्द गिरा था कि ईश्वर ने उनकी मनोकामना पूरी की। वे फिर राजा हो गये और उनकी सन्तान के लोग बून्द गिरने के कारण बुन्देले कहलाने लगे। बुन्देले लोग अधिक समय तक स्वाधीन न रह सके मुगलों का राज यहां भी फैल गया। पर अब से दो सौ वर्ष पहले राजा छत्र साल ने मरहठों से मिलकर मुग़लों के दांत खट्टे कर दिये। छत्रसाल महाराज जालौन जिले पर राज करने लगे। जिले का कुछ भाग मरहठों को मिला। वे दिनोंदिन मज़बूत होते गये। लेकिन अब से लगभग सवा सौ वर्ष पहले अंग्रेज़ी सौदागरों (ईस्टइंडिया कम्पिनी) से उनकी लड़ाई हुई। इसमें मरहठे हार गये और जिले पर अंग्रेज राज करने लगे। इसके पचास वर्ष बाद यहां के लोगों ने अंग्रेजों को मार भगाने के लिये विद्रोह (बलवा) किया। लेकिन बागी लोग दबा दिये गये। तब से अब तक इस जिले में अंग्रेज़ी राज बराबर जारी है।

## राजप्रबन्ध

ज़िले का सबसे बड़ा हाकिम कलक्टर कहलाता है। उसका दफ़्तर जालौन शहर में है यहीं वह कचहरी करता है। समय समय पर वह ज़िले का दौरा भी करता है। उसको पुलिस से बड़ी मदद मिलती है। खुफिया पुलिस के लोग भेष बदल कर जुर्म का पता लगाते हैं। पुलिस के दूसरे लोग वर्दी पहनते हैं। इनका सब से बड़ा अफ़सर पुलिस सुपरिंटेंडेन्ट या कप्तान होता है। उसको बहुत से थानेदार मदद करते हैं। ये लोग अपने थाने की देख भाल करते हैं। इनको कस्बों सिपाहियों और गांवों में चौकीदारों से मदद मिलती है।

मुक़दमों का फैसला करने के लिये २ डिप्टी कलक्टर एक असिस्टेन्ट मजिस्ट्रेट, मुंसिफ और जज रहते हैं। मालगुजारी वसूल करने के लिये पटवारी कानून गो, नायब तहसीलदार होते हैं। शहर की सफाई और तालीम का काम म्यूनिसिपेलिटी के मेम्बर करते हैं। इनको शहर के लोग हर तीसरे वर्ष चुना करते हैं। इसी तरह ज़िले भर की तालीम सफाई आदि का प्रबन्ध डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के मेम्बर लोग करते हैं। इन मेम्बरों को देहात के लोग चुना करते हैं।

उरई शहर जालौन ज़िले की राजधानी है। यहीं जिले की कचहरी होती है। यह शहर झांसी से कानपुर जाने वाली सड़क के लगभग बीच में पड़ता है। यहां से कूंच और जालौन को भी पक्की सड़कें जाती हैं। पुराना उरई गांव एक पहाड़ी पर बसा था। नया कस्बा बहुत आगे फैल गया। फिर भी पक्के मकान यहां कम हैं कच्चे बहुत हैं। स्टेशन कस्बे से एक मील पश्चिम की ओर है। एक पुराने किले के खंडहर कस्बे के बाहर तक पाये जाते हैं। पास ही कई मुसलमानी मकबरे हैं। कस्बे के दक्षिणी सिरे पर पक्के घाट वाला सुन्दर ताल है। ताल के दूसरे किनारे पर जिला स्कूल है। रेल के खुल जाने से यहां का व्यापार काफ़ी बढ़ गया है।

**ऐत**—यह गांव उरई से १५ मील दक्षिण-पश्चिम की ओर है। गांव के पास ही रेलवे स्टेशन है। स्टेशन से मिली हुई कपास ओटने की मिल है।

कुछ दूर पर एक पुराने किले के खंडहर हैं। यहां गांव में एक थाना, डाकखाना और एक स्कूल है।

**कोटरा**—बेतवा नदी के किनारे उरई से १७ मील दक्षिण-पूर्व की ओर है। पुराने ज़माने में यह बहुत मशहूर था। १७०० ई० में महाराज छत्रसाल ने दो महीने तक घेरा डालने के बाद इसको जीत पाया था। पड़ोस में मुसलमानी खंडहर बहुत हैं। यहां पहले हर साल डेढ़ लाख रुपये का जामुर्दी कपड़ा तयार किया जाता था। अब यह कारबार सब मिट गया है। आजकल कुछ खरूआ कपड़ा रंगा जाता है। हर गुरुवार को बाजार होता है। मुहर्रम, चैत और कुआर में अलग अलग तीन मेले लगते हैं।

सैयद नगर उरई से १६ मील दूर बेतवा नदी के किनारे बसा है। मुसलमानी समय में यह बहुत मशहूर था। उस समय के यहां कई मकबरे और मसजिदें हैं। कोटरा की तरह यह क़स्बा भी जामुर्दी कपड़े के लिये मशहूर था। इस वक्त यहां सिर्फ कुछ खारुआ कपड़ा रंगा जाता है। हर बुधवार को बाज़ार लगता है। बेतवा को पार करने के लिये यहां घाट है।

अमखेड़ा जालौन तहसील में एक बड़ा गांव है। यहां गुड़ और नमक का बहुत व्यापार होता है। हर मंगलवार और शनिवार को बाजार लगता है।

भदेक आजकल एक छोटा गांव है। पर अकबर के समय में यह एक सरकार की राजधानी रहा। पीछे से फिर यहां हिन्दू राज हुए। गदर के दिनों में उनकी रियासत जब्त हो गई। लेकिन उनकी दो गढ़ियों के खंडहर अब तक मौजूद हैं।

हदरुख गांव उस पक्की सड़क के पास बसा है जो जालौन से शेरगढ़ घाट को जाती है। जालौन यहां से सिर्फ नौ मील दक्षिण की ओर है। बेतवा नहर की कुठौंद शाखा यहां होकर जाती है। यहां डाकखाना, पुलिस चौकी, बाड़ा और स्कूल भी है।

**जगमनी पुर**—इसी नाम की जागीर की राजधानी है। इसके पास ही सिन्ध नदी यमुना में मिलती है। यहां एक पक्का किला है। हर रविवार और गुरुवार को बाजार लगता है।

कंजौसा गांव बहुत छोटा है। कार्तिक की पूर्णमासी को यहां पचनदा मेला होता है। लोगों का कहना है कि चम्बल, कुवारी, सिन्ध और पहुज नदियों का पानी यहीं पर मिलता है। इस तरह इसके पास पांच नदियों का संगम होने से यहां पचनदा मेला लगने लगा।

कुठौंद यह गांव जालौन से १५ मील दूर है। जालौन से शेरगढ़ जाने वाली पक्की सड़क यहां होकर जाती है। इसी गांव के नाम से बेतवानहर की पश्चिमी शाखा पुकारी जाती है। यहां महरठों का बनवाया हुआ मन्दिर अबतक मौजूद है।

रामपुरा इसी नाम की जागीर की राजधानी है। यहां घी अनाज और कपास की मंडी है। खड्डों के ऊपर राजा का महल बहुत मज़बूत बना है।

जालौन क़स्बा उरई से सिर्फ १२ मील दूर है। दोनों एक पक्की सड़क जालौन से माधोगढ़ होती हुई शेरगढ़ घाट को गई है। यह क़स्बा नीची ज़मीन में बसा है इससे पड़ोस में पानी भर जाता है और बीमारी फैलती है। पहले यहां का व्यापार बहुत बढ़ा था। लेकिन रेल से दूर होने के कारण यह बहुत घट गया। यहां तहसील, थाना, डाकखाना, स्पताल, और टाउन स्कूल है।

**माधोगढ़**—जालौन के उत्तर पश्चिम में १३ मील की दूरी पर बसा है। यहां थाना, शफ़ाखाना, डाकखाना और स्कूल है। यहां का गल्ला घी, कपास बहुत मशहूर है।

काल्पी क़स्बा यमुना के ऊंचे दाहिने किनारे पर बसा है। उरई यहां से सिर्फ २२ मील दूर है। झांसी से कानपुर जाने वाली पक्की सड़क काल्पी होकर जाती है। यह सड़क नावों के पुल पर यमुना को पार करती है। बरसात में पुल तोड़ दिया जाता है और नाव से मुसाफिर लोग यमुना को पार करते हैं। क़स्बे के आस पास बहुत ही ऊंचे नीचे खड्ड या गार हैं। अच्छे घर पक्के बने हैं बाकी कच्चे हैं। ऊँचे घाट के ऊपर से यमुना नदी बड़ी सुन्दर मालूम होती है। पश्चिम की ओर मकबरों की भरमार है। इनमें चौरासी गुम्बज नाम का बड़ा मकबरा बहुत मशहूर है। जैसा इसके नाम से ही जाहिर है। इसमें ८४ गुम्बद हैं। पर अब वे गिरते जा रहे हैं। पहले

ये मकबरे क़स्बे से जुड़े हुए थे। अब खड्डों ने इन्हें अलग कर दिया है।

व्यापार के लिये गनेशगञ्ज और तरनानगञ्ज मुहल्ले बहुत मशहूर हैं। पुराने भाग में मन्दिर मस्जिद बहुत हैं। हर मङ्गलवार को यहां बाजार होता है और साल में तीन मेले लगते हैं। पहले यहां से हरसाल कई लाख रुपये की रुई और घी व्यापारी लोग बाहर भेजते थे। अब यहां का व्यापार बहुत घट गया है।

यहां का पुराना किला यमुना के सपाट किनारे पर बना है। अब यह बड़ी टूटी फूटी हालत में है किले के भीतर सिर्फ एक कमरा बचा है। इसकी दीवारें तीन गज़ मोटी हैं। कहते हैं मरहठे सूबेदार इसी में अपना खजाना रखते थे। चन्देलों के आठ मज़बूत किलों में से यह एक था। अकबर ने इसे पश्चिम का दरवाज़ा बना दिया था। बुन्देलखंड पर चढ़ाई की तयारी भी यहीं से होती थी। यहां तांबे की एक टकसाल थी। सत्रहवीं सदी में कालपी में कभी मुगल और कभी महाराज छत्रसाल राज करते थे। फिर महाराज छत्रसाल ने इसे मरहठों को सौंप दिया। गदर में तांतिया टोपी और झांसी की रानी ने यहीं अपनी अपनी फौजों को टिकाया। इसके बाद यहां अंग्रेजों का अधिकार हो गया।

**अकबरपुर**—यह बड़ा गांव कालपी से ठीक दक्षिण में ८ मील दूर है। यहां गुरू रूपनबाबा की यादगार में कातिक सुदी पंचिमी को एक मेला लगता है जो पन्द्रह दिन तक रहता है। यहां गुरू अकबर के समय में हुए थे। निरंजनी मत इन्हीं ने चलाया था। इन्हीं ने इटौरा का नाम बदल कर अकबरपुर रख दिया। यहां एक बाजार रोज लगता है। गुरू का मन्दिर तालाब के किनारे बना हुआ है।

अटा गांव कालपी से ११ मील दूर है। इतनी ही दूर वह उरई से है। झाँसी-कानपुर सड़क यहां होकर जाती है। यह गाँव महाबीर के मन्दिर के लिये मशहूर है। हर सोमवार और शुक्रवार को बाजार लगता है। रेलवे स्टेशन भी पास ही है।

बबिना गांव कालपी से १० मील दूर है। कहते हैं कि बाल्मीकि ऋषि यहीं पैदा हुए थे। यहाँ से फिर वे बिठूर को गये।

पारासन गाँव कालपी से १४ मील की दूरी पर बेतवा नदी के किनारे बसा है। कहते हैं कि पारासर ऋषि ने यहाँ तपस्या की थी। उन्हीं की यादगार में यहाँ एक छोटा मन्दिर बना है।

रायपुर कालपी से २३ मील दूर यमुना के किनारे बसा है। यहाँ बहुत से पुराने घरों और मन्दिरों के खंडहर हैं। यहीं नदी पार करने के लिये घाट है।

कूंच क़स्बा इसी नाम की तहसील का केन्द्र-स्थान है। यह उरई से १८ मील पश्चिम की ओर है। यहां से ऐत और उरई का पक्की सड़कें गई हैं। कच्ची सड़कें तो कई ओर को गई हैं। यह क़स्बा दो उथले नालों से घिरा हुआ है। आगे इन्हीं दो नालों के मिलने से मेलुंगा नदी बनती है। इसके पश्चिम भाग में पहले एक पुराना कच्चा किला था उसी के खंडहरों के ऊपर आजकल तहसील और थाने की इमारतें खड़ी हैं। पूर्व की ओर डेढ़ सौ वर्ष का पुराना ताल है। यहीं से दुकानदारों की दुकानें शुरू हो जाती हैं। आगे बढ़ने पर रुइहाई मंडी, गुड़ई मंडी, नमकहाट और मानिक चौक पड़ेंगे। पश्चिमी भाग में कुछ मकान पक्के हैं। बहुत से कच्चे हैं। पहले यहां बड़ी भारी मंडी थी जालौन की आज़ादी चली जाने से यहां के व्यापार को बड़ा धक्का पहुँचा। हर शुक्रवार को बाजार लगता है। साल में ८ मेले लगते हैं। रुई ओटने की एक मिल भी यहां खुल गई है। तहसील थाने के सिवा यहां शफाखाना और टाउन स्कूल है।

बंगरा एक बड़ा गांव है जो जालौन से ११ मील पश्चिम की ओर है। बेतवा नहर की कुठौंद शाखा यहां होकर बहती है।

गोपालपुर—इसी नाम की जागीर की राजधानी है। यह क़स्बा उरई से २९ मील उत्तर-पश्चिम की ओर है यहां एक अजब कुआं है। दिन में पक्के किनारे से पहुज नदी के पास पानी एक दो हाथ रहता है। रात को यह किनारे के ऊपर उमड़ कर बाहर बहने लगता है और तीस चालीस गज नीचे

पहुज में गिरता है। कहते हैं कि इस कुए को मस्तराम बाबा का बरदान है। यहां साल में एक बार मेला भी लगता है।

इंगोई एक छोटा गांव है जो जिले के धुर दक्षिण सिरे पर बसा है। बेतवा नदी यहां से तीन मील दक्षिण की ओर है लेकिन इस नदी को हमीरपुर नहर गांव के खेतों में होकर जाती है। पास ही एक पुराना किला है। पिरोना रेलवे स्टेशन यहां से १ मील उत्तर की ओर है। कैलिया एक बड़ा गांव है। यह कूंच से नौ मील दूर है। कुठौंद नहर यहां होकर जाती है। पास ही एक पुराने किले के खंडहर हैं।

मऊ एक बड़ा गांव है जो पहुज नदी के किनारे बसा है। यहां का घी बम्बई तक पहुँचता है। इसी के पड़ोस में अब से सवा सौ वर्ष पहले पिंडारियों और अंग्रेजों के बीच में लड़ाई हुई थी।

सलैया गांव तहसील के दक्षिणी-पश्चिमी सिरे पर पहुज नदी के किनारे बसा है। नदी को पार करने के लिये घाट है पास ही पुराने किले के खंडहर हैं।

★ ★ ★

# बाँदा

**स्थिति और सीमा**—बांदा जिला ब्रिटिश बुन्देलखण्ड में सब से अधिक पूर्वी जिला है। यह जिला झांसी कमिश्नरी में स्थित है। इसका आकार कुछ तिकोना है। यमुना नदी इसकी उत्तरी सीमा बनाती है और इसे फतेहपुर और इलाहाबाद जिलों से अलग करती है। पर जिले की प्रधान नदी केन है। बाँदा शहर इसी नदी के किनारे बसा है। पूर्व की ओर बांदा जिला इलाहाबाद की बारा तहसील से मिला हुआ है।

दक्षिण-पूर्व की ओर रीवां राज्य है। इस जिले के दक्षिण में पन्ना, चरखारी और छतरपुर के छोटे छोटे राज्य हैं। पश्चिम की ओर केन नदी गोरिहार और चरखारी राज्यों को बांदा जिले से अलग करती है। आगे चल कर यही केन नदी हमीरपुर जिले को बांदा से अलग करती है। लेकिन पैलानी और बांदा तहसीलों में केन नदी बांदा की नदी हो जाती है जिससे ये दोनों तहसीलें हमीरपुर जिले से मिली हुई हैं। खड्डी गाँव बाँदा जिले में ही शामिल है लेकिन चारों ओर गोरिहार राज्य से घिरा हुआ है। इसी तरह दक्षिण की ओर बांदा जिले के कुछ मौजे पास की रियासतों से घिरे हुए हैं।

**विस्तार**—पूर्वी सिरे से पश्चिमी सिरे तक १० मील लम्बी है। धुर दक्षिण में कालिञ्जर के क़िले से उत्तर में यमुना के किनारे तक ५० मील चौड़ा है। लेकिन इस जिले का क्षेत्रफल ३०३० वर्ग मील है।

**प्राकृतिक बनावट**—यह जिला दक्षिण में विन्ध्याचल की पहाड़ियों और उत्तर में यमुना नदी से घिरा हुआ है। फिर भी इसका अधिकतर भाग समतल है। बनावट के अनुसार इस जिले के दो बड़े भाग हैं:—१ पहाड़ी भाग और २ मैदान।

१—पहाड़ी भाग—अधिकतर ऊँचा भाग मऊ और करवी तहसीलों में पाया जाता है। सारे जिले का लगभग ०२ भाग पहाड़ी है। विन्ध्याचल की पहाड़ियां अपने पड़ोस के मैदान से औसत से ५०० फुट ऊंची हैं। ये पहाड़ियां दक्षिणी पूर्वी कोने में यमुना के किनारे से शुरू होती हैं और उत्तर-पश्चिम की ओर चली गई हैं। इनके बीच में ऊंची ज़मीन है जिसे पाठा कहते हैं। इधर पानी की कमी है। खेती कम होती है। लेकिन घास, कांटेदार झाड़ियां और छोटे छोटे पेड़ बहुत हैं। पर सब जगह पहाड़ियों का अटूट सिलसिला नहीं है। कालिंजर करतल और कामतानाथ की पहाड़ियां बिलकुल अलग हैं और क़ुदरती पहरेदार की तरह मैदान के बीच में अकेली खड़ी हुई हैं। कालिंजर का मशहूर क़िला इसी पहाड़ी के ऊपर बना है। बामेश्वर या बामदेव की अकेली पहाड़ी की छाया में बांदा शहर बस गया। बांदा नाम बामदेव से बिगड़ कर बना है।

२ मैदान—पाठा और पहाड़ियों के नीचे निचला मैदान है। सब कहीं इसका ढाल दक्षिण-पश्चिम

से उत्तर-पूर्व की ओर है। इसी से यहाँ वर्षा का बचा हुआ पानी कई नदी-नालों के द्वारा से यमुना नदी में पहुँचता है। यमुना के पास वाला मऊ नगर समुद्र तल से ३३० फुट ऊंचा है। राजापुर ३४० फुट है। बीच में करवी की उंचाई ४४० फुट है पर धुर दक्षिण में कालिंजर की पहाड़ी १२३० फुट ऊंची है।

निचला मैदान तीन प्राकृतिक भागों में बटा हुआ है।

१ केन नदी के उत्तर-पश्चिम का मैदान। इसका ढाल उत्तर से दक्षिण और पश्चिम से पूर्व की ओर है। मटौंध के पश्चिम में अधिक समतल ज़मीन है। यहां की काली ( काबर ) मिट्टी बड़ी उपजाऊ है। इस हिस्से में बाँदा तहसील का एक बड़ा हिस्सा शामिल है।

**२ केन और बागैं का द्वाबा**—इस द्वाबा में बांदा तहसील का बचा हुआ हिस्सा, नरैनी ( गिरवाँ ) और बबेरू तहसीलें शामिल हैं। इस हिस्से में अधिकतर मार ज़मीन और कहीं काली ( काबर ) मिट्टी है। ज़िले भर में यह हिस्सा सब से अधिक मूल्यवान है। बागैं नदी विन्ध्याचल की पहाड़ियों से आनेवाले नालों को रोक लेती है और इस हिस्से को कटने फटने से बचाती है।

३ बागैं के दक्षिण पूर्व का मैदान—इस भाग में बदौसा, करवी और मऊ की तहसीलें शामिल हैं। यह भाग बहुत कटा फटा है। दक्षिण की ओर इसके बीच में कहीं कहीं पहाड़ी टीले उठे हैं। इस भाग की प्रधान नदी पयस्वनी है जो बागैं के समानान्तर बहती है। इस भाग की कुछ नदियाँ यमुना में, कुछ पयस्वनी में और कुछ बागैं में मिलती हैं। दो नदियों के बीच वाले ऊंचे भाग या पाठा में काबर मिट्टी मिलती है। इस ओर पडुआ ( कुछ हलकी रेतीली ) मिट्टी सब से अच्छी होती है। बहुत बड़े हिस्से में राकड़ मिट्टी मिलती है। यह अक्सर पथरीली होती है और इसमें कंकड़ मिले रहते हैं।

**नदियाँ**—इस ज़िले में जो पानी बरसता है। वह नालों में होकर छोटी छोटी नदियों में आता है फिर ये नदियां अपने पानी को यमुना में गिरा देती हैं। ज़िले की सब से बड़ी नदी यमुना है। यह नदी बाँदा ज़िले की उत्तरी सीमा बनाती है। यमुना का बहुत सा पानी खेत सींचने के लिए नहरों में चला जाता है फिर भी यह नदी काफी गहरी है और गरमी में भी क़रीब आध मील चौड़ी बनी रहती है। इसमें दो तीन सौ मन बोझा लादने वाली नावें चला करती हैं। बरसात में यह और भी अधिक गहरी और चौड़ी हो जाती है। इसको पार करने के लिये कई जगह घाट हैं। राजापुर में बहुत सी नावें इधर उधर चला करती हैं। बांदा से फतेहपुर जाने वाली पक्की सड़क के रास्ते में होने से चिल्ला में नावों का पुल बना दिया जाता है। बरसात में पुल टूट जाता है। यमुना नदी १३५ मील बांदा जिले में बहती है। लेकिन पक्का पुल इस पर एक जगह भी नहीं बना है।

**केन**—यमुना के बाद ज़िले की दूसरी सब से बड़ी नदी केन है। इसका पुराना नाम कर्णावती है। यह नदी दमोह ज़िले से आती है और करतल के पास बांदा ज़िले में घुसती है। शुरू में यह नदी चरखारी और गौरिहार रियासतों को बांदा ज़िले से अलग करती है। खास बांदा शहर नदी से सवा मील दूर है। पास ही रेल का पुल है। यहां नदी बड़ी गहरी है। इसकी घाटी एकदम पथरीली है। कुछ दूर तक केन नदी हमीरपुर और बांदा के बीच में सीमा बनाती है। फिर बांदा के पैलानी परगने में बहने के बाद चिल्ला के पास यमुना में मिल जाती है वर्षा के दिनों में केन नदी की धारा बहुत तेज़ हो जाती है। पानी १० मील फी घण्टे के हिसाब से बहता है। तभी इसमें नावें चिल्ला से बांदा तक आ सकती हैं। पर जो माल यमुना में आता है उसको चिल्ला में चढ़ाने और केन नदी के चक्करदार रास्ते से लाने में कठिनाई होती है। इसलिये यह माल चिल्ला से सीधी सड़क से बांदा पहुँचता है। केन नदी को पार करने के लिये कई जगह नावें चलती हैं। सागर से बांदा आने वाली पक्की सड़क के मार्ग में भूरेंडी में जाड़ों में नावों का पुल बन जाता है और गरमी के अन्त तक रहता है। चन्द्रावल और दूसरी छोटी सहायक नदियां केन में मिलती हैं। गरमी में ये छोटी नदियां अक्सर सूख जाती हैं।

**बागें**—यह नदी पन्ना राज्य की कोहारी पहाड़ी से निकलती है और मसौनी भरतपुर के पास बांदा में घुसती है। यह नदी दक्षिण से उत्तर को जिले के प्रायः बीच में होकर बहती है और विलास गांव के पास यमुना में मिल जाती है। सिर्फ बरसात में इसे पार करने के लिये नाव की जरूरत पड़ती है। और दिनों में इसमें घुटनों या कमर तक पानी रहता है। पर इसकी मोटी बालू में करवी से बांदा को जाने वाली मोटर गाड़ियां अक्सर फँस जाती हैं। बदौसा के पास इसमें सिर्फ एक पुल है जिसके ऊपर रेल जाती है। कई बरसाती नाले इसमें आकर मिलते हैं। इनमें बान गङ्गा सबसे अधिक प्रसिद्ध है। कहते हैं कि पुराने समय में एक बार गोधरमपुर के पास रामचन्द्र जी का बाण गिरा था यहीं से निकलने के कारण इस नदी का नाम बानगङ्गा पड़ गया।

**पयस्वनी**—पयस्वनी नदी की असली धारा पथर कचार राज्य से निकलती है। कोठी रियासत के मझगवां के पास इसमें एक दूसरा नाला मिल जाता है। १६ मील तक यह नदी बाँदा जिले की सीमा बनाती है। विन्ध्याचल की पहाड़ी से उतरने पर मनगवाँ के पास पयस्वनी नदी दो सुन्दर झरने बनाती है। दोनों झरनों के बीच में ५० गज लम्बा और बहुत ही गहरा कुण्ड है। अनुसुइया की पहाड़ी तक नदी की धारा सपाट किनारों से घिरी हुई है। अनुसुइया से स्फटिकशिला तक नदी बड़ी सुहावनी मालूम होती है। दोनों ओर बन है। बीच में बड़ी बड़ी चट्टानें हैं। कहीं कहीं कुण्ड हैं। चित्रकूट में इसके किनारे पर सुन्दर घाट और मन्दिर हैं। यहीं पर इसमें कुछ गहरा पानी है जहां नाव चलती है। और सब कहीं उथले पानी में नाव की जरूरत नहीं पड़ती है। करवी के पास रेल का पुल है। एक दो जगह पयस्वनी नदी में आटा पीसने की छोटी छोटी पनचक्कियाँ हैं जो पानी के जोर से चलती हैं। राजापुर के पास यह नदी यमुना में मिल जाती है। ओहन इसकी छोटी सी सहायक नदी है।

इनके सिवा और भी कई नाले यमुना में गिरते हैं।

इस जिले में कोई बड़ी झील नहीं है। लेकिन तालाब बहुत हैं। मानिकपुर के तालाब का पानी रेल के काम में आता है।

**जलवायु**—जिले के निचले हिस्सों में गरमी अधिक पड़ती है। ऊंचे हिस्से कुछ कम गरम रहते हैं। लेकिन धूप के समय नंगी चट्टानें जलने लगती हैं। गरमी की ऋतु मार्च (चैत) से शुरू होती है। तभी गेहूँ की फसल कटने लगती है। गरमी की ऋतु जून तक रहती है। जून की दोपहरी में घर से बाहर निकलना मुश्किल हो जाता है। कभी कभी लू चलती है। फिर आँधियाँ चलने लगती हैं। लेकिन यहाँ की आंधियों में बहुत धूल नहीं होती है।

जुलाई से सितम्बर तक वर्षा रहती है। पर पानी लगातार नहीं बरसता है। इस जिले में सब से अधिक पानी गिरवा और बदौसा में बरसता है। बांदा में सबसे कम पानी बरसता है। मऊ, करवी और बबेरू में मामूली पानी बरसता है।

बरसात के बाद जाड़ा आता है और अक्टूबर (कार्तिक) से फर्वरी (माघ) तक रहता है। निचले भागों में कम सरदी पड़ती है। पाला शायद ही कभी पड़ता है। ऊँचे भागों में अधिक सरदी होती है। पर सरदी की ऋतु सब कहीं सुहावनी होती है। इसमें बीमारी कम होती है। बरसात में मच्छड़ों के बढ़ने से मलेरिया बुख़ार फैलता है और गरमी में पानी की कमी से हैजा होता है। वैसे यहाँ की खुश्क जलवायु तन्दुरुस्ती के लिये बड़ी अच्छी है।

**पैदावार**—ज़िले भर में लगभग ३ लाख बीघा या १० फीसदी जमीन ऊसर है। इसमें कोई चीज़ नहीं पैदा होती है। नदियों और नालों के खड्डों में अक्सर बबूल और दूसरे पेड़ों के जङ्गल मिलते हैं। बबूल की मजबूत लकड़ी हल बनाने के काम आती है। करवी और मऊ तहसीलों में बन हैं। इसमें महुआ, तेन्दू, चिरौंजी, हल्दू, खैर, बाँस और बेर के पेड़ मिलते हैं। इधर घास भी बहुत होती है। जहाँ ढोर चरा करते हैं। गांव के आस पास महुआ, नीम, शीशम, जामुन, इमली और आम के बाग मिलते हैं। फसल उगाने के लिये मैदान की मिट्टी बड़ी अच्छी होती है। इसमें ३० फीसदी पडुआ मिट्टी है। यह हलकी और कुछ कुछ रेतीली होती है। राकड़ या कंकड़ पत्थर मिली हुई मिट्टी भी २० फीसदी है। यह कम उपजाऊ होती है। १८ फीसदी काबर या काली मिट्टी है। यह काफी उपजाऊ लेकिन कड़ी

होती है। बहुत पानी पाने पर यह दलदल बन जाती है। १६ फीसदी माड़ू मिट्टी है। यह भी काली और उपजाऊ होती है लेकिन इसमें छोटे छोटे कंकड़ मिले रहते हैं। यमुना, केन और दूसरी नदियों के पास ४ फीसदी कछारी मिट्टी पाई जाती है।

पाठा या ऊंचे भाग में फसलों के लिये अच्छी जमीन बहुत कम मिलती है। मोटा या कमजोर जमीन बहुत है।

**फसलें**—पानी बरसते ही पडुआ या राकड़ जमीन में ज्वार, उद, मूँग और कपास बो दी जाती है। जब कम पानी बरसता है तो यही फसलें काबर और माड़ू जमीन में भी बो देते हैं। अधिक पानी बरसने पर काबर और माड़ू जमीन में जाड़े के शुरू में चना और गेहूँ बोते हैं।

बबेरू, बदोसा और गिरवाँ के जिन हिस्सों में खूब पानी बरस जाता है उनमें चावल भी उगाया जाता है।

जिले के बड़े हिस्से में पानी काफी नहीं बरसता है। इससे फसलों को सींचने या पानी देने की जरूरत पड़ती है। सिंचाई के लिये तालाबों और कुओं से काम लिया जाता है।

खरौती के पास केन नदी में बांध बना कर केन-नहर निकाली गई है। इस नहर और इसके रजवाहों से बाँदा, नरैनी और बबेरू तहसीलों में सिंचाई होती है।

**जीव-जन्तु**—पालतू जानवरों में गाय, बैल, भैंस, बकरी मुख्य हैं। वैसे और भी पशु जैसे घोड़े, ऊँट, हाथी भी किसी किसी गाँव में होते हैं। ढोरों के चरने के लिये खूब स्थान है और दूध, घी इस जिले में अधिक होता है परन्तु गर्मी में जब घास सूख जाती है और पानी कम रह जाता है तो जानवरों की भी दशा खराब हो जाती है। प्रायः सभी किसान जानवर पालते हैं परन्तु अहीर जाति के लोग इसके लिये अधिक प्रसिद्ध हैं। कुम्हार और मेहतर सुअर भी पालते हैं तथा मुर्गियाँ भी रखते हैं परन्तु उनसे विशेष काम नहीं होता है। बोझा ढोने के लिये गदहे भी रक्खे जाते हैं। बैलों को हल और गाड़ियों में जोतते हैं। जङ्गली पशुओं में सुअर, हिरण, लोमड़ी, खरगोश, नीलगाय और बन्दर मुख्य हैं। बन्दर को छोड़ कर सभी ऊपर आने वाले जानवरों का शिकार किया जाता है क्योंकि वे खेती को अधिक नुकसान पहुँचाते हैं। तालाबों में मछलियों के अतिरिक्त मगर भी होते हैं। जङ्गलों में मोर और कोयल आदि विचित्र पक्षी होते हैं। कभी कभी गाँवों में तेंदुआ भी आ जाता है जो प्रायः जानवरों पर हमला करता है और उन्हें हानि पहुँचाता है।

**खनिज पदार्थ**—मऊ तहसील में बेनीपुर पाली के पास पत्थर निकाला जाता है और इलाहाबाद को भेजा जाता है।

कालिंजर, सीतापुर, कोल गढ़ैया और खोह से भी पत्थर खोदा जाता है। हर पहाड़ी में पत्थरों की भरमार है। गौली कल्यानपुर में मुलायम पत्थर मिलता है। गोधर्मपुर के पास चूने का पत्थर मिलता है इससे कलई या कली तयार की जाती है। सड़क कूटने की मिट्टी भरतकूप और दूसरे स्थानों के पहाड़ों से निकाली जाती है। गोवर्द्धई और कई दूसरे स्थानों में लोहा मिलता है। इससे लोहार लोग तरह तरह की चीजें बनाते हैं।

ईंट और खपरैल बनाने की मिट्टी बहुत जगह पाई जाती है।

**कारबार**—इस जिले में सबसे अधिक लोग खेती का काम करते हैं। करवी और चित्रकूट में कुछ लोग लाल और सफेद पत्थर से सिल, कूँड़ा और दूसरे बरतन बनाते हैं।

बाँदा शहर में पत्थर तराशने और उससे बटन, क़लमदान और दूसरी चीजों के बनाने का काम बड़ा अच्छा होता है। वह रंग विरंगा पत्थर बाँदा से ८० मील ऊपर केन नदी में मिलता है। कुछ पत्थर नर्मदा (जबलपुर के पास) की घाटी से मिलता है। कुछ पंजाल नदी (भोपाल और होशंगाबाद के बीच में) से आता है। पत्थर को लकड़ी और लाख के बीच में दबाकर तार की कमान से काटते हैं। धरातल कुछ कुछ कुरम पहिये पर चिकना किया जाता है। खूब चिकना हो जाने पर उसमें लोहे के कांटे से छेद किये जाते हैं। इस कांटे के के सिरे पर हीरे की कनी जड़ी रहती है। मकान बनाने का पत्थर और सड़क कूटने की मिट्टी कई

जगह से निकाली जाती है। डोंडा और रजोहन में लाल पीली गेरुआ मिट्टी और खड़िया निकाली जाती है। बरगढ़ में शीशा बनाने की सिलीका बालू निकलती है और नैनी और फीरोजाबाद को भेज दी जाती है। हर साल प्रायः डेढ़ लाख मन सिलीका बालू बाहर भेजी जाती है। चूने का पत्थर और कंकड़ भी बहुत से गांवों में पाया जाता है।

इस जिले में ६ क़साई घर हैं। जिनसे साल भर में २५००० मन खाल मिलती है। लगभग २०,००० मन खाल पन्ना, अजयगढ़ और चरखारी राज्यों से आती है। लगभग, २०,००० मन खाल कानपुर, कलकत्ता, दिल्ली, आगरा और इलाहाबाद को भेज दी जाती है। शेष वहीं खर्च हो जाती है।

इस जिले में बन बहुत हैं जिनसे लकड़ी, गोंद जड़ी बूटी, शहद और लाख मिलती है। नरैनी की घाटी में बाँस मिलता है। यहां बाँस बाँदा में सेंका जाता है। इससे अच्छी लाठियां बनती हैं। इस जिले में कपास और तिलहन की अधिकता है। कपास ओटने और कातने बुनने और तेल पेरने का काम बहुत होता है। करवी में कपास ओटने और दबाकर गट्ठा बनाने का एक बड़ा कारखाना है। दरी और सूती क़ालीनें कई जगह बनती हैं। बाँदा के खद्दरभंडार का कपड़ा दूर दूर बिकता है।

इस जिले में लगभग २५००० भेड़ें हैं। फागुन, असाढ़ और कार्तिक में उनकी ऊन कतरी जाती है। साल भर में एक भेड़ से १२ छटांक ऊन मिलती है। लगभग ७०० मन ऊन जिले में तैयार होती है और डेढ़ सौ मन ऊन पास की रियासतों से आती है। ८०० मन ऊन कानपुर, मिर्ज़ापुर और झाँसी को भेज दी जाती है। बची हुई ऊन से गड़रिया लोग कम्बल बुनते हैं।

इस जिले में प्रायः ४८,००० मन सन भी पैदा होता है। ६ हज़ार मन कलकत्ता, सतना और जबलपुर को भेज दिया जाता है। शेष से रस्सी और टाट, पट्टी बुनी जाती हैं।

**आने जाने का मार्ग**--रेलवे- इस जिले में तीन रेलवे लाइन हैं।

जबलपुर से इलाहाबाद जाने वाली लाइन इस जिले में होकर जाती है। मानिकपुर और बरगढ़ इसके खास स्टेशन हैं।

एक लाइन मानिकपुर से झांसी को गई है। करवी, चित्रकूट, अतर्रा और बांदा इस लाइन के खास स्टेशन हैं। इस लाइन को जिले की प्रायः सभी नदियां पार करनी पड़ती हैं। इसमें ऊंचे-नीचे पहाड़, जंगल और हरे भरे खेत देखने में आते हैं।

तीसरी लाइन कानपुर से आती है और बांदा के पास खैरादा स्टेशन में झांसी मानिकपुर लाइन से मिल जाती है।

**पक्की सड़कें**--पक्की सड़कों का केन्द्र बाँदा है।

यहां से यह सड़कें फतेहपुर, सागर, नागौद, करतल, अतर्रा, करवी और मानिकपुर को गई हैं।

कच्ची सड़कें और भी अधिक हैं। वे बड़े बड़े गाँवों को मिलाती हैं। पाठा और विन्ध्याचल के पहाड़ी भाग में सड़कों की कमी है इस ओर अक्सर एक गांव को पगडंडियों से आना जाना होता है।

**आबादी, भाषा, जाति और शिक्षा**—१९४१ की मनुष्य गणना के हिसाब से इस जिले की आबादी सवा छः लाख से कुछ ऊपर है। पर एक हज़ार में सिर्फ ९१ मनुष्य या ९ फीसदी मनुष्य पढ़े लिखे हैं। ९१ फीसदी मनुष्य अपना नाम तक नहीं लिख पढ़ सकते हैं। स्त्रियां तो यहां फी हज़ार में ७ पढ़ी लिखी मिलती हैं। ९९३ अनपढ़ हैं।

जिले भर में सब से अधिक आबादी बांदा तहसील में—१ लाख ५३ हज़ार—और सब से कम मऊ तहसील में है। पर पिछले दस वर्ष में बबेरू तहसील में सब से अधिक आबादी बढ़ी है। करवी तहसील में बन की अधिकता और अक्सर अकाल पड़ने के कारण बहुत कम आबादी बढ़ी है।

इस सवा छः लाख आबादी में पांच लाख अठासी हज़ार हिन्दू और ४१ हज़ार मुसलमान हैं। इसका मतलब यह है कि यहां ९४ फीसदी हिन्दू और ६ फीसदी मुसलमान रहते हैं। यहाँ की भाषा बुन्देलखंडी हिन्दी है।

हिन्दुओं में सब से अधिक संख्या चमारों की है। बसौसा, कमासिन (बबेरू) और बाँदा में वे बहुत हैं।

करवी ( चित्रकूट के आस पास ) और गिरवाँ में ब्राह्मणों की संख्या बहुत अधिक है, वैसे वे सभी तहसीलों में पाये जाते हैं।

राजपूत—बाँदा और बबेरू में राजपूतों की संख्या बहुत है।

अहीर—अहीरों का चौथा नम्बर है। बबेरू, बदौसा के समीप उनकी संख्या सब से अधिक है। ये लोग ढोर चराते हैं और खेती करते हैं।

कोरी—मजदूरी करते हैं और कपड़ा बुनने का कार्य्य करते हैं। बबेरू में सब से अधिक संख्या है।

कुर्मी—ये लोग करवी और पश्चिमी तहसीलों में रहते हैं और खेती करते हैं।

काछी—ये लोग बड़े कस्बों के लिये तरकारी उगाते हैं। इनकी सब से अधिक संख्या बड़े कस्बों और पुरानी राजधानियों ( सिंहुड़ा, बाँदा और कालिंजर ) में पाई जाती है। ये लोग बड़ी मेहनत से खेती करते हैं।

लोधी, जरख भी खेती का कार्य्य करते हैं। बनिये लोग सभी बड़े कस्बों में व्यापार और लेनदेन का काम करते हैं। कायस्थों की तादाद बहुत कम है और ये लोग नौकरी के पेशों में लगे हुये हैं।

बढ़ई, भरभूंजा, धोबी, डोम, कहार, कुम्हार, लोहार और नाई लोग जिले भर में फैले हुये हैं।

जिले भर में लगभग ६ फीसदी मुसलमान हैं। इनमें ९८ फीसदी सुन्नी और २ फीसदी शिया हैं। ये अधिकतर बाँदा तहसील में रहते हैं।

**इतिहास**—बाँदा जिले का इतिहास बहुत पुराना है। कालिंजर ( तपस्या स्थान ) का नाम वेद और महाभारत में आता है। चित्रकूट में श्रीरामचन्द्र ने बनवास किया था। यहीं अशोक ने राज्य किया। फिर यहाँ चेदिवंश का राज हुआ। हर्ष वर्धन का राज्य बहुत प्रसिद्ध है। इसके बाद यहाँ चन्देल लोगों का राज्य हुआ।

चन्देल राजा बड़े वीर थे। इनमें राजा परमाल का नाम बहुत मशहूर है। परमाल के यहाँ आल्हा और ऊदल बड़े लड़ाका थे। १२०३ ई० में मुहम्मद गोरी के सेनापति कुतुबुद्दीन ने कालिंजर का क़िला जीत लिया। छः वर्ष बाद बघेलों ने यह क़िला मुसलमानों से छीन लिया। पर मुसलमानी हमले लगातार होते रहे। अब से कोई ४०० वर्ष पहले शेरशाह ने कालिंजर के क़िले को ले लिया। फिर यहाँ अकबर का राज हुआ। पर बुन्देल लोग अपने देश की आज़ादी के लिये बराबर लड़ते रहे। छत्रसाल ने मुग़लों के दाँत खट्टे कर दिये। अब से २०० वर्ष पहले मरहठों की मदद से बाँदा में बुन्देलों का राज हो गया। पर मरहठों और बुन्देलों में आपस की फूट से १८०३ ई० में यह जिला ईस्ट इण्डियन कम्पनी को मिल गया। कुछ वर्षों की लड़ाई के बाद यहाँ अँगरेज़ी राज हो गया। १८५७ के ग़दर में यहाँ बड़ी गड़बड़ी मची। पर कुछ महीनों के बाद शान्ति हो गई और बांदा जिला अंग्रेज़ी राज्य में आ गया। तब से बीच बीच में अकाल के सिवा यहां बराबर शान्ति रही।

**राज प्रबन्ध**—जिले का सबसे बड़ा हाकिम कलक्टर कहलाता है। उसका दफ़्तर बांदा शहर में है। यहीं वह कचहरी करता है। समय समय पर वह जिले का दौरा भी करता है उसको पुलिस से बड़ी मदद मिलती है। खुफिया पुलिस के लोग भेष बदल कर जुर्म का पता लगाते हैं। दूसरे पुलिस के लोग वर्दी पहनते हैं। इनका सब से बड़ा अफसर पुलिस सुपरिन्टेण्डेण्ट या कप्तान कहलाता है। उसको बहुत से थानेदार लोग मदद देते हैं। यह लोग अपने थाने की देख भाल करते हैं। इनको कस्बों में सिपाहियों और गांवों में चौकीदारों से मदद मिलती है। एक डिप्टी सुपरिंटेण्डेण्ट पुलिस करवी में रहता है। मुक़दमों का फैसला करने के लिये जज, कलक्टर, ज्वाइन्ट मजिस्ट्रेट और डिप्टी कलक्टर से मदद मिलती है। ज्वाइण्ट मजिस्ट्रेट करवी में रहता है। मालगुजारी वसूल करने के लिये पटवारी, कानून गो, नायब तहसीलदार और तहसीलदार होते हैं।

शहर की सफाई और तालीम का काम म्यूनिसिपैलिटी के मेम्बर करते हैं। इनको शहर के लोग हर तीसरे वर्ष चुना करते हैं। इसी तरह जिले भर की तालीम सफाई आदि का प्रबन्ध डिस्ट्रिक्टबोर्ड के मेम्बर लोग करते हैं। इन मेम्बरों को देहात के लोग चुना करते हैं।

बाँदा शहर केन नदी के किनारे बसा है। यह नाम वामदेव से बिगड़ कर बना है। यहां से एक

पक्की सड़क फतेहपुर की ओर, दूसरी नवगाँव और सागर को गई है। यहाँ से एक सड़क करवी और दूसरी करताल को गई है। झाँसी मानिकपुर लाइन पर यह एक बड़ा स्टेशन है। इसके पास ही भैरादा में कानपुर लाइन भी आ मिलती है।

इस तरह ज़िले के बीच में न होने पर भी इस शहर में मार्गों का संगम है। यहीं ज़िले की कचहरी, पुलिस लाइन और डिस्ट्रिक जेल हैं। यहाँ एक बड़ा सरकारी अस्पताल, कोतवाली और कई एक स्कूल हैं। यहीं म्युनिसिपैल्टी, डिस्ट्रिक बोर्ड, केन नहर के दफ़्तर हैं। शहर में पत्थर का काम काफी अच्छा होता है। लाठी, अनाज, कपड़ा और दूसरा सामान बाहर से यहाँ बिकने के लिये आता है। बाज़ार रोज़ लगता है। कम्पनी बाग, नवाब साहब का तालाब, मसजिद, महेश्वरीदेवी और महादेवजी के मन्दिर देखने लायक हैं। पहाड़ी के ऊपर इस मन्दिर से सारा शहर दिखाई देता है। कुछ मकान छोटे और खपरैल से छाये हुये हैं। इस पहाड़ी की चोटी से केन नदी पर बना हुआ रेल का पुल भी दिखाई देता है। यहाँ की चौड़ी सड़कों पर मोटर, बाइसिकिल, इक्के और गाड़ियों की भीड़ दिखाई देगी। नवाबी मसजिद की बुर्जी और यह पहाड़ी कई मील की दूरी से दिखाई देती हैं। बाज़ार तो यहाँ रोज़ लगा रहता है। इसके सिवाय साल में कई एक मेले भी लगते हैं। केन नदी के दूसरे किनारे पर भूरागढ़ के क़िले के खंडहर हैं।

**पैलानी**—कस्बा बाँदा से २३ मील दूर है। कहा जाता है कि यहां के लोग बड़े पैरने वाले ( तैरने वाले ) होते थे। इसलिये इसका नाम पैरानी या पैलानी पड़ गया। इसके आस पास केन नदी की उपजाऊ ज़मीन है। बैसाख के महीने में यहाँ एक मेला लगता है। यहाँ मसौतें अच्छे बनते हैं।

**महोखर**—यह छोटा गाँव बाँदा से चार मील दूर है। यहाँ कार्तिक के अन्त में रहस मेला लगता है।

**पचनेही**—यह गाँव बाँदा से १० मील दूर है। इस गांव को पाँच भाइयों ने बसाया था इसलिये इसका नाम पचनेही पड़ गया। ग़दर के समय में यहाँ के लोगों ने सरकारी अमीन को पकड़ लिया और उसके मुँह में घास भर कर उससे गाँव का चक्कर लगवाया।

**खपटिहा कलां**—केन नदी के किनारे बाँदा से १४ मील दूर है। यह गाँव लगभग ५ मील लम्बा और ३ मील चौड़ा है। कहा जाता है कि यहाँ खपटा ( टूटे फूटे खपरैल ) बहुत मिले थे इसलिये इसका नाम खपटिहा पड़ गया।

**पपरेन्दा**—यह गाँव बाँदा से १३ मील की दूरी पर फतेहपुर जाने वाली पक्की सड़क पर बसा है। यहाँ बुन्देलों ने एक छोटा क़िला बनवाया था।

**जसपुरा**—यह कस्बा बांदा से २७ मील की दूरी पर केन की पुरानी घाटी ( तूरी ) के किनारे बसा है। अक्सर बाढ़ आने के कारण इसके पड़ोस की ज़मीन बड़ी उपजाऊ है। पास ही एक पुराने क़िले के खंडहर हैं।

**चिल्ला**—यह गांव केन और यमुना के संगम के पास बांदा से फतेहपुर जाने वाली पक्की सड़क पर बसा है। घाट के सिवाय यहां एक डाकखाना और प्राइमरी स्कूल हैं।

**चँदवारा**—यहां श्रीकृष्णलीला और बसन्त पंचमी के बड़े मेले लगते हैं।

**तिंदवारी**—यह गांव बांदा के उत्तर-पूर्व में १४ मील की दूरी पर बसा है। यहां से एक कच्ची सड़क फतेहपुर को गई है। यहां सोमवार और गुरुवार को बाज़ार लगता है। पास ही पुराने कच्चे क़िले के खंडहर हैं। इसके पास कई लड़ाइयां हुई थीं।

**बबेरू** गांव बबेरू तहसील के ठीक बीच में बसा है और बांदा से २६ मील दूर है। दक्षिण की ओर एक छोटे क़िले के खंडहर हैं। पास ही केन नहर है। कस्बे में तहसीली स्कूल, थाना, शफ़ाख़ाना और डाकखाना हैं। पुरानी तहसील ग़दर में जला दी गई थी। दूसरी तहसील यहाँ फिर से बनाई गई है। यहाँ शोरा बनाने का काम बहुत होता है। यहाँ मंगल और शनीचर को बाज़ार लगता है।

**औगासी**—यह गाँव बबेरू से ९ मील की दूरी पर यमुना के किनारे बसा है। यहां एक पुराना कच्चा क़िला है। यह गाँव ढोरों या जानवरों की बिक्री के लिये मशहूर है।

**इंगुआ**—यह बड़ा गाँव बबेरू से ११ मील और यमुना से ६ मील दूर है। यहाँ एक छोटा बाजार लगता है। पास ही मऊ कस्बा मिला हुआ है।

**कमासिन**—यह कस्बा बाँदा से ३८ मील दूर है। गदर के दिनों में यहां की तहसील जला दी गई थी। अब यहां एक थाना है। और रोज बाजार लगता है।

**मरका**—यह बड़ा गाँव है जो बाँदा से ३९ मील दूर है। गदर में शामिल होने के कारण यह गाँव पवांर राजपूतों के हाथ से छिन गया। इसके पास ही यमुना का घाट है। और हफ्ते में दो दिन बजार लगता है।

**मुखल**—यह गांव बांदा से १५ मील दूर है। और बांदा से बबेरू जाने वाली सड़क पर बसा है। गजरा नाला यहाँ होकर बहता है। पास ही एक पुराने किले के खंडहर हैं। यहां पुराने समय में कई लड़ाइयां हुई थीं।

**सिमौनी**—यह गांव बांदा के १८ मील गराग नाला के पश्चिमी किनारे पर बसा है। इसके पड़ोस में बहुत से पुराने खंडहर हैं।

**सिंहपुर**—यह गाँव बाँदा से २८ मील और करवी से १९ मील है। सिंहपुर से २३ मील पश्चिम की ओर सांईपुर की पहाड़ी है। इस पर एक मुसलमान फ़कीर की पुरानी कब्र है।

**नरैनी**—कस्बा बाँदा से २२ मील है। कालिंजर और करतल से आने वाली सड़कें यहां मिलती हैं। यहां से बहुत सा माल दिसावर को जाता है। यह माल पक्की सड़क से होकर अतर्रा स्टेशन पर पहुँचता है। यहाँ ढोरों का बहुत सा व्यापार होता है यहां से दो मील की दूरी पर पनगरा है जहाँ से केन नहर की दो शाखायें हो जाती हैं।

**गिरवाँ**—यह कस्बा बाँदा से १२ मील की दूरी पर बसा है। बाँदा से नागौद जाने वाली सड़क यहां होकर जाती है। पहिले यह तहसील थी परन्तु आज कल थाना है।

**कालिंजर**—कालिंजर का प्रसिद्ध किला १२३० फीट ऊंची पहाड़ी पर बना है। इसके नीचे कालिंजर गांव है। यह स्थान बांदा से ३५ मील दूर है। यहां पहुँचने के लिये अतर्रा स्टेशन २४ मील दूर है। अतर्रा से नरैनी तक दस मील पक्की सड़क है फिर कच्ची सड़क है और बागें नदी पार करनी पड़ती है। किले के ऊपर जाने के लिये थोड़ी दूर की चढ़ाई पर सात बड़े बड़े दरवाजे मिलते हैं। आजकल यह किला टूटी फूटी हालत में है। परन्तु यहां सीता सेज, पातालगंगा, सिद्ध की गुफ़ा, मृगधारा, कोटितीर्थ, नील कंठ और दूसरे स्थान देखने लायक हैं। समय समय पर यहां के लोगों ने इस किले की रक्षा के लिये बड़ी बहादुरी दिखलाई। इसका पुराना नाम तपस्या स्थान है जिसका जिक्र वेद और महाभारत में भी है।

**बदौसा**—यह कस्बा बागें नदी के ऊंचे किनारे पर बसा है। बांदा से करवी जाने वाली पक्की सड़क यहां होकर जाती है। झांसी मानिकपुर लाइन का यह एक बड़ा स्टेशन है।

**अतर्रा बुजुर्ग**—यह गांव बांदा से करवी जाने वाली पक्की सड़क बसा है। और बांदा से २२ मील दूर है। यहाँ से एक पक्की सड़क दक्षिण को नरैनी की ओर जाती है। यह झाँसी मानिकपूर लाइन का एक स्टेशन है। पास ही केन नहर है। कस्बे से मिला हुआ एक बड़ा फार्म (खेत) है जहाँ नये ढंग से खेती होती है। कस्बे में बुधवार और शनीचर को बाजार लगता है।

**करतल**—यह गाँव जिले के दक्षिणी पश्चिमी कोने में बाँदा से ३६ मील की दूरी पर बसा है। यहाँ तक पक्की सड़क आती है। अड़ोस पड़ोस की रियासतों का माल यहाँ बिकने आता है फिर यह माल पक्की सड़क के ऊपर नरैनी और अतर्रा को पहुँचा दिया जाता है। बाजार हर शनिश्चर को लगता है। इसके पड़ोस में अजीब पहाड़ियाँ हैं। अब से सवा सौ वर्ष पहिले रगौली में अँग्रेजी फौज से भारी लड़ाई हुई थी।

**ओरन**—यह गाँव जिले के लगभग बीच में बसा है। इसके पड़ोस का बहुत सा भाग सींचा जाता है। इतवार और बुधवार को बाजार लगता है।

**मड़फा**—यह चपटी चोटी वाली पहाड़ी बदौसा से १० मील दूर है। यहाँ चन्देलों का एक मजबूत क़िला था। जिसके खंडहर अब भी मौजूद हैं। कहा

जाता है कि कालिंजर और मड़फा के क़िले एक ही रात में बनाये गये। थे। कालिंजर तो पहले बन गया लेकिन मड़फा अधूरा ही रह गया।

**कुलहुवा मुआफ़ी**—यह छोटा गाँव है। इसके पड़ोस में पुराने खंडहर और पास ही एक सोता है जहाँ से बान गंगा नदी निकलती है। यहाँ बाँस और खैर का घना जंगल है।

बसाया था अकबर के वक्त में यह बहुत मशहूर हो गया था। एक पहाड़ी के ऊपर पुराने क़िले के खंडहर हैं। यहाँ पान की खेती भी होती है।

**करवी**—कस्बा बांदा से मानिकपुर जाने वाली सड़क पर बसा है और बाँदा से ४२ मील दूर है। झांसी मानिकपुर लाइन का यह खास स्टेशन है। अब से सवा सौ वर्ष पहिले पेशवा बाजीराव के भाई

बाँदा ज़िले का नक़शा
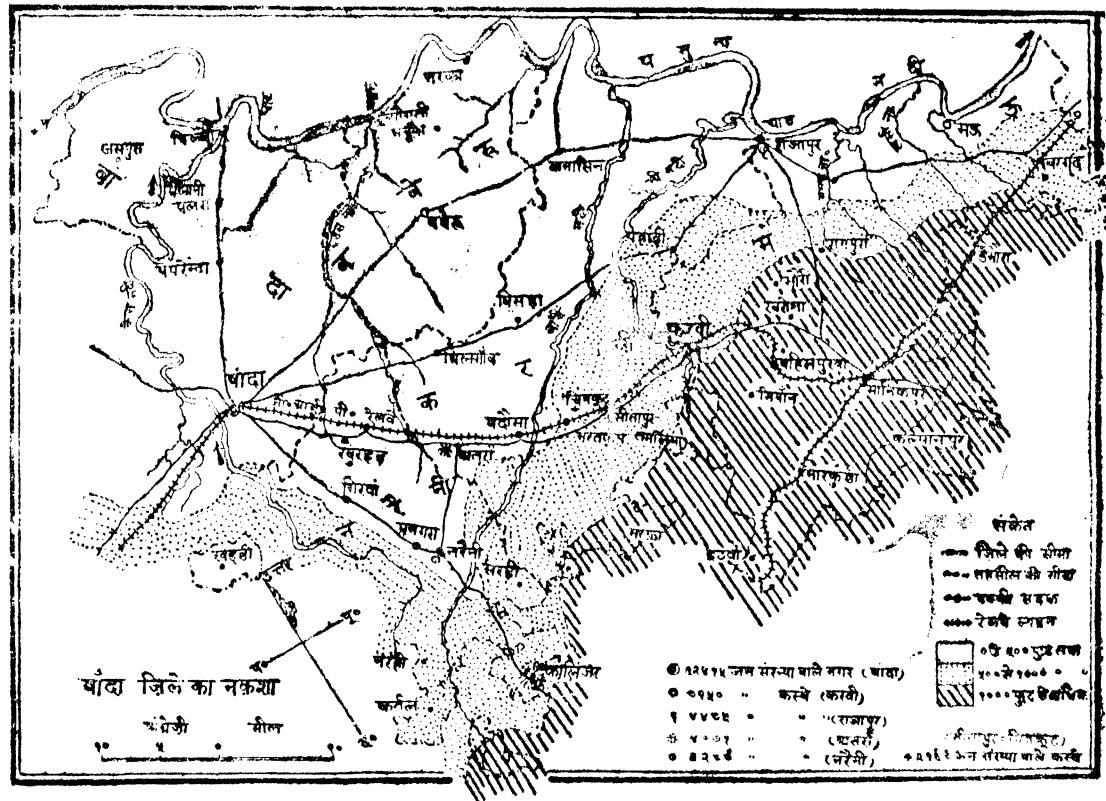
**गोधर्मपुर**—विन्ध्याचल के नीचे एक घाटी में बसा है। यहाँ के खटिक लोग बाँस और बल्ली बाहर भेजा करते हैं।

**रसिन**—यह गाँव पुराना है और कालिंजर से करवी जाने वाली सड़क के बीच में बसा है। इसके पास की पहाड़ियों पर पुराने क़िले के खंडहर हैं।

**सिंहुड़ा**—यह गाँव बाँदा से १२ मील और गिरवाँ से ३ मील दूर है। इसके पास ही पहाड़ी पर एक पुराना मन्दिर है। केन नदी भी बहुत दूर नहीं है। कहा जाता है कि इस गांव को राजा पिथौरा ने

अमृत राव यहां बस गये थे। उसके लड़के ने गणेश बाग (पीली कोठी) बनवाया। कस्बे का असली भाग पैसुनी नदी के किनारे बसा है। पड़ोस में कपास अधिक होने के कारण यहाँ एक रुई का कारखाना बन गया है। बाँदा को छोड़ कर ज़िले में सब से बड़ा कस्बा करवी ही है। यहाँ अँग्रेज़ी स्कूल और तहसीली स्कूल भी हैं। करवी से मिला हुआ तरौहाँ है। यहां एक पुराना क़िला और खंडहर हैं।

**चित्रकूट**—यह एक प्रसिद्ध तीर्थ है और

करवी से ६ मील दूर है। कामता नाथ की पहाड़ी के नीचे पक्की सीढ़ियाँ बनी हैं। अब से दो सौ वर्ष पहले महाराजा छत्रसाल की रानी ने इन्हें बनवाया था। पैसुनी के किनारे कुछ ही दूर पर अनुसुइया और दूसरे तीर्थ हैं। रामनौमी और दिवाली को यहाँ भारी मेले लगते हैं। और दूर दूर से यात्री आते हैं। चित्रकूट स्टेशन झाँसी-मानिकपूर लाइन पर बना है। यहां से चित्रकूट तीर्थ तीन मील दूर है लेकिन करवी स्टेशन से यहां तक मोटर गाड़ियां चला करती हैं। कस्बा सीतापुर के नाम से पुकारा जाता है जहाँ टाउनएरिया है।

**मारकुंडी**—यह जबलपुर लाइन का एक स्टेशन है। यहां से लकड़ी और घास बाहर भेजी जाती है।

**पुरवा**—यह एक पुराना गांव है और पैसुनी नदी के पश्चिमी किनारे पर बसा है। पास ही एक पुराने क़िले के खंडहर हैं।

**बहिलपुरवा**—यह गांव मानिकपुर और करवी से बराबर दूरी पर (९ मील) एक रेलवे स्टेशन है। यह जंगल और पहाड़ के बीच में बसा है। यहां से कुछ लकड़ी का कोयला और जंगली सामान बाहर भेजा जाता है।

**मानिकपुर**—यह जबलपुर लाइन पर एक बड़ा जंकशन है। दूसरी लाइन यहां से करवी और बांदा होती हुई झांसी को गई है। पास बाज़ार है। यहां का व्यापार बढ़ रहा है। पानी की कमी है। रेलवे स्टेशन के लिये पीने का पानी एक बड़े तालाब में इकट्ठा किया जाता है। यहां एक डाकखाना, स्कूल, सराय और जंगल के मोहकमें का बंगला है।

**भौंरी**—यह बड़ा गांव करवी से मऊ जाने वाली सड़क पर करवी से १० मील की दूरी पर स्थित है। इसके पास ही कुछ पहाड़ियां हैं। यह गांव चमड़े के व्यापार के लिये मशहूर है। पास ही पुराने खंडहर मिलते हैं।

**बगरेही**—इस गांव के पास ओहन नदी के किनारे लालपुर की पहाड़ी पर, बाल्मीक मुनि का आश्रम था।

**मऊ**—यह नगर यमुना के किनारे बसा है और बांदा से ७० मील दूर है। सब से पास वाला स्टेशन बरगढ़ है। नाव द्वारा कुछ व्यापार इलाहाबाद के साथ होता है।

**राजापुर**—यह गांव बांदा से ५५ मील की दूरी पर यमुना के किनारे बसा है। किसी समय यह बुन्देल-खंड भर में सब से बड़ा व्यापारी नगर था। नावें यहाँ की कपास और पत्थर को भरकर इलाहाबाद, मिर्जापूर और पटना पहुँचाती थीं। रेलों के खुलने से यहां के व्यापार को बड़ा धक्का पहुँचा, कुछ व्यापार अब भी होता है।* यहां यमुना के ठीक ऊपर ऊंचे किनारे पर तुलसीदास जी का मन्दिर है। इसमें तुलसीदासजी की मूर्ति और उनके हाथ की लिखी हुई रामायण रक्खी है।

**बरगढ़**—यह कस्बा जबलपूर लाइन पर एक मशहूर स्टेशन है और बांदा से ८० मील दूर है। मऊ तहसील पाठा का सब से मशहूर कस्बा है। यहाँ अनाज, कपास, घी और बकौड़ा के व्यापार की मंडी है। यहां शीशा बनाने की मिली की बालू निकलती है और नैनी, फिरोजाबाद को भेज दी जाती है। पास ही पुराने क़िले के खंडहर हैं।

---

*इलाहाबाद से भरवारी होकर आने वाली पक्की सड़क यमुना के उस पार रुक जाती है। राजापुर से एक कच्ची सड़क करवी को गई है।

जाता है कि कालिंजर और मड़फा के क़िले एक ही रात में बनाये गये थे। कालिंजर तो पहले बन गया लेकिन मड़फा अधूरा ही रह गया।

**कुलहुवा मुआफ़ी**—यह छोटा गाँव है। इसके पड़ोस में पुराने खंडहर और पास ही एक सोता है जहाँ से बान गंगा नदी निकलती है। यहाँ बाँस और खैर का घना जंगल है।

बसाया था अकबर के वक्त में यह बहुत मशहूर हो गया था। एक पहाड़ी के ऊपर पुराने क़िले के खंडहर हैं। यहाँ पान की खेती भी होती है।

**करवी**—कस्बा बांदा से मानिकपुर जाने वाली सड़क पर बसा है और बाँदा से ४२ मील दूर है। झांसी मानिकपुर लाइन का यह खास स्टेशन है। अब से सवा सौ वर्ष पहिले पेशवा बाजीराव के भाई

अमृत राव यहां बस गये थे। उसके लड़के ने गणेश बाग (पीली कोठी) बनवाया। कस्बे का असली भाग पैसुनी नदी के किनारे बसा है। पड़ोस में कपास अधिक होने के कारण यहाँ एक रुई का कारखाना बन गया है। बाँदा को छोड़ कर ज़िले में सब से बड़ा कस्बा करवी ही है। यहाँ अँग्रेज़ी स्कूल और तहसीली स्कूल भी हैं। करवी से मिला हुआ तरौहाँ है। यहां एक पुराना क़िला और खंडहर हैं।

**चित्रकूट**—यह एक प्रसिद्ध तीर्थ है और

**गोधर्मपुर**—विन्ध्याचल के नीचे एक घाटी में बसा है। यहाँ के खटिक लोग बाँस और बल्ली बाहर भेजा करते हैं।

**रसिन**—यह गाँव पुराना है और कालिंजर से करवी जाने वाली सड़क के बीच में बसा है। इसके पास की पहाड़ियों पर पुराने क़िले के खंडहर हैं।

**सिंहुड़ा**—यह गाँव बाँदा से १२ मील और गिरवाँ से ३ मील दूर है। इसके पास ही पहाड़ी पर एक पुराना मन्दिर है। केन नदी भी बहुत दूर नहीं है। कहा जाता है कि इस गांव को राजा पिथौरा ने

करवी से ६ मील दूर है। कामता नाथ की पहाड़ी के नीचे पक्की सीढ़ियाँ बनी हैं। अब से दो सौ वर्ष पहले महाराजा छत्रसाल की रानी ने इन्हें बनवाया था। पैसुनी के किनारे कुछ ही दूर पर अनुसुइया और दूसरे तीर्थ हैं। रामनौमी और दिवाली को यहाँ भारी मेले लगते हैं। और दूर दूर से यात्री आते हैं। चित्रकूट स्टेशन झांसी-मानिकपुर लाइन पर बना है। यहां से चित्रकूट तीर्थ तीन मील दूर है लेकिन करवी स्टेशन से यहां तक मोटर गाड़ियां चला करती हैं। कस्बा सीतापुर के नाम से पुकारा जाता है जहाँ टाउनएरिया है।

**मारकुंडी**—यह जबलपुर लाइन का एक स्टेशन है। यहां से लकड़ी और घास बाहर भेजी जाती है।

**पुरवा**—यह एक पुराना गांव है और पैसुनी नदी के पश्चिमी किनारे पर बसा है। पास ही एक पुराने क़िले के खंडहर हैं।

**बहिलपुरवा**—यह गांव मानिकपुर और करवी से बराबर दूरी पर (९ मील) एक रेलवे स्टेशन है। यह जंगल और पहाड़ के बीच में बसा है। यहां से कुछ लकड़ी का कोयला और जंगली सामान बाहर भेजा जाता है।

**मानिकपुर**—यह जबलपुर लाइन पर एक बड़ा जंकशन है। दूसरी लाइन यहां से करवी और बांदा होती हुई झांसी को गई है। पास बाजार है। यहां का व्यापार बढ़ रहा है। पानी की कमी है। रेलवे स्टेशन के लिये पीने का पानी एक बड़े तालाब में इकट्ठा किया जाता है। यहां एक डाकखाना, स्कूल, सराय और जंगल के मोहकमें का बंगला है।

**भौंरी**—यह बड़ा गांव करवी से मऊ जाने वाली सड़क पर करवी से १० मील की दूरी पर स्थित है। इसके पास ही कुछ पहाड़ियां हैं। यह गांव चमड़े के व्यापार के लिये मशहूर है। पास ही पुराने खंडहर मिलते हैं।

**बगरेही**—इस गांव के पास ओहन नदी के किनारे लालपुर की पहाड़ी पर, बाल्मीक मुनि का आश्रम था।

**मऊ**—यह नगर यमुना के किनारे बसा है और बांदा से ७० मील दूर है। सब से पास वाला स्टेशन बरगढ़ है। नाव द्वारा कुछ व्यापार इलाहाबाद के साथ होता है।

**राजापुर**—यह गांव बांदा से ५५ मील की दूरी पर यमुना के किनारे बसा है। किसी समय यह बुन्देलखंड भर में सब से बड़ा व्यापारी नगर था। नावें यहाँ की कपास और पत्थर को भरकर इलाहाबाद, मिर्जापुर और पटना पहुँचाती थीं। रेलों के खुलने से यहां के व्यापार को बड़ा धक्का पहुँचा, कुछ व्यापार अब भी होता है।* यहां यमुना के ठीक ऊपर ऊंचे किनारे पर तुलसीदास जी का मन्दिर है। इसमें तुलसीदासजी की मूर्ति और उनके हाथ की लिखी हुई रामायण रक्खी है।

**बरगढ़**—यह कस्बा जबलपूर लाइन पर एक मशहूर स्टेशन है और बांदा से ८० मील दूर है। मऊ तहसील पाठा का सब से मशहूर कस्बा है। यहाँ अनाज, कपास, घी और बकौड़ा के व्यापार की मंडी है। यहां शीशा बनाने की मिली की बालू निकलती है और नैनी, फिरोजाबाद को भेज दी जाती है। पास ही पुराने क़िले के खंडहर हैं।

---

*इलाहाबाद से भरवारी होकर आने वाली पक्की सड़क यमुना के उस पार रुक जाती है। राजापुर से एक कच्ची सड़क करवी को गई है।

# मथुरा

आगरा कमिश्नरी का उत्तरी पश्चिमी ज़िला है। इसके उत्तर-पश्चिम में पंजाब का गुरगांव ज़िला, उत्तर पूर्व और पूर्व में अलीगढ़। आठ मील तक इसके पूर्व में एटा जिला है। इसके दक्षिण में आगरा ज़िला और और पश्चिम में भरतपुर राज्य है। भरतपुर राज्य के कुछ गांव मथुरा जिले के भीतर स्थित हैं इस जिले का आकार कुछ कुछ अर्द्ध चन्द्राकार है। इसकी अधिक से अधिक लम्बाई ६० मील और चौड़ाई ४० मील है। इसका क्षेत्रफल १४४५ वर्ग मील है। यमुना नदी इस ज़िले में होकर बहती है और इसको दो असमान भागों में बांटती है। भरतपुर की सीमा के आगे कहीं कहीं कुछ चट्टानें निकली हुई हैं। कहीं कहीं पहाड़ियां मैदान के ऊपर २०० फुट ऊंची उठी हुई हैं। शेष बड़े भाग का दृश्य एक समान है। मथुरा जिले का अधिकतर भाग प्राचीन ब्रज मंडल है। जगह जगह करील की झाड़ियां हैं। गोवर्द्धन और बरसाना का दृश्य वर्षा ऋतु में बड़ा सुन्दर रहता है।

माट, महावन और सादाबाद यमुना के पार वाली तहसीलों का दृश्य द्वाबा के दूसरे भागों के समान है। यहां अच्छी खेती होती है। कुओं और नहरों द्वारा यहां सिंचाई का अच्छा प्रबन्ध है। गांवों के पड़ोस में आमों के बगीचे हैं। इस भाग की पथवाहा और झिरना नदियों में कभी कभी पानी रहता है। भदौरा के ऊपर यमुना के पुराने मार्ग में झीलें बन गई हैं। ऊंचे नीचे रेतीले टीले किनारे से भीतर की ओर चले गये हैं। भदौरा के नीचे यमुना के किनारे कट कर खड्ड बन गये हैं।

पश्चिमी भाग में मथुरा और छाता की तहसीलें हैं। इधर गांव बड़े बड़े हैं। पुराने समय में यहां के लोग स्वयं अपनी रक्षा करते थे।

मथुरा वृन्दावन कोसी आदि बड़े बड़े नगर इसी ओर स्थित हैं। गोवर्द्धन नाले को छोड़कर इस ओर नीची झीलों और दलदलों का प्रायः अभाव है। केवल कोयला के पास यमुना के पुराने मार्ग ने एक अनूप बना दिया है। इसके आगे कुछ दूर तक किनारे कटे फटे हैं। खेती बहुत कम होती है। झाऊ और सरपत बहुत उगता है।

इन्हीं दो पश्चिमी तहसीलों में अर्वली पहाड़ियों के अन्तिम सिरे स्थित हैं। चरण पहाड़ चट्टानों का नीचा ढेर है। यह ४०० गज़ लम्बा और १० फुट ऊंचा है। छः मील दक्षिण-पूर्व की ओर नन्दगांव की पहाड़ी है। यह आध मील लम्बी है। यह गांव के घरों से ढकी है। सब से ऊंचे भाग में नन्दराय का मन्दिर है। ४ मील दक्षिण की ओर दो समानान्तर पहाड़ियां हैं। यह मैदान के ऊपर लगभग २०० फुट ऊंची उठी हुई हैं। रनकौली पहाड़ी और बरसाना पहाड़ी पेड़ों से ढकी है। इन पहाड़ियों के अतिरिक्त जिले का पश्चिमी भाग पूर्वी भाग से

अधिक ऊंचा है। यमुना के कछार में नीची भूमि है। बांगर में भूमि अधिक ऊंची है। बांगर में कहीं उपजाऊ दुमट और कहीं भूड़ और बलुई मिट्टी है। तराई में डहर या चिकनी कड़ी मिट्टी मिलती है। पिलिया मिट्टी अधिककर भागों में मिलती है। इसमें कुछ बालू मिली रहती है। नोह झील और दूसरे बंधे हुये पानी के प्रदेशों में चिकनाट मिट्टी मिलती हैं।

मथुरा ज़िले की प्रधान नदी यमुना है। यह चौन्दरास गांव के पास मथुरा ज़िले में प्रवेश करती है। १०० मील टेढ़ी चाल से बहने के बाद यह मन्दौर गांव के पास ज़िले को छोड़ देती है। शेरगढ़, वृन्दावन, मथुरा और फरा यमुना के दाहिने किनारे पर स्थित हैं। माट, महावन,

गोकुल बायें किनारे पर बसे हैं। पहले कुछ दूर तक यमुना किनारे नीचे और रेतीले हैं। आगे बढ़ने पर वे ऊंचे और सपाट हो जाते हैं। इन्हें नालों ने स्थान स्थान पर गहरा काट दिया है।

मथुरा की जलवायु पड़ोस के द्वाबा के जिलों से अधिक गरम और खुश्क है। जनवरी का तापक्रम ६० अंश और जून का तापक्रम ९३ अंश रहता है।

डाकखाना है। बाज़ार रविवार को लगता है। अरींग के पास ही मरहठों और लार्ड लेक की सेना से घोर युद्ध हुआ था।

औरंगाबाद मथुरा से २ मील दक्षिण की ओर आगरे से दिल्ली को जाने वाली पक्की सड़क पर स्थित है। यहां से यमुना के किनारे तक रेतीली भूमि है। उस पार गोकुल और महावन है। औरंगज़ेब के समय की बनवाई हुई एक मस्जिद के खंडहर पास ही हैं। यहाँ सेंठों (सरकंडों) की कुरसियां बनती हैं। हर शुक्रवार को बाज़ार लगता है। बछना गांव धुर उत्तरी सिरे पर मथुरा शहर से ३३ मील दूर है। पुराना बाज़ार बीच में गुरुवार और शनिवार को लगता है।

बल्देव नगर मथुरा से सादाबाद को जानेवाली पक्की सड़क पर मथुरा से १० मील और महावन से ४ मील दूर है। इसे अक्सर दाऊजी कहते हैं। यहाँ थाना, डाकखाना और स्कूल है। यहां बलराम या बल्देव जी का प्रसिद्ध मन्दिर है। मन्दिर के पास ही ८० गज़ लम्बा और ८० गज़ चौड़ा पक्का ताल है। यहां भादों की छठ को मेला लगता है। बरसाना मथुरा से ३१ मील उत्तर-पश्चिम की ओर है। यहां थाना, डाकखाना और स्कूल है। राधा जी का निवास स्थान बरसाना ही था। यह एक पहाड़ी के ढाल और उसकी तलहटी में बसा है। चार चोटियों पर लाड़लो जी (राधा जी) के मन्दिर, मान मन्दिर डांगढ़ और मोर कुटी हैं। दूसरी पहाड़ी कुछ कम ऊँची है। बीच वाले तेज मार्ग को संकरी खोर कहते हैं। १७७४ ईस्वी में यहां जाटों और दिल्ली की सेना में घमासान लड़ाई हुई थी।

बठन गांव मथुरा से ३० मील दक्षिण-पश्चिम की ओर और कोसी से ३ मील पश्चिम की ओर है। कहते हैं यहां बलराम जी अपने भाई श्री कृष्ण जी की प्रतीक्षा में बैठे थे। इसी से इसका नाम बैठन से बिगड़कर बठान पड़ गया। बाहर की ओर बलभद्र कुंड है जिसके घाट पत्थर के बने हैं। यहां चैत कृष्ण तृतीया को मेला लगता है।

बेरी गांव आगरा नहर और अछनेरा लाइन के बीच में मथुरा से ११ मील की दूरी पर स्थित है। गदर में यहां के राजपूत जमीदारों ने विद्रोह किया उनसे यह गांव छीन लिया गया। यहां थाना और प्राइमरी स्कूल है। हर मंगलवार को बाजार लगता है।

बिसावर गांव सादाबाद से पश्चिम की ओर पक्की सड़क से १ मील दूर है। यह मथुरा से १६ मील दूर है। कहते हैं कि इस गांव को महावन के एक राजपूत सरदार ने ११वीं सदी में बसाया था। गांव में दो मन्दिर और एक मकबरा है। यहां एक स्कूल है। बाज़ार बुधवार को लगता है।

वृन्दावन यमुना के किनारे पर मथुरा से ६ मील उत्तर की ओर है। यहां यमुना एक विचित्र मोड़ बनाती है। वृन्दावन इसी मोड़ से बने हुये प्रायः द्वीप पर बसा है। किसी समय यहां तुलसी की अधिकता थी। तुलसी को वृन्दा भी कहते हैं। इसी से इसका नाम वृन्दावन पड़ा। मथुरा से यहां तक पक्की सड़क और रेलवे लाइन आती है। सड़क अधबिच में एक पुल है जिसे साधा जी सीन्धिया की लड़की ने १८३३ में बनवाया था। पास ही एक पक्का तालाब है। वृन्दावन के पड़ोस में एक बड़ी बाउली है। इसमें ५७ सीढ़ियां हैं। इसे महारानी अहिल्याबाई ने बनवाया था। वृन्दावन में १००० मन्दिर और ३२ घाट हैं। ब्रह्म कुंड और गोविन्द कुण्ड भी उल्लेखनीय हैं। इनके अतिरिक्त यहां कई क्षेत्र और बगीचे हैं। गोविन्द देव का मन्दिर सम्वत १६४७ (१५९० ईस्वी) में बनवाया गया था। इसे जैपुर के राजा मानसिंह ने अपने गुरू के आदेश से बनवाया था। काली मर्दन या कालीदह घाट के पास मदनमोहन का मन्दिर है। गोपीनाथ और जुगल किशोर के मन्दिर भी पुराने हैं। रंग जी का मन्दिर नया है और मद्रासी ढंग का बना है। यह १८४५ में आरम्भ हुआ और १८५१ में ४५ लाख रुपये की लागत से पूरा हुआ। इसका बाहरी घेरा ७७३ फुट लम्बा और ४४० फुट चौड़ा है। दीवारों के घेर के अन्दर एक सुन्दर सरोवर और बगीचा है। सामने ६० फुट ऊंचा ध्वजा स्तम्भ है। यह २४ फुट नीचे गड़ा है। इसपर तांबे का पानी फिरा है। अकेले स्तम्भ का मूल्य १०,००० रु० है। प्रधान पश्चिम द्वार ९३ फुट

# मथुरा

आगरा कमिश्नरी का उत्तरी पश्चिमी ज़िला है। इसके उत्तर-पश्चिम में पंजाब का गुरगांव ज़िला, उत्तर पूर्व और पूर्व में अलीगढ़। आठ मील तक इसके पूर्व में एटा जिला है। इसके दक्षिण में आगरा ज़िला और और पश्चिम में भरतपुर राज्य है। भरतपुर राज्य के कुछ गांव मथुरा जिले के भीतर स्थित हैं इस जिले का आकार कुछ कुछ अर्द्ध चन्द्राकार है। इसकी अधिक से अधिक लम्बाई ६० मील और चौड़ाई ४० मील है। इसका क्षेत्रफल १४४५ वर्ग मील है। यमुना नदी इस ज़िले में होकर बहती है और इसको दो असमान भागों में बांटती है। भरतपुर की सीमा के आगे कहीं कहीं कुछ चट्टानें निकली हुई हैं। कहीं कहीं पहाड़ियां मैदान के ऊपर २०० फुट ऊंची उठी हुई हैं। शेष बड़े भाग का दृश्य एक समान है। मथुरा जिले का अधिकतर भाग प्राचीन ब्रज मंडल है। जगह जगह करील की झाड़ियां हैं। गोवर्द्धन और बरसाना का दृश्य वर्षा ऋतु में बड़ा सुन्दर रहता है।

माट, महाबन और सादाबाद यमुना के पार वाली तहसीलों का दृश्य द्वाबा के दूसरे भागों के समान है। यहां अच्छी खेती होती है। कुओं और नहरों द्वारा यहां सिंचाई का अच्छा प्रबन्ध है। गांवों के पड़ोस में आमों के बगीचे हैं। इस भाग की पथवाहा और झिरना नदियों में कभी कभी पानी रहता है। भदौरा के ऊपर यमुना के पुराने मार्ग में झीलें बन गई हैं। ऊंचे नीचे रेतीले टीले किनारे से भीतर की ओर चले गये हैं। भदौरा के नीचे यमुना के किनारे कट कर खड्ड बन गये हैं।

पश्चिमी भाग में मथुरा और छाता की तहसीलें हैं। इधर गांव बड़े बड़े हैं। पुराने समय में यहां के लोग स्वयं अपनी रक्षा करते थे।

मथुरा वृन्दाबन कोसी आदि बड़े बड़े नगर इसी ओर स्थित हैं। गोवर्द्धन नाले को छोड़कर इस ओर नीची झीलों और दलदलों का प्रायः अभाव है। केवला कोयला के पास यमुना के पुराने मार्ग ने एक अनूप बना दिया है। इसके आगे कुछ दूर तक किनारे कटे फटे हैं। खेती बहुत कम होती है। झाऊ और सरपत बहुत उगता है।

इन्हीं दो पश्चिमी तहसीलों में अर्वली पहाड़ियों के अन्तिम सिरे स्थित हैं। चरण पहाड़ चट्टानों का नीचा ढेर है। यह ४०० गज़ लम्बा और १० फुट ऊंचा है। छः मील दक्षिण-पूर्व की ओर नन्दगांव की पहाड़ी है। यह आध मील लम्बी है। यह गांव के घरों से ढकी है। सब से ऊंचे भाग में नन्दराय का मन्दिर है। ४ मील दक्षिण की ओर दो समानान्तर पहाड़ियां हैं। यह मैदान के ऊपर लगभग २०० फुट ऊंची उठी हुई हैं। रनकौली पहाड़ी और बरसाना पहाड़ी पेड़ों से ढकी है। इन पहाड़ियों के अतिरिक्त जिले का पश्चिमी भाग पूर्वी भाग से

अधिक ऊंचा है। यमुना के कछार में नीची भूमि है। बांगर में भूमि अधिक ऊंची है। बांगर में कहीं उपजाऊ दुमट और कहीं भूड़ और बलुई मिट्टी है। तराई में डहर या चिकनी कड़ी मिट्टी मिलती है। चिलिया मिट्टी अधिककर भागों में मिलती है। इसमें कुछ बालू मिली रहती है। नोह झील और दूसरे बंधे हुये पानी के प्रदेशों में चिकनौट मिट्टी मिलती है।

मथुरा ज़िले की प्रधान नदी यमुना है। यह चौन्दरास गांव के पास मथुरा ज़िले में प्रवेश करती है। १०० मील टेढ़ी चाल से बहने के बाद यह मन्दौर गांव के पास ज़िले को छोड़ देती है। शेरगढ़, वृन्दाबन, मथुरा और फ़रा यमुना के दाहिने किनारे पर स्थित हैं। माट, महाबन,

गोकुल बायें किनारे पर बसे हैं। पहले कुछ दूर तक यमुना किनारे नीचे और रेतीले हैं। आगे बढ़ने पर वे ऊंचे और सपाट हो जाते हैं। इन्हीं नालों ने स्थान स्थान पर गहरा काट दिया है।

मथुरा की जलवायु पड़ोस के दुआबा के जिलों से अधिक गरम और खुश्क है। जनवरी का तापक्रम ६० अंश और जून का तापक्रम ६३ अंश रहता है।
डाकखाना है। बाज़ार रविवार को लगता है। अरींग के पास ही मरहठों और लार्ड लेक की सेना से घोर युद्ध हुआ था।

औरंगाबाद मथुरा से २ मील दक्षिण की ओर आगरे से दिल्ली को जाने वाली पक्की सड़क पर स्थित है। यहां से यमुना के किनारे तक रेतीली भूमि है। उस पार गोकुल और महावन है। औरंगज़ेब के समय की बनवाई हुई एक मस्जिद के खंडहर पास ही हैं। यहाँ सेंटों (सरकंडों) की कुरसियां बनती हैं। हर शुक्रवार को बाज़ार लगता है। बजना गांव धुर उत्तरी सिरे पर मथुरा शहर से ३३ मील दूर है। पुराना बाज़ार बीच में गुरुवार और शनिवार को लगता है।

बलदेव नगर मथुरा से सादाबाद को जानेवाली पक्की सड़क पर मथुरा से १० मील और महावन से ५ मील दूर है। इसे अक्सर दाऊजी कहते हैं। यहाँ थाना, डाकखाना और स्कूल है। यहां बलराम या बलदेव जी का प्रसिद्ध मन्दिर है। मन्दिर के पास ही ८० गज़ लम्बा और ८० गज़ चौड़ा पक्का ताल है। यहां भादों की छठ को मेला लगता है। बरसाना मथुरा से ३१ मील उत्तर-पश्चिम की ओर है। यहां थाना, डाकखाना और स्कूल है। राधा जी का निवास स्थान बरसाना ही था। यह एक पहाड़ी के ढाल और उसकी तलहटी में बसा है। चार चोटियों पर लाड़ली जी (राधा जी) के मन्दिर, मान मन्दिर डांगढ़ और मोर कुटी हैं। दूसरी पहाड़ी कुछ कम ऊँची है। बीच वाले तेज मार्ग को सकरी खोर कहते हैं। १७७४ ईस्वी में यहां जाटों और दिल्ली की सेना में घमासान लड़ाई हुई थी।

बठन गांव मथुरा से ३० मील दक्षिण-पश्चिम की ओर और कोसी से ३ मील पश्चिम की ओर है। कहते हैं यहां बलराम जी अपने भाई श्री कृष्ण जी की प्रतीक्षा में बैठे थे। इसी से इसका नाम बैठन से बिगड़कर बठान पड़ गया। बाहर की ओर बलभद्र कुंड है जिसके घाट पत्थर के बने हैं। यहां चैत कृष्ण तृतीया को मेला लगता है।

बेरी गांव आगरा नहर और अखनेरा लाइन के बीच में मथुरा से ११ मील की दूरी पर स्थित है। गदर में यहां के राजपूत जमींदारों ने विद्रोह किया उनसे यह गांव छीन लिया गया। यहां थाना और प्राइमरी स्कूल है। हर मंगलवार को बाजार लगता है।

बिसावर गांव सादाबाद से पश्चिम की ओर पक्की सड़क से १ मील दूर है। यह मथुरा से १६ मील दूर है। कहते हैं कि इस गांव को महावन के एक राजपूत सरदार ने ११वीं सदी में बसाया था। गांव में दो मन्दिर और एक मकबरा है। यहां एक स्कूल है। बाज़ार बुधवार को लगता है।

वृन्दावन यमुना के किनारे पर मथुरा से ६ मील उत्तर की ओर है। यहां यमुना एक विचित्र मोड़ बनाती है। वृन्दावन इसी मोड़ से बने हुये प्रायः द्वीप पर बसा है। किसी समय यहां तुलसी की अधिकता थी। तुलसी को वृन्दा भी कहते हैं। इसी से इसका नाम वृन्दावन पड़ा। मथुरा से यहां तक पक्की सड़क और रेलवे लाइन आती है। सड़क अधबिच में एक पुल है जिसे माधा जी सीन्धिया की लड़की ने १८३३ में बनवाया था। पास ही एक पक्का तालाब है। वृन्दावन के पड़ोस में एक बड़ी बाउली है। इसमें ५७ सीढ़ियां हैं। इसे महारानी अहिल्याबाई ने बनवाया था। वृन्दावन में १००० मन्दिर और ३२ घाट हैं। ब्रह्म कुंड और गोविन्द कुण्ड भी उल्लेखनीय हैं। इनके अतिरिक्त यहां कई क्षेत्र और बगीचे हैं। गोविन्द देव का मन्दिर सम्वत १६४७ (१५९० ईस्वी) में बनवाया गया था। इसे जैपुर के राजा मानसिंह ने अपने गुरू के आदेश से बनवाया था। काली मर्दन या कालीदह घाट के पास मदनमोहन का मन्दिर है। गोपीनाथ और जुगुल किशोर के मन्दिर भी पुराने हैं। रंग जी का मन्दिर नया है और मद्रासी ढंग का बना है। यह १८४५ में आरम्भ हुआ और १८५१ में ४५ लाख रुपये की लागत से पूरा हुआ। इसका बाहरी घेरा ७७३ फुट लम्बा और ४४० फुट चौड़ा है। दीवारों के घेर के अन्दर एक सुन्दर सरोवर और बगीचा है। सामने ६० फुट ऊंचा ध्वजा स्तम्भ है। यह २४ फुट नीचे गड़ा है। इसपर तांबे का पानी फिरा है। अकेले स्तम्भ का मूल्य १०,००० रु० है। प्रधान पश्चिम द्वार ९३ फुट

ऊंचा है। एक कमरे में रथ रक्खा है। यह वर्ष में एक बार ब्रह्मोत्सव के अवसर पर निकाला जाता है। राधारमन का मन्दिर १० लाख रुपये की लागत से १८७६ में पूरा हुआ। राधा इन्द्र किशोर का मन्दिर टिकारी ( गया ) राज्य की रानी ने ३ लाख की लागत से १८७१ ई० में बनवाया। राधा गोपाल का मन्दिर ग्वालियर नरेश ने अपने गुरू के आदेश से १८६० ई० में बनवाया। इसमें ४ लाख रु० लगा। वृन्दावन के कुंज भी प्रसिद्ध हैं।

वृन्दावन को प्रायः सभी पुराणों ने एक बड़ा तीर्थ बतलाया है। पर आरम्भ में यहां बन था। मानसिंह ने १५७० ई० में यहां मन्दिर बनवाया। १७८६ ई० में दौलतराव सीन्धिया ने यहां एक टक्साल स्थापित की। इसी से यह टक्साल वाली गली कहलाती है। जब जाटों का अधिकार हुआ तो टक्साल यहां से भरतपुर चली गयी। वहां वृन्दावनी रूप में बनने लगे जो प्रायः विवाह के समय में चलते थे।

चौमुहा गांव मथुरा से १० मील की दूरी पर दिल्ली की सड़क पर पड़ता है। यहां शेरशाह के समय की बनवाई हुई सराय के खंडहर हैं। पड़ोस में चतुर्मुखी रुद्र की मूर्ति मिली। इसी से इसका यह नाम पड़ा। जब महाराज सिन्धिया का यहां राज्य था तब उसने यह गांव शिक्षा-कार्य के लिये गंगाधर पंडित को दे दिया था। फिर इसकी तीन चौथाई आय आगरा कालेज के लिये जाने लगी। विद्रोह में सम्मिलित होने के कारण विद्रोह के समय यह गांव जला दिया गया और मालगुजारी बढ़ाकर ड्योढ़ी कर दी गई। इस समय आमदनी का कुछ भाग वृन्दावन के रंग जी मन्दिर के लिये खर्च किया जाता है। गांव में प्रायमरी स्कूल है। मंगलवार को बाज़ार लगता है।

छाता कस्बा मथुरा से २१ मील की दूरी पर दिल्ली को जानेवाली सड़क पर स्थित है। यहां दुर्गाकार एक बड़ी ( १२ एकड़ ) सराय है। ऊँचे दरवाज़ों पर पत्थर का काम है। भीतर कुछ भद्दे घर हैं। कहते हैं यह शेरशाह के समय में बनाई गई थी। १८५७ में यहां विद्रोही ज़मींदारों का अधिकार हो गया था। अंग्रेज़ी सेना ने अधिकार करने के लिये बुर्ज को उड़ा दिया। गांव को जला दिया और २२ अगुआ लोगों को गोली से मार डाला। एक साल तक लगान ड्योढ़ा कर दिया गया। श्री कृष्ण जी की छत्र धारण लीला यहां होने से इसका नाम छाता पड़ा। यहां तहसील, थाना, डाकखाना और स्कूल है। शुक्रवार को बाज़ार लगता है।

फरह यमुना के दाहिने किनारे के पास मथुरा से १५ मील दक्षिण की ओर आगरे को जानेवाली पक्की सड़क पर स्थित है। यहां थाना, डाकखाना और स्कूल है। सोमवार और शुक्रवार को बाज़ार लगता है। कहते हैं अकबर की माता हमीदा बेगम ने उसे बसाया था। १५५५ ई० में यहां शेरशाह के भतीजे सिकन्दर शाह और इब्राहीम शाह के बीच में लड़ाई हुई थी। १७३७ ई० में सूरजमल ने यहां तहसील स्थापित की थी। १८७६ में यह आगरा से अलग करके मथुरा जिले में मिला दिया गया।

गोवर्द्धन मथुरा से डीग को जानेवाली पक्की सड़क पर मथुरा से १६ मील की दूरी पर स्थित है। प्राचीन समय में गायों के बढ़ाने का यह प्रधान केन्द्र था। इसी से इसका यह नाम पड़ा। यह एक प्रसिद्ध तीर्थ है और पांच मील लम्बी एक तंग बलुआ पत्थर की पहाड़ी की गोद में बसा है। मैदान के ऊपर इसकी औसत ऊंचाई १०० फुट है। इसे अन्नकूट या गिरिराज भी कहते हैं। कहते हैं इसी पर्वत को अपनी अंगुली पर उठा कर कृष्ण भगवान ने ७ दिन तक ब्रजवासियों को इन्द्र की मूसलाधार वर्षा से बचाया था। इसकी सबसे ऊंची चोटी पर १५२० इस्वी में गोकुल के स्वामी बल्लभाचार्य जी ने श्रीनाथ का मन्दिर बनवाया था। औरंगजेब के एक आक्रमण के समय मूर्ति नाथ द्वारा ( उदयपुर ) को पहुँचा दी गई। मन्दिर जीर्ण हो गया। चोटी के नीचे तलहटी में बसे हुये जैतीपुर गांव में कई मन्दिर हैं। दीपदान दिवाली के बाद गोकुल नाथ के मन्दिर में प्रतिवर्ष गिरिराज पूजा और अन्न कूट का मेला लगता है। पर्वत के चारों ओर परिक्रमा वाली सड़क ६ कोस ( १२ मील ) लम्बी है। नगर मानसी गंगा ( ताल ) के चारों ओर बसा है। इसे अकबर के समय में राजा मानसिंह ने बनवाया था। दिवाली के समय इसका दृश्य बड़ा सुन्दर रहता है। कुछ महीनों में यह सूखा पड़ा रहता है। मथुरा से डीग को जाने वाली सड़क पहाड़ी के जिस भाग से जाती है उसे दान-घाट कहते हैं। यहां यह दो भागों में बंट गई है। बीच में मार्ग है। कहते हैं श्री कृष्ण जी इसी स्थान पर खड़े होकर दूध दही ले जाने वाली गोपियों से अपना भाग लेते थे। मानसी गंगा के पास हरिदेव

का मन्दिर है। इसे अकबर के समय में अम्बर के राजा भगवान दास ने बनवाया था। मानसी गंगा के दूसरी ओर भरतपुर के राजा रणधीर सिंह और बलदेव सिंह की दो छतरियां हैं। १ मील आगे राधाकुंड गांव के पास राजा सूरजमल की स्मृति में छतरियां बनी हुई हैं। पीछे की ओर बाग और सामने कुसुम सरोवर है। यह ४६० फुट लम्बा और इतना ही चौड़ा है। एक राजा जसवन्त सिंह की छतरी है। १८०३ में सिन्धिया से प्राप्त होने पर गोवर्द्धन और कई अन्य गांव भरतपुर के राजा रणजीत सिंह के छोटे लड़के कुँअर लक्ष्मण सिंह को भेंट कर दिये थे। १८२६ में इसके मरने पर ब्रिटिश कम्पनी ने इन गांवों को आगरा ज़िले में मिला लिया। भरतपुर राज्य की ओर से कई बार प्रार्थना की गई कि गोवर्द्धन भरतपुर राज्य को दे दिया जावे क्योंकि वहां उनके पूर्वजों की स्मृतियां हैं और बदले में इतने ही मूल्य का दूसरा स्थान भरतपुर राज्य से ले लिया जाय। लेकिन यह प्रार्थना स्वीकार नहीं की गई। गोवर्द्धन में थाना डाकखाना और स्कूल है। बाज़ार शनिवार को लगता है।

गोकुल नगर महावन तहसील के पश्चिम में यमुना के किनारे स्थित है। यह महावन से १ मील और मथुरा से ४ मील दूर है। मथुरा और गोकुल के बीच में यमुना के ऊपर रेल का पुल है। नावों का भी पुल बन जाता है। वास्तव में गोकुल महावन का ही एक बाहरी मुहल्ला है। स्वामी बल्लभाचार्य का स्थान होने से बम्बई आदि दूर-दूर स्थानों से यात्री यहां प्रतिवर्ष आते हैं। दूसरे किनारे से गोकुल का दृश्य बड़ा सुन्दर दिखाई देता है। यहां कई मन्दिर हैं। गोकुल नाथ, मदन मोहन और बिठल नाथ के मन्दिर बहुत पुराने हैं और १५११ ई० के बने हैं। द्वारकानाथ का मन्दिर १५४६ में बालकृष्ण का १६३६ में बना। भादों की जन्माष्टमी और कार्तिक में अन्नकूट का यहां मेला लगता है। प्रधान दरवाजे से एक सड़क यमुना तट को जाती है। नीचे बल्लभ घाट है। इस पार से उस पार को नाव आया जाया करती है। गोकुल में रात्रि के समय बहुत सी गायें आ जाती हैं।

गोकुल में डाकखाना और स्कूल है। यहां चांदी के खिलौने और आभूषण अच्छे बनते हैं। जैत गांव मथुरा से ६ मील की दूरी पर दिल्ली को जाने वाली पक्की सड़क पर स्थित है। यहां थाना, डाकखाना और स्कूल है।

जवारा गांव माट से ४ मील ठीक पूर्व की ओर स्थित है। पहले इसे फूलागढ़ कहते थे। यहीं चन्द्रावन है यहीं बैरागी की गुफा है। पड़ोस में पीलू, बबूल और पसेंडू के पेड़ हैं। कुछ कदम्ब के वृक्ष हैं। यहां एक प्राइमरी स्कूल है। सोमवार और शुक्रवार को बाजार लगता है। होली के दूसरे और तीसरे दिन मेला लगता है।

कमार कस्बा मथुरा से ३२ मील और कोसी से ६ मील दूर है। यहां कपास का व्यापार अधिक होता है। पड़ोस में पक्का ताल है। इसमें जंगल से पानी आता है। पड़ोस में राजा सूरजमल का बनवाया हुआ मन्दिर और पक्का सरोवर है। कमार में एक स्कूल है। सोमवार को बाज़ार लगता है।

करहरी गांव माट से ८ मील और मथुरा से १८ मील दूर है। यहां एक पुरानी सराय, उजड़ा हुआ नील का कारखाना और प्राइमरी स्कूल है। मंगलवार को बाज़ार लगता है। शुक्रवार को ढोरों की बिक्री होती है।

खैरागांव मथुरा से २० मील उत्तर-पश्चिम की ओर है। खादिर बन से बिगड़ कर यह नाम पड़ा है। पास ही कृष्ण कुंड है जिसमें पक्के घाट बने हैं। एक सिरे पर बलदेव का मन्दिर है। यहां वर्ष में एक बार मेला लगता है। गोपीनाथ का मन्दिर राजा टोडरमल ने बनवाया था। यहां एक प्राइमरी स्कूल है। बाज़ार शनिवार को लगता है।

कोसी आगरा-दिल्ली सड़क पर मथुरा से २८ मील दूर है। यहीं जी० आई० पी० रेलवे का स्टेशन है। कुश स्थली (द्वारका) से बिगड़ कर कोसी नाम पड़ा। यहां के रत्नाकर कुंड, मायाकुंड, बिसाखाकुंड और गोमती कुंड इसकी पुष्टि करते हैं। क्योंकि यही कुंड द्वारका में हैं। कोसी नगर कुछ निचली भूमि में स्थित है। कुछ ही दूरी पर आगरा नहर बहती है। ठीक ठीक पानी न बहने के कारण कोसी का पड़ोस स्वास्थ्य कर नहीं है। नगर के बीच में एक बड़ी सराय है। इसके दो दरवाज़ों के बीच में प्रधान बाज़ार है। रत्नाकर कुंड (जिसे यहां के लोग पक्का तालाब कहते हैं) इतना ही लम्बा है। गोमती कुंड के पास चैत कृष्ण द्विज को फूल डोल का मेला लगता है। इस ताल के बीच में एक द्वीप है। दो-तीन पक्के घाट हैं। यहां कई मन्दिर हैं। कोसी में थाना, डाकखाना, अस्पताल और स्कूल है। मंगल और बुधवार को बाजार लगता है। यहां घी, अन्न, कपास और ढोर का व्यापार होता है। गाय बैल यहां दूर दूर से बिकने आते हैं।

प्रति वर्ष ३०,००० पशु बिकते हैं। नक्खास या पशुओं के बाजार में पशुओं के रखने की बड़ी सुविधा है। बड़ा पक्का कुआं और कई चरही है। यहां जैनियों के तीन मन्दिर हैं। १८५७ में दिल्ली को जाते समय विद्रोहियों ने यहां के थाने और तहसील को लूटा और जलाया था।

कोट बन गांव कोसी से ४ मील दूर है। यह बन यात्रा की उत्तरी सीमा है। यहां सीताराम का मन्दिर और सीतल कुण्ड है।

महावन तहसील का केन्द्र स्थान है और यमुना के बांये किनारे पर स्थित है। यह मथुरा से ६ मील दूर है। इस समय इसके पड़ोस की भूमि उजाड़ है। पर पुराने समय में यहां बन था। इसी से इसका यह नाम पड़ा। १६३४ ईस्वी में इसके पड़ोस में शाहजहां ने ४ चीतों का शिकार करवाया था। श्रीकृष्ण जी यहीं पले थे। १०१८ में महमूद गज़नी ने मथुरा के साथ महावन को भी लूटा था। नगर का कुछ भाग पहाड़ी पर बसा है जहां पहले किला था। यहां मन्दिर छोटे हैं। एक मन्दिर श्याम लाल का है। यहां थाना, डाकखाना और मिडिल स्कूल है। मझोई गांव यमुना के किनारे पर मथुरा से २८ मील उत्तर की ओर है। यहां थाना, डाकखाना और प्राइमरी स्कूल है। चैत और क्वार में देवी का मेला लगता है।

माट मथुरा से १२ मील की दूरी पर यमुना के ऊँचे किनारे पर स्थित है। यह इसी नाम की तहसील का केन्द्र-स्थान है। राया स्टेशन को ८ मील लम्बी पक्की सड़क जाती है। यहां तहसील, थाना, डाकखाना और मिडिल स्कूल है जो पुरानी कच्ची गढ़ी के घेर में स्थित है। यह पहले उपवन कहलाता था। मट या मटकी से बिगड़ कर इसका वर्तमान नाम पड़ा। कहते हैं खेल में श्रीकृष्ण जी यहां भी मटकी उलट देते थे। चैत्र कृष्ण नवमी को यहां ग्वाल-मंडल का मेला प्रति गुरुवार को बाजार लगता है।

मथुरा शहर यमुना के किनारे पर जिले के प्रायः मध्य में स्थित है। आगरे से दिल्ली को सड़क यहां होकर जाती है। मथुरा से आगरा ३२ मील और दिल्ली ८६ मील दूर है। यहां जी० आई० पी० और बम्बई-बड़ौदा रेलवे का जंकशन है। छोटी लाइन कानपुर से अचनेरा को यहां होकर जाती है। बड़ी लाइन कोटा से आती है। ईस्ट इण्डियन रेलवे हाथरस जंकशन पर छोटी लाइन से मिलती है। एक छोटी लाइन वृन्दावन को जाती है। मथुरा होकर आगरा-दिल्ली पक्की सड़क जाती है। यहां से एक पक्की सड़क डीग और भरतपुर को, एक हाथरस को, एक वृन्दावन को, एक गोकुल, महावन और सादाबाद को गई है। यह एक प्रसिद्ध छावनी है। मथुरा शहर बहुत प्राचीन है यह कई बार उजड़ा और बसा। पुराने भग्नावशेष खुदाई करने से मिले हैं। इनका कुछ संग्रह मथुरा के अजायब घर में रक्खा है। जहां पहले केशव देव का प्रसिद्ध मन्दिर था वहां इस समय औरंगज़ेब की मस्जिद है। १६६९ ई० में औरंगजेब ने केशव देव का मन्दिर तोड़ डाला और उसके स्थान पर मस्जिद बनाई गई। खुदाई में बुद्ध भगवान की कई मूर्त्तियां मिलीं। कुछ जैन मूर्त्तियां भी मिलीं। जहां कटरा है वहीं बौद्ध कालीन यश विहार था। कटरा घेरा ८०४ फुट लम्बा ६५३ फुट चौड़ा है।

केशव देव के मन्दिर का ऊपरी भाग एक दम नष्ट कर दिया गया। लेकिन मस्जिद के पीछे निचले भाग का १६३ फुट तक पता लग सकता है। नष्ट होने से पहले बर्नियर और टेवर्नियर नामी योरुपीय यात्रियों ने मन्दिर के दर्शन किये थे। टेवर्नियर ने इसका वर्णन इस प्रकार किया है। "मन्दिर इतना विशाल ऊँचा और भव्य है कि निचले भाग में स्थित होने पर भी यह पांच-छः कोस की दूरी से दिखाई देता है। इसमें लाल पत्थर का प्रयोग हुआ है जो आगरा के पास वाली खदान से लाया गया है। यह अष्टभुज चबूतरे पर बना है। इस पर नक्काशी का पत्थर लगा है। दो पट्टियों पर कई प्रकार के पशु विशेष कर बन्दर बने हैं। चबूतरे के आधे भाग पर मन्दिर है आधा भाग सामने खुला है। मन्दिर के बीच वाले भाग में गुम्बद है। बाहरी भाग में ऊपर से नीचे तक बन्दर, हाथी आदि पशुओं के चित्र पत्थर पर हैं। ताखों में दैत्यों की मूर्तियां हैं। मन्दिर में प्रवेश करने के लिये केवल एक ऊंचा द्वार था। इसमें कई स्तम्भ और पशु तथा मनुष्यों की मूर्तियां थीं। पुराने सोने और चान्दी के मंडप में मूर्ति स्थापित थी। मूर्ति का केवल सिर दिखाई देता था। मूर्ति काले संगमरमर की बनी थी। आंखों में लाल जड़े हुये थे। सारे शरीर पर कामदार लाल मखमल का वस्त्र था। इसलिये बाहें दिखाई नहीं देती थीं।

औरंगज़ेब के आक्रमण को लोग पहले ही भांप गये थे। इसलिये प्राचीन केशवदेव की मूर्ति मेवाड़ के राना राजसिंह ने हटवा ली थी। जिस रथ पर मूर्ति लाई जा रही थी उसके पहिये उदयपुर से २२ मील की दूरी पर बानास नदी की बालू में गहरे धँस गये। रथ के पहिये

न निकल सके इसलिये इसी स्थान पर मन्दिर बना दिया गया। मन्दिर के चारों ओर आजकल का नाथद्वारा नगर बस गया। कटरा के पीछे मथुरा में केशव देव का वर्तमान मन्दिर है। पास ही पोटरा कुंड है। यह अक्सर सूखा पड़ा रहता है। कटरा के दक्षिण में बलभद्र कुंड के पास श्रावणी (सलूनों) को मेला लगता है। इसके पास ही भूतेश्वर महादेव का मन्दिर है। कुछ ही दूरी पर धूल कोट के टीले हैं। कुछ दूरी पर श्रावस्ती संगम और कैलाश टीला है। इसके ढालों पर गोकर्णेश्वर का मन्दिर है। विशाल मूर्ति बड़ी पुरानी है। पास ही गौतम ऋषि की मूर्ति है। कैलाश के सामने रामलीला का मैदान है। यहीं सूखा श्रावस्ती कुंड है। पास ही महाविद्यादेवी का मन्दिर है। कहते हैं आरम्भ की मूर्ति पांडवों ने स्थापित की थी। वर्तमान मन्दिर अठारहवीं सदी के अन्त में पेशवा ने बनवाया था। पड़ोस का करील वृक्ष बड़ा पुराना है। इसके नीचे एक बौद्ध स्तम्भ पर माया देवी की मूर्ति खुदी हुई है। यहां क्वार और चैत्र में मेला लगता है। जैसिंह पुर खेड़े के नीचे चामुण्डदेवी का मन्दिर है। जहां खेड़ा है वहां सवाई जैसिंह का पुराना महल था। नीचे गणेशघाट या सेनापति घाट है। इसे सिन्धिया महाराज के एक सेनापति ने बनवाया था।

कनकाली टीला के पास शिवताल है। इसमें सदा पानी रहता है। एक ओर गऊ घाट है जहां गाय पानी पीती हैं। यहां भादों की कृष्ण एकादशी को मेला लगता है। शिवताल के निर्माता को इच्छा थी कि वह केशव मन्दिर को फिर से बनावे। उसने बहुत सी भूमि भी ले ली थी। लेकिन जो मुसलमान २०० वर्ष से बसे थे उन्होंने अपनी ज़मीन बेचने से इनकार कर दिया अतः लम्बे मुकदमे के बाद उसे मन्दिर बनाने का विचार छोड़ना पड़ा। होली दरवाज़े के पास दीर्घ विष्णु का मन्दिर उसकी चिर स्मृति है।

कंस का टीला होली दरवाज़े के बाहर है। कहते हैं श्री कृष्ण जी ने दुष्ट कंस का यहीं दमन किया था। वर्तमान मथुरा शहर यमुना के दाहिने किनारे पर डेढ़ मील तक फैला हुआ है। दूसरी ओर से मथुरा का दृश्य बड़ा सुहावना लगता है। पानी के ऊपर पत्थर के घाटों की पंक्ति उठी हुई है। घाटों के ऊपर तंग सड़क के किनारे पत्थर के मन्दिर और घर बने हैं। प्रातःकाल स्नान करने वालों की यहां भीड़ लगी रहती है। कंस का किला (जो इस समय खंडहर है) दूर से दिखाई देता है। इसे राजा मानसिंह ने फिर से बनवाया था। आगे चलकर यहीं ज्योतिष प्रेमी सवाई जैसिंह महाराज रहते थे। गदर के कुछ पूर्व यहां के भवन एक सरकारी ठेकेदार को बेच दिये गये। उसने पत्थर आदि सब इनका सामान निकलवा लिया।

यमुना के किनारे के प्रायः बीच में वह स्थान है जहां श्रीकृष्णजी ने कंस को मार कर विश्राम लिया था। इसी से यह घाट विश्रान्त घाट कहलाता है। मथुरा का यह घाट और सब घाटों से सुन्दर है। पानी के ऊपर संगमरमर के महराब हैं। पानी में बड़े बड़े कछुए हैं। यहां से उत्तर की ओर वाले घाट उत्तर कोट और दक्षिण की ओर वाले घाट दक्षिण कोट कहलाते हैं। उत्तर कोट में गणेश घाट, मनसा घाट, दशाश्वमेधघाट, चक्रतीर्थघाट, कृष्णगंगा घाट, सोमतीर्थ घाट या बसुदेवघाट, ब्रह्मलोकघाट, घट-भरनघाट, धारापाटन घाट, संगमतीर्थ घाट (बैकुंठघाट) नवतीर्थ घाट और असिकुंड घाट हैं। दक्षिण की ओर अविमुक्त घाट, विश्रान्ति घाट, प्रयाग घाट, कनखल घाट, तिन्दुक घाट, सूर्य घाट, चिन्तामणि घाट, ध्रुव घाट, ऋषि-घाट, मोक्ष घाट, कोटि घाट, और बुद्ध घाट हैं। समीघाट प्रधान सड़क के सामने है। बंगाली घाट रेलवे पुल के पास है। ध्रुवघाट के ऊपर ध्रुवटीला पर ध्रुव मन्दिर है जो १८३७ ई० में बना था। सती बुर्ज जैपुर के राजा भगवानदास की माता की स्मृति में १५७० ई० में बनाया गया था। इस समय यह ५५ फुट ऊंचा है और चौमंजिला है। पहले यह अधिक ऊंचा था। कहते हैं औरंगजेब ने इसका ऊपरी भाग गिरवा दिया था।

शहर के प्रायः बीच में ऊंची भूमि पर जामा मस्जिद है। यह एक प्राचीन हिन्दू मन्दिर को उजाड़ कर १६६१ ई० में बनी थी। हिन्दू नगर के बीच में यह सबसे ऊंची इमारत है। १८०३ के भूचाल में ऊंचा दरवाज़ा ऊपर से नीचे तक फट गया और एक मीनार का ऊपरी बुर्ज गिर गया। लेकिन गुम्बद को कोई हानि नहीं हुई।

द्वारकाधीश का विशाल मन्दिर ग्वालियर के कोषाध्यक्ष परीखजी ने १८१५ ई० में बनवाया था। यहीं भरतपुर महाराज का महल और सेठ लक्ष्मीचन्द का भवन है। मन्दिरों के अतिरिक्त मथुरा में कई धर्मशालायें हैं। मथुरा में किशोरी रमन और चम्पा अग्रवाल दो

इण्टर कालेज हैं। इनके अतिरिक्त यहां एक गवर्नमेण्ट हाई स्कूल और एक मिशन हाई स्कूल है। वर्नाक्यूलर मिडिल स्कूल पुराने क़िले पर है। इनके अतिरिक्त यहां कई पाठशालायें हैं। गुरुकुल वृन्दाबन में है। वहां का प्रेम महाविद्यालय भी एक राष्ट्रीय संस्था है। सदर बाज़ार में जमुना बाग है। सदर बाज़ार से मिली हुई छावनी है। यहां सिपाहियों के सिपाहियों की बारकें और फौजी अफसरों के बंगले हैं।

मथुरा का अजायबघर भी बहुत सुन्दर है यहां मथुरा के पड़ोस में पाई गई प्राचीन मूर्तियों और दूसरी वस्तुओं का संग्रह है।

मथुरा में पत्थर खरादने, हाथ का कागज़ और पीतल की मूर्तियां बनाने का काम अच्छा होता है। रेलों का जंकशन होने से मथुरा एक व्यापारी शहर बन गया है। यहां से अन्न, घी, पशु और दूसरी वस्तुओं का व्यापार होता है।

नन्दगांव उसी पहाड़ी की तलहटी में बसा है जहां बरसाना बसा है। नन्दगांव मथुरा से २६ मील उत्तर-पश्चिम की ओर है। नन्द जी यहीं रहते थे। यहीं नन्द राय जी का मन्दिर है। गोपीनाथ, नृत्यगोपाल, गिरधारी, नन्दनन्दन राधामोहन मनसदेवी के मन्दिर भी यहां हैं। कुछ दूरी पर मानसरोवर का पक्का तालाब है। कहते हैं कृष्ण जी इसी में गौओं को पानी पिलाते थे। इसके अतिरिक्त यहां और कई कुंड हैं। गांव के पास ही उधौ जी क्यार (कदम्ब कुंज) है।

नोह झील (गांव) मथुरा से ३० मील और माट से १८ मील दूर है। इसके पास ही इस नाम की झील है। कहते हैं पहले यहां यमुना की धारा (पेटा) थी। इस गांव के बीच में एक कच्ची गढ़ी है जिसे भरतपुर राज्य के एक अफसर ने १७४० ई० बनवाया था। इस समय यह खंडहर है गांव के बाहर एक मक़बरा या शाहहसन गोरी की दरगाह है। यहां मेला लगता है। यहां थाना, डाकखाना और प्राइमरी स्कूल है। शुक्रवार को बाज़ार लगता है।

ओल एक पुराना गांव है। यह मथुरा से १६ मील दक्षिण की ओर है। यहां थाना डाकखाना और प्राइमरी स्कूल है।

पानी गांव मथुरा से ६ मील उत्तर की ओर यमुना के पूर्वी किनारे पर स्थित है। गांव खादर (कछार) में बसा है। वर्षा काल में पड़ोस की भूमि पानी में डूब जाती है। यहां सूरजमल की रानी का बनवाया हुआ एक मन्दिर है।

राधाकुंड मथुरा से १६ मील पश्चिम की ओर है। इसे श्रीकुण्ड भी कहते हैं। श्री कृष्ण जी ने अरिष्ट दैत्य का वध करके यहीं स्नान किया था। यहां कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी को मेला लगता है। कृष्णकुण्ड और राधाकुण्ड दोनों में पक्के घाट बने हैं।

राया कस्बा मथुरा से ८ मील की दूरी पर हाथरस को जाने वाली पक्की सड़क पर पड़ता है। यह कानपुर अछनेरा लाइन का एक स्टेशन है। माट-नहर-शाखा राया से १ मील दूर है। राया एक प्रसिद्ध व्यापारी नगर है। यहां थाना, डाकखाना और मिडिल स्कूल है। सोमवार और शुक्रवार को बाज़ार लगता है।

सादाबाद इसी नाम की तहसील का केन्द्र स्थान है। यह झिर्ना या कर्वन नदी के किनारे मथुरा से २४ मील दूर है। यहां चार पक्की सड़कें मिलती हैं। एक मथुरा को, एक जलेसर रोड स्टेशन (ई० आई० आर) को और दो अलीगढ़ और आगरा को जाती हैं। कहते हैं शाहजहां के एक मंत्री सादुल्ला खां ने इसे बसाया था। यहां तहसील, थाना, डाकखाना और मिडिल स्कूल है। मंगल और शनिश्चर को बाज़ार लगता है। सहपऊ गांव मथुरा से ३१ मील और सादाबाद से ७ मील दूर है। यह जलेसर रोड को जाने वाली सड़क पर पड़ती है। यहां नेम नाथ का मन्दिर है जहां भादों के महीने में मेला लगता है। इसके पास एक पुराना किला था। मील की कोठी के पास भद्रकाली माता का स्थान है। यहां दशहरा के अवसर पर भैंस की बलि चढ़ाई जाती है। यहां थाना, डाकखाना और स्कूल है। बुधवार और रविवार को मेला लगता है।

सेहीगांव मथुरा के उत्तर में १६ मील दूर है। यहां विहारी जी का मन्दिर है। पास ही इन्द्रौली का पुराना खेड़ा है। यहां कार्तिकी और वैशाखी को मेला लगता है। शाहपुर गांव मथुरा से ३६ मील उत्तर-पश्चिम की ओर यमुना के दाहिने किनारे पर बसा है। इस गांव को सोलहवीं सदी के मध्य में शेरशाह के एक अफसर ने बसाया था। नदी के किनारे इस गांव के बसाने वाले (मीर जी) का मकबरा है। सामने एक किले के खंडहर

हैं। इस किले को मरहठों के एक अफसर ने आरम्भ किया था। लार्ड लेक ने २८,००० रु० की मालगुज़ारी का यह गांव नवाब अशरफ खां को जागीर के रूप में उसके जीवन भर के लिये दिया था। शाहपुर में यमुना को पार करने करने के लिये नाव रहती है। बाजार सोमवार को लगता है।

शेरगढ़ यमुना के दाहिने किनारे पर मथुरा से २२ मील दूर है। इसके पास ही शेरशाह के बनवाये हुये किले के खंडहर हैं। गदर के समय में पड़ोस के गूजरों ने इसे लूटा था। जानवरों की चोरी इस समय भी हुआ करती है। यहां थाना, डाकखाना और मिडिल स्कूल है। बृहस्पतिवार को बाज़ार लगता है।

सोनई मथुरा से हाथरस को आने वाली पक्की सड़क पर पड़ता है। यहां के पुराने किले को गिरा कर थाना बनाया गया। फिर थाना भी तोड़ दिया गया। बाजार रविवार और गुरूवार को लगता है। सोंख कस्बा मथुरा से १६ मील दूर है। कहते हैं संखासुर से बिगड़ कर यह नाम पड़ा। पुराने जिले के खेड़े के पास सोमवार और बृहस्पतिवार को बाज़ार लगता है। किला भरतपुर के राजा सूरजमल के एक अफसर ने बनवाया था।

★ ★ ★

# एटा

एटा जिला गङ्गा यमुना द्वाबा के मध्यवर्ती भाग में स्थित है। उत्तर की ओर गङ्गा नदी इसे बदायूं जिले से अलग करती है। इसके पूर्व में फर्रुखाबाद, दक्षिण में आगरा और मैनपुरी, पश्चिम में अलीगढ़, मथुरा और आगरा के जिले हैं। इसका क्षेत्रफल १७१६ वर्गमील और जनसंख्या १२ लाख है। एटा जिले की अधिक से अधिक लम्बाई (दक्षिण-पश्चिम से उत्तर-पूर्व तक, ६२ मील और चौड़ाई ४३ मील है।

काली नदी एटा जिले को दो भागों में बांटती है। काली नदी के दक्षिण-पश्चिम का भाग अधिक उपजाऊ है। उत्तर-पूर्व की ओर अलीगंज और कास गंज की भूमि अच्छी नहीं है। भूरचना की दृष्टि से एटा जिला चार भागों में बटा हुआ है। (१) गङ्गा की प्रधान वर्तमान धारा और पुराने ऊंचे। किनारों की भूमि नीची है। (२) गङ्गा के ऊंचे किनारे से काली नदी के ऊंचे किनारे तक ऊंची भूमि है। (३) काली नदी की घाटी एक तंग पेटी है। (४) काली नदी के उत्तर वाला प्रदेश अत्यन्त उपजाऊ है।

(१) गङ्गा की तराई कहीं कहीं १० मील चौड़ी है। इस प्रदेश का क्षेत्रफल ३०० वर्गमील है। इस प्रदेश की मिट्टी नई और कछारी है। इस मिट्टी में बालू और वनस्पति का मिश्रण है। यहां गेहूँ और दूसरी फसलें बहुत अच्छी होती हैं।

(२) बूढ़ी गङ्गा और काली नदी के बीच में मध्यवर्ती ऊंचा बांगर का प्रदेश है। इसकी चौड़ाई आठ-दस मील है। जमीन कुछ ऊंची नीची है। नीचे भागों में पानी इकट्ठा हो जाता है।

(३) काली नदी का ढाल क्रमशः है। उत्तरी किनारा कहीं कहीं सपाट है। इसके पड़ोस की भूमि उपजाऊ है। किनारे के पास गांव बसे हुये हैं। काली नदी अपना मार्ग नहीं बदलती है। बाढ़ के बाद जो भूमि निकलती है वह बड़ी उपजाऊ होती है।

(४) काली नदी के उत्तर वाली प्रदेश अत्यन्त उपजाऊ है। इसमें बालू का नाम नहीं है। कहीं कहीं ऊसर भूमि है। ईसन नदी काली-यमुना द्वाबा के बीच में बहती है। इस प्रदेश में सिंचाई भी सुगम है। गङ्गा, बूढ़ गङ्गा काली और ईसन इस प्रदेश की प्रधान नदियां हैं।

गङ्गा नदी २२ मील तक जिले की सीमा बनाती है। कहते हैं अब से आठ नौ सौ वर्ष पहले गङ्गा ने अपना पुराना मार्ग बदला था। अब वह धीरे धीरे अपने पुराने मार्ग के पास आ रही है। कछलाघाट और कादिर गञ्ज में गङ्गा को पार करने के लिये बाढ़ के घट जाने पर नावों का पुल रहता है। वर्षा ऋतु में नावें रहती है।

बूढ़ गङ्गा या बढ़ गङ्गा पुराने ऊंचे किनारे से काफी दूर बहती है। इस ३० फुट या ४० फुट ऊंचे किनारे को को पहाड़ कहते हैं।

बूढ़ गङ्गा की धार बड़ी मन्द रहती है।

काली नदी या कालिन्दी बढ़ गङ्गा से दस बारह

मील दक्षिण की ओर बहती है। यह अलीगढ़ जिले से यहां आती है। जिले कालिन्दी का मार्ग ६५ मील लम्बा इसकी घाटी गहरी है। एक ऊंचे किनारे से दूसरे ऊंचे किनारे तक कालिन्दी की चौड़ाई ३ मील है। हाथरस नदरई और कुछ अन्य स्थानों पर पुल बना है। १८८६ में २५ लाख रुपये की लागत से इसके ऊपर एक ऐसा पुल बनाया गया। जिसके ऊपर से निचली गङ्गा नहर बहती है। पहले काली नदी सिंचाई के काम आती थी। आगे चल कर नहर के विभाग ने काली नदी में बाँध बनाने का मनाई कर दी।

ईसन नदी की तली पड़ोस की भूमि से बहुत कम नीची है। इसमें तराई का नाम नहीं है। इसी से बाढ़ के दिनों में यह दूर तक फैल जाती है। एटा शहर से टूंडला, शिकोहाबाद और निधौली को जाने वाली सड़कों के ऊपर पुल बने हैं। आरिंद रिंदया रतवा कुछ दूसरी छोटी नदियां हैं।

एटा जिले के विषम धरातल में पानी ठीक ठीक नहीं बह पाता है। इसी से कुछ आबातों झीलें बन गई है कुछ झीलों में साल भर पानी रहता है। रुस्तम गढ़ महोता, दरिया गंज, सिकंदरपुर और पटना झीलें काफ़ी बड़ी हैं। इनके उथले पानी में सिंघाड़ा बहुत होता है। किनारे के पास वाली तर जमीन में गेहूँ और दूसरी फसलें होती है। पानी के ऊपर कई तरह की चिड़ियां रहती हैं। एटा जिले की १० फीसदी जमीन ऊसर है। कहीं कहीं ढाक का जङ्गल है। गङ्गा और बूढ़ गङ्गा के पड़ोस में कटरी है। जहां गांडा सेठा (कांस) और झाऊ बहुत है।

अलीगंज तहसील की दलदली भूमि में खस बहुत होता है। बबूल नीम, शीशम जामुन यहां के साधारण पेड़ हैं। बस्ती के पड़ोस में आम के बगीचे हैं। जिले के कई भागों में कंकड़ मिलता है।

गन्ना, धान, ज्वार, बाजरा, गेहूँ, जौ और चना यहां की प्रधान फसलें हैं।

फसलें नहरों, कुओं, और तालाबों के पानी से सींची जाती हैं।

अलीगञ्ज कस्बा इसी नाम की तहसील का केन्द्र-स्थान है। यहां से थाना दरिया गञ्ज रेलवे स्टेशन को पक्की सड़क जाती है। यह नौ मील दूर है। दूसरी पक्की सड़क एटा को जाती है। अठारहवीं सदी में याकूत खां नामी फर्रुखाबाद के नवाब के हिजड़े ने बसाया था। यहां बहुत कम व्यापार होता है। बाजार गुरुवार और शनिवार को लगता है। यहां कुछ अनाज और कपास मोल लेकर बाहर जाती है। यहां तहसील, थाना, डाक-खाना और मिडिल स्कूल हैं।

अयनपुर कस्बा एटा से १३ मील दूर है। यह दिल्ली से फर्रुखाबाद को जाने वाली सड़क पर स्थित है। ग्रांडट्रंक रोड के खुल जाने से इसका व्यापार बहुत घट गया, रेल के खुल जाने पर यहां के अनाज नील और कपास के व्यापार को बड़ा धक्का पहुँचा। यहां इस समय डाकखाना और स्कूल है।

अतरंजीखेड़ा इस समय उजाड़ है और ईंटों से ढका है। यह एटा से १५ मील दूर है। अकबर के समय में यह कन्नौज का एक परगना था। शहाबुद्दीन गोरी के समय में यहां के राजा बेन ने कई बार मुसलमानों को हराया। अन्त में गोरी ने स्वयं सेना ले जाकर उसे हराया तब से यहां खेड़ा हो गया। यह खेड़ा ३००० फुट लम्बा १५०० फुट चौड़ा और ६५ फुट ऊंचा है। यहां बहुत पुराने सिक्के मिलते हैं।

अवागढ़ एटा से १३ मील पश्चिम में और जलेश्वर से १२ मील पूर्व में स्थित है। राजा का किला कस्बे से २ फर्लांग उत्तर-पूर्व, की ओर स्थित है। इस किले का घेरा १ मील है। यहां थाना, अस्पताल, डाकखाना और तहसीली स्कूल है। मङ्गलवार और शनिवार को बाजार लगता है। दशहरा और होली के अवसर पर मेला लगता है।

बसुन्द्रा एटा से टूंडला को जाने वाली सड़क पर स्थित है। इसके पास ही एक पुराना खेड़ा है यहां एक कच्ची गढ़ी के खंडहर हैं।

भरगैन गांव बूढ़ गङ्गा के किनारे पर एटा से ३३ मील की दूरी पर स्थित है। कहते हैं कि इसका नाम भार्गव या भारगहन ऋषि के नाम पर पड़ा है। मुसलमानी समय में इसके पड़ोस में भारी लड़ाइयां हुईं।

बिलाराम कस्बा इसी नाम के परगने का प्रधान गांव है। कास गञ्ज से ४ मील पश्चिम की ओर है। कहते हैं अब से ६५० वर्ष पहले इसे चौहान ठाकुरों ने बसाया था। यहां का राजा मुसलमानी आक्रमण कारियों से लड़ा। हार जाने पर यहां खेड़ा बन गया।

बिल्सर या बिल्संड गांव उस स्थान पर बसा है जहां ह्वान सांग के समय में पिलोचन कहलाता था। उस समय गांव के बीच में १०० फुट ऊंचा स्तूप था। इसे सम्राट अशोक ने उस स्थान पर बनवाया था जहां भगवान बुद्ध ने ७ दिन तक प्रचार किया था। यहां पांच मन्दिर और एक किला था। १२४७ में बलबन के समय मे घमासान लड़ाई हुई थी।

ढुंढवारागञ्ज एटा से २२ मील उत्तर-पूर्व की ओर है। यह कास गंज और कानपुर के बीच में एक रेलवे स्टेशन है। पहले यहां कोट राजपूतों का अधिकार था। ११९४ ईस्वी में शहाबुद्दीन गोरी ने उन्हें भगा दिया। फिर यहां ढुंढिया कायस्थ बस गये। यहां डाकखाना और स्कूल हैं। बाज़ार सोमवार और बृहस्पतिवार को लगता है।

एटा शहर १८४६ से जिले का केन्द्र स्थान है। यह ग्रांडट्रंक रोड पर स्थित है। एटा शहर को अब से ५५० वर्ष पहले पृथिवी राज के वंशज एक चौहान राजपूत संग्राम सिंह ने बसाया था। कहते हैं कि भाले से नींव खोलते समय इस राजपूत को एक ईंट मिली थी। इसी लिये शहर का नाम ईंटा और फिर उससे बिगड़कर एटा पड़ गया। संग्राम सिंह ने यहां एक गढ़ बनवाया था। गदर के समय राजा डामर सिंह ने विद्रोह किया। इससे उसकी जायदाद और उपाधि छिन गई। किला नष्ट कर दिया गया।

एटा में हाई स्कूल, जिले की कचहरी, अस्पताल आदि है। यहां कई पक्की सड़कें मिलती हैं। लेकिन ब्यापार या कोई विशेष कारीगरी नहीं है। कपास ओटने की एक मिल है।

जलेसर कस्बा ईसन और सिरसो नदियों के बीच में स्थित है। यह ईसन नदी के बायें किनारे से १ मील दूर है। जलेसर के ऊंचे भाग में जहां पहले किला था इस समय तहसील, थाना और मुंसफी है। निचले भाग में कस्बा है। यह ईस्ट इंडियन रेलवे की जलेसर रोड स्टेशन से ८ मील दूर है। यह आवा से ११ मील और एटा से २३ मील दूर है। इसके पड़ोस में जंगल होने पर भी भूमि नीची और दलदली है। अक्सर पड़ोस की भूमि जल (पानी) से डूब जाती थी। इसी से इसका नाम जलेश्वर या जलेसर पड़ा। पहाड़ी एक पुराने किले का खंडहर है। कहते हैं जब चित्तौड़ का पतन हुआ उसी समय राना कटीरा १४०३ ईस्वी में यहां शासन करता था। उसी ने यहां किला बनवाया था। जो मुसलमान मारे गये उनमें एक मक़बरे के पड़ोस में उसका मेला लगता है। जलेसर में तहसील, थाना, डाकखाना और स्कूल है। यहां कपास ओटने की एक मिल है। शोरा भी बनाया जाता है। यहां जूता, कपड़ा, चूड़ियां और बर्तन बनाने का काम होता है। कादिर गञ्ज गंगा के किनारे पर एटा से ३२ मील उत्तर की ओर स्थित है। पश्चिम की ओर एक पुराने किले के खंडहर हैं। किले के भीतर शुजातखां का मकबरा है जो फर्रुखाबाद नवाब की ओर से रुहेलों से लड़ता हुआ मारा गया। पहले यह ठाकुरों का गांव था। इसका पुराना नाम चिल्ला चौन था। गङ्गा की बाढ़ में किला गिर गया। पास ही रेता शाह नामी फकीर का मकबरा है। यहाँ प्रतिवर्ष मेला लगता है। यहां थाना, डाकखाना और स्कूल है। मङ्गलवार को बाज़ार लगता है।

कासगंज एटा जिले का सब से अधिक प्रसिद्ध नगर है। यह एटा से १९ मील की दूरी पर कानपुर अचनेरा लाइन का एक प्रधान स्टेशन है। यहीं पर बरेली से आने वाली रुहेल खण्ड कमायूं रेलवे की शाखा मिलती है। काली नदी यहां से सवा मील दक्षिण-पूर्व की ओर है। एक पक्की सड़क कासगंज के बीच में होकर उत्तर से दक्षिण को जाती है। जहां प्रधान सड़कें मिलती हैं वहीं सुन्दर दुकानें और बारादरी है। यहीं तहसील, थाना, पड़ाव और स्कूल है। उत्तर की ओर कासगञ्ज के पुराने राजा का किले उम्म (दुर्गाकार) महल है। इसके भीतर मन्दिर है और हाथी घोड़ों के रहने के लिये अस्तबल हैं। नगर की दूसरी ओर रेलवे स्टेशन और रेलवे-कर्मचारियों की बस्ती है। पास ही कपास ओटने और शक्कर बनाने की मिलें हैं। रेलवे का जंक्शन होने से कासगञ्ज का व्यापार बहुत बढ़ गया है। गल्ला, शक्कर और कपास का ब्यापार प्रधान है। यहां पहले अंग्रेजी छावनी भी बनी थी। पर १८०४ में होल्कर की सेना ने यहां आक्रमण किया और छावनी जला डाली।

मरेहरा एटा से १२ मील उत्तर की ओर है। पश्चिम की ओर रेलवे स्टेशन है। स्टेशन तक पक्की सड़क जाती है। आगे चल कर मरहची के पास कासगंज से एटा को जाने वाली सड़क से मिल गई है। अधिकतर निवासी मुसलमान हैं। यहां दो स्कूल और दो बाज़ार

है। मरेहरा के उत्तर-पूर्व में सरूगञ्ज नाम का गांव था। १२१४ में यहां के राजपूत राजा को एक खिलजी सरदार ने मार डाला और गांव में क़त्ल आम करवा दिया।

मोहनपुर गांव एटा से १६ मील उत्तर-पूर्व की ओर है। कहते हैं मोहन सिंह नामी एक सोलंकी राजपूत ने इसे बसाया था। यहां स्कूल और डाकखाना है। बुधवार और रविवार को बाजार लगता है। वर्ष में एक बार मेला लगता है।

नदौली गांव गंगा के पास एटा से ३२ मील उत्तर पूर्व की ओर है। गाँव में एक स्कूल है। बुधवार और रविवार को बाजार लगता है। वर्ष में एक बार देवी का मेला लगता है।

निधौली गांव एटा से १० मील दूर है। यहां पुलिस चौकी, डाकखाना और स्कूल है। मंगलवार और शनिवार को बाजार लगता है। पास एक किले के खंडहर है। गांव के उत्तर की ओर ईसन नदी और दक्षिण की ओर गंगा-नहर बहती है। पटियाली गंगा के ऊँचे किनारे पर एटा से २२ मील उत्तर-पूर्व की ओर स्थित है। किनारा एक दम सपाट है। नालों ने इसे काट दिया है। यह नगर पुराना है। इसका उल्लेख महाभारत में आता है कहते हैं यह भाग द्रोणाचार्य को मिला था। शहाबुद्दीन गोरी ने मन्दिरों को तुड़वाकर उनके सामान से यहां किला बनवाया था। उजड़ जाने पर गांव वालों ने किले के सामान से अपने घर बनवाये। यहां १७४६ में अवध के नवाब और फ़र्रुखाबाद के नवाब की सेनाओं में लड़ाई हुई। गदर के समय में भी यहां लड़ाई हुई। यहां डाकखाना और स्कूल है। बाजार मंगलवार और शनिवार को लगता है।

रामपुर अलीगञ्ज से ४ मील उत्तर की ओर एटा से ३२ मील दूर है। बुधवार और रविवार को बाजार लगता है। कन्नौज की राठौर रानी का निवास स्थान है।

सहवर कस्बा एटा के २४ मील उत्तर-पूर्व की ओर है। इसे एक चौहान ठाकुर ने बसाया था। यह कानपुर-अछनेरा लाइन का एक स्टेशन है। लेकिन इसका व्यापार बड़ा नहीं है। यहाँ डाकखाना और स्कूल है।

सकीत नगर एटा से १० मील दक्षिण-पूर्व की ओर है। इसके पड़ोस के टीले पर एक किला था। इस समय वह खंडहर है। सबसे ऊंचे भाग में एक जीर्ण मन्दिर है। मन्दिर के चारों ओर नगर बसा है। उत्तर की ओर एक सुन्दर पुल है। इस पर से एक पक्की सड़क ग्रांड ट्रंक सड़क तक गई है। मंगलवार और शनिवार को बाजार लगता है। कहते हैं इसे एक चौहान ठाकुर राजा सकटदेव ने बसाया था। उसी ने यहां किला बनवाया था। १२८५ में गयासुद्दीन बलबन के शासन काल में बनवाई गई। १४८८ में बहलोल लोदी यहां बीमार हुआ और मर गया। बाद यहां चौहानों का फिर अधिकार हो गया। १५२० में यहां के राजा ने इब्राहीम लोदी का विरोध किया था। पर राजा को भागना पड़ा और इब्राहीम ने सकीट में मोंट मुसलमानों को बसाया। यहां कई पुरानी मस्जिदें हैं।

सराय अगत जिले के दक्षिणी पूर्वी सिरे पर स्थित है। वास्तव में काली नदी के नालों ने इसे दो भागों में बांट दी है। सराय पूर्व में है। अगत पश्चिम में है। यहां डाकखाना और स्कूल है। बुधवार और रविवार को बाज़ार लगता है। यह नगर ग्यारहवीं सदी में बसाया गया था। सराय के पश्चिम में ४० फ़ुट ऊँचा आध मील घेरे वाला खेड़ा है। यहां बुद्ध की मूर्तियां और कई कालों के सोने चांदी और तांबे के सिक्के पाये जाते हैं। कहते हैं अगस्त्यमुनि से बिगड़ कर अगत बना है। सराय के सामने १ मील की दूरी पर सकिसा है। पहले दोनों एक ही बड़े और प्राचीन नगर के अंग थे। सोरों नगर बुढ़ गङ्गा के किनारे पर एटा से २७ मील की दूरी पर बसा है। यहां होकर बरेली से हाथरस को पक्की सड़क जाती है। गङ्गा (गढ़िया घाट) यहां से ४ मील दूर है। सोरों भारतवर्ष का एक प्रधान तीर्थ है। दूर दूर से यात्री यहाँ स्नान करने के लिये आते हैं। यहां अठारह पक्के घाट और अनेक (पचास-साठ) मन्दिर हैं। मन्दिरों के पास पीपल के वृक्ष हैं। यात्रियों के ठहरने के तीन बड़ी बड़ी धर्मशालायें बनी हैं। बरेली से कासगंज को जाने वाली रुहेलखण्ड-कमायूं रेलवे का एक स्टेशन है। इससे यहां आने में यात्रियों को सुविधा होती है। सोरों का पुराना नाम सूकर-क्षेत्र है। यहां बाराहावतार लेकर विष्णु ने हिरण्यकश्यप राक्षस का वध किया था। जहां पुराना नगर था वहां इस समय टीला है जिसे किला कहते हैं। बाराह जी का मन्दिर उत्तर-पूर्व की

ओर है। इस प्राचीन मन्दिर में वाराह लक्ष्मी की मूर्ति है। सीताराम जी का मन्दिर भी पुराना है। कहते हैं औरंगज़ेब ने इसे तुड़वा डाला था। १८८० में यह फिर से बनवाया गया। सोरों के खम्भे कुतुब मीनार के पास वाले खम्भों के समान हैं जिन पर सम्वत ११२४ ( सन् १०६७ ईस्वी) खुदा हुआ है।

सोरों के अधिकतर निवासी पंडे हैं इनकी जीविका यात्रियों से चलती है। सोरों में वर्ष भर में कई गङ्गा स्नान के मेले होते हैं।

थाना दरियाओं गंज बुढ़गङ्गा के किनारे पर एटा से २८ मील पूर्व की ओर है। यह थाना और दरियाओं गंज दो गांवों के मिलने से बना है। इन दोनों में थाना अधिक पुराना है। यहां एक किला बनाया था। इसकी ईंटें इस समय भी गङ्गा की तली में मिलती हैं। थाना के उत्तर-पूर्व को घोड़े के नाल के आकार की एक झील है जो वास्तव में गङ्गा की छाड़ ( छोड़ा हुआ जलाशय) है। दक्षिण किनारे पर एक बरगद है जिसका घेरा ३८ फ़ुट है। यह कानपुर-अचनेरा लाइन का एक स्टेशन है। यहां थाना और स्कूल है।

## एटा जिले का कारबार

एटा जिले के तदरई, मरेहरा आदि कई गांवों में शोरा तयार किया जाता है। शोरा बनाने का काम कार्तिक से चैत तक होता रहता है। लोनी मिट्टी पुराने गांवों में बहुत मिल जाती है। लोनिया लोग छोटे छोटे गोल गड्ढे बनाते हैं। और उसमें तिनका या पला भर देते हैं। इसी तिनके के ऊपर लोनी मिट्टी डाल दी जाती है। फिर उसके ऊपर पानी छोड़ा जाता है। छोटी छोटी नालियों में छन कर यह पानी नादों में पहुँचता है। फिर पानी लगभग छः घंटे उबाला जाता है। इसमें पानी भाप बनकर उड़ जाता है और कच्चा शोरा रह जाता है। यह शोरा फर्रुखाबाद में बिकने के लिये भेज दिया जाता है। बड़ी लड़ाई के दिनों में बारूद बनाने के लिये इस शोरे की अब से कहीं अधिक मांग थी। १० मन कच्चे शोरे से ५ मन अच्छा शोरा और २ मन नमक निकलता है।

शीशा—जलेसर की मिल में ब्लाक ( बड़ा ) शीशा बनता है। हंडे बनाने के लिये चिकनी मिट्टी जबलपुर से आती है। कोयला झरिया से आता है। साल भर में लगभग ५०,००० रु० का १० मन सामान तयार होता है।

सोरों के पास क़ादिरबारी में कच्ची गङ्गाजली बनती हैं। मरेहरा, कासगंज और मोहनपुर में मनिहार लोग चूड़ियां बनाते हैं।

कासगंज, मिलराम और तैयनपुर में चाक़, कैंची, अस्तुरा और सरौता बनते हैं।

सोरों में झाऊ, अरहर, बांस और खजूर से डलियां बनाई जाती हैं। यहीं गुस्सियों के परदे बनते हैं। सोरों में टीन की भी गङ्गाजली बनती हैं।

जेल में दरी, दुसूती, गाढ़ा, झाड़न और बान बनते हैं। बान मूँज से बनते हैं। एक कैदी १५ सेर मूंज कूट लेता है। या वह ३/४ सेर मूंज के ३०० गज बान बट लेता है। इसी बान से टाट या चटाई बनाई जाती है। मूंज गङ्गा के खादर में कासगञ्ज और अलीगञ्ज की तहसीलों में बहुत होती है। इससे बान बटे जाते हैं और रस्सियां बनाई जाती हैं। बहुत से बान क़ायम गंज और बदायूं में बिकने आते हैं। बान बटने का काम भिश्ती, चमार और किसान लोग करते हैं।

मरेहरा में शीशम बहुत है। इससे साधारण सामान के सिवा सिंगारदान, कलमदान और दफ़्तर के काम के संदूक बनते हैं।

जलेसर में पीतल के घुंघरू बनते हैं। लगभग दो लाख रुपये के घुंघरू पञ्जाब और पूर्वी संयुक्त प्रान्त में भेजे जाते हैं।

# मैनपुरी

मैनपुरी आगरा कमिश्नरी का एक जिला है। इसके उत्तर में एटा, पूर्व में फर्रुखाबाद, दक्षिण में इटावा और आगरा, पश्चिम में आगरा और एटा के जिले हैं। मैनपुरी की औसत लम्बाई ५६ मील और चौड़ाई कहीं कहीं १८ मील और कहीं ४२ मील है। इसका क्षेत्रफल १६८७ वर्गमील है।

मैनपुरी का जिला एक समतल मैदान है। केवल पश्चिम की ओर कुछ ऊंचे रेतीले टीले हैं। काली और ईसन की घाटियां भी कुछ ऊंची नीची और लहरदार हैं। दक्षिण-पश्चिम की ओर यमुना के ऊंचे किनारों को भी नालों ने गहरा काट दिया है। काली नदी उत्तर और उत्तर-पूर्व की ओर इस मैदान की सीमा बनाती है। दक्षिण-पश्चिम की ओर यमुना नदी इसे घेरे हुए है। यह दोनों नदियां दक्षिण-पूर्व की ओर बहती हैं। नहर निकालने के लिये मैनपुरी जिले की उंचाई बड़ी सावधानी से जांची गई। उत्तर-पश्चिम में घिरोर के पास समुद्र-तल से भूमि की उंचाई ५२७ फुट है। बड़ा गांव के पास को ५७३ फुट ऊंची है। दक्षिण-पूर्व की ओर यह केवल ४९३ फुट है।

द्वाबा के और भागों की तरह मैनपुरी जिले में बलुई भूड़ है। निचले भागों और ऊसर भागों के पास कड़ी चिकनी मिट्टी या मटियार है। अधिकतर भागों में उपजाऊ दुमट या दोनों का मिश्रण है। हलकी दुमट मिट्टी पिलिया कहलाती है। कुछ छोटी नदियों के पड़ोस में ऊसर भूमि है। कुछ भागों में रेह है जहां घास भी नहीं उग पाती है। मटियार का रंग कुछ काला होता है। सूखने पर यह सिकुड़ जाती है और इसमें दलदल हो जाती है। कम वर्षा होने से यह इतनी कड़ी बनी रहती है कि इसमें हल नहीं चल सकता। दोनों दशाओं में यह खेती के योग्य नहीं रहती है। भूड़ में ढीली बलुई मिट्टी होती है। भूड़ भी खेती के लिये अच्छी नहीं होती है। दुमट और बालू के मिश्रण को मिलौना कहते हैं। कड़ी भूड़ को टिकुरिया कहते हैं। ऊपरी ऊंचे भाग की भूमि को बांगर और निचली भूमि को तराई कहते हैं। यमुना के पड़ोस में ऊंची पठारी भूमि को उपरहार और नालों तथा खड्डों की भूमि को बिहार कहते हैं। नदी की पुरानी तली की भूमि को भगना कहते हैं।

ईसन नदी कक नदी के संगम तक धीमी बहती है। इसके किनारे नीचे हैं। कक नदी का पानी मिल जाने से इसकी तली गहरी और धारा तेज हो जाती है। इसी तरह सेंगर नदी में जब सिरसा नदी मिल जाती है तब सेंगर की धारा तेज हो जाती है। अरिन्द अपने समूचे मार्ग में धीमी चाल से बहती है। काली ईसन द्वाब में बालू की अधिकता है। ईसन और सेंगर के बीच में कुछ कड़ी मिट्टी है। मध्यवर्ती भाग के दक्षिण में सिरसा और यमुना के बीच में कई प्रकार की मिली हुई मिट्टी मिलती है।

पीरा मिट्टी का रंग पीला होता है। यमुना नदी अगर सीधी रेखा में बहे तो मैनपुरी जिले में इसकी लम्बाई केवल १८ मील हो। लेकिन यमुना नदी मैनपुरी जिले में बड़े चक्करदार मोड़ बनाती है इस लिये इसकी लम्बाई यहां ४३ मील हो जाती है। इसका तली यहाँ मुलायम और बलुई है। इसलिये यमुना इसे सुगमता से काट कर इधर उधर मुड़ जाती है मुड़ने से इसका धार मन्द अवश्य पड़ जाता है। हरहा के पास यमुना का मोड़ ९ मील लम्बा है। अगर बटेश्वर के पास यमुना अपना मोड़ छोड़ दे और सीधी रेखा में बहने लगे तो बटेश्वर के घाट यमुना की धारा से ३ मील दूर हो जावें। इसी तरह मोड़ और कई स्थानों में हैं। यमुना में मध्यभारत की बरसाती नदियां अचानक बाढ़ लाती हैं। कहीं कहीं यमुना के किनारे ८० और १०० फुट ऊंचे उठे हुये हैं। ऊंचे भागों में खेती नहीं होती है। तंग कछार में प्रायः खेती होती है। शीतकाल और ग्रीष्म ऋतु में पांज हो जाता है। ओरावर मरुआ, राजपुर, बलई, बड़ा बाग, बटेश्वर, विक्रमपुर और परगना गांवों में यमुना को पार करने के लिये घाट हैं जहां नाव रहती है। नारंगी बाह के पास यमुना सिकुड़ कर केवल १५० फुट रह जाता है। यह शुष्क ऋतु में पांटून पुल बन जाता है। नादिया और पटसुई नाला इस जिले में यमुना में मिलते हैं।

काली नदी जिले की उत्तरी-पूर्वी सीमा बनाती है और मैनपुरी को एटा और फर्रुखाबाद जिलों से अलग करती है। इसका पेटा तंग है। लेकिन इस में साल भर पानी रहता है। इसके कुछ ही भागों में

पांज होती है। सकट बेवर गांव के पास काली नदी में पुल बना है। इसके ऊपर से फर्रुखाबाद को सड़क जाती है। अलूपुरा हजूखेड़ा, राजघाट, आदि स्थानों पर इसे पार करने के लिये नाव रहती है। लेकिन इसकी धार वर्षाऋतु में भी तेज नहीं होता है। नदी की तली में बहुत कम परिवर्तन होती है। यह निचली कछारी भूमि के ऊपर बहती है। इसके किनारे ऊंचे हैं। अक्सर यह इन किनारों के बीच में बहती है। कभी कभी वह इस किनारे या उस किनारे के पास बहती है। जब यह एक किनारे के पास रहती है तो इसका समूचा खादिर दूसरी ओर को हो जाता है। इस बलुई कछारी भूमि की चौड़ाई लगभग आध मील होती है। किनारे सपाट और ऊंचे होने के कारण पड़ोस की भूमि नदी के पानी से सींची नहीं जा सकती। लेकिन अधिक पूर्व की ओर खादर इतना नम रहता है कि इसे अलग से सींचने की आवश्यकता नहीं पड़ती है। कुछ भागों में इतना पानी इकट्ठा रहता है कि पड़ोस की भूमि पर रेह पड़ जाता है।

ईसन नदी में वर्षा ऋतु में इतना पानी हो जाता है कि कुछ ही स्थानों में इसे बिना नाव के पार किया जा सकता है। शेष ऋतुओं में इसमें बहुत कम पानी रहता है। अकाल पड़ने पर यह सूख जाती है। केवल गहरे स्थानों पर छोटे छोटे ताल शेष रह जाते हैं। इस पर पांच स्थानों में पुल हैं। दो पुल मैनपुरी शहर के पास हैं। मैनपुरी से ३ मील उत्तर-पश्चिम की ओर इसमें काक नदी मिलती है। यहां इसके पड़ोस की भूमि प्रायः ऊसर है। निचले भागों की भूमि अधिक अच्छी है। मैनपुरी शहर और कुछ गांवों के पास ईसन नदी तरबूज उगाने के काम आती है। मैनपुरी से नीचे यह अक्सर सिंचाई के काम आती है। अरिन्द या रिन्द नदी बहुत छोटी है। यह गंगा नहर की इटावा और कानपुर शाखाओं के मध्य में बहती है। इसका मार्ग बड़ा टेढ़ा है सीधी रेखा की दूरी से यह तिगुना है। वर्षा ऋतु के बाद यह अक्सर सूख जाता है। और इसकी तली में रबी की फसलें उगती हैं। कुछ वर्षों से इसमें नहर का बचा हुआ पानी छोड़ दिया जाता है। इससे पड़ोस के खेत सींचे जा सकते हैं। सींचने के लिये इसमें कच्चे बांध बना दिये जाते हैं। इसकी तली उथली है और पड़ोस की भूमि से बहुत कम नीची है। इसी से प्रबल बाढ़ में इसका पानी दूर दूर तक फैल जाता है। इसके पड़ोस की भूमि में बालू कहीं नहीं है। पक्की सड़कों के मार्ग में इस पर पुल बने हैं।

सेंगर नदी ईसन से छोटी लेकिन अरिन्द से अधिक बड़ी है। अरिन्द और सिरसा नदियों के जल विभाजक का समस्त जल इसमें बह आता है। वर्षा ऋतु में नहर का बचा हुआ पानी आजाने से इसमें जल की मात्रा बहुत बढ़ जाती है। ऊपरी भाग में सेंगर और सेन्हार इसकी दो शाखायें हैं। सेंगर उत्तर की ओर सेन्हार दक्षिण की ओर है। खेरिया के पास दोनों मिल जाती हैं। ऊपर से संगम तक इसके पड़ोस की भूमि बड़ी उपजाऊ है। संगम के नीचे की ओर भूमि निकम्मी होने लगती है। इसकी धारा तेज हो जाती है। किनारे ऊंचे हो गये हैं। इन ऊंचे किनारों को नालों ने अक्सर काट दिया है। निचले भाग में ऊंचे किनारे पड़ोस की भूमि को सींचने में बाधा डालते हैं। ऊपरी भाग में सेंगर में सिंचाई के लिये काफी पानी नहीं रहता है।

सिरसा नदी मैनपुरी के दक्षिणी-पश्चिमी कोने में प्रवेश करती है। भोगिनीपुर नहर के नीचे से गुजर कर यह शिकोहाबाद में पहुँचती है। यहां यह नहर और इटावा की सड़क के बीच में बहती है। इसमें बहुत थोड़े भाग का पानी आता है। इसके पड़ोस की मिट्टी हलकी और कुछ बलुई है। लेकिन इसके किनारों के पास ऊसर बहुत कम है। रेतीले किनारे केवल शिकोहाबाद क़स्बे के पास मिलते हैं। वर्षा के बाद इसमें बहुत कम पानी रहता है। पर इससे इसकी तराई की सिंचाई हो जाती है। इसके पड़ोस की भूमि उपजाऊ है। इसमें नहर की भोगिनीपुर शाखा से सिंचाई हो जाती है। इसमें गेहूँ, जौ और चना की फसल अच्छी होती है।

इनके अतिरिक्त यहां छोटी नदियां और भी हैं। मैनपुरी जिले के बीच वाले भाग में दलदल बहुत हैं। कुछ झीलें और तालाब वर्षा ऋतु के बाद सिकुड़

या सूख जाते हैं। उनमें रबी की फसल उगाई जाती है।

मैनपुरी जिले में लगभग एक चौथाई जमीन खेती के काम नहीं आती है। इसमें ४ फीसदी जमीन पर गांव बसे हैं। १० फीसदी जमीन पानी से घिरी है। शेष ऊसर या उजाड़ है। उजाड़ जमीन का अधिकतर भाग ढाक के जङ्गल से घिरा है। जङ्गलों में भेड़िया, लकड़बग्घा, नील गाय और दूसरे जङ्गली जानवर मिलते हैं।

मैनपुरी की जलवायु द्वाबा के दूसरे जिलों के समान है। गरमी की ऋतु में थर्मामीटर का पारा छाया में ११० अंश फारेनहाइट तक पहुँच जाता है। कभी कभी १२० अंश तक हो जाता है। साधारण तापक्रम ६६ अंश रहता है। जनवरी तापक्रम ५८ होता है। सरदी की ऋतु में पाला पड़ता है। इससे अरहर सूख जाती है। औसत वर्षा ३१ इञ्च होती है।

मैनपुरी जिले की लगभग ७० फीसदी भूमि खेती के योग्य है। उत्तरी भूड़वाले प्रदेश में कांस उगते हैं। १६ फीसदी भूमि खेती के योग्य होने पर भी खेती के काम में नहीं लगी है। कुछ भाग में चरागाह हैं। ज्वार, बाजरा, मडुआ, अरहर, उर्द, मूंग खरीफ की फसलें हैं। गेहूँ, जौ, चना, मटर, सरसों रबी की फसलें हैं। ७० फीसदी से अधिक जमीन रबी की फसल उगाने के काम आती है। कुछ भागों में कपास उगाई जाती है। कुछ अच्छी भूमि में दो फसलें होती हैं। तरबूज आदि जायद फसल नदियों के पड़ोस में १ फीसदी से भी कम भूमि में होती है। मैनपुरी में सिंचाई की बड़ी सुविधा है। यहां नहर, कुआं, झील और नदियों से सिंचाई होती है।

नहर के पड़ोस में ५४ फीसदी जमीन सींची जाती है। यमुना के नालों के पड़ोस में केवल ३४ फीसदी जमीन सींची जाती है। गंगानहर की इटावा और कानपुर शाखायें मैनपुरी जिले को पार करती थीं। १८८० से लोअर गंगा नहर की शाखायें यहां की भूमि को सींचने लगीं। नहर की बेवर-शाखा उत्तर में है। इसके दक्षिण में कानपुर शाखा है। छः मील और दक्षिण की ओर प्रधान नहर इटावा और भोगिनीपुर शाखाओं में बँट जाती है।

मैनपुरी जिले की आधी से अधिक भूमि कुओं से सींची जाती है। अधिकतर कुएं पक्के हैं।

मैनपुरी एक कृषि प्रधान जिला है। गेहूँ, तिलहन, कपास, चमड़ा, खाल यहां के निर्यात हैं। कारबार कम है। कपास ओटने और गाढ़ा बुनने का काम कुछ गांवों में होता है। खड़ाऊँ पर तारकशी का काम भी अच्छा होता है। मैनपुरी में चूड़ी और कांच या कच्चा शीशा, भी बनाया जाता है। नमकीन लोना मिट्टी मिलने से शोरा कई स्थानों में बनाया जाता है। नमक, धातु, कपड़ा, शक्कर आदि सामान यहां बाहर से आता है।

अकबरपुर—औंछा मैनपुरी से १६ मील पश्चिम की ओर हैं। इसके उत्तर की ओर ढाक का जङ्गल हैं जहां पहले डाकुओं का अड्डा था। उनको रोकने के लिये यहां थाना बनाया गया था। आगे चल कर थाना तोड़ दिया गया। यहां डाकखाना और स्कूल है। जहां ऊंचा खेड़ा है वहां इससे भी अधिक पुराना गांव और अकबर का कच्चा किला था। इसके पास ही ऋषि-स्थान है। एक स्थान पर संस्कृत में ३३४ सम्वत ( २७७ ईस्वी ) खुदा हुआ है। यहां चैत सुदी नवमी को मेला लगता है।

अराओं—गांव शिकोहाबाद-फर्रुखाबाद रेलवे लाइन से २ मील दूर है। आगरारोड यहां होकर जाती है। यह मैनपुरी से २४ मील और शिकोहाबाद से ८ मील दूर है। सेंगर नदी उत्तर की ओर है। पास ही एक पुराना खेड़ा है। चैत और क्वांर में देवी का मेला लगता है।

बेवर—गांव ग्रांडट्रंक रोड के उस स्थान पर बसा है जहां इटावा से फर्रुखाबाद को जाने वाली सड़क इसे पार करती है। यह मैनपुरी से १७ मील पूर्व की ओर है। कहते हैं पड़ोस में बेर की झाड़ियों की अधिकता होने से इसका नाम बेरबर या बेवर पड़ गया। यहां थाना, डाकखाना, स्कूल और बाजार है।

भोगांव—कस्बा इसी नाम की तहसील का केन्द्र स्थान है। यह मैनपुरी से ९ मील पूर्व की ओर है। आगरा से आने वाली पक्की सड़क यहां ग्रांडट्रंक रोड से मिलती है। ग्रांडट्रंक रोड कस्बे के बीच में होकर

जाती है पास ही रेलवे स्टेशन है। दक्षिण की ओर जमीन के नीचे हो जाने से एक झील बन गई है। जब झील बहुत भर जाती है तो इसका कुछ पानी एक नाले के द्वारा ईसन नदी में पहुँचता है जो यहां से ३ मील दक्षिण की ओर है। यहां थाना, तहसील, डाकखाना, मिडिल स्कूल और अस्पताल है। मन्दिर के पास बाजार है।

जसराना—गांव मुस्तफाबाद तहसील का प्रधान नगर है। यह शिकोहाबाद से एटा को जानेवाली सड़क पर स्थित है और शिकोहाबाद से १२ मील दूर है। यहां थाना, अस्पताल, डाकखाना, स्कूल और बाजार है। बाजार में घी और अन्न की बिक्री होती है। चैत के महीने में मेला लगता है। सेंगर नदी दक्षिण की ओर है। बाढ़ में नदी का पानी तहसील और अस्पताल तक पहुँचता है।

कढ़ाल—इसी नाम की तहसील का प्रधान नगर है। यह मैनपुरी से इटावा को जाने वाली सड़क पर मैनपुरी से १७ मील दक्षिण की ओर स्थित है। इटावा रेलवे स्टेशन से यह १६ मील उत्तर-पूर्व की ओर है। यहां तहसील, थाना, स्कूल और बाजार है। बाजार रविवार और गुरुवार को लगता है। यहां ये चार (देवी मेला, जैनी मेला, राम लीला और जगधर मेला) मेले लगते हैं। कहते हैं कि यहां के एक मुसलमान ने पहले पहल शिकस्त लिखना आरम्भ किया था।

करीमगंज—मैनपुरी से ३ मील की दूरी पर एटा को जाने वाली सड़क पर बसा है। पुराना नगर पास के खेरे पर बसा था। इसके पास ही एक लम्बी झील है। खेरे की चोटी पर पुराने किले के खंडहर हैं। सड़क के पास एक टूटी मूर्ति पड़ी है।

कुरावली—कस्बा मैनपुरी से एटा को जानेवाली सड़क पर मैनपुरी से १८ मील दूर है। यहां थाना, डाकखाना, और मिडिल स्कूल है। ग्रांडट्रंक रोड कुरावली के एक किनारे से जाती है। स्कूल बाजार के बीच में है। यहां तारकशी का काम अच्छा होता है।

मैनपुरी—शहर आगरा से ६८ मील पूर्व की ओर शिकोहाबाद से फर्रुखाबाद को जाने वाली रेलवे लाइन का मध्यवर्ती स्टेशन है। ग्रांडट्रंक रोड की आगरा-शाखा यहां होकर जाती है। गढ़ी के पास पुरानी मैनपुरी एक गांव है। गंज या नई मैनपुरी में बाजार है। पहले मैनपुरी एक चारदीवारी से घिरा था। इसमें ६ दरवाजे थे। ईसन नदी पुरानी मैनपुरी की पूर्वी सीमा बनाती है। यहां जिले की कचहरी, कोतवाली डाकखाना, दो हाई स्कूल (मिशन और गवर्नमेंट हाई स्कूल) एक वर्नाक्यूलर मिडिल स्कूल और लाइब्रेरी है। पहले मैनपुरी बड़ा नगर न था। मथुरा से कन्नौज को जाने वाले गजनी और दूसरे मुसलमान आक्रमणकारियों का मार्ग साफ था। १३६३ ईस्वी में चौहानों के आजाने से मैनपुरी की प्रधानता बढ़ गई। १८०४ ई० में होल्कर की मराहठा सेना ने यहां आक्रमण किया। जेल के पास लड़ाई हुई थी। यहां घी, कपास, अन्न का व्यापार होता है। मैनपुरी तारकशी के खड़ाऊ और महीन कटी हुई सुपारी के लिये प्रसिद्ध है।

मुस्तफाबाद—मैनपुरी से ३४ मील पश्चिम की ओर है। यहां से तहसील उठकर जसराना को चली गई। इस समय यहां डाकखाना, स्कूल और बाजार है। यहां एक पुराना कुआं है जिसे दूधाधारी कहते हैं। पास ही एक गढ़ी के खंडहर हैं।

नबीगंज—ग्रांडट्रंक रोड पर भोगांव से १४ मील पूर्व की ओर एक छोटा गांव है।

ओरावर—इस तरफ यमुना के बायें किनारे पर एक नाले पर बसा है। यहां अनाज और घी का व्यापार होता है। चैत के महीने में काली देवी के मन्दिर के पास मेला लगता है। इसके पास ही यमुना की कांप से बना हुआ भगना (पेटा) है।

पैंधात—गांव मैनपुरी से २९ मील पश्चिम की ओर है। जोखैया के थान पर माघ और आषाढ़ में (जात) मेला लगता है। कहते हैं पृथिवीराज और जैचन्द की लड़ाई के अवसर पर यहां एक ब्राह्मण एक धानुक और एक भंगी मारा गया था। जहां ब्राह्मण मारा गया था वहां मन्दिर बना है।

परहान—गांव अरिन्द नदी के किनारे पर एटा को जानेवाली पक्की सड़क पर मैनपुरी से २३ मील की दूरी पर स्थित है। कहते हैं राजा परीक्षित के पहले इसे वरदान कहते थे। राजा परीक्षित ने इसका नाम परीक्षितगढ़ रक्खा। इस से बिगड़कर इसका नाम परहान पड़ गया। राजा परीक्षित के

मरने पर उसके पुत्र जन्मेजय ने अरिन्द के किनारे पर यहां एक यज्ञ किया था। यज्ञ के स्थान पर परीक्षित कुंड है। पास ही ऊंचा खेड़ा है। यहीं पर परीक्षित कूप और पुराने किले के खंडहर हैं।

फरहा—गांव जिले की पश्चिम सीमा पर मैनपुरी से ४० मील दूर है। यहां थाना, डाकखाना और स्कूल है। घी, शक्कर, अनाज और कपास का व्यापार होता है।

परी—गांव यमुना के बायें किनारे पर एक नाले के ऊपर मैनपुरी से ४८ मील दूर है। इसके पड़ोस में पुराने समय के खंडहर बहुत हैं। यहां से बटेश्वर को जाने के लिये घाट है। जिसे नारंगी बाह कहते हैं। यह नाम राजा रूपरसेन की पुत्री की स्मृति में रक्खा गया। यहाँ अलाउद्दीन खिलजी के समय के चिन्ह मिले हैं।

शिकोहाबाद—आगरा से मैनपुरी को जाने वाली पक्की सड़क पर स्टेशन से दो मील की दूरी पर स्थित है। यहां से एटा और इटावा को भी पक्की सड़कें गई हैं। यह ईस्ट इंडियन रेलवे की प्रधान लाइन और फर्रुखाबाद को जाने वाली शाखा लाइन का जंक्शन है। स्टेशन के पास ही गंगा-नहर की शाखा बहती है। इस पर यहां पुल बना है। नहर के आगे अहीर क्षत्रिय हाई स्कूल है। स्टेशन के पास शीशे का कारखाना है। मिडिल स्कूल कस्बे के पास है। पुराना कस्बा दूर दूर बसा है। बाजार में कुछ अच्छी दुकानें हैं। यहाँ कपास और अनाज का व्यापार होता है। कहते हैं दारा शिकोह के सम्मानार्थ इसका नाम शिकोहाबाद रक्खा गया। मरहठों के शासनकाल में उनके गवर्नर भूरा पंडित ने नगर के उत्तर में एक किला बनवाया था। १८०१ में यहां अंग्रेजों का अधिकार हो गया। १८०२ में मरहठों की एक सेना ने छापा मार कर अंग्रेजी सेना को हरा दिया। तब से छावनी मैनपुरी को चली गई।

सिरसागंज—शिकोहाबाद से इटावा को जाने वाली सड़क पर शिकोहाबाद से ६ मील दूर है। कौरारा रेलवे स्टेशन इसके दक्षिण में है। यह एक व्यापारी नगर है। बुधवार और बृहस्पतिवार को बाजार लगता है। अधिकतर व्यापारी जैनी हैं। इनका बनवाया हुआ यहां एक जैन मन्दिर है। यहां थाना, डाकखाना और मिडिल स्कूल है।

★ ★ ★

# बदायूं

बदायूं जिले का क्षेत्रफल २०१० वर्गमील और जन संख्या १०,१०,००० है। बदायूं जिला रूहेलखंड के दक्षिणी-पश्चिमी भाग में गंगा और रामगंगा के बीच में स्थित है। इसके उत्तर में मुरादाबाद और बरेली के जिले और कुछ दूर तक रामपुर राज्य हैं। पूर्व में रामगंगा बहुत दूर तक इसे शाहजहांपुर जिले से अलग करती है। दक्षिण-पश्चिम में गंगा नदी इसे द्वाब के बुलन्दशहर, अलीगढ़, एटा और फर्रुखाबाद जिलों से अलग करती है। इसका आकार कुछ विषम है। पूर्व से पश्चिम तक इसकी अधिक से अधिक लम्बाई ९० मील और उत्तर से दक्षिण तक चौड़ाई ४८ मील है। कम से कम चौड़ाई ११ मील है।

भूरचना की दृष्टि से बदायूं का जिला गंगा के मैदान का अंग है जो हिमालय से मध्य भारत के पठार तक फैला हुआ है। जिला प्रायः समतल मैदान है। नदियों के बहाव के कारण यह भिन्न भिन्न भागों में कुछ ऊँचा नीचा हो गया है। इसका ढाल उत्तर-पश्चिम से दक्षिण-पूर्व की ओर है। गंगा के किनारे चाओपुर के पास समुद्र-तल से भूमि की उंचाई ६०५ फुट है। कछला के पास ५१० फुट और कादिर चौक के धुर दक्षिणी-पूर्वी सिरे पर केवल ४७० फुट है। गंगा के आगे भूमि कुछ ऊंची है। यह महवा और सोत के बीच में जलविभाजक बनाती है। गवान के पास सब से ऊंचा भाग ( ६१५ फुट ) है। बदायूं के पूर्व में रामगङ्गा की ओर भूमि तेज़ी के साथ ढालू हो गई है। दातागंज के पास भूमि की उंचाई ५०८ फुट और हजरतपुर के पास ४६७ फुट ऊंची है।

बदायूं का जिला भूड़, खादर और कटहर तीन प्राकृतिक भागों में बांटा जा सकता है। भूड़ का प्रदेश मुरादाबाद की सम्भल तहसील से आरम्भ होकर असदपुर,

सहसवान, उझानी और उसेहत परगनों में फैला हुआ है। भूड़ प्रदेश की चौड़ाई चार-पांच मील से अधिक नहीं है। इसमें अधिकतर बालू है। यहां कांस और मेमरी घास बहुत होती है। इसमें लगातार खेती नहीं हो सकती है। केवल कहीं कहीं बाजरा और जौ उगाया जाता है। यहां पेड़ बहुत कम हैं। यहां जन संख्या बहुत कम और गांव छोटे छोटे हैं। यहां जंगली सुअर और दूसरे जानवर भी खेती में बाधा डालते हैं। गंगा के पड़ोस में भूड़ सब से अधिक बुरी है।

गङ्गा और भूड़ के बीच में खादर है। इसके पूर्व में गङ्गा का ऊंचा किनारा है। उत्तर की ओर चोइया है। यह भाग कहीं उपजाऊ और कहीं ऊसर है। गन्नौर तहसील के उत्तरी भाग में इस समय भी ढाक का जंगल है। गन्नौर और सहसवान में कई धारायें बहती हैं। महवा के संगम के आगे अधिक दक्षिण में खादिर की भूमि अधिक उपजाऊ हो गई है। केवल कहीं कहीं ढाक का बन और ऊसर है। खादिर की नई लाई हुई भूमि को बेला कहते हैं। उपजाऊ भूमि की यह तंग पेटी बढ़ती जा रही है।

भूड़ के पूर्व में कटहर का चौड़ा मैदान है। इसमें अधिकतर उपजाऊ कड़ी मिट्टी और बालू का मिश्रण है बिसौली, बदायूं और उझानी के कई भाग इसमें शामिल हैं। कटहर की प्रधान नदी सोत है। सोत नदी कटहर के बीच में होकर बहती है। इस प्रदेश में उपजाऊ खादर या पट मिट्टी है और कुओं में पास ही पानी निकल आने से अच्छी खेती होती है। जनसंख्या घनी और गांव बड़े हैं। पूर्व की ओर कटहर की भूमि अच्छी नहीं है। उत्तर की ओर सोत और अरील के बीच में भूमि अधिक ऊँची है। नदियों के पड़ोस में यह कुछ ऊँची नीची है। यहां अधिक समय तक पानी इकठा रहने से निचले भागों में रेह निकल आता है।

पूर्व की ओर रामगङ्गा के पड़ोस में बनकटी है। यह अरील के पास तक चली गई है। यहां भारी चिकनी मिट्टी है। यहां धान बहुत होता है। रबी की फसलें कुओं और तालाबों से सींची जाती है। पहले यहां घना बन था। खेती बढ़ने से बनकट गया। फिर भी कई भागों में ढाक का बन मिलता है। पानी ठीक न बहने से यहां ज्वर बहुत फैलता है।

गङ्गा नदी ६३ मील तक बदायूं की सीमा के पास बहती है। इसकी तली चौड़ी और रेतीली है। यहां यह प्रतिवर्ष अपना मार्ग बदलती रहती है। इसके किनारे कहीं सपाट, कहीं क्रमशः ढाल हैं। नारोरा में लोअर गङ्गा नहर के निकट जाटों से असदपुर परगने में किनारों का नियंत्रण हो गया है। कहीं कहीं नदी के किनारे के पास उपजाऊ मिट्टी है। यहां अच्छी खेती होती है। बबराला (जहां होकर चंदौसी-अलीगढ़ को रेल जाती है।) और कछला (जहां होकर बदायूं से सोरों को लाइन गई है) गङ्गा के ऊपर स्थायी पुल बने हैं। रामघाट और राजघाट में प्रतिवर्ष नावों के पुल बन जाते हैं। दूसरे स्थानों में गङ्गा को पार करने के लिये नाव रहती है।

महावा गंगा खादिर की प्रधान नदी है। यह मुरादाबाद जिले की एक झील से निकलती है। यह राजपुर परगने में गंगा से २ मील की दूरी पर बदायूं जिले में घुसती है। यह ऊपरी भाग में गंगा की प्रायः समानान्तर बहती है। सहसवान परगने में इसमें चोइया मिलती है। महवा में प्रायः प्रतिवर्ष बाढ़ आती है। गरमी की ऋतु में इसमें पांज हो जाती है। टिकठा या नकटिया बर्दमार या सिंह चोइया नदियां महावा की सहायक हैं। इन सब का पानी लेकर महावा गंगा में मिलती है। कमरा और भैंसाउर गंगा की दूसरी छोटी सहायक नदियां हैं।

कटहर प्रदेश की प्रधान नदी सोत है। यह अमरोहा (मुरादाबाद) के पोलाकुंड (झील) से निकलती है।

इस्लाम नगर की उत्तरी सीमा के पास यह बदायूं जिले में प्रवेश करती है और दक्षिण-पूर्व की ओर बहती है। मुगल सम्राट मुहम्मदशाह जब सम्भल से बदायूं आरहा था तो उसे अक्सर सोत से प्यास बुझाने के लिये पानी मिलता था। इसलिये उसने इसका नाम यार वफादार रक्खा। सोत नदी एक गहरी और निश्चित तली में बहती है। यह अपने पड़ोस की भूमि को बाढ़ में बहुत कम हानि पहुंचाती है। पूर्वी सीमा के पास यह सिंचाई के काम आती है। खेड़ा जलालपुर के पास जिस कड़ी चिकनी मिट्टी के प्रदेश को यह सींचती है उसे चार कहते हैं।

अरील नदी सम्भल (मुरादाबाद) के दलदलों से निकलती है। अजीतपुर गांव के पास उत्तरी-पूर्वी कोने पर अरील बदायूं जिले को छूती है। बिसौली को पार करके यह उत्तर की ओर मुड़ती है। पूर्वी सीमा में भरतपुर के पास यह बरेली जिले में पहुंचती है। कुछ मील

बहने के बाद फिर यह बदायूं में प्रवेश करती है। सिरसा के पास अन्धेरिया का पानी लेकर बम्भा नदी चचाश्रो के पास अरील में मिलती है।

रामगंगा पूर्वी सीमा के पास ३६ मील तक इस जिले के सलेमपुर परगने को शाहजहांपुर से अलग करती है। रामगंगा की तली बड़ी चौड़ी है। इसमें वह प्रतिवर्ष अपना मार्ग बदलती रहती है। रुकमऊपुर से सिमरिया तक इसके किनारे रेतीले हैं। कुछ दूर तक झाऊ का जंगल है। कुछ भूमि उपजाऊ है। इसमें रबी की फसल होती है। रामगंगा के किनारे कहीं सपाट और कहीं क्रमशः ढालू हैं। शीतकाल में कुछ स्थानों में पांज हो जाती है। पर प्रायः नाव से पार उतरना होता है। बदायूं से शाहजहां पुर को जानेवाली सड़क पर बेला डांडी में रामगङ्गा पर सब से बड़ा घाट है।

बदायूं जिले में कई बड़ी झीलें हैं। यह सिंचाई के काम आती हैं। जिले की लगभग ढाई फीसदी भूमि पानी से ढकी है। कुछ भूमि में सड़कें हैं या घर बने हैं। कुछ भाग में ढाक और दूसरा जंगल है। हाल में बहुत सा वन कट गया है और बनकटी भूमि खेती के काम में आने लगी है। फिर भी जिले में बहुत सी भूमि ऊसर है। सब से अधिक ऊसर भूमि दातागंज और गन्नौर तहसीलों में है। ढाक के वनों के पड़ोस में भी ऊसर भूमि है। कटिहर प्रदेश में सब से कम ऊसर भूमि है।

बदायूं की जलवायु कुछ कुछ रूहेलखंड के दूसरे जिलों के समान है। लेकिन अधिक दक्षिण की ओर स्थित होने से इस जिले का औसत तापक्रम अधिक गरम और वर्षा कुछ कम है। जनवरी का तापक्रम ५३ अंश से ६० अंश तक रहता है। मई का तापक्रम ६२ अंश हो जाता है। औसत वर्षा ३४ इञ्च होती है। दातागञ्ज में सब से अधिक (३६ इंच) और गन्नौर में सब से कम वर्षा (२९ इंच) होती है। १८७९ में दातागंज ६७ इंच वर्षा हुई १८६८ में यहां १७ इंच सहसवान और गन्नौर में केवल १० इंच वर्षा हुई।

बदायूं जिले में रबी की अपेक्षा खरीफ की फसल अधिक होती है। केवल दातागंज तहसील में निचली भूमि वर्षा में डूब जाने से रबी की फसल अधिक होती है। गेहूँ, जौ, चना, बाजरा, ज्वार, अरहर, कपास, धान, ईख यहां की प्रधान फसलें हैं। कहीं कहीं कुछ पोस्त भी होता है। प्रत्येक प्रदेश की फसलें भिन्न भिन्न हैं। लेकिन गेहूँ और बाजरा प्रायः सब कहीं उगाया जाता है। औसत से ५६ फीसदी खेतों में रबी की फसल होती है। रबी की फसल सब से अधिक बदायूं की तहसील में होती है। रबी की फसल में अधिकांश गेहूँ (प्रायः ५० फीसदी) रहता है। गेहूँ के साथ चना, मटर, अथवा जौ भी मिला रहता है। अकेला जौ २५ फीसदी होता है। यह दातागंज में सब से कम और गन्नौर में सब से अधिक होता है। बेला भूमि में बिझरा बहुत होता है। अकेला चना लगभग ७ फीसदी खेतों में होता है।

ज्वार अच्छी भूमि में बोई जाती है। खरीफ की फसल में २० फी सदी भूमि में ज्वार और ४२ फी सदी भूमि में बाजरा होता है। दातागंज तहसील में २५ फीसदी भूमि ज्वार और बदायूँ तहसील की ४८ फीसदी भूमि बाजरा उगाने के काम आती है। उनके साथ साथ उर्द, मूंग और मोठ बोई जाती है। खरीफ की फसल के साथ ही तिल भी बो दिये जाते हैं। खरीफ की फसल की १२ फीसदी भूमि में मकाई बोई जाती है। गंगा के खादर में बड़े काम की होती है। यह शीघ्र ही बाढ़ से ऊपर उठ आती है। डूब जाने पर भी बहुत कम हानि होती है क्योंकि मकई बोने में बहुत कम बोज लगता है। गन्नौर तहसील में प्रायः तीस फीसदी भूमि खरीफ की फसल में मकई से घिर जाती है।

लगभग ८ फीसदी खरीफ की भूमि कपास बोने के काम आती है। कपास प्रायः अरहर के साथ मिलाकर बोई जाती हैं। यह गन्नौर और बिसौली तहसीलों में अधिक बोई जाती है। बदायूं और दातागंज की तहसीलों में कपास कम बोई जाती है।

धान बहुत कम भूमि में बोया जाता है। लगभग ७ फीसदी भूमि में धान होता है। यह दातागंज तहसील में सबसे अधिक (१६ फीसदी) और गन्नौर में सबसे कम (३ फीसदी) होता है। धान कई प्रकार का होता है। साठी धान प्रायः साठ दिन में तयार हो जाता है। लगभग ३ फीसदी भूमि ईख उगाने के काम आती है।

बदायूं जिले में सिंचाई की सुविधा है। वर्षा अच्छी हो जाती है और कुओं में पास ही पानी मिल जाता है। केवल बिसौली तहसील के कुछ (मुरादाबाद और रामपुर के समीप वाले) भाग में पक्के कुयें बनवाने की आवश्यकता पड़ती है। औसत से जिले की २४ फीसदी भूमि को अलग से सिंचाई की आवश्यकता पड़ती है। बिसौली

तहसील में ३० फीसदी और गन्नौर तहसील में १५ फीसदी भूमि सींची जाती है। समस्त सींची हुई भूमि की ७७ फीसदी कुओं से सींची जाती है। शेष झीलों, तालाबों से सींची जाती है। दातागंज में अरील नदी, सहसवान और उझानी में भैंसोर नदी सिचाई के बड़े काम की है। सोत, बाझा और दूसरे नाले भी सिंचाई के काम आते हैं। उसेहत परगना के कुछ भाग पुरानी (बैस लोगों की खुदवाई हुई) नहरों से सींचे जाते हैं।

बदायूं कृषिप्रधान जिला है। फिर भी कुछ भागों में गुड़, राव, शक्कर और सज्जी बनाने का काम होता है। उझानी और कई स्थानों में जुलाहे मोटा गाढ़ा बुनते हैं। उझानी में एक मिल भी है। असदपुर और कुछ अन्य गांवों में मोटे कम्बल बुने जाते हैं।

पहले बदायूं गुलबदन और अतलस के लिये बहुत प्रसिद्ध था। यहाँ रेशमी धागे का काम सूती कपड़े पर किया जाता था। कुछ गांवों में तालाब की चिकनी काली मिट्टी में कुछ बालू मिलाकर कुम्हार मिट्टी के वर्तन बनाते हैं। कई गांवों के मुसलमान मनिहार कांच और लाख की चूड़ियां बनाते हैं। सहसवान में केउड़ा सयार किया जाता है।

अलापुर—गांव बदायूं से १२ दक्षिण-पूर्व की ओर बदायूं से जलालाबाद (शाहजहांपुर) को जाने वाली कच्ची सड़क पर स्थित है। यह एक पुराना स्थान है। कहते हैं (१४२० ई० में) सुल्तान अलाउद्दीन आलम की स्मृति में यह नाम पड़ा। उसने यहां एक मस्जिद बनवाई जिसकी मरम्मत फिर औरंगजेब ने करवाई। यहां डाकखाना और मिडिल स्कूल है।

असदपुर—गांव गन्नौर से ४ मील और बदायूं ४० मील दूर है। यहां से एक सड़क तहसील (गन्नौर को) और दूसरी इस्लाम नगर से रामघाट गंगा के किनारे को जाती है। यहां एक प्राइमरी स्कूल और बाज़ार है।

बाला स्टेशन—गन्नौर से ३ मील और बदायूं से ४२ मील दूर है। यहां से एक पक्की सड़क गन्नौर (तहसील) को गई है। दूसरी पक्की सड़क यहां होकर बदायूं से अनूप शहर से बदायूं को गई है। यहां एक प्राइमरी स्कूल है। सप्ताह में दोबार बाजार लगता।

बिल्सी कस्बा—बदायूं से १६ मील दक्षिण ओर है। यह सहसवान (तहसील) से ६ मील दूर है। एक पक्की सड़क दक्षिण-पश्चिम में अलीगंज को जाती है। एक सड़क उझानी को जाती है। यह अवध के नवाबों के समय में बसाया गया था। पहले इसे बिलासी गंज कहते थे। इसी से बिगड़कर यह नाम पड़ा। रेलवे के पहले यहां का व्यापार बहुत बढ़ा चढ़ा था। यहां नील की कोठी भी थी। इस समय यहां थाना, डाकखाना और स्कूल है। सप्ताह में दो बार बाज़ार लगता है।

बिसौली इसी नाम की तहसील का केन्द्र स्थान है। यहां से एक पक्की सड़क उत्तर की ओर असफपुर रेलवे स्टेशन को जाती है। सड़क की एक शाखा चंदौसी और मुरादाबाद को गई है। दक्षिण पश्चिम की ओर एक सड़क सहसवान को गई है। बिसौली चारों ओर आम के बगीचों से घिरा हुआ है। केवल उत्तर की ओर रेल के एक ठेकेदार ने उन्हें कटवा डाला। बिसौली कस्बे में तीन बड़े मुहल्ले हैं। कटरा मुहल्ले में बाज़ार है। गदापुर भिखारियों का स्मरण दिलाता है। तीसरा मुहल्ला काग़ज़ी टोला है।

रूहेला सरदार डूंडेखां के समय (१७५०) से बिसौली बहुत प्रसिद्ध हो गया। उसने यहां असफपुर और चन्दौसी की सड़कों के बीच में एक किला बनवाया। किला की इमारत रूहेलों के समय से भी अधिक पुरानी है। उन्होंने इसमें सुधार किया। दो सुन्दर द्वार और दीवार के कुछ भाग इस समय भी खड़े हैं। डूंडेखां ने यहां एक इमामबाड़ा, मस्जिद सराय और दूसरे भवन बनवाये। गदर में यह जब्त कर लिये गये। इन्हीं में से एक में इस समय तहसील है। पुराना शीशमहल एकदम लुप्त हो गया। डूंडेखां के वंशजों पर ऐसी ग़रीबी छाई कि उन्होंने अपने घरों की ईंटें भी बेच डालीं। बिसौली के दक्षिण में एक ऊंचे स्थान पर डूंडेखां का मकबरा है। यह सोत की चौड़ी घाटी के ऊपर है। सोत पर उसने जो पक्का पुल बनवाया था वह बह गया। बिसौली में शाहआलम द्वितीय के कुछ सिक्के मिले। रूहेलायुद्ध के समय अंग्रेज़ी सेना बिसौली में आई। लेकिन यहां छावनी नहीं बनाई गई। किला बिल्सी के डोनाल्ड महाशय के हाथ बेच दिया गया। आगे चलकर यह रामपुर के साहिबज़ादे को मिल गया जो बिल्सी में रहता था। बिसौली में तहसील थाना, मुन्सफी, अस्पताल और मिडिल स्कूल है। सप्ताह में दो बार बाज़ार लगता है। रामलीला, मुहर्रम और जन्माष्टमी को साधारण मेला लगता। है

बदायूं शहर बरेली से मथुरा को जानेवाली प्रान्तीय सड़क पर बरेली से ३० मील दक्षिण-पश्चिम की ओर है। यह रूहेल खंड कमायूं रेलवे का एक बड़ा स्टेशन है। रेलवे लाइन प्रान्तीय सड़क की समानान्तर चलती है। यहां से दातागंज, बिसौली, सादुल्लागंज, बक्सेनी, जलालाबाद (शाहजहांपुर) उसेहत और फर्रुखाबाद को सड़कें गई हैं। शहर और सिविल लाइन में म्यूनिसिपेलिटी की ओर से अच्छी पक्की सड़कें बनी हैं।

बदायूं शहर सोत नदी से लगभग १ मील पूर्व में ऊंची भूमि पर बसा है। इसके ऊपर प्रान्तीय सड़क का अच्छा मज़बूत पुल बना है। पुरानी बदायूं किला कहलाता है। दूसरा भाग नई बदायूं का है। पुरानी बदायूं में किले की दीवारों के शेष भाग इस समय भी दिखाई देते हैं। पश्चिम की ओर से दूर का दृश्य दिखाई देता है। पुरानी बदायूं में १३ मुहल्ले हैं। नई बदायूं दूर तक फैली हुई है। इसमें ३८ मुहल्ले हैं। बदायूं कोई बड़ा व्यापारी केन्द्र नहीं है। फिर भी यहां अनाज, लकड़ी, गुड़ और कपास का व्यापार होता है। यहां कलमदान अच्छे बनते हैं। दक्षिण-पूर्व की ओर सिविल लाइन है। बदायूं की सिविल लाइन बहुत बड़ी नहीं है। केवल दो तीन योरुपीय रहते हैं। पास ही पुलिस लाइन और जेल है। बरेली पास होने से यहां छावनी नहीं है। दक्षिण-पश्चिम की ओर विक्टोरिया-पार्क है। इसके बीच में महारानी विक्टोरिया की मूर्ति तांबे की बनी है। १९०६ में इसका उद्घाटन हुआ। शहर के प्रायः बीच में दोमंजिला टाउन हाल है। यहां एक वर्नाक्यूलर मिडिल स्कूल और जिला हाई स्कूल है। बदायूं का इतिहास पुराना है। कहते हैं। इसका पुराना नाम बुद्ध गांव था। बुद्ध नामी एक राजा यहां दसवीं सदी में रहता था। कुछ लोगों का कहना है कि यहां दिल्ली के राजा महिपाल के प्रधान मन्त्री सूर्यध्वज ने वेदमऊ नाम का नगर बसाया था। यहीं वेदों को पढ़ाने के लिये एक प्रसिद्ध विद्यालय भी खोला गया। इसी से वेदाम्युत से बिगड़कर बेदमऊ और फिर बदायूं नाम पड़ गया। बदायूं के बाहरी भाग लखनपुर में एक शिला लेख मिला। जो इस समय लखनऊ के अजायबघर में है। उसके अनुसार यहां के राष्ट्र का राजा कन्नौज के राठौरों के सम्बन्धी थे। इन्होंने वेदामयुत (बदायूं) में शिवजी का मन्दिर बनवाया था। यहां के राजाओं ने आरम्भ मुसलमानी आक्रमणों से बदायूं को कई बार वीरता से बचाया। ११९६ में कुतुबुद्दीन ने बदायूं का घेरा डाला और अचानक रात में आक्रमण करके लेलिया। बदायूं के अजयपाल ने यहां किला फिर से बनवाया और नीलकंठ महादेव का मन्दिर भी बनवाया। धर्मपाल यहां का अन्तिम हिन्दू राजा था। धर्मपाल कुतुबुद्दीन के साथ लड़ता हुआ मारा गया। १२३० में अलतमश के बेटे रुकुनुद्दीन ने यहां मस्जिद बनवाई बलबन ने यहां राजपूतों के विद्रोह को बड़ी निर्दयता से दबाया। गांवों और जंगल में स्थान स्थान पर लाशों के ढेर लग गये। इनकी गंध गंगा के किनारे तक पहुंचती थी। अलाउद्दीन ने जलालुद्दीन को मरवाने के बाद दिल्ली जाते समय एक दिन यहां विश्राम किया था। १३७९ में फीरोज़शाह का आदमी यहां मार डाला गया। दूसरे वर्ष (१३८० में) फीरोज़शाह ने समूचे जिले को उजाड़ कर जंगल कर दिया कई हज़ार हिन्दू कत्ल कर दिये गये। ६ वर्ष तक यहां कोई खेत जोतने वाला न रहा। दिल्ली के मार्ग में स्थित होने के कारण बदायूं में और भी कई बार हत्याकांड हुये। अकबर के समय में बदायूं एक टकसाली शहर था। यहां केवल तांबे के सिक्के बनते थे। १७२० ईस्वी के बाद यहां रूहेले पठानों का ज़ोर बढ़ने लगा। १७४१ में उन्हें दबाने के लिये दिल्ली सम्राट ने अपने सूबेदार राजा हरनन्द को भेजा। आगे चलकर रूहेलों और अवध के नवाब से लड़ाई हुई। अवध के नवाब ने १७५१ में मरहठों से सहायता मांगी। मरहठों ने रूहेलों को हराकर कमायूं की पहाड़ियों की ओर भगा दिया और वहीं उन्हें घेर रक्खा। १७५२ में अहमद शाह दुर्रानी के आने पर उनका घेरा कुछ ढीला हुआ। पानीपत की लड़ाई के बाद १७६२ से मरहठों के हमले होने लगे। १७७० में दूंडेखां बिसौली में मर गया। इससे अफगानों की शक्ति और भी कम हो गई। १७७८ में मरहठों को यहां से निकालने के लिये अवध के नवाब और रूहेलों में फिर मेल होगया। १७७४ में अवध के नवाब ने अंग्रेज़ी सेना की सहायता से मीरनपुर कटरा (शाहजहांपुर) की लड़ाई में रूहेलों को हराकर रूहेलखंड (जिसमें बदायूं भी सम्मिलित था) पर अपना अधिकार कर लिया। २७ वर्ष तक बदायूं पर अधिकार रहा। अंग्रेज़ी सेना का खर्च न दे सकने पर अवध के नवाब से रूहेल खंड ले लिया गया। इस प्रकार

१८०१ ई० से बदायूँ अंग्रेज़ी राज्य में आगया। १८५७ के गदर में विद्रोहियों ने तोड़कर जेल का फाटक खोल दिया। कलक्टर ने भागकर ककोरा के पास गंगा को पार किया और फतेहगढ़ के पास कटियार के राजा के यहां शरण ली। कुछ दिनों तक यहां फिर रुहेलों का राज्य हो गया। लेकिन ककराला और बिसौली में विद्रोहियों की हार हुई और बदायूं में फिर अंग्रेज़ी राज्य हो गया।

दातागंज इसी नाम की तहसील का केन्द्र स्थान है। यह बदायूं से बेलाडांडी घाट को जाने वाली सड़क पर स्थित है और बदायूं से १७ मील दूर है। यहां तहसील के अतिरिक्त, थाना डाकखाना मिडिल स्कूल और अस्पताल है। सप्ताह में दो बार बाज़ार लगता है। यहां क़ाफी व्यापार होता है।

गवान गांव गङ्गा से ४ मील और बदायूं से ६० मील दूर है। पश्चिम की ओर महवा नदी बहती है। एक सड़क दक्षिण की बबराला रेलवे स्टेशन को जाती है। रेलवे के पहले यहां सड़क का एक बड़ा पड़ाव था। इस समय यहां डाकखाना, प्राइमरी स्कूल है। सप्ताह में एक बार बाजार लगता है और दशहरा का उत्सव होता है।

गन्नौर इसी नाम की तहसील का केन्द्र है। यह बदायूं से अनूप शहर को जानेवाली सड़क पर स्थित है। यह गंगा तट से ३ मील और बदायूं से ४६ मील दूर है। रेलवे खुलने से पहले यह एक व्यापारिक केन्द्र था। इस समय यहां का अनाज चन्दौसी को जाता है। यहां तहसील, थाना, डाकखाना और मिडिल स्कूल है। सप्ताह में दो बार बाज़ार लगता है। पहले इसे ब्रह्मपुरी कहते थे।

हजरतपुर अरील नदी से १ मील पश्चिम की ओर है। इससे कुछ दूरी पर रामगंगा का संगम है। यहां से एक सड़क दक्षिण-पश्चिम की ओर जलालाबाद को जाने वाली सड़क से मिलती है। यहां थाना, डाकखाना और स्कूल है। रामलीला के अवसर पर मेला लगता है।

इस्लाम नगर बदायूं से ३४ मील की दूरी पर बदायूं से सम्भल को जाने वाली सड़क पर स्थित है। यहां से बिसौली असदपुर और चंदौसी को गई हैं। इसके चारों ओर आम के बगीचे हैं। यहां थाना, डाकखाना, सराय और मिडिल स्कूल है। इस्लाम नगर पुराना स्थान है। अल्तमश के समय से इसका यह नाम पड़ गया। कछलागांव गंगा के किनारे बदायूं से १७ मील दूर है। यहां होकर बरेली से मथुरा को सड़क जाती है। शीत काल में नावों का पुल बन जाता है। वर्षा आरम्भ होने पर यह तोड़ दिया जाता है। कछला के उत्तर में सहसवान से आनेवाली सड़क मिलती है। १ मील और उत्तर-पूर्व की ओर कमरानदी को पुल द्वारा पार करके बिलसी से सड़क आती है। प्रधान सड़क से १ मील पश्चिम की ओर सोंसे को जाने वाली रेलवे एक मज़बूत पुल के ऊपर से गंगा को पार करती है। स्टेशन सड़क के पास है। यहां थाना, डाकखाना, सराय और प्राइमरी स्कूल है। सप्ताह में दो बार बाज़ार लगता है। जेठ दशहरा और कार्तिकी पूर्णिमा को गंगा स्नान का मेला लगता है। इसके पड़ोस की ऊसर भूमि में रेह बहुत है। इसे इकट्ठा करके उबाल और छानकर खारी बनाई जाती है। यह फर्रुखाबाद को भेजदी जाती है।

ककोरा गांव गंगा के किनारे से ३ मील और बदायूं से १४ मील दूर है। इससे मिला हुआ कादिर चौक गांव है जहां थाना है। ककोरा के पास गंगा के किनारे कार्तिकी पूर्णिमा को गंगास्नान का भारी मेला लगता है। यहां ३ लाख मनुष्य इकट्ठे होते हैं। कपड़ा बर्तन और ढोर का व्यापार भी होता है।

ककराला गांव दातागंज तहसील में बदायूं से ११ मील दक्षिण-पूर्व की ओर है। यह बदायूं से ऊसहत और फर्रुखाबाद को जानेवाली सड़क पर स्थित है। कंकड़ों की अधिकता होने से इसका नाम कंकराला या ककराला पड़ा। १८०३ में जंजीखां नामी एक सेनापति होलकर मरहठों को छोड़कर ईस्ट इंडिया कम्पिनी की सेना में जा मिला। १८५८ में यहां विद्रोहियों और ब्रिटिश सेना में लड़ाई हुई। यहां थाना, डाकखाना, प्राइमरी स्कूल और सराय है। कोट गांव बिसौली से सहसवान को जानेवाली सड़क के पश्चिम में बिसौली से ५ मील और बदायूं से २० मील दूर है। गांव के दक्षिण में एक पुराना टीला है। इसी के ऊपर कोट या किला था यहां बैस राजपूतों की बस्ती थी। वे इसे कोट सालिवाहन कहते थे। मुसलमानों के आने पर बैस लोग पूर्व की ओर १ मील की दूरी पर भानपुर गांव में चले गये।

कुमरगवां जिले की उत्तरी सीमा के पास बदायूं शहर से १० मील दूर है। यह बदायूं से आंवला को जानेवाली सड़क पर पड़ता है। यहां थाना, डाकखाना और प्राइमरी स्कूल है। सप्ताह में दो बार बाज़ार लगता

है और गुड़ का व्यापार बहुत होता है। रामलीला के अवसर पर यहां एक छोटा मेला लगता है।

मुंडिया गांव बिसौली से ४ मील और बदायूं से २७ मील दूर है। दक्षिण-पूर्व की ओर एक मील की दूरी पर सोत नदी बहती है। इसके किनारे दलदलों के कारण खेती के योग्य नहीं है। यहां से गुड़ और गेहूँ चन्दौसी को बहुत जाता है। सप्ताह में दोबार बाज़ार लगता है। यहां डाकखाना और स्कूल है। रामलीला के अवसर पर मेला लगता है।

राजपुरा गांव बदायूं से २६ मील की दूरी पर गन्नौर को जानेवाली कच्ची सड़क पर महवा नदी के किनारे पर बसा है। यहां थाना, डाकखाना और स्कूल है। सप्ताह में एक बार बाज़ार लगता है। रूदाइन गांव बिसौली से ६ मील पश्चिम की ओर है। यहां होकर इस्लाम नगर से बिसौली और बदायूं को सड़क जाती है। यहां एक प्राइमरी स्कूल है। सप्ताह में एक बार बाज़ार लगता है। रामनवमी के अवसर पर मेला लगता है।

सहसवान इसी नाम की तहसील का केन्द्र स्थान है। यह महावा नदी के उत्तरी या बायें किनारे से कुछ ही दूर बदायूं और उझानी से गन्नौर और अनूपशहर को जानेवाली सड़क के दोनों ओर बसा है। यह बदायूं से २४ मील दूर है। यहां से बिलसी, इस्लाम नगर और कछला को भी सड़कें हैं। गंगा पार कासगंज को भी सड़क जाती है। सहसवान के मुहल्ले में वास्तव में फैले हुये गांव हैं। उत्तर की ओर ढांड झील है। सहसवान ऐसे स्थान पर बसा है जहां भूड़ और कछारी भूमि आकर एक दूसरे से मिलती हैं।

कहते हैं सहसवान को सहस्रबाहु ने बसाया था। उसने यहां किला भी बनवाया था जिसका टीला काज़ी मुहल्ले में है। इसे परशुराम ने मारा था। ढांडझील के किनारे एक बहुत पुराना मन्दिर है। इसके पास ही स्नान करने के पक्के घाट हैं। यहां फागुन में मेला लगता है। इधर उधर सती स्मारक हैं। यहां मुसलमानों की तीन पुरानी मस्जिदें और कई मकबरे हैं। १८२० में सहसवान जिले का केन्द्र स्थान चुना गया। लेकिन समीप में जंगल और झील होने से यहां मलेरिया-ज्वर फैलने लगा। १८३८ में जिले का केन्द्र-स्थान बदायूं बनाया गया। यहां इत्र और केवड़ा बनाया जाता है। गुलाब और केवड़ा पास के बगीचों में उगता है। पहले यहां नील की एक दो कोठियां थीं। इस समय यहां तहसील, मुन्सफी, थाना, डाकखाना, अस्पताल, सराय और मिडिल स्कूल है।

सिरसा गांव दाता गंज से ४ मील की दूरी पर बाझा और अन्धेरिया के संगम पर बसा है जो अरील में मिलती हैं। शेखूपुर सोत के दाहिने किनारे पर स्थित है। सोत को पार करने के लिये घोंचा घाट पर नाव रहती है। यहां से बदायूं शहर ३ मील उत्तर-पूर्व की ओर है। यहां से १ मील दक्षिण की ओर बदायूं से मथुरा को प्रान्तीय सड़क जाती है। पास ही रूहेलखंड कमायूं रेलवे का स्टेशन है। कहते हैं जहां पहले फुलिया बसा था। जिसके खंडहर इस समय भी दिखाई देते हैं। वहां पर जहांगीर के समय में एक शेख फरीद ने इसे बसाया था। उसके वंशज इस समय जिले के बड़े ज़मीदारों में हैं। गदर में इन्होंने अंग्रेज़ों की बड़ी सहायता की। यहां एक अपर प्राइमरी स्कूल है। सप्ताह में दोबार बाज़ार लगता है।

उझानी का बड़ा कस्बा बरेली और बदायूं से कछला घाट और मथुरा को जाने वाली पक्की सड़क पर बसा है। यह बदायूं से ८ मील पश्चिम की ओर है। यहां से एक पक्की सड़क सहसवान को जाती है। स्टेशन (रूहेलखंड कमायूं रेलवे) कस्बे के उत्तर-पूर्व में है। इसके तीन ओर बगीचे हैं। पश्चिम की ओर रेतीले टीले हैं। कहते हैं पीपल वृक्षों की अधिकता होने से पहले इसे पिपरिया कहते थे। पीपल टोला इस समय भी इसका एक मुहल्ला है। अब से १४०० वर्ष पहले यहां घोसी बस गये। यहीं उजैन निवासी राजा महिपाल ने भी अपना निवास-स्थान बनाया। इससे इसका नाम उज्जैयनी से बिगड़ कर उझानी पड़ गया। आगे चलकर यहां रूहेला सरदार बस गये उन्होंने यहां कई इमारतें बनवाई। गदर के समय में बहादुर सिंह ने यहां विद्रोह का झंडा उठाया। वह गंगापार भाग गया। लेकिन उसने एक अँग्रेज़ अफसर की जान बचाई थी इसलिये उसके साथ उदारता का बर्ताव किया गया। उसी ने बहादुर गंज मुहल्ला बसाया। यहां थाना डाकखाना और मिडिल स्कूल है। सप्ताह में दो बार बाज़ार लगता

है। यहां से घी, गुड़ अनाज और कपास भेजी जाती है। यहां कपास ओटने और सूती कपड़ा बुनने की दो मिलें हैं। शक्कर बनाने का भी काम होता है।

उसेहत बदायूं से १३ मील की दूरी पर बदायूं से फर्रुखाबाद को जानेवाली सड़क पर स्थित है। यह दातागंज (तहसील) से २० मील दक्षिण-पश्चिम की ओर है। इसके उत्तर में रेतीले टीले और दक्षिण में सोत (नदी) है। इसके बीच में पुराने किले के खंडहर हैं। यह बहुत पुराना स्थान है। १७४८ में बदायूं के पास रूहेलों ने बंगश पठानों को हराया था। तभी यह रूहेलों के हाथ आगया उन्होंने यहां एक किला और एक मस्जिद बनवाई। इस समय इसी पुराने किले में थाना है। यहां डाकखाना, स्कूल और सराय भी है। सप्ताह में दो बार बाज़ार लगता है। लेकिन इसका व्यापार ककराला चला गया।

वज़ीरगंज बदायूं से बिसौली को जाने वाली सड़क पर बदायूं से १३ मील और बिसौली से ६ मील दूर है। यहां से थाना सैदपुर चला गया। यहां डाकखाना और स्कूल है। सप्ताह में दो बार बाजार लगता है। गांव से १ मील उत्तर-पूर्व की ओर एक पुराने ऊँचे टीले पर एक मन्दिर बना है। यहां चैत के महीने में पूरनखेरा का मेला लगता है।

ज़रीफ नगर या द्विगपुर ज़रीफ नगर बदायूं से ३७ मील की दूरी पर बदायूं से गन्नौर को जाने वाली सड़क पर स्थित है। यहां से २ मील दक्षिण की ओर खेड़गांव है। १ मील उत्तर की ओर महावा नदी है। इसकी बाढ़ से पड़ोस की भूमि डूब जाती है। गदर के बाद यहां के लोगों को दबा रखने के लिये यहां थाना स्थापित किया। यहां डाकखाना और प्राइमरी स्कूल भी है।

★ ★ ★

# आगरा

विषमाकार आगरा जिला संयुक्तप्रान्त के उत्तरी पश्चिमी कोने में स्थित है। इसके पश्चिम में भरतपुर राज्य, दक्षिण में ग्वालियर और धौलपुर राज्य हैं। उत्तर में मथुरा और एटा जिला पूर्व में मैनपुरी और इटावा जिला है। कुछ दूर तक यमुना नदी सीमा बनाती है। आगरे जिले की अधिक से अधिक लम्बाई ७८ मील और चौड़ाई ३५ मील है। इसका क्षेत्रफल १८५४ वर्ग मील है।

आगरा जिला प्राकृतिक भागों में बँटा हुआ है।

(१) इतमादपुर और फीरोज़ाबाद तहसीलें यमुना के उत्तर में हैं। यह दोनों द्वावा के अंग हैं।

(२) यमुना और उतांगन के बीच ऊंची समतल भूमि है। यहीं आगरा करौली फतेहाबाद और अधिकांश खैरागढ़ की तहसीलें हैं।

(३) यमुना और चम्बल के बीच में बाह की तंग तहसील है।

(४) खैरागढ़ तहसील का शेष भाग एक अलग प्रदेश है। उतांगन के आगे यह प्रदेश भरतपुर और धौलपुर राज्यों के बीच में स्थित है।

(१) द्वावा में स्थित आगरा जिले की दो तहसीलों का क्षेत्रफल ४८० वर्ग मील है। इस ऊंचे मैदान का धरातल समतल है। केवल कहीं कहीं यमुना की एक दो छोटी छोटी सहायक नदियों ने इसे काट कर विषम बना दिया है। कहीं कहीं रेतीले टीले भी हैं। पर प्रदेश बड़ा उपजाऊ है। इसकी मिट्टी कुछ पीली और मटियार है। केवल यमुना के पड़ोस में नालों से कटे फटे ऊँचे किनारे हैं जो खेती के योग्य नहीं हैं। यहां बबूल के पेड़ हैं अथवा

ढोर चराये जाते हैं। यमुना का खादर भी उपजाऊ नहीं है। यहां झाऊ और कांस होते हैं जो घर छाने के काम आते हैं।

(२) यमुना और उतांगन के बीच का प्रदेश मटियार का बना है। यह जिले का मध्यवर्ती भाग है। खार नदी और एक दो नालों ने इसे काट दिया है। कुछ ऊंचे टीले और ऊंचे नीचे भागों को छोड़कर यह प्रदेश प्रायः समतल है। यमुना और उतांगन नदियों के पास कछार है।
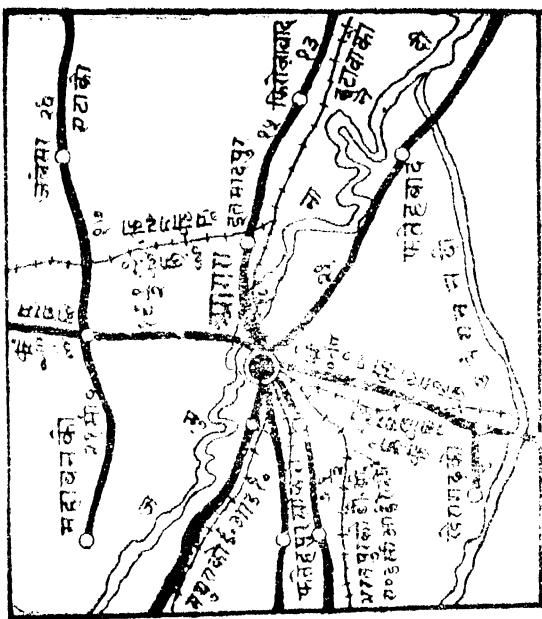
(३) यमुना चम्बल का द्वाबा औसत से आठ या नौ मील चौड़ा है और ४२ मील लम्बा है। बीच में यह अधिक चौड़ा है। इसका आधा भाग यमुना और चम्बल के गहरे सूखे नालों से घिरा हुआ है। बीच वाले भाग में भूमि अच्छी है। उत्तर की ओर बालू हो गई है। दक्षिण की ओर चम्बल के पड़ोस में कुछ चिकनी मिट्टी है। पश्चिम की ओर इस चिकनी मिट्टी का रंग काला है। इसे मार कहते हैं। यह बुन्देलखंड की मिट्टी से मिलती जुलती है। पूर्व की कड़ी मटियार है। यमुना और चम्बल के पड़ोस में नीची भूमि उपजाऊ है।

(४) उतांगन के आगे खैरागढ़ तहसील में उत्तरी सीमा के पास पहाड़ियाँ मिलती हैं। कुछ टीले अकेले खड़े हैं। कुछ नालों के पास हैं। कहीं मटियार है। कहीं मूड़ है।

इस प्रकार जिले के अधिकतर भाग में गंगा की कांप है. यह कांप बहुत (५०० फुट से अधिक) गहरी है। इसकी तली समुद्र-तल से केवल पांच फुट ऊँची है। यह कांप यहां मध्यभारत से आने वाली मिट्टी से मिल गई है। करौली तहसील में विन्ध्याचल की टूटी फूटी पहाड़ियाँ हैं। मैदान के धरातल से पहाड़ियां लगभग १५० फुट ऊँची हैं। इनका रंग कहीं लाल और कहीं भूरा या मटीला है। जिस पहाड़ी पर फतेहपुर सीकरी बना है वहां अच्छे इमारती पत्थर मिलते हैं। आगरा और दिल्ली की मस्जिदें और दूसरे भवन इसी पत्थर के बने हैं। पहाड़ियों का ढाल दक्षिण पूर्व की ओर है। उतांगन नदी के आगे खैरागढ़ की पहाड़ियां अधिक ऊँची हैं। आगरा और भरतपुर के बीच में सीमा बनाने वाली पहाड़ी को विन्ध्याचल कहते हैं। यह ३० मील लम्बी है। इसकी अधिक से अधिक ऊंचाई समुद्र-तल से ८४० फुट है। बहुत सी पहाड़ियां पड़ोस की भूमि से ३० से लेकर ५० फुट ऊंची हैं। लेकिन यमुना और चम्बल के किनारे (करार) नीची कछारी भूमि के ऊपर ७० फुट से १५० फुट तक ऊंचे खड़े हैं। यमुना के उत्तर में मैदान की ऊंचाई ५५७ फुट है। फीरोजाबाद तहसील में यह केवल ५४० फुट रह गई है। उतांगन के दक्षिण में भूमि कुछ ऊँची होती जाती है। खैरागढ़ के दक्षिण-पश्चिम में जिले की सब से अधिक ऊंची भूमि है। यमुना नदी करौनी के उत्तर में पहले पहल इस जिले को छूती है। कुछ दूर तक यह मथुरा और आगरा जिलों के बीच में सीमा बनाती है। उतांगन के सङ्गम के आगे यह बाह तहसील के उत्तर में बहती है और इस जिले को मैनपुरी और इटावा जिलों से अलग करती है। खिलौली के पास यमुना आगरा जिले को छोड़कर इटावा जिले में प्रवेश करती है। यमुना का मार्ग बड़ा टेढ़ा और मोड़दार है। आगरा जिले में यमुना की लम्बाई १४५ मील है। सीधा मार्ग इसका आधा है। यमुना के किनारे बड़े कड़े और स्थायी हैं। स्थान स्थान पर नालों ने इन्हें काट दिया है। यमुना की चौड़ाई कहीं एक फर्लांग और कहीं दो

फर्लांग है। गहराई अधिक नहीं हैं। वर्षा ऋतु में भी इसकी गहराई १० फुट से अधिक नहीं रहती है। शेष ऋतुओं में दो या तीन फुट रह जाती है। आगरा नहर के निकल जाने से यमुना नाव चलाने योग्य नहीं रही। आगरे में यमुना पर पक्के पुल बने हैं। और स्थानों में लोग यमुना को पैदल या नाव द्वारा पार करते हैं। नरहरा के पास भिरना या कारों यमुना में सब से पहले आगरा जिले में मिलती हैं। यह नदी बुलन्दशहर, अलीगढ़ और मथुरा जिलों को पार करके यहां आती है। सिरसा और सेंगर छोटी नदियां हैं।

उतांगन या बानगंगा २०० मील की दूरी पर जैपुर राज्य से निकलती है भरतपुर राज्य को पार करके कुछ दूर तक यह आगरा और भरतपुर राज्य के बीच में सीमा बनाती है। खैरागढ़ तहसील को पार करके यह पहले धौलपुर राज्य की सीमा बनाती है। फिर यह आगरा जिले में दूसरी बार प्रवेश करती है। आगरा जिले में ९३ मील बहने के बाद फतेहाबाद के पूर्व में रिहौली के पास यह यमुना में मिल जाती है। वर्षा ऋतु में उतांगन में अचानक बाढ़ आ जाती है। शेष ऋतु में यह प्रायः सूखी पड़ी रहती है। खारी नदी इसकी प्रधान सहायक नदी है। यह नदी भी भरतपुर राज्य में निकलती है।

चम्बल नदी मालवा में म्हो के पास बिन्ध्याचल के उत्तरी ढालों से निकलती है। धुर पश्चिम समौना के पास यह आगरा जिले को छूती है। जिले की सीमा बनाती हुई इटावा जिले में यह यमुना से मिल जाती है। इसके किनारे बहुत ऊँचे और सपाट हैं। ऊंचे किनारों के बीच में चौड़ी घाटी है। इन्हीं किनारों के बीच में चम्बल नदी इधर उधर बहती रहती है। वर्षा ऋतु में इसमें भयानक बाढ़ आती है। इस समय इसमें यमुना से भी अधिक पानी हो जाता है। खुश्क ऋतु में यह साधारण नदी हो जाती है और रेतीली तली में इधर उधर बहती है इसका पानी प्रायः गहरा नीला रहता है। यमुना के मटीले पानी से एकदम भिन्न मालूम होती है। आगरा जिले में चम्बल पर कहीं भी पुल नहीं बना है। वर्षा ऋतु में नाव द्वारा इसे पार करते हैं। खुश्क ऋतु में इसमें पांज हो जाती है।

आगरा जिले में १८ फीसदी भूमि ऊसर अथवा खेती के योग्य नहीं हैं इसमें कहीं रेह है, कहीं उजाड़ टीले हैं। कुछ भागों में ढाक-बबूल का जङ्गल या घास है। गांवों के पड़ोस में आम, जामुन, बेल आदि पेड़ों के बगीचे हैं। शेष बड़े भाग में खेती होती है।

आगरा जिले की जलवायु पड़ोस के और जिलों की अपेक्षा अधिक खुश्क और गरम है। गरमी की ऋतु लम्बी होती है। पानी कम बरसता है। अप्रैल से अगस्त तक यहाँ तापक्रम दूसरे जिलों से अधिक ऊँचा रहता है। अक्तूबर से शीतकाल का आरम्भ होता है।

जनवरी में अक्सर पाला पड़ता है। इस समय नादों में पानी भरने से उनके ऊपर से प्रातः काल के समय कभी कभी बरफ की तह इकट्ठी की जा सकती है। मार्च के अन्त में राजपूताने की ओर से गरम हवायें चलने लगती हैं। कभी कभी आंधी भी आती हैं। जनवरी महीने का तापक्रम ५९ अंश और जून का ९५ अंश रहता है। कभी कभी छाया में जून मास का तापक्रम ११७ अंश हो जाता है। वर्षा होने पर तापक्रम कम हो जाता है। औसत से इस जिले में २६ इंच वर्षा होती है। खैरागढ़ में २४ इंच और फीरोज़ाबाद में २७ इंच वर्षा होती है। किसी वर्ष ४७ इंच और किसी (अकाल के) वर्ष १२ इंच वर्षा होती है। ज्वार, बाजरा, अरहर खरीफ की प्रधान फसलें हैं। कपास की फसल बड़े काम की होती है और सारे ज़िले में उगाई जाती है। कपास आषाढ़ में बोई जाती है और कार्तिक से माघ तक बीनी जाती है। मोठ, उर्द, मूंग भी खरीफ की फसलें हैं। गेहूँ, चना, गुजई और बाजरा रबी की फसलें हैं। वर्षा कम होने से सिंचाई की जरूरत पड़ती है। अधिकतर सिंचाई कुओं से होती है। कुओं में पानी अधिक गहराई पर मिलता है। कुछ भाग नहरों (फतेहपुर सीकरी, गङ्गा नहर और आगरा नहर द्वारा सींचे जाते हैं। अकबर के समय

में पहाड़ियों के बीच में फतेहपुर सीकरी के पास बांध बनवाया था।

**संक्षिप्त इतिहास**—आगरा जिले के कई स्थान पांडवों से सम्बन्ध रखते हैं। कहते हैं पिन्हात नाम उन्हीं से लिया गया है। उतांगन या बाणगंगा का स्रोत उस स्थान पर है जहां अर्जुन ने अपना बाण छोड़कर गड्ढा बना दिया था। आगरा जिले के उत्तरी पश्चिमी भाग सूरसेन के राज्य में सम्मिलित थे। इस राज्य की राजधानी मथुरा थी। बटेश्वर और सूर्यपुर गांव बहुत पुराने हैं। यहां पुराने समय के सिक्के मिले हैं। सालमान नामी एक फारसी कवि ने (जो ११३१ ई० में मरा) लिखा है कि भीषण आक्रमण के बाद महमूद गजनबी ने आगरे के किले को जयपाल से छीना था। तारीखे दाऊदी में लिखा है कि महमूद ने आगरे को (जो कंस के समय से हिन्दुओं का एक समृद्धिशाली नगर था) ऐसा नष्ट किया कि यह एक साधारण गांव रह गया। यहां से महमूद ने फीरोजाबाद के चन्दवर किले पर आक्रमण किया था। पर महमूद की विजय स्थायी न थी। २०० वर्ष तक राजपूत सरदार आगरा जिले के मेवातियों पर राज्य करते रहे।

११९३ ई० में दिल्ली के चौहानों की शक्ति नष्ट हो गई। मुसलमानी सेनायें दिल्ली और कोसी में आ डटीं। दूसरे वर्ष कन्नौज के राजा जयचन्द पर चढ़ाई करने से पहले फीरोजाबाद तहसील पर अधिकार कर लिया। ११९६ में बियना पर मुसलमानों का अधिकार होगया। फिर भी चौहानराजपूत लड़ते रहे। १२५९ में पंवार राजदूत खैरागढ़ में आडटे। चौदहवीं सदी के अन्त में भदोरिया राजपूत हटकांट में आडटे और उन्होंने बाह से म्यू या मेवाती लोगों को भगा दिया। तैमूर के आक्रमण पश्चात देशों में जो गड़बड़ी फैली उसमें राजपूत प्रायः स्वाधीन हो गये। १४०७ ईस्वी में इधर जौनपुर के सुल्तानों के हमले होने लगे। १४२० में चन्दवार के राजा को दबाकर पड़ोस के भागों को उन्होंने नष्ट कर दिया। १४५२ ईस्वी में दिल्ली और जौनपुर की सेनाओं में चन्दवार के पास बड़ी लड़ाई हुई। अन्त में दिल्ली के बहलोल बादशाह का यहां राज्य हो गया। फिर भी आगरे के पड़ोस में दंगे होते रहे। विद्रोहियों को दबाने के लिये जहां पहले बादल गढ़ का किला था वहीं सिकन्दर ने आगरे में किला बनवाया। १४९५ में उसने सिकन्दरा में एक बारादरी बनवाई। सिकन्दरा नाम उसी की स्मृति में रक्खा गया। १५०५ में यहां एक भूचाल आया और आगरे की प्रसिद्ध इमारतें गिर गईं। १५०९ में सिकन्दर ने भदौरियों को बड़ी निर्दयता से नष्ट किया। जहां कहीं भदोरिया मिलते थे वे मार डाले जाते थे। १५१७ ई० में सिकन्दर मर गया। उसके बाद १५२६ ई० तक यहां इब्राहीम लोदी का राज्य रहा। १५२६ ई० में पानीपत की लड़ाई में इब्राहीम मारा गया। बाबर ने पानीपत की विजय के बाद हुमायूँ को लोदी का खजाना छीनने के लिये आगरे को भेजा। हुमायूँ आगरे के बाहरी भाग में ठहरा दूसरे दिन उसने किले को घेर लिया। इस समय ग्वालियर के विक्रमाजीत के अनुयायी आगरे के किले में थे। सफलता की आशा न देखकर उन्होंने आगरे का किला हुमायूं को सौंप दिया। इसके बाद बाबर ने इब्राहीम के महल में निवास किया और इब्राहीम की मां को आगरे से २ मील नीचे की ओर भेज दिया। पड़ोस में अशान्ति थी। बाबर को रसद मिलने में कठिनाई पड़ती थी। लेकिन दूसरे वर्ष ग्वालियर ने आत्म समर्पण कर दिया। फतेहपुर सीकरी से १० मील की दूरी पर कनवा की लड़ाई में हिन्दुओं की भारी हार हुई। इस विजय के बाद बाबर द्वाब में पूर्व की ओर बढ़ा। १५३० में वह आगरे को फिर लौट आया। यहीं चार बाग में उसकी मृत्यु हो गई। लेकिन उसकी लाश काबुल को भेज दी गई। वहीं उसकी कब्र बनी। बाबर के मरने के ३ दिन बाद उसका बेटा हुमायूं आगरे के महल में गद्दी पर बैठा।

हुमायूं ने दिल्ली की अपेक्षा आगरे में अधिक समय बिताया। उसने आगरे को ही अपनी राजधानी बनाया। हुमायूं ने १५३१ में कालिंजर पर चढ़ाई की। दूसरे वर्ष उसने जौनपुर के अफगानों पर हमला किया। १५३३ में वह भोजपुर की ओर बढ़ा उसकी अनुपस्थिति में गुजरात के बहादुरशाह ने तातार खां लोदी को बियना पर चढ़ाई करने के

लिये भेजा। तातार खां ने बियना जीतकर आगरे पर चढ़ाई की यहां वह हार गया। १५३४ में बहादुर शाह को भगाकर हुमायूं आगरे को लौट आया। विद्रोह का समाचार सुनकर हुमायूं फिर जौनपुर की ओर बढ़ा। इधर आगरे में उसके भाई हिन्दाल ने विद्रोह का झंडा उठाया। १५३९ में गंगा के किनारे चौसा की लड़ाई में शेरखां ने हुमायूं को बुरी तरह से हराया। हुमायूं बड़ी कठिनाई से आगरे को लौट पाया। दूसरे वर्ष हुमायूं की और भी भारी हार हुई। वह दिल्ली और लाहौर की ओर भागा। आगरे पर शेरशाह का ( जो अब राजा बन गया था ) अधिकार होगया।

१५४२ ई० में शेरशाह को ग्वालियर, मांडू, रणथंभोर, मालवा, मुल्तान और अजमेर में लगातार लड़ाइयां लड़नी पड़ीं। १५४४ में वह कालिंजर की ओर बढ़ा। दूसरे वर्ष यहीं वह मारा गया। अपने पिता की मृत्यु का हाल सुनकर उसका दूसरा लड़का इस्लामशाह आगरे में सिंहासन पर बैठा। पर जब उसने अपने बड़े भाई आदिलशाह को पकड़वाने की कोशिश की तब गृहकलह फैल गई। इसमें इस्लामशाह की विजय हुई। उसने दिल्ली के पास सलीमगढ़ बसाया। १५५२ ईस्वी में ग्वालियर में उसकी मृत्यु हो गई। उसके मरते ही फिर गड़बड़ी मच गई। उसका १२ वर्ष का बेटा फीरोज खां राज्य को न सँभाल सका। उसके मामा मुहम्मद आदिलशाह ने गद्दी छीन ली। लेकिन जब वह पूर्व की ओर गया तो उसके भाई और बहनोई इब्राहीम खां सूरी ने दिल्ली और आगरे में अपना अधिकार जमा लिया। इसी बीच में हुमायूं ने काबुल से हिन्दुस्तान पर चढ़ाई की। मुहम्मद आदिल के हिन्दू मन्त्री हीमू ने काल्पी के पास इब्राहीम को हराकर उसे बियना की ओर भगा दिया। इसी बीच में बंगाल में सिकन्दर खां ने विद्रोह का झंडा खड़ा किया। हीमू आगरे की ओर लौटा। इब्राहीम ने हीमू का पीछा किया। इस बार मिढाकर के पास ही हीमू की फिर विजय हुई। इसी समय १५५५ में हुमायूं की एक सेना ने आगरे पर अधिकार कर लिया। लेकिन १५५५ में हुमायूं मर गया। हीमू चुनार से आगरे की ओर बढ़ा। आगरे पर फिर अफगानों का अधिकार हो गया। लेकिन दिल्ली के पास हीमू की हार हुई और वह मार डाला गया। १५५८ ईस्वी में अकबर ने आगरे में प्रवेश कर पहले वह सुल्तानपुर गाँव में ठहरा फिर वह बादलगढ़ के किले में चला गया।

१५६० में अकबर बियना की ओर शिकार के लिये गया। इसी समय बैराम खां ने विद्रोह का झंडा उठाया। अकबर की सेना ने उसे हरा दिया। और पकड़ लिया। उसकी पुरानी सेवाओं का ध्यान करके अकबर ने उसे क्षमा कर दिया। जब बैराम हज के लिये जा रहा था तो उसके एक शत्रु ने उसे रास्ते में ही मार डाला। १५६१ में अकबर फिर राजधानी ( आगरे ) को लौटा। १५६५ में अकबर हाथियों का शिकार करने के लिये आगरे से धौलपुर और नरवर को गया। लौटने पर उसने किले को बनवाना आरम्भ किया। इस किले के बनने में कई वर्ष लगे। १५६६ में जौनपुर और बनारस से लौटने पर उसने नगरचैन नाम का भवन ककरहा गांव में बनवाया।

आगरे के उत्तर-पश्चिम में इसके खंडहर इस समय भी मिलते हैं। १५६८ में अकबर ने चित्तौड़ की ओर प्रस्थान किया। लौटकर १५६९ में उसने रण शमशेर किले को ले लिया। इसी वर्ष उसने फतेहपुर सीकरी की नींव डाली। दूसरे वर्ष यहीं सलीम ( जहांगीर ) का जन्म हुआ। इसकी स्मृति में अकबर ने यहां महल बनवाये। दूसरे वर्ष उसने शेख मुईनुद्दीन ने भिश्ती के मकबरे का दर्शन करने के लिये पैदल अजमेर की यात्रा की। यहां से वह बीकानेर और लाहोर को गया। १५७१ ईस्वी में वह फिर आगरे को आया। दूसरे वर्ष वह गुजरात ( अहमदाबाद ) को गया और १५७४ में फतेहपुर सीकरी को लौटा। १५७५ में वह बंगाल को गया। १५७७ में फतेहपुर सीकरी में टक्साल स्थापित की गई। १५८२ में वह पंजाब गया। १५८४ में यमुना के मार्ग से वह इलाहाबाद पहुँचा। १५८६ में उसने पंजाब और काबुल के लिये प्रस्थान किया। १५९९ में वह फिर आगरे में रहने लगा। इसके बाद वह

बुर्हानपुर और अहमद नगर को गया। १६०२ ई० में वह फिर आगरा लौट आया। १६०५ ई० में ६५ वर्ष की अवस्था में अकबर का देहान्त हो गया। सिकन्दरा में उसकी लाश गाड़ी गई वहीं उसका मकबरा बना।

अकबर के जीवन काल में पुर्चगाली, यूनानी, अंग्रेज और दूसरे योरुपीय लोग आगरे में आने लगे गये थे अकबर की मृत्यु के बाद १६०५ के अक्तूबर मास में जहांगीर गद्दी पर बैठा। जहांगीर ने पहले अपने सौतेले भाई खुसरू का पीछा किया जो मानसिंह की सहायता से राजा बनना चाहता था। खुसरू हार गया और १६०७ में बन्दी बनाकर आगरे लाया गया। १६११ में उसने नूरजहां से ब्याह किया। १६१३ से १६१८ तक वह अजमेर की ओर रहा। १६१९ में वह काश्मीर को गया। १६२२ ईस्वी में उसके बेटे खुर्रम (शाहजहां) ने विद्रोह का झंडा उठाया। १६२५ में खुर्रम ने आत्मसमर्पण किया और १६२८ में जहांगीर फिर आगरे को लौट आया। ईस्ट इंडिया कम्पिनी ने अपने एजेंट जहांगीर के दरबार (आगरे) में भेजे।

१६२८ के फर्वरी मास में शाहजहां बादशाह बना। आरम्भ का समय ओरछा और दक्षिण में विद्रोह दबाने में बीता। १६३१ में वह आगरे को लौटा। बुर्हानपुर में उसकी स्त्री अर्जुमन्द बानू (मुमताज महल) का देहान्त हो गया। ६ महीने बाद उसकी अस्थि आगरे लाई गई और उनके ऊपर जगत्प्रसिद्ध ताजमहल बना।

१६५७ में शाहजहां दिल्ली में बीमार पड़ा। दारा शिकोह राजधानी में था वह राजप्रबन्ध करने लगा। उसके भाई शुजा बंगाल में, मुराद गुजरात में और औरंगजेब बीजापुर (दक्षिण) में थे। दारा खजाने पर अधिकार प्राप्त करने के लिये अपने पिता को आगरे ले आया। इसके बाद उसने राजा जैसिंह को शुजा के विरुद्ध भेजा जो इस समय बनारस में पड़ाव डाले हुये था। महाराजा जसवन्त सिंह मुराद और औरंगजेब से लड़ने के लिये भेजे गये। मलवा में औरंगजेब और मुराद की सेनायें मिल गई थीं। दारा शिकोह किले के ठीक उत्तर की ओर जमुना बाग रहने लगा। बनारस में शुजा बुरी तरह से हारा। उसके अनुयायी बन्दी बनाकर आगरे में लाये गये। वहां वे सड़कों पर घुमाये गये। लेकिन जसवन्तसिंह को सफलता न मिली। दक्षिण की सेनाओं ने उसकी सेना को भगा दिया। औरंगजेब उत्तर की ओर ग्वालियर की ओर आया। आगे बढ़कर उसने चम्बल का पार किया। आगरे से पांच मील पूर्व यमुना के किनारे सामगढ़ शाही सेना और औरंगजेब की सेना में लड़ाई हुई। दारा की सेना मुराद और औरंगजेब की संयुक्त सेना से कहीं अधिक बड़ी थी। दारा को अपनी विजय पर पूरा भरोसा था। शाहजहां ने बंगाल से लौटने वाली विजयी सेना के आने तक ठहरने की सम्मति दी। लेकिन दारा ने इस पर कोई ध्यान न दिया। आरम्भ में दारा विजयी होता दिखाई दिया। राजा रामसिंह के राजपूत सिपाहियों ने मुराद की सेना में भीषण मारकाट मचा दी।

औरंगजेब को रुस्तम खां के सिपाहियों ने बुरी तरह घेर लिया। औरंगजेब को इस ओर समय से कुछ नये सिपाहियों ने सहायता दी। इतने में दारा ने मध्य भाग पर आक्रमण किया और राजा रूपसिंह के सिपाहियों ने औरंगजेब की सेना को चीर कर पार कर दिया। लेकिन दारा के सिपाही पिछड़ गये। इतने में दारा का हाथी बिगड़ गया। जब हाथी वश में न आया तब दारा हाथी से उतर कर घोड़े पर सवार हुआ। इससे दारा के सिपाही उसे न देखकर हताश होगये और उनमें गड़बड़ी मच गई। दारा और उसका बेटा आगरे की ओर भाग आये और उसी रात को लाहौर की ओर चले गये। तीन दिन के बाद औरंगजेब आगरे की ओर बढ़ा। वह मुबारक मंजिल में ठहरा। किले का प्रबन्ध शायस्ता खां को सौंप कर औरंगजेब ने मुराद के साथ दारा का पीछा किया और मथुरा में उसे पकड़ लिया। उसे कैद करके दिल्ली को भेज दिया। यहीं वह मार डाला गया।

औरंगजेब आलमगीर के नाम से बादशाह घोषित किया गया। शाहजहां कैद में रक्खा गया। १६६६ में कैद में ही वह मर गया ताज में उसकी भी कब्र बनी। इसी वर्ष शिवा जी आगरे आये और बन्द कर लिये गये। अन्त में भेष बदल कर पहले वे मथुरा को और फिर काशी

होकर दक्षिण को चले गये। इसके बाद औरंगज़ेब का अधिकतर समय दक्षिण में बीता। १७०७ में औरंगज़ेब की मृत्यु हो गई। सिंहासन के लिये फिर गृह-कलह छिड़ गई। औरंगज़ेब के बड़े बेटे मुअज़्ज़म ने आगरा और खज़ाना छीन लिया। दूसरा बेटा आज़म दक्षिण की ओर से बढ़ रहा था। उसने उतांगन को पार किया। लेकिन खैरागढ़ के पास जजऊ की लड़ाई में आज़म हार गया और मार डाला गया। मुअज़्ज़म बहादुरशाह के नाम से सम्राट घोषित किया गया। जजऊ में बहादुरशाह ने विजय के उपलक्ष में एक मस्जिद और सराय बनवाई।

जाट और चौहान औरंगज़ेब के समय में ही बिगड़ गये थे। उनके नेता कोकिल को १६७० में फांसी दी गई। औरंगज़ेब के मरने पर बादशाह तेज़ी के साथ बदले। जाटों की शक्ति भी तेज़ी के साथ बढ़ी। १७२२ में जाटों के राजा बदन सिंह ने भरतपुर में किला बनवाया। कुछ समय बाद उसने यह किला अपने बेटे सूरजमल को सौंप दिया। १७२५ में मरहठे ग्वालियर के पास आ गये। १७३४ में मरहठों के घुड़सवार आगरे के पास आ गये। १७३७ में बाजी राव ने बादशाह से युद्ध छेड़ दिया और आगरा जिले पर हमला किया। उसने पहले चम्बल के दक्षिण में भदावर के राजा की जायदाद छीन ली। फिर उसने बाह में प्रवेश किया। यहां से वह बटेश्वर की ओर बढ़ा। यमुना को पार करके उसने शिकोहाबाद पर अधिकार कर लिया। उसने फीरोज़ाबाद और इतमादपुर को जलाया और जलेसर पर धावा बोल दिया। कुछ समय के बाद बाजी राव फतेहपुर सीकरी और डीग के मार्ग से दिल्ली की ओर बढ़ा। मरहठों को रोकने के लिये १७३९ में निज़ामुल मुल्क आगरे और मालवा का सूबेदार बनाया गया। १७३८ में जटों ने फराह और अछनेरा के पास २३ गांव छीन लिये। १७३९ में नादिरशाह के हमले से गड़बड़ी और अधिक बढ़ गई। जाटों और मरहठों की शक्ति बढ़ गई। १७४८ में मुहम्मद शाह की मृत्यु हो गई। इसके बाद उसको कोई उत्तराधिकारी आगरे में रहने के लिये आया। १७५७ में अहमद शाह दुर्रानी ने मथुरा को लूटा और आगरे की ओर बढ़ा लेकिन उसने किले का नहीं लिया। १७५८ में मरहठे आगरे और दिल्ली के पड़ोस में पहुँच गये। पानीपत की हार के बाद जब मराहठा सूबेदार खज़ाने को लेकर आगरे को भागा तब सूरजमल ने यह खज़ाना छीन लिया और किलेबन्दी पर खर्च किया। आगे चलकर सूरजमल ने आगरा का किला ले लिया और जिले के बड़े भाग पर राज्य जमा लिया। १७६५ में उसने भदौरिया राजा से बाह भी छीन लिया। रुहेलों से तंग आकर दिल्ली के सम्राट ने मरहठों से सहायता मांगी। १७८४ में महादा जी सिन्धिया ने आगरे के किले पर अपना अधिकार कर लिया। सिन्धिया ने दिल्ली में भी अपना प्रभाव बढ़ा लिया। गुलाम कादिर ने बादशाह की आंखें निकलवा लीं। सिन्धिया ने बदले में उसके नाक, कान और जीभ कटवा कर उसे फाँसी दी। १७९४ में महादा जी की मृत्यु के बाद उसका बेटा दौलतराव गद्दी पर बैठा। १८०२ ईस्वी में ईस्ट इंडिया कम्पिनी और मरहठों में लड़ाई छिड़ गई। लार्ड लेक कानपुर से एक बड़ी सेना लेकर कन्नौज, और मैनपुरी के मार्ग से आगरे की ओर बढ़ा आगरे की रक्षा का भार सिन्ध के फ्रांसीसी सेनापतियों के हाथ में था। एक फ्रांसीसी सेनापति (पेटन) सिन्धिया को छोड़कर अंग्रेजों से मिल गया। इस विश्वासघात से चिढ़कर मरहठों ने दूसरे योरुपीय सेनापतियों को कैद कर लिया। लेकिन जल्दी में वे आगरे की रक्षा का ठीक प्रबन्ध न कर सके। मरहठे अन्त तक वीरता से लड़े। लेकिन वे किले को न बचा सके। मरहठों का २२ लाख रुपये का कोष पेटन ने अपने लिये लेना चाहा। लेकिन वह ईस्ट इंडिया कम्पिनी को मिला। १८०३ को सन्धि से आगरा जिला अंग्रेजी कम्पिनी के हाथ आया।

१८०४ में होलकर से लड़ाई छिड़ गई। मरहठों ने कर्नल मानसून को बुरी तरह से हराया। उसकी फौज में भगदड़ मच गई। उसे आगरा बड़ी कठिनाई से मिला। होलकर ने अंग्रेजी फौज से मथुरा खाली करवा लिया। मरहठे घुड़सवार पिन्हाट तक द्वाब में छापा मारने लगे। लेकिन लार्ड लेक ने फिर एक बड़ी सेना इकट्ठी की। फर्रुखाबाद के पास जब मरहठों के पास केवल दो दिन का भोजन रह गया था। लार्ड लेक ने होलकर पर छापा मारा। यहां होलकर की भारी हार

हुई। वह मैनपुरी, एटा, हाथरस और मथुरा के मार्ग से आगरे की ओर आया और पञ्जाब को चला आया। उस समय से गदर तक आगरा जिले में शान्ति रही।

११ मई १८५७ को गदर की खबर मथुरा और आगरा में पहुँची। इस समय किले में अधिकतर हिन्दुस्तानी सिपाही थे। १३ मई को और योरुपीय सिपाही किले में भेज दिये गये और हिन्दुस्तानी सिपाही किले से बाहर कर दिये गये। गोरे और अधगोरे (यूरेशियन) लोग भरती किये गये वे सिविल लाइन में गश्त लगाने लगे। किले की रक्षा की ओर विशेष ध्यान दिया गया। कुछ सेना सिन्धिया महाराज ने भेज दी। कुछ सेना दूसरे देशी राज्यों से मंगाली गई। पुलिस के सिपाही भी बढ़ा लिये गये। ३० मई को दो छोटी देशी सेनायें मथुरा से ६ लाख रु० का खजाना लाने के लिये भेजी गई। मथुरा पहुँचकर इन्होंने विद्रोह का झंडा उठाया और खजाना लेकर उन्होंने दिल्ली की ओर प्रस्थान किया। दूसरे दिन आगरे में परेड के मैदान में देशी सिपाहियों की ओर तोपों और अँग्रेजी सिपाहियों की बन्दूकों के मुंह कर दिये गये और इस प्रकार डराकर उनसे हथियार रखवा लिये गये। कुछ निहत्थे सिपाही अपने अपने घर चले गये। कुछ दिल्ली पहुँच कर दूसरे विद्रोहियों से जा मिले। इससे पड़ोस में विद्रोह की आग भड़क उठी। ३ जून को कानपुर से खबर का आना जाना बन्द हो गया। इसीदिन नीमच के सिपाही बिगड़ गये। ३ जून को नीमच में ६ जून को झांसी में १० जून को नौगांव में १४ जून को ग्वालियर में और १ जुलाई को इन्दौर में विद्रोह हुआ। पीड़ित योरूपीय जान लेकर आगरे में आने लगे। १२ जून को आगरा शहर और जिले में मार्शलला (फौजी कानून) घोषित किया गया। २ जुलाई को नीमच के सिपाहियों ने फतेहपुर सीकरी पर अधिकार कर लिया। २७ जून को सिविल लाइन खाली करके सभी योरूपीय किले में चले आये। लेफ्टीनेंट गवर्नर भी किले में आगया। जेल के योरुपीय सिपाहियों का पहरा देने का काम ७० सिक्ख कैदियों को सौंपा गया। वे मुक्त कर दिये गये और सिपाही बना दिये गये। नावों का पुल तोड़ दिया गया। नावें किले के पास लाई गई। कोटा के सिपाहियों ने जब विद्रोह किया तो उनके ऊंट और बन्दूकें छीन ली गई। लेकिन शाहगंज की लड़ाई में विद्रोहियों की भारी जीत हुई। इससे किले में डर फैल गया। वहां ३५०० गोरे और २३ देशी ईसाई थे। विद्रोही आगरे से दिल्ली चले गये थे। फिर भी ३ दिन तक किसी ने किले से बाहर आने का साहस न किया। धीरे धीरे धौलपुर और दूसरे स्थानों से सहायता आगई। इस से शहर और जिले में थाने स्थापित किये गये। सेना की दो टोलियों ने गश्त लगाये। इस से कुछ समय में जिले में शान्ति स्थापित हो गई। १८५८ में लेफ्टनेन्ट गवर्नर के रहने का स्थान आगरे से हट कर इलाहाबाद में हो गया। १८६८ में हाईकोर्ट भी इलाहाबाद चला आया।

अछनेरा कस्बा आगरे से भरतपुर को जानेवाली पक्की सड़क पर आगरे से १७ मील दूर है। यहां से बाम्बे बड़ौदा सेन्ट्रल इण्डिया रेलवे की शाखा लाइन कानपुर को और प्रधान लाइन अजमेर को जाती है। यहां थाना, डाकखाना और स्कूल है। सप्ताह में एक बार बाजार लगता है। यहां चैत में देवी का मेला लगता है। कन्सलीला और फूल के उत्सव होते हैं। कहते हैं दिल्ली के राजा अनंगपाल के बेटे अचल राजा ने इसे बसाया था।

आगरा शहर यमुना के दाहिने किनारे पर रेल द्वारा कलकत्ते से ८४३ मील और बम्बई से ८३९ मील दूर है। यहां से उत्तर में अलीगढ़, पूर्व में फीरोजाबाद, मैनपुरी, दक्षिण में धौलपुर-ग्वालियर दक्षिण-पश्चिम में भरतपुर, पश्चिम में मथुरा को पक्की सड़कें गई हैं। ईस्ट इंडियन रेलवे की शाखा लाइन टूंडला से आती है और यमुना पुल के पास फोर्ट स्टेशन में समाप्त हो जाती है। यहां से मीटर गेज लाइन पश्चिम की ओर छावनी स्टेशन होती हुई अछनेरा को जाती है। जी० आई० पी० की लाइन इसके समानान्तर चलती है और दक्षिण की ओर धौलपुर को जाती है। छावनी स्टेशन से उत्तर की ओर खवासपुरा या आगरा रोड जंकशन से राजा की मंडी होती हुई सिकन्दरा और मथुरा को जाती है। यमुना के ऊपर जो पुल है उसके ऊपरी भाग पर

रेल जाती है। नीचे से सड़क जाती है। आगरा शहर का बड़ा भाग यमुना के दाहिने किनारे पर किले से ऊपर की ओर स्थित है। दक्षिण ओर छावनी है। कुछ भाग माल (गुड्स) स्टेशन के पास यमुना के दूसरे किनारे पर बसा है। अधिक आगे पूर्व की ओर जग प्रसिद्ध ताजमहल है। छावनी के उत्तर पश्चिम में सिवल लाइन है। प्रधान शहर यमुना और सिविल लाइन के बीच में स्थित है। कुछ मुहल्ले पश्चिमी की ओर अलग अलग बसे हैं। आगरा शहर के अधिकांश घर पत्थर के बने हैं। लेकिन गलियां तंग ऊंची नीची और टेढ़ी हैं। पुराने समय में आगरा शहर एक चार दीवारी से घिरा हुआ था। इसमें प्रवेश करने के लिये १६ द्वार थे। कहते हैं चार दीवारी के भीतर आगरा शहर का क्षेत्रफल ११ वर्ग मील था।

सिविल लाइन छावनी के दक्षिण में आरम्भ होती है। सिविल लाइन में ही आगरा कालेज होस्टल मेडिकल कालेज और अस्पताल हैं। यहीं नागरी प्रचारिणी सभा आगरा पुस्तकालय और वाचनालय है। तहसील की इमारत में पहले टकसाल थी जो १८२४ ईस्वी में तोड़ दी गई। कुछ दूरी पर आगरे के आर्किबिशप का बंगला और पादरी टोला है।

आगरा शहर २१२ मुहल्लों में बटा हुआ है। छुंगा मोदी दरवाजे के पश्चिम में जहां इस समय महाराजा जैपुर की कोठी है वहां पहले प्रान्त के लाट साहब (लेफ्टेनेंट गवर्नर) रहते थे। आलम गंज मुहल्ले में औरंगजेब की बनवाई हुई मस्जिद थी। इसे उसने १६७१ ईस्वी में बनवाया था। बाद को यह इमारत फिर से बनी और एक दफ़्तर के काम आने लगी। लोहामंडी लोहे के व्यापार के लिये प्रसिद्ध है। यहीं थाना और मस्जिद मुखन्निसान (हिजड़ा की मस्जिद) है। कहते हैं लाल पत्थर की यह मस्जिद सम्राट अकबर ने एक हिजड़े की स्मृति में बनवाई थी जिसकी प्रार्थना से एक बार अकाल के समय वर्षा हुई थी।

नाई की मंडी के दक्षिण में दरबार शाह जी का मुहल्ला है। यहां एक दरगाह और मस्जिद है। कहते हैं एक बार शेरशाह ने अपने ऊँट मस्जिद में बँधवाये थे। इससे रुष्ट होकर फकीर ने श्राप दिया। इससे मस्जिद पड़ोस की भूमि से कुछ नीचे धंस गई।

शहर के दक्षिण में छावनी है। इसकी दक्षिणी सीमा ढाई मील लम्बी है। पश्चिमी सीमा लगभग ४ मील लम्बी है। कम्पिनी बाग के पड़ोस में ग्वालियर महाराज का भवन है। ऐशबाग या इशरत बाग में पहले दाराशिकोह का निवास था। इस समय यहां फौजी अफसरों का भोजनालय है। कुछ दक्षिण की ओर दारा के लड़के सुलेमान शिकोह की हवेली है। पास ही रंग महल है जिस पर इस समय अलवर राज्य का अधिकार है। छावनी की उत्तरी सीमा के पास रेलवे लाइन के आगे जामे मस्जिद है। यह किला के उत्तरी पश्चिमी कोने के सामने है। इसे शाहजहां की लड़की जहांआरा ने बनवाया था। शाहजहां की कैद के समय में यह अपने पिता की सेवा करती थी। १६४४ में इसका बनना आरम्भ हुआ। यह पांच वर्ष में ५ लाख रुपये की लागत से बनकर तयार हुई। यह लाल पत्थर की बनी है इसका फर्श पड़ोस की भूमि से ११ फुट ऊँचा है। ऊपर चढ़ने के लिये सीढ़ियां बनी हैं। इसका मदर दरवाजा बड़ा सुन्दर था। लेकिन गदर के समय यह उड़ा दिया गया। अगर इस ओर से किले पर हमला होता तो पूरी मस्जिद को उड़ाने के लिये नीचे बारूद भर दी गई थी। मस्जिद १३० फुट लम्बी १०० फुट चौड़ी है। इसके द्वार का महराब ४० फुट से कुछ अधिक ऊँचा है। यह मुगल गृह निर्माण कला का सुन्दर नमूना है। गदर के समय १८५८ तक यह बंद रही। फिर यह लौटा दी गई।

आगरे का किला रेलवे के दक्षिण में यमुना के किनारे पर स्थित है। इसकी लम्बाई आध मील है। दूसरी ओर इसका घेरा डेढ़ मील है। अकबर के आदेश से १५६७ में इसका बनना आरम्भ हुआ। इसको पूरा होने में ८ वर्ष लगे। इससे पहले इसी स्थान पर बादलगढ़ का पुराना किला था। चारों ओर से लाल पत्थर की दुहरी दीवार से घिरा है। बाहरी दीवार ४० फुट ऊँची है। भीतरी दीवार ३० फुट और अधिक ऊँची उठी हुई है। पूर्व (यमुना के किनारे) की ओर बाहरी दीवार कुछ कम ऊँची है। इसकी मजबूती के लिये पत्थरों का पुश्टाना लगा है। दीवारों पर थोड़ी थोड़ी दूरी पर बुर्ज बने हैं। इसकी बाहरी

खाई लुप्त हो गई। भीतरी खाई ३० फुट चौड़ी है। इसमें भीतर जाने के लिये ३ दरवाजे हैं। उत्तर-पश्चिम की ओर दिल्ली दरवाजा है। दक्षिणी कोने पर अमरसिंह (सरदार अमरसिंह शाहजहां के समय में मरवा डाला गया था।) दरवाजा है। तीसरा दरवाजा यमुना की ओर है। दिल्ली दरवाजे के पास ही किले के भीतर मोती मस्जिद है। उत्तरी कोने पर बारूद खाना है जहां सर्व साधारण को जाने की आज्ञा नहीं है। मोती मस्जिद को शाहजहां ने ३ लाख के खर्च से (१६४८-१६५५) में बनवाया था। इसमें संगमरमर का काम है और बड़ी सुन्दर है। मोती मस्जिद से पश्चिम को ओर महल है। पास ही मीना बाजार है जहां ऊंचे घराने की स्त्रियां अपना अपना सामान अकबर और उसकी रानियों के हाथ बेचती थीं। अधिक दक्षिण की ओर दीवान-खास है। यह ५०० फुट लम्बा और ३७० फुट चौड़ा है। इस में दरबारी लोगों की ही पहुँच होती थी पूर्व की ओर दीवान-आम है। यह तीन ओर से खुला हुआ है। फर्श और छत लाल बलुआ पत्थर की बनी है। संगमरमर के बने हुये सफेद खम्भों की तीन पंक्तियों पर सधी हुई है। सिंहासन के सामने सफेद संगमरमर की बड़ी चौकी है। सिंहासन के दाहिने और बायें ओर पत्थर की जाली वाली खिड़कियां हैं जहां से महल की स्त्रियां सभा को देख सकती थीं। पास ही अकेले पत्थर की गढ़ी हुई २५ फुट घेर वाली ५ फुट ऊंची नाद है जिसमें जहाँगीर स्नान करता था। इसके एक ओर नगीना मस्जिद है। पूर्व की ओर मच्छी भवन है। इसके बीच वाले छोटे ताल में मछलियाँ रहती थीं। मच्छी भवन के दक्षिण में अंगूरी बाग है। पूर्व की ओर खास महल या आरामगाह है।

अंगूरी बाग के उत्तरी-पूर्वी किनारे पर शीशमहल है। इसमें छोटे छोटे शीशे लगे हैं। समन बुर्ज में शाहजहां ने कैद के दिन बिताये थे शीशमहल और समन बुर्ज के बीच में हम्माम या स्नानागार है। १८१३-१८२० में लार्ड हेस्टिंग्स ने सर्वोत्तम स्नाना-गार को उखड़वाकर इंगलैंड भिजवा दिया। इस लूट से इस स्थान की सुन्दरता सदा के लिये नष्ट हो गई। लार्ड विलियम बैंटिंक ने (१८२८-३५) बहुत सा बढ़िया कामदार संगमरमर पत्थर नीलाम कर दिया। एक ओर सोमनाथ के फाटक रक्खे हुये हैं यह १२ फुट ऊंचे ९ फुट चौड़े हैं। इन पर बढ़िया काम है। यह देवदारू के बने हैं। १८४२ में यह महमूद गज-नवी के मकबरे से लाये गये। महमूद जो सोमनाथ के फाटक ले गया था वे चन्दन के बने थे। नीचे बावली और कुछ तहखाने हैं। एक बरामदे में हिन्दू मन्दिर है। जिसे भरतपुर के राजा ने अठारहवीं सदी में अपने दस वर्ष के शाशनकाल में बनवाया था।

अंगूरी बाग के दक्षिण में जहांगीरी महल है। यह (पूर्व-पश्चिम) २६० लम्बा और (उत्तर-दक्षिण) २४९ फुट चौड़ा है। यह और महलों से पुराना है और हिन्दू ढङ्ग से बना है। कहते हैं जोधाबाई यहीं रहती थीं। इसमें एक छोटा मन्दिर भी था जिसे असहिष्णु औरंगजेब ने उखड़वा डाला।

ताजमहल या ताज बीबी का रौजा यमुना के दाहिने किनारे पर किले से डेढ़ मील की दूरी पर बना है। यहीं शाहजहां की स्त्री अर्जुमन्दबानू या मुमताज महल की कब्र है। उसका बाप नूरजहां का भाई था। इसके बनवाने में ५ करोड़ रुपये खर्च हुये। से संगमरमर मकराना (जैपुर) लाया गया। हीरा जवाहिरात और सजावट का दूसरा सामान संसार के सभी भागों से आया। ताजमहल का चबूतरा ३१३ फुट वर्ग है और संगमरमर का बना है। चार कोनों पर संगमरमर की १६२½ फुट ऊँची मीनारें बनी हैं। बीच में १८६ फुट लम्बा चौड़ा मकबरा है। बीच में चारों ओर ६०½ फुट ऊँचे महराब हैं। प्रधान गुम्बद का व्यास ५८ फुट है। इसकी चोटी फर्श से २४३½ फुट ऊँची है। इसके ऊपर सुनहली कलंगी ३० फुट ऊँची है। नीचे अष्ट भुज कमरा है। नीचे कब्रों के ऊपर बढ़िया काम है। पहले इसके दरवाजे चांदी के बने थे। कहते हैं भरतपुर के जाट इन्हें उठा ले गये। अपनी सुन्दरता और कारीगरी के लिये ताजमहल संसार के सात महान आश्चर्यों में से एक है।

ताज के दक्षिण में ताजगञ्ज मुहल्ला है। यहां कुछ मकबरे, महावत खाँ का बाग और भरतपुर महाराज की कोठी है।

शहर के पास छावनी की पश्चिमी से मिली हुई

ईदगाह है। कहते हैं शाहजहां ने इसे ४० दिन में पूरा करवाया। यह १६० फुट लम्बी और ४० फुट चौड़ी है।

अधिक पूर्व की ओर यमुना के किनारे राजबाड़ा है। यहां मुगल दरबार में सम्मिलित होने वाले राजपूत सरदार रहते थे यहीं राजा जसवन्त सिंह की छतरी है। १६७७ ईस्वी में काबुल में उसकी मृत्यु हुई थी। यह लाल पत्थर का एक वर्गाकार भवन है। और चार दीवारी से घिरे हुये बगीचे के बीच में स्थित है। आगरा बहुत समय तक मुगल राजाओं की राजधानी रहा। यहां राज दरबार से सहायता मिलने के कारण तरह तरह की दस्तकारियां फली फूलीं। पर पांच बातों में आगरा इतना प्रसिद्ध हुआ कि इनके बारे में एक कहावत चल पड़ी। वह कहावत यह है:—

दर, दरी, दरिया, दरियाई, दालदेव।

यहां के दर यानी दरवाजे या मकान, दरी दरिया या नदी, दरियाई एक प्रकार का रेशम और दाल देव सब कहीं प्रसिद्ध हो गये। आगरे में पत्थर का काम भी प्रसिद्ध है। संगमर के बने हुये ताजमहल के नमूने, खिलौने और कलैंडर दूर दूर तक जाते हैं। यहां गोटा भी अच्छा बनता है। कुछ लोग टोपी बनाते हैं।

इस समय आगरे में चमड़े का काम बहुत उन्नत कर गया है। चमड़े के काम के लिये कानपुर के बाद दूसरा स्थान आगरे का ही है। दयाल बाग में राधा स्वामी उपनिवेश में जूते, फाउनटेन आदि कई प्रकार की चीजें वैज्ञानिक ढंग से बनती है।

आगरा इस प्रान्त में शिक्षा का एक बड़ा केन्द्र है। यहां विश्वविद्यालय है जिसके सम्बन्ध में आगरा कालेज में इन्टर तक पढ़ाई होती है। यहीं ट्रेनिंग कालेज और सेन्टजान्स कालेज गवर्नमेंट कालेज में बी० ए० और एम० ए० परीक्षा तक शिक्षा होती है। राजपूत कालेज गवर्नमेंट कालेज और राधा स्वामी कालेज में इण्टर तक पढ़ाई होती है। यहीं ट्रेनिंग कालेज, नार्मल स्कूल और मेडिकल कालेज हैं। हाई स्कूल कई हैं। पागलों के सुधार के लिये भी एक अस्पताल है।

अहरान गांव आगरे से ३१ मील उत्तर-पूर्व की ओर है। यहां थाना डाकखाना, प्राइमरी स्कूल और संस्कृत पाठशाला है। सप्ताह में दो बार बाजार लगता है। अकोलागांव खारी नदी के उत्तरी किनारे पर आगरे से १२ मील दूर है। मरहठों के शासन काल में यह गांव एक जोशी (ब्राह्मण) को माफी में मिला था। यहाँ मिट्टी के बर्तन बहुत बनते हैं। बाजार भी लगता है। यहाँ एक प्राइमरी स्कूल है।

बाह इसी नाम की तहसील का केन्द्र स्थान है। यह आगरे से इटावे को जाने वाली पक्की सड़क पर आगरे से ४५ मील और बटेश्वर से ६ मील दूर है। यहां से यमुना तट के विक्रमपुर घाट और चम्बल तट के कैंजरा घाट को सड़कें गइ हैं। कहते हैं भदावा के राजा कल्याण सिंह ने इसे सत्रहवीं सदी में बसाया था। राजा बख्तसिंह ने १७५८ में यहाँ महादेव का एक मन्दिर बनवाया जो अब तक खड़ा है। १७६८ में इसे जाटों ने छीन लिया। १७८४ में यहाँ मरहठों का अधिकार हो गया। बाह की चार दीवारी में ४ दरवाजे हैं।

नगर के बीच में सोमवार और बृहस्पतिवार को बाजार लगता है। यहां से ग्वालियर और सिरसागंज (मैनपुरी) को माल जाता है। यहाँ तहसील, थाना, डाकखाना और मिडिल स्कूल है। यहाँ क्वार में रामलीला और चैत में बल्देवजी का मेला होता है।

बारहान गाँव आगरे से २२ मील उत्तर पूर्व की ओर और इतिमादपुर तहसील से १२ मील उत्तर की ओर है। पास ही ईस्टइंडियन रेलवे का स्टेशन है। यहाँ डाकखाना प्राइमरी स्कूल और बाजार है। तम्बाकू की बिक्री बहुत होती है। कहते हैं इसके पड़ोस में ढाकरा राजपूतों के हाथ में १२ गाँव थे।

इसी से इस गाँव का यह नाम पड़ा। गदर से कुछ पहले यह अवाके राजा के अधिकार में चला गया। यहाँ भट्टी मुसलमानों के बनवाये हुये किले खंडहर हैं।

बटेश्वर का प्राचीन गाँव यमुना के दाहिने किनारे पर आगरे से ४१ मील दक्षिण-पूर्व की ओर है। यह बाह से ६ मील उत्तर पश्चिम की ओर है। यहां से एक सड़क यमुना को पार करके शिकोहाबाद को गई है। यहां पुराने खेर में पुराने समय की ईंटे सिक्के और दूसरी चीजें मिलती हैं। १६४६ ई० में भदावर के राजा बदनसिंह ने यहाँ बटेश्वरनाथ (महादेव) का मन्दिर बनवाया। यमुना के किनारे

और भी कई मन्दिर बन गये। पड़ोस में राजा के किले और महल के खंडहर हैं। यहां कार्तिकी पूर्णिमा को बड़ा मेला लगता है। यह तीन सप्ताह तक रहता है। यहां पशु घोड़े ऊँट आदि और दूसरी चीजें दूर दूर से बिकने आती हैं।

चन्दवर का प्राचीन गाँव यमुना के बायें किनारे पर फीरोज़ाबाद से ३ मील उत्तर-पश्चिम की ओर है। यमुना के ऊँचे किनारे पर चौहानों का किला था। इसने कई बार दिल्ली के बादशाहों से लोहा लिया। इसके पड़ोस में मीलों तक मन्दिर आदि के खंडहर हैं। गांव से उत्तर की ओर अकबर के समकालीन शाह सूफ़ी नाम का एक फ़कीर का मकबरा है। यहां वर्ष में एक बार मेला लगता है।

धीरपुरा इतमादपुर तहसील के उत्तरी-पूर्वी कोने पर टूंडला स्टेशन से ६ मील दूर है। दक्षिण में यह यमुना तक फैला हुआ है। इसके पूर्व में झिनी नाला है। यमुना में गिरने वाले छोटे छोटे नालों ने गाँव को कई भागों में बाँट दिया है। कहते हैं धीरसिंह नामी एक चौहान राजपूत ने इसे बसाया था। विद्रोह में भाग लेने के कारण यह गांव १८५८ में जब्त कर लिया गया था। गांव की प्रधान उपज तम्बाकू है। चैत के महीने में यहां दंगल होता है। पड़ोस से लगभग १०,००० दर्शक इकट्ठे होते हैं।

दूरा गांव किरावली तहसील के दक्षिण में फतेहपुर सीकरी से ५ मील दक्षिण-पूर्व की ओर है। गांव में बाजार लगता है। चैत के महीने में फूल डोल का मेला होता है। यहां के जाट भरतपुर राजवंश के सम्बन्धी हैं। गाँव में होकर फतेहपुर सीकरी-नहर का पुराना राजवाहा जाता है।

फतेहाबाद इसी नाम की तहसील का केन्द्र स्थान है। यहां होकर आगरे से इटावे को पक्की सड़क जाती है। एक सड़क पश्चिम की ओर शम्साबाद को और दूसरी सड़क उत्तर की ओर फीरोजाबाद को जाती है। १६५८ में दाराशिकोह पर विजय पाने के बाद औरंगजेब ने इसका नाम जफराबाद से बदल कर फतेहाबाद रख दिया। यहां उसने एक मस्जिद और सराय बनवाई। इसके दक्षिण की ओर फीलखाना (हाथियों के आराम के लिये बाग और ताल) बनवाया। मरहठा सरदार रावहूंडे ने यहां किलाबन्दी की। यहां तहसील, थाना, डाकखाना, मिडिल स्कूल और फारसी का मक्तब है। अनाज की बिक्री रोज होती है। रविवार को पशु बिकते हैं। सोमवार के बाजार में चमड़ा, जूता और दूसरा सामान बिकता है। भादों में श्री बिहारी का मेला लगता है। सम्बत १८१० में मरहठों ने यहां बिहारी और महादेव के मन्दिर बनवाये थे।

फतेहपुर सीकरी कस्बा आगरे से २३ मील दक्षिण-पश्चिम की ओर है। आगरे से पक्की सड़क सिंहकौर और किरावली होती हुई खारी नदी को पुल द्वारा पार करके यहां आती है। कच्ची सड़क उत्तर में भरतपुर और अछनेरा को ओर उत्तर-पूर्व में खैरागढ़ को गई है। वर्तमान फतेहपुर सीकरी कस्बा है अकबर के महलों और पुराने खंडहरों के दक्षिण-पश्चिम में एक लाल पहाड़ी टीले के ढाल पर स्थित है। अधिकतर घर समतल भूमि पर पत्थर के बने हैं जो यहां बहुत सस्ता है। यहां थाना, डाकखाना और मिडिल स्कूल है। शनिवार को बाजार लगता है। यहां चक्की और सूती कालीनें बनती हैं।

सीकरी गांव को चौदहवीं सदी में धौलपुर से आये हुये राजपूतों ने बसाया था। १५२७ में बाबर ने यहां पड़ाव डाला। खनवा या कनवा गांव के पास (जो यहां से १० मील की दूरी पर भरतपुर राज्य में स्थित है।) बाबर ने राणा संग्रामसिंह की सेना पर विजय पाई। गुजरात में विजय पाने के बाद अकबर ने इसका नाम फतेहपुर सीकरी रक्खा। यहां शेख सलीम चिश्ती नाम का एक प्रसिद्ध मुसलमान फकीर रहता था। १५६९ में अकबर ने फकीर के दर्शन किये इस समय तक अकबर के कोई लड़का नहीं हुआ था। फकीर के आदेश से अकबर ने अपनी रानी को यहां रहने के लिये भेज दिया। दूसरे वर्ष शाहजादा सलीम (जहाँगीर) पैदा हुआ। फकीर के प्रति कृतज्ञता प्रगट करने के लिये ही अकबर ने अपने पुत्र का नाम सलीम रक्खा। पुत्र के पैदा होने पर अकबर इतना प्रसन्न हुआ कि उसने सलीम के जन्म स्थान पर महल बने और नया शहर बसाने का निश्चय कर लिया। लाहौर जाने के समय तक अकबर यहीं रहा। पंजाब से लौटने पर वह आगरे में रहने लगा और फतेहपुर सीकरी का नया शहर उजड़ गया। १७२० में मुहम्मद शाह कुछ समय तक

यहां रहा। यहीं जाटों और मरहठों ने अपने शासन काल में तहसील का केन्द्र बनाया था। कुछ समय तक शहर में विद्रोहियों का यहां प्रभुत्व रहा।

अकबर की फतेहपुर सीकरी में इस समय का सीकरी भी शामिल थी। इसका घेरा छः मील था। यह तीन ओर पत्थर की ऊंची दीवारों से घिरी थी। भीतर की दीवार ६ फुट चौड़ी और ३२ फुट ऊंची थी। इससे एकदम जुड़ी हुई बाहरी दीवार छः फुट अधिक ऊंची थी। इसमें इस प्रकार छेद बने थे कि भीतर से बाहर की ओर सिपाही गोली छोड़ सकते थे। चौथी (उत्तर-पश्चिम की) ओर अकबर की नगरी खुली हुई थी। इधर दीवार न थी। इस ओर घाटी के आर पार बन्दरौली और फतेहपुर सीकरी की पहाड़ियों के बीच में बांध बनवा कर एक कृत्रिम झील बनवायी थी। दीवारों में ९ दरवाजे थे। दिल्ली-दरवाजा सीकरी और नगर गांवों के बीच में था। लाल दरवाजे के आगे आगरा दरवाजा प्रधान सड़क पर था। बीरबल दरवाजा पूर्वी कोने पर था। दक्षिण-पूर्व की ओर चन्दनपाल और ग्वालियर दरवाजे थे। टेहरा दरवाजा दक्षिण-पश्चिम की ओर था। यहां से नसीराबाद को सड़क जाती है। चोर दरवाजा पहाड़ों की चोटी पर था। अजमेर दरवाजा पश्चिमी ढाल पर था। आगरा दरवाजा बाहर की ओर ५९ फुट और भीतर की ओर ४० फुट ऊंचा था। यह ४० फुट गहरा (मोटा) और ४० फुट चौड़ा था। छत पर जाने के लिये दोनों ओर जीने बने थे। इस ढंग के दूसरे दरवाजे थे।

आगरा दरवाजे से प्रधान सड़क दक्षिण-पश्चिम की ओर पहाड़ी के किनारे किनारे जाती है। इससे दाहिनी ओर को जो सड़क फटती है वह अकबर के महलों को गई है। एक ओर उजड़ी हुई सराय है। इसके आगे बाजार दाहिनी ओर पहाड़ी पर बारादरी है। यहां अमीर लोग रहते थे। पास ही नौबत खाना (संगीत-गृह) है। नौबत खाने से पहाड़ी के ऊपर को सड़क जाती है। यहां महल के भवन हैं। पहले टकसाल पड़ती है। अकबर के समय में सिक्के यहीं ढलते थे। इसके सामने खजाना है। इसके आगे दीवान-आम है जो ३६६½ फुट लम्बा और १८१ फुट चौड़ा है। बाहर को ओर दक्षिण-पश्चिम के कोने पर विशाल हम्माम (स्नानागार) दीवान आम के पीछे पश्चिम की ओर दीवान खास है। यह ७५६ फुट लम्बे और २७२ फुट चौड़े हाते के भीतर स्थित है। यहां पच्चीसी खेल खेलने के खाने बने हैं। पचीसी के आगे उत्तरी-पश्चिमी कोने पर हिन्दू योगी के रहने का कमरा है। इसके पश्चिम की ओर आंख मिचौनी और जनाना है। पचीसी के दक्षिण में खास महल है। खास महल के उत्तरी-पूर्वी कोने पर तुर्की सुल्ताना का कमरा है। बीच में एक तालाब है। तालाब में एक चबूतरा है। यहां तक पहुँचने के लिये चार मार्ग बने हैं। दक्षिण की ओर अकबर का ख्वाबगाह (शयनागार) है। यह कमरा भिन्न भिन्न रंगों से रंगा हुआ है। इसके दक्षिण में दफ्तरखाना है। कुछ आगे मरियम का भवन है। अस्पताल के दक्षिण में पंच महल (पंच मंजिला महल) है। पंच-महल के दक्षिण में सुनहरा मकान या मरियम का भवन है। दक्षिणी-पश्चिमी भाग में जोधबाई का महल है जो जहांगीर की मां थी। एक दरवाजे से हवा महल को रास्ता गया है। इसके नीचे मरियम का बगीचा है। जोधबाई महल की पश्चिमी दीवार से मिले हुये ऊँटों के अस्पताल हैं। इनके आगे ऊंटों का अस्पताल है। अस्तबल के उत्तर में बीरबल का शानदार भवन है। बीरबल शाही कवि, हंसमुख, हाजिर जवाब और वीर सेनापति थे। वे सदा अकबर के साथ रहते थे और उन्हें प्रसन्न रखते थे। बीरबल के घर के पास ही छोटी नगीना मस्जिद थी। यहां महल की महिलायें जाती थीं। कुछ आगे जलागार था। जहां से महल में पानी जाता था। पास ही हाथी पाल है। जहां द्वार पर दो विशाल हाथी बने हुये हैं।

सराय के उत्तरी कोने के सामने हिरन मीनार है। यह १० फुट ऊँचे और ७२ फुट वर्ग चबूतरे पर बनी हुई है। इस चबूतरे में एक दूसरा अष्टभुज चबूतरा है यह बड़े चबूतरे से ४ फुट ऊँचा है। इसका व्यास २८ फुट है। इसके ऊपर ६६ फुट ऊंचा बुर्ज बना है। पहले १३ फुट की ऊंचाई तक यह अष्ट भुज है। इसके ऊपर २७½ फुट तक यह गोल है। इसके ऊपर यह पतला और नुकीला हो गया है। गोल भाग में इसमें नकली हाथी-दांत

( थोड़ी थोड़ी दूर पर ) गड़े हैं। इससे यह बड़ा विलक्षण मालूम होता है। ऊपरी भाग में जालीदार पत्थर का घेर है। चोटी तक चढ़ने के लिये भीतर से जाना है। कहते हैं अकबर यहीं बैठकर हिरण का शिकार किया करता था। इसी से इसका नाम हिरण मीनार पड़ा। यहीं बरामदे में बैठकर महल की स्त्रियां दङ्गल देखा करती थीं। महल के दक्षिण-पश्चिम में विशाल जामा मस्जिद और शेखसलीम चिश्ती का मकबरा है। जामा मस्जिद मक्का की मस्जिद के ढङ्ग पर बनी है और भारतवर्ष की सर्वोत्तम इमारतों में से एक है। खम्भे हिन्दू ढङ्ग से बने हैं। मस्जिद के दक्षिण में १३४ फुट ऊंचा बुलन्द दरवाजा है। यह ४२ फुट ऊँचे फर्श पर बना है। इसे अकबर ने दक्षिण-विजय से लौटने पर १६०१ में बनवाया था। यह न केवल भारतवर्ष वरन् संसार का सबसे बड़ा दरवाजा है यह मस्जिद से भी अधिक सुन्दर है। और इससे अधिक सुन्दर है। और इससे अधिक सुन्दर शेख सलीम चिश्ती का मकबरा है।

बुलन्द दरवाजेके बाहर कुछ दूरी पर पश्चिम की ओर ११ गज व्यास वाली बाउली है।

शेखसलीम चिश्ती का मकबरा कामदार संगमरमर के चबूतरे के ऊपर बना है। यह चबूतरा १ गज ऊंचा और १६ गज लम्बा १ गज चौड़ा है। मकबरे के चारों ओर १२३ फुट ऊंचा बरामदा है। मकबरा बढ़िया कामदार संगमरमर के घेरे से घिरा है। मकबरे के ऊपर तांबे और मोतीकी सीप से जड़ी हुई कामदार लकड़ी की छतरी है। ऊपर मकबरा है। नीचे कब्र है। मकबरे का फर्श पर कई रंग के संगमरमर जड़े हैं। इनमें तरह तरह का बढ़िया काम है। यहां दूर दूरसे मुसलमान और हिन्दू यात्री प्रतिवर्ष दर्शन करने आते हैं।

मस्जिद के उत्तर-पश्चिम में फैजी का भवन है। इनके अतिरिक्त यहां कई छोटे छोटे मकबरे हैं।

फीरोजाबाद इसी नामकी तहसील का केन्द्र स्थान है। यह आगरे से २६ मील पूर्व की ओर प्रान्तीय सड़क पर स्थित है। यहां से एक सड़क उत्तर की ओर जलेसर को और उत्तर-पूर्व को ओर कोटला को गई है। यह ईस्टइंडियन रेलवे की प्रधान लाइन का एक स्टेशन है। आगरे के बाद जिले में दूसरा स्थान फीरोजाबाद का है। कहते हैं जब राजा टोडरमल गया की तीर्थ यात्रा करके लौट रहा था तब वह यहां पड़ोस वाले एक गांव में ठहरा। गांव वालों ने उसका तिरस्कार किया।

इस पर अकबर ने फीरोजख्वाजा नामी एक हिजड़े को आदेश दिया कि वह इस गांव को नष्ट करके दूसरा गांव बसावे। इस नये गांव का नाम हिजड़े की स्मृति में फीरोजाबाद रक्खा गया। उसका मकबरा आगरे की सड़क के पास है। यहां कई पुराने मन्दिर हैं। एक पक्का ताल और पुरानी चारदीवारी से घिरा हुआ बगीचा है। मरहठों ने अपने शासनकाल में फीरोजाबाद को एक तहसील का केन्द्र स्थान बनाया था। यही व्यवस्था ब्रिटिश राज्य के हो जाने पर भी जारी रही। फीरोजाबाद क़स्बा प्रधान सड़क के दोनों ओर बसा है। यहां तहसील, थाना, डाकखाना, सनातन धर्म, हाई स्कूल, मिडिल स्कूल और बाजार है। यहां कपास ओटने, आटा पीसने और चूड़ियां बनाने के कारखाने हैं। वर्ष भर में यहां कई मेले लगते हैं।

इरादत नगर खारी नदी के दाहिने किनारे पर फतेहाबाद से खैरागढ़ को जाने वाली सड़क पर स्थित है। जाट और मरहठा शासनकाल में यह एक तहसील का केन्द्र स्थान था। १८७६ में तहसील तोड़ कर फतेहाबाद और खैरागढ़ में मिला दी गई है। इस समय यहां थाना, डाकखाना और प्राइमरी स्कूल है।

इतिमादपुर इसी नाम की तहसील का केन्द्र स्थान है। यह आगरे से १२ मील की दूरी पर फीरोजाबाद और मैनपुरी को जानेवाली सड़क पर पड़ता है। उत्तर-पूर्व की ओर एक सड़क एटा को गई है। रेलवे स्टेशन कुछ ही दूर है। अकबर के हिजड़े इतमाद खां ने यहाँ एक मस्जिद और पक्का ताल बनवाया था। उसी की स्मृति में कस्बे का यह नाम पड़ा। तालाब के किनारे सात आठ सौ फुट लम्बे हैं। तालाब के बीच में एक भवन है जो २१ महराबों पर बना है। इस तालाब को बुढ़िया का तालाब कहते हैं। इसी की तली की कीचड़ में कई बुद्ध-कालीन चीजें पाई गई। इसे पहले बोधि-ताल कहते थे। इसी से बिगड़ कर इसका नाम बुढ़िया का

तालाब पड़ा। यहां तहसील, थाना, डाकखाना और मिडिल स्कूल है। सप्ताह में दो बार बाजार लगता है। प्रधान बाजार जिले के एक कलक्टर मिस्टर हालैंड की स्मृति में हालनगंज कहलाता है। तहसील एक मोटी और ऊंची दीवार से घिरी हुई है। यहां पहले किला था। किले की खाईं सूख गई है।

इतिमाद्दौला यमुना के बायें किनारे पर आगरा शहर का ही अंग है। इसके उत्तरी भाग में जहांगीर के प्रधानमन्त्री और नूरजहां के पिता इतिमाद्दौला का मकबरा है। इसी से इसका यह नाम पड़ा। मकबरे के पास ही इतिमादपुर और अलीगढ़ से आने वाली सड़कें मिलती हैं। यहां से आधा मील की दूरी पर रेलवे का पुल है जिसके ऊपर से टूंडला की लाइन जाती है। मकबरे के अतिरिक्त यहां बुलन्द बाग (बुलन्दखां नामी जहांगीर के हिजड़े का बाग), सतकुइयां और बत्तीस खम्भा, राम बाग, जहरा-बाग (जहरा बाबर की लड़की थी) और चीनी का रौजा है। यहीं मोतीबाग, चहारबाग, महताबबाग और अचानक बाग हैं।

जगनेर कस्बा आगरे से ३१ मील की दूरी पर खैरागढ़ तहसील से १९ मील दक्षिण-पश्चिम की ओर है। यह सड़क और कचार नाले के बीच में ग्वाल बाबा पहाड़ी की तलहटी में बसा है। इसके एक भाग में ब्राह्मण और दूसरे भाग में बनिये रहते हैं। बीच में बाजार है। इसके पड़ोस में एक किले के खंडहर हैं। पास ही सूरजमल ने चट्टान को कटवाकर ताल बनवाया था। नगर के पूर्व में ऊँचवा खेरे पर जाट और मरहठा शासन के समय के बने हुए घरों के खंडहर हैं।

जाजऊ गांव उतांगन के बायें किनारे पर आगरे से धौलपुर को जाने वाली सड़क के पास है। यहां से खैरागढ़ (तहसील) पांच मील पश्चिम की ओर है। जाजऊ के पास कई प्राचीन गढ़े हुए पत्थर मिले हैं १७०७ में यहां पर बहादुरशाह और उसके भाई आजमशाह के बीच दिल्ली के सिंहासन के लिए लड़ाई हुई थी। आजमशाह मारा गया। विजय के उपलक्ष में बहादुरशाह ने यहां नदी के पास सड़क के पश्चिम में एक बड़ा सराय बनवाई।

जरसी गांव इतमादपुर की पूर्वी सीमा पर टूंडला स्टेशन से ४ मील उत्तर-पूर्व की ओर है। यहां थाना डाकखाना बाजार और प्राइमरी स्कूल है। यहां जूते बहुत बनते हैं और कलकत्ते भेज दिये जाते हैं। यहां से घी भी बाहर भेजा जाता है।

कचौरा गांव यमुना के दाहिने किनारे पर नालों के बीच में बसा है। यह आगरे से ५७ मील दूर है। यहां होकर आगरे से इटावे को सड़क जाती है। यह सड़क यहीं यमुना को पार करती है। इसी से इसे घाट का गांव कहते हैं। यमुना के ऊपर पुराने किले के खँडहर हैं। इसे भदावर के राजाओं ने बनवाया था भादों में महादेवछठ का मेला होता है। कागरोल आगरे से १६ मील दक्षिण-पश्चिम की ओर है। उत्तर-पश्चिम की ओर एक सड़क अचनेरा को जाती है। कागरोल बहुत पुराना है। वर्तमान गांव एक पुराने किले के खेड़े पर बसा है। यहां पुराने समय के सिक्के और गढ़े हुये पत्थर मिलते हैं। गांव के उत्तर की ओर बारह खम्भा है। यह शेख अम्बर का लाल पत्थर का गुम्बद वाला मकबरा है जो बारह खम्भों पर बसा हुआ है। यहां थाना, डाकखाना और स्कूल है। खेरागढ़ (या खैरागढ़) इसी नाम की तहसील का केन्द्र-स्थान है। यह उतांगन के बांयें किनारे पर आगरे से १८ मील दक्षिण-पश्चिम की ओर है। यह एक ऊंचे पुराने खेरे पर बसा हुआ है। इसी से इसे खेरागढ़ कहते हैं। इसके पड़ोस में उत्तर की ओर एक पुराना टीला है। पूर्व की ओर टेसू टीला है। कहते हैं ऊंचे गढ़ के नीचे और भी अधिक पुराने पक्के किले के खंडहर थे। जाटों और मरहठों के शासन काल में यह तहसील का केन्द्र स्थान था। ब्रिटिश शासन के आरम्भ में यहां तहसील न रही। १८४२ में यहां फिर तहसील हो गई। १८६३ में इसका नाम खेरागढ़ से बदल कर सरकारी नाम खैरागढ़ कर दिया गया लेकिन स्थानीय लोग इसे खेरागढ़ ही कहते हैं। यहां तहसील, थाना, डाकखाना और मिडिल स्कूल है।

खण्डौली गांव आगरे से १० मील उत्तर की ओर अलीगढ़ को जाने वाली पक्की सड़क पर स्थित है। यहां से एक सड़क इतिमादपुर को जाती है। यहां थाना, डाकखाना, मिशन का अस्पताल और प्राइमरी स्कूल है। बाजार सप्ताह में दोबार लगता है।

# अन्वेषक-दर्शन

## नये पाठ्यक्रम के अनुसार विद्यार्थियों के लिये अत्यन्त उपयोगी है

भाग १ (कक्षा ४ के लिये) में—(१) कोलम्बस की पहिली यात्रा। (२) कोलम्बस की दूसरी यात्रा। (३) कोलम्बस की तीसरी यात्रा। (४) कोलम्बस की चौथी यात्रा। (५) वास्को डिगामा और (६) सर फ्रांसिस ड्रेक की पृथ्वी परिक्रमा है।

भाग २ (कक्षा ५ के लिये) में—(१) लिविंग्स्टन। (२) कप्तान कुक और (३) शाकिल्टन की रोमांचकारी अन्वेषण कथायें हैं।

भाग ३ (कक्षा ६ के लिये) में—(१) एवरेस्ट पर्वत की चढ़ाई। (२) विलियम बेरेण्ट्स की आर्क्टिक यात्रा। (३) फ्रैंकलिन की आर्क्टिक यात्रा। (४) नान्सेन की ध्रुवीय यात्रा। (५) गुब्बारे से उत्तरी ध्रुव की यात्रा। (६) लिंकन एलसवर्थ की दक्षिणी ध्रुव-यात्रा। (७) रोल्ड एमण्डसेन। (८) स्काट की दक्षिणी ध्रुव-यात्रा और (९) स्काट का अन्तिम सन्देश है।

## 'भूगोल' का स्थायी साहित्य

१—भारतवर्ष का भूगोल ... २)
२—भूतत्व ... १।)
३—भूगोल एटलस ... १।)
४—भारतवर्ष की खनिजात्मक सम्पत्ति १)
५—मिडिल भूगोल (भाग १ व ४) भाग ।≈)
मिडिल भूगोल (भाग २, ३) प्रत्येक भाग ।।)
६—हमारा देश ... ।≈)
७—संक्षिप्त बाल-संसार (नया संस्करण) १)
८—हमारी दुनिया ... ।–)
९—देश निर्माता ... ।–)
१०—सीधी पढ़ाई पहला भाग ... –)।।
११—सीधी पढ़ाई दूसरा भाग ... –)।।
१२—जातियों का कोष ... ।।)
१३—अनोखी दुनिया ... ।≈)
१४—आधुनिक इतिहास-एटलस ... ।)
१५—संसार शासन ... २)
१६—इतिहास-चित्रावली (नया संस्करण) १)
१७—स्पेन-अंक ... ।।–)
१८—ईरान अंक ... १)
१९—चीन अंक ... ।।)
२०—चीन-एटलस ... ।।)
२१—टर्की ... १)
२२—अफ़ग़ानिस्तान ... १)
२३—भुवनकोष ... १)
२४—एबीसीनिया ... ।।)
२५—गंगा-अंक ... १)
२६—गंगा एटलस ... ।।)
२७—देशी राज्य अंक ... २)
२८—पशु-पक्षी अंक ... १)
२९—महासमर-अंक ... १।)
३०—महासमर एटलस ... ।।)
३१—सचित्र भौगोलिक कहानियां ... ।)
३२—प्राचीन जीवन ... ।।)
३३—भू-परिचय (संसार का विस्तृत वर्णन) २।।)
३४—वर्नाक्युलर फाइनल परीक्षा के भूगोल-प्रश्नपत्र और उनके आदर्श उत्तर (१९२१-३८) तक १)
३५—आसाम अंक ... १)
३६—द्वितीय महासमर परिचय ... १।।)
३७—संयुक्त प्रांत-अंक ... २।।)

मैनेजर, "भूगोल"-कार्यालय कक्करहाघाट इलाहाबाद।

Published by the Editor (Pt. Ram Narain Misra, B. A.) and Printed by Ram Sundar Dwivedi, at the Bhugol Press, Kakrahaghat, Allahabad.